THE

HINDI VERSION

OF

THE MAHABHARATA,

(A WELL-KNOWN SANSKRITA EPIC)

WRITTEN ON THE METRE OF "ALHA."

EDITED AND PUBLISHED

BY

PT. RAMA RUTNA BAJPAI

महाभारतभारतखण्डभाषा

द्वितीयभाग

जिसमें

भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, विशोक, स्त्री, अश्वमेध, आश्रमवास, मुशल, महाप्रस्थान व स्वर्गारोहणादि पर्व हैं

जिसको

श्रीउन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि वाजपेयि कुलकमलश्रीशिवचरणलालशर्म सूनु पण्डितरामरत्नने स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्रामनिवासि श्रीभागूलाल दीक्षितस्यात्मज पण्डित बंदीदीनसे नवरसकला विज्ञ रसिक पुरुषोंके चित्ताह्लादार्थ अतीव परिश्रमसे आल्हाकी रीतिपर निर्मितकराय श्रीडबल्यू सी बिनट सिक्रेटरी जुडीशल डिपार्ट पश्चिमोत्तर व अवध देशके अर्पण किया

प्रथमवार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी आई ई) के छापेखाने में छपा
मई सन १८९० ई०

इसयन्त्रालय में जोकाव्यकीपुस्तकेंछपीहैं उनमेंसेकुछ नीचेलिखीहैं

नानार्थसंग्रहावली ॥

पण्डित मातादीन शुक्ल रचित सातपोथी का संग्रह है (१)संग्रहावली(२)रामायणमाला(३)रामायणगीताष्टक (४)ज्ञानदोहावली(५)रससारिणी(६)तिथिबोध(७)मातृदत्तकृतपिंगल अक्षर बहुतपुष्टहै कि वृद्ध और बालकभी पढ़ सक्ते हैं ॥

कृष्णप्रिया ॥

मंगलप्रसाद विरचित ब्रजबिलास की तरहपर श्रीकृष्ण जीका जन्मसे बैकुण्ठ गमन पर्य्यन्त चरित्र है यहकाव्यालंकारयुक्त बहुतही सुन्दर पुस्तक है ॥

छन्दोर्णव पिंगल ॥

जिसमेंमात्रावृत्त, वर्णवृत्त, मेरु,मर्कटी, पताका, लघुगुरुस्थापनरीति और सब छन्दोंके दृष्टांत सहित रूपहैं ॥

रसराज ॥

मतिरामजी कविरचित जिसमें अतिमनोहरतासे काव्यालंकारसंयुक्तनायकाभेदका बर्णनहै ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दों में नायकाभेदकी पूरीबातें लिखीहैं ॥

शतसयीसटीकविहारीलालजी रचित ॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पर्ण नायकाभेदकाबर्णन सातसौ दोहोंमें है और दोहोंके भावार्थ के सवैये और कबित्व भी हैं ॥

सभाबिलास ॥

जिसमें सभाकी चतुरताके लिये चुनीहुई बातें जैसेनीति

To

THE HONORABLE WILLIAM CHARLES BENNETT,

WHO

JOINED THE OUDH COMMISSION IN DECEMBER 1867

AND

Throughout his service as Manager of Encumbered Estates; Settlement Officer; Director of Agriculture; Revenue Secretary to Government; Member of the Legislative Council of the N.-W. P. and Oudh; and Fellow of the Allahabad University, has been a sincere and steadfast friend of the country and its people,

This work

IS

By Permission,

Most respectfully dedicated,

BY

His most humble, most obedient
and most devoted servant.

PT. RAM RUTTAN, BAJPAI.

Great men have been among us—hands that penned, tongues that uttered wisdom—better none.

Wordsworth.

The name of "Mahabharata" is sure to be familiar to those at least who know or care to know India and its history. It is one of the works of *Vyas Darpuyan*—the greatest of the Indian poets. Numerous Voluminous works are ascribed to him, so that there has, lately, sprung up a class of literary men who hold that many of them are not his productions. However no one doubts that the Mahabharata is the outcome of his brain. This great Epic has, in consideration of its being trustworthy and authoritative as also on account of its moral worth, been sometimes called the 5*th Veda*—a title too hold for any literary work to assume in face of the strong religions prejudices.

It would be vain on my part to attempt to give here even an outline of what this great Epic contains, or a description of its Merits; the former would be too lengthy for a preface, and the latter can better be felt than described. Its popularity is evident from the fact that notwithstanding its enormous size it has been translated into Bhasha, Urdu and Bengali languages and is, now being rendered into English.

One of the several objects in view in offering the present vision of the Mahabharata is to make it more clearly understood by the unlettered country-folks who often find it difficult to deciples the sense of a polished sentence. The various translations above referred to, whether in poetry or in prose, are generally unintelligible to them; and thus their knowledge of Indian History remains as poor as ever. To remedy this, I have selected the heroic metre of Alha—a collection of very popular and romantic ballads in the recitation and bearing of which the country people have, of late, begun to take so much interest. These ballads describe at length the exploits of Alha and his brave companions but these exploits are not corroborated by history.

The introduction in a like a garb, of so authentic a statement of historical facts as contained in the work of *Veda Vyas* in place of the above fictitious ballads, is calculated to ward off the corruption of the public mind by discouraging their interest and belief in the latter. It is at the same time expected to be more beneficial to them so far as their knowledge of the History of India is concerned.

I have desisted from speaking in praise of the work, for it will, it is hoped, find its own way to public esteem and approbation.

In conclusion I cannot sufficiently thank my friend Pundit Bandi Din to whose poetic inspiration this version is entirely due.

RAM RUTTAN, BAJPAI.

आल्हखण्डका सूची पत्र।

इति

भारतखण्डकाविज्ञापन

हेगणनायक जनसुखदायक सुन्दरमदन बदनअभिराम
सिद्धिदेवैया श्रुति वरणतयश भाषतविघ्न विदारणनाम
आदिदेवता सबजगपूजित महिमा अमित कहीना जाय
तुवपद पंकजरज उरमाधरि भारतखण्ड कहतकछुगाय
हे मतिदाता माता शारद निज बालक पर होहु दयाल
शुभ बुधि साजौ कण्ठ बिराजौ तौ कछुकहौं पुरातन हाल
भारत गाथा बिस्तारत हौं संगर पाण्डु कौरवन क्यार
हे जगरानी सिधिबानीकरु दानी विदित नाम जग त्वार
हे नँदनंदन जन मन चंदन बंदन करत तुम्हारे पायं
हिये बिराजौ निजसेवक के जासों ग्रंथ नाथ बनिजाय
जितने देउता त्रयलोकी महँ सब के चरण नवावत माथ
करिअभिलाषा भारत भाषा गावत ग्रंथ नाथ तुव हाथ
अब कछु चर्चा बिस्तारत हौं जेहिबिधि भयो ग्रंथ अवतार
सुने सुनाये जेहि भारत के दूनौ लोक होत उद्धार
रामचन्द्र की राज अयोध्या भारत मध्य विदित सुस्थान
जिला दुआदश जेहि अन्तर्गत हैभूगोल माहिं परमान
तिन मा उत्तम यक बरणतजन हैशुभनाम जासु उन्नाम
त्यहि अन्तर्गत सुरसरि तटपर बंथरग्राम एक अभिराम
परम प्रबीने जनबासी जहँ सुन्दर चारि वर्ण को ठाम
तामहं टोला अनमोला इक जामहं सर्ब द्विजन के धाम १
वाजपेयिकुलकमल वसततहँ अतिशुभ हंसबंशअभिराम
धर्मप्रतिष्ठित हरिपद निष्ठित श्रीयुत नेकरामअसनाम १
ज्ञानी मानी द्विजसन्मानी जिनको देवभक्तिसों काम
लसतहवेली अलबेली तहँ विरच्यो जलकरनजनुधाम १

कीरति जाहिर ग्रामग्राममहँ दिनप्रति अधिक२ मर्याद ॥
तिनअवतारिकसुतचारिकभे सबदुखहरनकरनअहलाद १३
शीलडीलवर चारिउ लरिका जेठ श्रेष्ठ शिवचरणलाल ॥
श्रुतिपथपालक धर्मकर्मयुत कारक विप्रधेनु प्रतिपाल १४
तनमन सेवक पितुमाताके राखल महादेव पदध्यान ॥
तिनकेलरिका इक पैदाभये उज्ज्वलबंश प्रशंसकभान १५
भयेशिरोमणि जस प्रथमें के पुरिखा महाविभवकेधाम ॥
तैसइमाता उनका जायो सुन्दर रामरत्न असनाम १६
बंशउजागर सबगुण आगर कीरति बिमल बरणिनाजाय ॥
दीनसुखारी जन दुखहारी तनमनदया भया दरियाय १७
सतमति पूरे द्युतिरूरे अति सज्जन गुणिनमान दातार ॥
क्षमा छबीले युतशीलेबहु दायकसंत द्विजहिं सत्कार १८
बालअवस्था तेविद्यापढ़ि दिन२ लह्यो अधिक अधिकार ॥
सुमतिशीलतालखिसज्जनजन कीन्ह्योसबप्रकारसत्कार १९
जाहिरलक्ष्मणपुरच्चारिउदिशि जहँअतिधनिकबनिककेधाम ॥
मध्यमोहल्लायक विकसतजेहि हज़रतगंजबखानतनाम २०
निर्मितकीन्हयों यन्त्रालयतहँ श्रीमन्नवलकिशोर उदार ॥
मानसरोवर श्रीभार्गवकुल तासहँ अमलकमल अवतार २१
कियो प्रफुल्लित यंत्रालयशुभ भारतमध्यनाहिं असअन्य ॥
होतजीविकामरसहसनकी जोकोउ लखतकहतसो धन्य २२
तेजप्रकाश्यो दिशिभास्योचहुं सहिनहिंसकतअन्यनरदाब ॥
आब देखिकै इँग्लेंडी ने (सी, आई, ई) दीन खिताब २३
तिनसन्मान्यो पण्डितबरका दीन्ह्यो हर्षि उच्च अधिकार ॥
टैपडिपारटके अफिसरकरि कीन्ह्यो विविधभांतिसत्कार २४
दिन २ रोशनकै दिखरायो अतिशय दियो कामअंजाम ॥
परम पियारे मुंशीजीके तसगुण रामरत्न जस नाम २५
पन्द्रहवर्षके भये मुलाज़िम दिन २ अधिक २ अधिकार ॥
कियो पर्यटन अतिबसुधाको ओहदापाय आममुख्तार २६

घूमत २ चारिउ दिशिमा निरख्यो वर्तमान युगहाल ।
अतिरुचिपुरुषनकीआल्हापर निशिदिनजमोरहतसोइख्याल
देखिव्यवस्था असपुरुषनकी जाको भलो न कछु परिणाम ।
कियो चिन्तवन उर पण्डितवर जासों एकपंथ दुइकाम २८
यहु जो आल्हा नरगावत हैं ताको नाकछु ठीक ठिकान ॥
कतौंन दीख्यो तवारीखमा नाकेहु अन्यग्रन्थ परमान २९
नहिं कछु तामहँ हरि चर्चा है नाकेहु अन्य देव को नाम ॥
इतउत स्वारथ कछु नाहींहै ऐसो कौन चहौ नाकाम ३०
उरमहँ ठनिगै पण्डितवरके जोकछुअसलागि जाय उपाय ॥
पर्वअठारहमहभारत शुभ भाषाआल्हखण्ड बनिजाय ३१
रहे चिंतवन यह राखे उर केहुविधि आश पुरावहिं राम ॥
गये पर्यटन को अवसर इक साहब लफ्टनण्टके ठाम ३२
तहंसिक्रटरी लफ्टनंट के अति मतिमान ज्ञान गुणधाम ॥
श्रीआनरेविल युतभाषत कहि वलियमचार्ल्सविनटअसनाम
करौं प्रशंसा मैं इनकी कह इंगलेंडीय नरन महं ख्यात ॥
दया मया सों परिपूरित हिय कोमल चित्त चारु दरशात ३४
गमन वलायत ते जब ते करि निवसे भरतखंडमहं आय ॥
तब ते इनके शुभ वृत्तन को प्रकटत छंद बंध महं गाय ३५
सन् अट्ठारह सौ सरसठिके सुन्दर माह दिसम्बर माह ॥
ग्यारह दिवसनके बीतेपर बरहेंदिवस सहित उत्साह ३६
अवध कमीशन के ओहदापर अफसर भये हर्षके साथ ॥
बहुते समया लग कीन्ह्योंतेहि दृढ़ परबंध केर लखिपाथ ३७
कियो मनेजरी तेहि पाछे पुनि कर्जी रियासतनकी पाय ॥
कियो बहाली तिनसबहिनकी उत्तम इंतिजाम दिखराय ३८
फिरि सर्विसतह बंदोबस्तके अफसर भये रहे चिरकाल ॥
फेरितिजारत व जिराअतकी डैरेक्टरी कियो प्रतिपाल ३९
बहुदिन कीन्ह्यों यहिकारजको अतिशय इंतिजामके साथ ॥
तेजप्रकाश्यो गौरण्डनमहँ लण्डनलगे विदितयशगाथ ४०

अब यहिअवसर गवर्नमेंट के रेविन्यूसिक्रेटरी कहाय ॥
रहेकाजकरि उत्तमताके प्रभुतारही चहूंदिशि छाय ४१
देशपश्चिमोत्तरके कौंसलके लेजिसलेटिव कहतजेहिनाम ॥
तिहूके मेम्बर परमानेहैं जेहिमहँ रायदेन को काम ४२
यूनीवर्सिटी प्रागराजकी ताकेफैलो विदित बनाय ॥
गुणगणपूरे सबप्रकारसों भारत देश केर सुख दाय ४३
भारतवासी अतिआनँदहैं जिनकी देखि नीति की राह ॥
पायआपने असहाकिमको मानत धन्य भाग्य उत्साह ४४
कियो वार्ता तिन साहबसे पण्डित रामरत्न रुख पाय ॥
पर्व अठारह महभारतशुभ भाषा आल्हखंड बनिजाय ४५
भये अनंदित मन साहबअति अपनिउँरायदीनि फुरमाय॥
तब मनठान्यो श्रीपंडितवर केहुबिधिकाज पूर्णहोइजाय ४६
जस कछु मंशा पंडितवरकै तस संयोग मिलायो राम ॥
एक दिनौना केहुकारजबश पहुंचे महाराज ममठाम ४७
गंगाजी के उत्तर तटपर अति परसिद्ध मोर शुभ ग्राम ॥
है ममवासी पुर कासीसम सुन्दर ज़िला खिलाउन्नाम ४८
द्विज़ दीक्षितकुल अवतंसित मैं है अध्ययन ग्रंथको काम ॥
प्रपिता श्री द्विजरामदीनवर भागूलाल पिताको नाम ४९
रहौं भरोसे गुरु चरणन के और न कछू मोर इतमाम ॥
विद्याबलसों करौं जीविका बंदीदीन विप्रमम नाम ५०
शिवनारायण तिरपाठी कुल सो परसिद्ध मोर गुरुराय ॥
दया की दृष्टी मोपर करिकै विद्यादान दीन हर्षाय ५१
हिंदी भाषा पढ़यों प्रथमहीं सो गुरु आदि राम आधार ॥
ग्राम बदर्काके बासी शुभ पांड़े वंश अंश अवतार ५२
दूजे गुरुसन पढयों व्याकरण कीन्ह्यों काव्य ग्रंथ निर्द्धार ॥
शिवनारायण गुरु दूजे शुभ एकै ग्राम बास आगार ५३
भयों मुहर्रिर मैं बलियामा बंदोबस्त कार महं जाय ॥
तेही समइया के अवसर मा मिलिगे रामरत्न सुखदाय ५४

चर्चाकीन्ह्यों तिन आल्हाकी अपनोहृदय मनोरथभाखि ॥
भारतभाषा अभिलाषा सों करिये छंद बंध रुचिराखि ५५
गावनवारे गैबौ करिहैं भट संग्राम और हरिनाम ॥
लोक सुधरिहैं दोउनी की बिधि होइहैं एकपंथ दुइकाम ५६
पाय महाशयकी आज्ञाअस गनिशुभ लग्नमहूरत बार ॥
ध्याय गजाननसिद्धि पंथशुभ कीन्ह्यों ग्रंथकेर निर्द्धार ५७
बहुधनदीन्ह्यों मोहिंपण्डितबर कीन्ह्यों सबप्रकारसत्कार ॥
श्री नारायणकी दायासों मुदसह ग्रन्थ भयो तय्यार ५८

(श्रीवाजपेयिरामरत्नस्याज्ञाभिगामी
बन्दीदीन शर्मा)

अथ महाभारत भारतखण्डभाषा

भीष्मपर्व ॥

———o———

दोहा ॥

गणनायक पदशरणगहि ध्यायहिये सुरसर्व ।
रचत सुभारतखण्ड कहि भाषाभीषम पर्व ॥

सौरनी ॥

चरणमनैये गणनायकके शंकर पारवतीको लाल ।
आदिदेवता सब बरदायक सुमिरतछूटिजायजंजाल १
एकदन्तछबि जगमगराजै छाजैकला जगतउजियार ।
मूससवारी अतिशुभ सोहै दरशै वन्दनबुन्द लिलार २
सुमिरिभवानी जगदम्बाका श्रीशारदके चरणमनाय ।
आदिसरस्वति तुमकाध्यावों माताकण्ठबिराजौआय ३
ज्योतिबखानौंजगदम्बाकै जिनकीकलाबरणिनाजाय ।
शरदचन्द्रसमआननराजै अतिछबि अंगअंगरहिछाय ४
एकहाथ में पुस्तकराजै बीणा एक हाथ दरशाय ।
रतिसकुचावै रूप देखिकै सुरअंगना मोहिरहिजाय ५

मैंपदबन्दौं मुनिनायकके जिन अट्ठारह रचेपुरान ।
होहुसहायक निजसेवकपर श्रीवरब्यासदेवभगवान ६
जोकछुगायो महभारतमें कोरतिपाण्डु कौरवनकेरि ।
सोईआल्हाकरिगावतिहौं जसकछुज्ञानबुद्धिगतिमोरि ७
भीषमपारथको पुरुषारथ जिनकोरह्यो जगतयशछाय ।
सोइमहभारत आल्हाविरचौं भाषाभीषमपर्वबनाय ८

क० । श्री भृगुनन्दनके गुनगाय मनायहिये दशरत्थदुलारो ।
शूरशिरोमणिसूरजसे इकतीरहि बालिसोबीर संहारो ॥
पारथ भीषम से रणशूर जुरेरणजैं हरिको प्रणटारो ।
तिनशूरनको डरसौंरनकै पुनिपीछेक गावतवीरपवांरो ॥

सजी कचेहरी श्रीपाण्डवकै भारी लाग भूपदरबार ।
परेबिछौना मखमलु वाले औमसनंद बराबरियार ९
तकिया लागीं कमखावनकी औचहुंगिर्दा सजेबनाय ।
बड़े २ योधाहैं बैठकमा एकते एक शूर शिरताज १०
तहां बिराजैं सिंहासनपर श्रीबरबीर धर्ममहराज ।
सजीपोशाकैंमहराजनकी जिनमाकामसूबरणक्यार ११
छत्रबिराजैंरे माथेपर जिनकी शोभा बरणिनाजाय ।
बंधेबजुल्ला भुजदण्डन पर कंठा कंठरहे छबि छाय १२
मोहनमाला गलेमसोहैं मोतियनकटा रहीछहराय ।
अंगदजोसनकर कंकन हैं हीराचमकि २ रहिजाय १३
सोने सिंहासन राजा बैठो ऊपर चौंर ढुरैं गजगाह ।
कोछबिबरणौ वहिसमयाकै मानौ सभाबैठ सुरनाह १४
चारौ लरिका रे पांडव के एकते एक बीर बलवान ।
तेऊ बिराजें दरबारैमा बैठे कृष्णचन्द्र भगवान १५
वही समैया के अवसरमा बोले भूप युधिष्ठिरराय ।

बिनयहमारीइकसुनिलीजै हेहरितुमसनकहौंसुनाय १६
बंशलड़ाई कछुनीकीना ना कछु धर्म भूपतिन क्यार।
बंधु बिरोधौ कछु आछोना बंटाढारु होय परिवार १७
तेहिते तुमका समुझैयतुहै इतनी अर्ज सुनौभगवान।
तुमचलिजैयो दुर्योधनतै औसमुझैयोनीतिनिदान १८
पांचगांव जो हमका दैदें तौना होय बंश को हान।
सुनिकै बातैं कृष्णचन्द्रजी कौरवसभाकीनप्रस्थान १९
जहां कचेहरी दुर्योधनकै पहुंचे कृष्णचन्द्र भगवान।
उठिकैलीन्ह्योंदुर्योधनने गहिभुजभेंट्योकंठलगाय २०
आसनदीन्ह्योंश्रीमाधवको बैठे सभामध्य सब जाय।
पूंछीखबरिया दुर्योधन ने बोलेकृष्णचन्द्र महराज २१
कह्यो सँदेशा है पांडव ने सुनिये महाराज कुरुराज।
बंशलड़ाई कछु नीकी ना बंटाढारु होय परिवार २२
ताते तुमका समुझैयत है दीजै पांचगांव को राज।
सुनिकैबातैं कृष्णचन्द्र की तबदुर्योधनदियोजबाब २३
देहौं न सूजीके नोकाभरि कीन्हे बिना युद्ध के साज।
होयपराक्रम जो पांडवका हमसोंलेयसमरमें राज २४
इतनाकहतै परलय होइगै मनमा रोष कीनभगवान।
ऐसी बातैं तुम कहियो ना नाकछुनीकोयुद्धनिदान २५
हीने पांडव कछु तुमते ना जोरण सुनिकै जाहिं डेराय।
यहिकेधोखे तुमरहियोना लेहैंसबियां राजछड़ाय २६
इतना कहिकै दुर्योधनतै चलिभे कृष्णचन्द्र यदुराय।
जहां दुलरुवा रे पांडवके केशव तहां पहूंचे जाय २७
कह्योसंदेशा धर्मराज ते सुनिये भूप युधिष्ठिर राय।

मैंसमुझायों दुर्योधन का मांगे पांचगावं तहंजाय २८
कही हमारी उनमानीना भाषे गर्व वचन कुरुराय ।
बिनालड़ाई हम देबे ना चाहौ कोटिक करौउपाय २६
तेहिततुमको समुझैयतहै सुनिये भूप युधिष्ठिर राय ।
हितकीबातनकछुहवैहैना नाकछुसरिहैकामतुम्हार ३०
करौतयारी तुमलड़िबे का करिकै युद्धलेहिं गे राज ।
सुनिकै बातैं कृष्णचन्द्रकी शोचन लागधर्ममहराज ३१
भयेलड़ाई अब बचिहैना यहमैं निश्चय करी निदान ।
हाथजोरिकैफिरिबोलतिभे सुनियेदीनबंधुभगवान ३२
लरिबेलायक हमनाहीं हैं है ना नीको युद्ध निदान ।
योधा भीषम से जिनके हैं जाहिरमहारथीबलवान ३३
कृपाचार्य औ द्रोणाचारज सूरज पुत्र कर्ण रणनाथ ।
पारनपैहैं हमकौरवते जिनके लक्ष छत्र धर साथ ३४
जीतिन पैहैं कुरुनायकते मानौ सत्य वचन यदुराय ।
सुनिकै बातैधर्मराज की फिरिमाधवने कहो बुझाय ३५
राजन देहै कोउ मांगते सुनिये भूप युधिष्ठिर राज ।
करौतयारी तुमलरिबेका हवैहै औरभांति नाकाज ३६
शत्रुसंहारौ समर भूमि में पाछे लेहिं आपनो राज ।
कछूअंदेशा हिय मानौना सुनिये धर्मराज महराज ३७
द्रुपदविराटहुसे क्षत्रीगन सब लड़िबे को होयंतयार ।
सारथिहवैहौं मैंपारथको अर्जुनखेलिहैसमरबनाय ३८
भायभीम असजिनकेयोधा काहेक बैठेरहैं भयखाय ।
मारि भगैहैं कुरुनंदन का संगर उठिहैं युद्धमसान ३६
इतनी बातैं सुनिकेशव की तब अर्जुनने कहोबनाय ।

करौंतयारीरे लरिबेका सुनिये भूप युधिष्ठिर राय ४०
अपने बदलाका काकहिये अपना बदल लेय संसार।
मारिकौरवनका मुंहफेरौं लेहौंसमरभूमिबिचराजि ४१
वहीसमैया के औसरमा बोल्यो भीमसेन रिसिआय।
जोकछु भाष्योयदुनंदनने सो हमरेजियगईसमाय ४२
रचिये संगरमहभारथ को ममपुरूषारथ लखौनाय।
सबौदुलरुवारे कौरवके मरिहैंसमरसहितकुरुराय ४३
जितने योधा हैं कौरवके संगर भूमि सोवहैं धाय।
मातपितायाहीकासेवैं लरिकाकरे युद्ध वरि आय ४४
दबिके रहिबेना कौरवते हैं बर बारहा शत्रु हमार।
मोहरामारिहौं मैं भीषम का लेहौं युद्धकर्णतेजाय ४५
शूरसंहारौं मैं खेतनचढ़ि तौंपाण्डव को राज कुमार।
राजन लीन्ह्योंदुर्योधनते तौंधिरकारजिंदगीक्यार ४६
करौंन शंका कछु जियरेमा हैं यदुनंदन मोर सहाय।
बस्त्रबढ़ायो जिनद्रुपदी के राख्योबीचसभामेंलाज ४७
संकठटार्‍यो रे भक्तन के बूड़त तारिलीन गजराज।
समुझौतिनुकासमकौरवदल जापैहैं सहाययदुराज ४८
सुनिकै बातैं भीमसेन की आयसुदियो युधिष्ठिरराय।
लैकैअज्ञानरनायकको सबदलसजनलागयदुराय ४९
बजेनगारा पांडव दल मा औ जयशंख दीनबजवाय।
मारुमारु कहि मौहरिबाजै बाजै हावहावकरनाल ५०
मारू नगारा रणमाबाजैं गाजैं शूर ठोंकि भुजताल।
सुनिकैडंका रे लस्करमा क्षत्री सबै भयेबिकराल ५१
कौनौं आवै रे महलन ते पंजागहे ढाल तलवार।

कौनौं आवैं फुलबगियनते गेंदालिहे हजारा हार ५२
चढ़ी रोसइयां सरदारनकी कोउनहवावैं शालिकराम ।
कौनौं शूरमा मुदगरभाजैं कौनौलेजनरहाहिलाय ५३
जेतने योधा रे पांडव के सबियां सजन युद्धको लाग ।
कंचनकलशाभरिमंगवावैं गंगाजलसोंकियोनहान ५४
भस्मलगावैं भुजदंडन मा लैकै नाम दूर्गा क्यार ।
इक२बख्तरदुइ२जिरहैं निज२अंगनपहिरिसनाह५५
कसि २ पेटी रे कम्मरमा बांधी बिमलढालतलवार ।
टोपझलरिहा धरिमाथेपर औदुइनयना रहैंउघार ५६
लोहे कूंड़ी शिरपर धारैं जेहिमाफिसलिजायतरवारि ।
बारहकरदै कम्मर बांधैं इक २ छुराबगलमाधारि ५७
जोड़ोतमंचाकै दहिने पर लटकै कड़ाबीन हथियार ।
बरछी तिरछी हाथन लैलै जिनमाधरी चीरवांबाढ़ि५८
चमकैं भाला नागदौनिके लटुआ मनन २ मननाय ।
कसी निषंगैं करिहायें में खांड़े लिये दुधाराहाथ ५९
लीन्हेकमनियां धामनवारी सोहैं तीर कैबरी साथ ।
सिंहकिगर्जनि क्षत्री गरजैं जिनकीहांकबज्रहहराय६०
सजे बहादुर सब पांडवके एकते एक दई के लाल ।
द्रुपदबिराटहु से क्षत्री पति राजाशंख भयो तैयार ६१
सजैं सात्वकी भटअभिमनुसे औ पारथको राजकुमार ।
सूरसेनसेराजासजिगे लरिकासज्योहिड़ंबिनिक्यार ६२
सजो लड़ाइत जरासंध को जो धनुधारी बीरबलवान ।
साजिबछेड़ा धृष्टकेतु चलो काशीराज भयो तय्यार ६३
पांचो लरिका रे द्रुपदी के तेऊ रण को भये तयार ।

बीर शिषंडी सजिकै आवो शूरन शूर बीरसरदार ६४
नवल बछेड़न केरथ साजें औ मखमलके डारिवहार ॥
धृष्टद्युम्नऔसहदेव सजिगे चढ़िकंचनरथभयेतयार ६५
हनवन करिकै गंगाजलसों धोती पहिरि पोतियाकेरि।
कसैं जांघिया रेशमवाली औ ऊपरते कुलहकबार ६६
तेहिकेऊपर बखतरपहिर्यो जेहिमा अंग नआवैघाव।
बँधैं कटारी कोताखानी कम्मर बंधी ढाल तरवारि ६७
एक हाथमा गदा बिराजै सोहै एक हाथ धनु बान।
जितनीसैनामहराजाकै सबदल साजि भयोतय्यार ६८
सजै दुलारो कुन्ती वारो जेठ भूप युधिष्ठिर राय।
तुर्तमहावतकाबुलवावो साजो श्वेतबरणगजराज ६९
धरिकै गद्दा मखमल वारो रेशम रस्सन दयोकसाय।
धरीअमारीकंचनवारो झालरिलागिमोतियनकेरि ७०
लालजवाहिरजगमगहीराचमचमचमकिचमकिरहिजाय
चुम्बकपत्थरकोहौदाहै जेहिमेंख्यालहबलौंचाखाय ७१
दन्त मढ़ाये रे सुवरणसे जिनकी शोभा बरणिना जाय।
सीढ़ीलगाईमलयागिरिकी हौदाबैठयुधिष्ठिरराय ७२
छत्रबिराजै शिर कंचनका कलंगी फहरफहर फहराय।
कीटमुकुट परहीरा चमकैं मानौं उदयचंद्रमाक्यार ७३
काहयुधिष्ठिर कैछबिबरणौं जिनकीशोभा कहीनजाय।
सजिकैबैठो अंबारी पर मानो इन्द्र अखाड़े जाय ७४
सजैदुलारो फिरि कुन्तीका पारथ धीरबीर बलवान।
निजकरसाजैंश्रीयदुनंदन झीलमऔसनाहपहिराय ७५
मुकुटबिराजैमणिकंचनका बिचविच लगीरतनकैपांति।

शस्त्र बिराजैं सबअंगनमा कम्मर बंधीढालतरवारि ७६
तरकस बांधे हैं पीठीमा जिनमा भरी बान कैखानि ।
धनुगाण्डीवहुकरमासोहै यकमाबान लीनसंधानि ७७
नंदिघोष रथ सारथिसाजैं जेहिगति सुनेशत्रुथहराय ।
नवल बछेड़ा रथमाजोते घोड़ा चलैं पवनकीचाल ७८
घटाटोप रथ ऊपर छायो सोहैं ध्वजा मध्य हनुमान ।
मत्तमतंगा झूमतिआवैं सुनिरवशत्रुहोय भयमान ७६
परीअंध्यारी है नैननमा अतिमद झूमिझूमि रहिजाय ।
हाथजोरिकै तबगोविंदते पारथरथपर भयोसवार ८०
बनेसारथी तब यदुनन्दन औस्यंदन पर भये सवार ।
कोकविबरणैतबअरजुनकै जिनकेरथसारथिभगवान ८१
नवल बछेड़न कीजोतीगहि हांकत कृष्णचंद्रमहराज ।
अंगअंगपर अतिशोभाहै औपटपीत जातफहरात ८२
चपल चलांके रथबाजीहैं जिनकी लगै न धरती टाप ।
सुमिरिभवानी जगदंबाका औशंकरकेचरन मनाय ८३
सुमिरिदेवतागणनायकको औगोविंदके चरणपखारि ।
माथनायकै तब सुर्जनको पांचौ बंधु भयेअसवार ८४
माता कुंती करै आरती पूजै भुजबल कंठ लगाय ।
बाहंपकरिकैतबलरिकनकी हरिकोदीन्हीबाहँगहाय८५
मोरअनाथिन केबालकहैं कीन्ह्योसमरभूमि प्रतिपाल ।
मोरगोसइयां अबतुमहीहौ हेमधुसूदनदीनदयाल ८६
तबसमुझायो कृष्णचंद्रने तुम जनिशोचकरौमनमाहिं ।
मोहिंभरोसा यहुसांचोहै होइहैजीति अंदेशानाहिं ८७
कुन्तीचलिभै तबमहलनका माधव तुरतैकियोपयान ।

बजेनगारा तबलस्करमा करिशंखध्वनिहनेनिशान ८८
मारुमारु सहनैया बाजैं गाजैं शूरबीर सरदार।
सातक्षोहिनीहैपांडवदल चालिससहसक्षत्रअसवार ८९
तीनिकोटि कुंजर दलसोहैं औरथपांच कोटि हहरायं।
चिघरैं हाथी दलबादलमा बर्षाकाल मेघघहरायं ९०
तिरछे घोड़न के चढ़वैया भाला लिये छैल असवार।
घोड़ानचावैंगलियारनमा मानौहिरणाचौकरीखायं ९१
छम छम २ बजैं पैंजनी धमकैं अष्टधात की नाल।
गरजतिआवैं सबक्षत्रीदल पैदलतीसकोटिसरदार ९२
डगरत आवैं दलपाण्डवका जहंपर कुरुक्षेत्र मैदान।
ढाढ़ीकरषा बोलतिआवैं मागधकरैंविमलयशगान ९३
बेदकारिका ब्राह्मणबांचैं भूपति बिजय मनावतिजायं।
दबतिअंधेरियादलमाआवैं सबितारहेधुंधिमाछाय ९४
देवता शोचैं आसमानमा बेराप्रलय गई नगिचाय।
सवापहारुक के असीमा पहुंचे कुरुक्षेत्र मा जाय ९५
उड़ैं चिरैया रे बिरवनते अपने अपने लीन बस्यार।
चकईचकवाअलगनिहोइगे जान्योंभईरातिकीब्यार ९६
जोड़ी धामनकै दौरतिभै जहंदरबारु कौरवन क्यार।
जोरिगदोरियाबोलनलागे औकुरुनायकबातवोनाव ९७
सजिदल आयोहै पांडवका जहं पर कुरुक्षेत्र मैदान।
उठो दुलारा रे कौरव का औदरबार केबलवान ९८
करैं तयारी रे लरिबे का लैकै नाम दूर्गा क्यार।
सजैं शूरमा सब कौरवके एकते एक दई के लाल ९९
द्रोणाचारजऔ भीषम पति सूरज सुवन कर्णमहराज।

कृपाचार्यऔभटभूरिश्रव औवृषसेनशूरशिरताज १००
सोमदत्त औ कृतबर्मा हैं अश्वत्थाम अत्रि महराज ।
बाहुलीकभगदत्तौसजिगे जिनकीहांकइन्द्रकोगाज १०१
भूपकलिंगौ तुरतैसजिगयो औशशिबिंदु शल्यसरदार ।
दानवराजअलंबुषसाजोसजिकैचलोशकुनिनरनाथ१०२
औ सौ भैया हैं कलिंगके तेऊ सजे भूप के साथ ।
चढ़ेतुरंगनअति बलगाजैं लाजैं सुनेहांकसुरनाथ १०३
सजिसजिस्यंदनचढ़िनृपनंदन औचलिबेकोभयेतयार ।
हाथीचढ़ैया हाथिनचढ़िगे बांकेघोड़नकेअसवार १०४
गजमुक्तनकोझालरिसोहैं मोहैंरूप देखि रति सायं ।
सजिगोस्यंदनकुरुनायकका जेहिकीशोभावरणिनाजाय
लालप्रबालनकी झालरिहै बिच २ मणीकणीदरशाय।
हीराजवाहिरसोंबहुजन्को ऊपरघटाटोपरहोछाय१०६
चंचलघोड़ा तब जुतवाये जिनकीचालबरणि नाजाय।
साजिसारथीतबलैआयो औकुरुनाथकभयोसवार१०७
सुमिरणकरिकै महादेव का अपने कुलगुरुलीनमनाय।
आजुअखाड़मा बरणी है देवता हमकाहोहु सहाय१०८
सौभैयनलै सजो दुशासन स्यंदन साजिहोयअसवार ।
चढ़्योदुलारा कुरुनंदनका चालिससहस छत्रधरसाथ
मदमतवारे कुंजर साजे दलमा चिघरि २ रहिजायँ ।
हैंइकदन्ता औदुइदंता बड़े २ नागलीनसजवाय ११०
सैनकुंज मलयाधौरागिरि औभौरागिरि लीन सजाय ।
अंगदगजसेऔपंगदगज हाथीलयेअगिनियासाजि१११
मस्ताहाथी नकुला सबजा साजे श्वेतवरणगजराज ।

दंतमढ़ाये हैं सुवरणते झूमें समर भूमि माठाढ़ ११२
कंचन स्यंदन बहुसाजेहैं फहरैं सुन्दर ध्वजा निशान।
सजिदलबादल गेकौरवके चहुंदिशिअंधकाररह्योआन
भानुमती तब आरति साजैं सखियां करैं मंगलाचार।
चलिभोलस्करदुर्योधनका लागेशेषनागथहराय ११४
मारूनगारा बाजन लागे इत उत शंखनाद हहरात।
खरखर२जहँरथ दौरैं रब्बा चलैं पवन के साथ ११५
छमछम२बजैं पैंजनी अरु अरगजा ध्वजा फहराय।
डगमग २ धरती डोली देवता कंपि २ रहिजायं११६
पीठि दबानीरे कच्छप की डोले दन्तनदन्त बराह।
खलभलपरिगाचहुंओरनमा रहि२दिग्गजकरैं चिकार
सवापहारुक के असीमा आये कुरुक्षेत्र कुरुनाथ।
भीष्मपितामहतब बोलतिभे ओकुरुनायकबातवोना ब
सुनुमहराजाद्रोणाचारज यह निजुबचन करौपरमान।
सावधानहोसमरभूमिमा लैकैहाथधनुष औबान ११६
आयोलस्करहै पाण्डव का आगे कृष्णचन्द्र भगवान।
वहोसमइयाकेऔसरमा देख्योभूपयुधिष्ठिरआन१२०
हैं कुरुनायक दल सेनापति गंगासुवन गुरूमहराज।
तुरतैहाथीतेभुइँआये जिनकै शोभावरणिनाजाय १२१
जहंपर लस्कर दुर्योधन का पांडव तहांपहूंचेजाय।
इतनालखिकैअर्जुन बोले सुनियेदीनबंधुयदुराय१२२
शत्रु सैनमाधर्मराजगे यह कछुनाहिन नीति निदान।
कैदकरावै जोकुरुनंदन जग बंदनकहचलै उपाय १२३
पांसाखेलेजेहि मतिधरिकै सोई बुद्धि पहूंची आय।

वहिक्षणावर्ज्योमधुसूदनने अर्जुनमौनधारिरहिजाव १२४
देखौसामाकुरुनायक कै कैसो दलको कियोबनाव ।
यहांबतकहीऐसीगुजरीअब आगेकासुनोहवाल १२५
जेहिक्षण आये कौरवदलमाओनरनाह धर्म महाराज।
सबियांचकितभोकौरवदल आये मिलन युधिष्ठिरराज
अब हम जानी अपनेमनमा जीमा पांडव गयेडेराय।
आवतदेख्योधर्मराजका भीषमउतरिपरेअरगाय १२७
चरणपखाख्यो दोउपांडवने आशिष दई गंगसुतधाय।
गहिभुजभेंट्यो तबपांडवका तुम्हरो सदारहै जयछाय
शत्रु संहारौ समरभूमिमा पांडव धीर बीर बलगात।
जोरिगदोरिया राजाबोल्यो सुनिये भीष्मपितामहबात
हमतौ तुमका यहजानत हैं जैसे पिता पुत्र को नात ।
पांचौभैयाहमबालकरहे तुमहींभयेसहायकतात १३०
हमैंभरोसा सबतुम्हरोहै हमपर रहिये सदा दयाल।
राजपाटकेहमभूखेना जसजिय धर्मकेरप्रतिपाल १३१
छलके पांसाकौरव खेले हमका बनै दियो पठवाय।
तेरहबरसैंबनमाबसिकै लीन्हेसबियांदुःखउठाय १३२
राजपाट सब कौरव लीन्ह्यों मांगेदेत न पांचौ गांव।
काहबिचारैंहमअपनेमन औकहँजायरहैंकेहिठावं १३३
समुझै कौरव समुझायेना कीन्ह्यो महायुद्धको साज ।
तुमअसयोधाचढ़िकैआये कैसेकसरीहमारोकाज १३४
तुमरणलायक हमनाहीं हैं बालकनिपट बुद्धिअज्ञान।
तुमते संगर भृगुपति हारे हारे बड़े २ बलवान १३५
एक भरोसा मोहिंआवतहै होइहै जोति अंदेशानाहिं ।

आशिषतुम्हरीमैंपायोहै यहिमाकछूबिचारबनाहिं १३६
तादिनभीषम फिरिबोलतभे तुममहराजा साधु सुजान
बिजयतुम्हारीरणमेंहोइहै तुम्हरेहैंसहायभगवान १३७
जहांधर्म तहंकृष्णबिराजैं जयको तहांअवशि परमान।
कालहारिगोजिनसन्मुखमा तहंनरकाहकरैमैदान १३८
धर्म तुम्हारो सब जयकरिहै औहै राजधर्म तुमपाहिं।
तेहितेतुमकासमुझैयतहै राजनकरहुअंदेशानाहिं १३९
कौरव पांडव सैनतयारी भीषम पर्व प्रथम अध्याय।
रामरत्नकीअनुमतिलैकै बन्दीदीनकह्योयहगाय १४०

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षित निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व
कौरव पाण्डव युद्धोपाय कथनन्नाम प्रथमोध्यायः १॥

क०। युद्धको साज सज्यो दुहुंओरन शूरशिरोमणि सर्वसयाने।
लैदल बादल साजिचढ़े कुरुनन्दन पाण्डव शूरसुजाने॥
पारथ से पुरुषारथ वीर पराक्रम वंदित जासु बखाने।
छोड़िभगे बलवानघनै जिनको लखिकालहु हारिपराने॥

औरिबयरिया डोलनलागी औरै होनलाग व्यवहार।
सुनौ हकीकति अब आगे कै शूरन युद्ध कार निर्द्धार १
आशिष लैकै तब भीषमते आगे चले युधिष्ठिर राय।
चरणपखारयोगुरुगोबिंदके जिनकाकहीद्रोणगुरुराय २
आशिषदीन्ह्यों रे पांडवका तुम्हरोसदाहोयकल्यान।
शत्रुसंहारौ रणखेतन मा तुम्हरे अजयहोहिंधनुवान ३
फिरिकै पांडव बोलनलागे सुनिये गुरू द्रोणमहराज।
जौन त्रिलोकीमायोधा हैं तुम्हरे अस्त्र न आवैंबाज ४

जगतसंहारौतुमथकक्षनमा जो कहुं हाथलेहु धनुबान ।
तुम्हरेसंगरहम बरिश्कैवे बालकबिनबलबुद्धिअजान ५
द्रोणा चारज तब बोलतभये सुनियेभूप युधिष्ठिरराय ।
तुमजय पैहौ समरभूमिमा तुम्हरे यादवनाथ सहाय ६
एकद्रोणकी कछु गिनतीना कोटिनद्रोणचढ़ैं रणगाजि ।
जीतिनपावैं यदुनंदन ते भागैं समर भूमि ते लाजि ७
तोर सहायी श्रीकेशव हैं धर्मज बचन मानु ममपाहिं ।
बिजयकिमूरतियदुनंदनहैं तुम्हरी जीतिअंदेशानाहिं ८
हैं धनुधारी जहं पारथसे सारथिकृष्णचन्द्र महराज ।
तहांपराजयकोको कहिये सुनिये पुत्र धर्मशिरताज ९
इतनासुनिकै फिरिपांडवने बंद्यो कृपाचार्य पद जाय ।
आशिषदीन्ह्योंकृपाचार्यने तुम्हरीमंशा होयसहाय १०
धर्मराज फिरिबोलन लागे ओ रणशूरौ बात बनाउ ।
जेहिकीजीवनकीआशाहोइ सोभगवानशरणकोजाउ ११
नहिंपछितैहौ फिरिपीछेका यासों मानौ कहोहमार ।
सुनिकैबातै तब राजाकी बोल्यो नृपयुयुत्सुसरदार १२
मैंशरणागतहौं पांडवकी हे यदुनंदन होहु सहाय ।
जितनीसैना रहै राजाकी पांडवसैन गईअलगाय १३
तब दुर्योधन बोलनलागे सुनिये भीष्मपितामह बात ।
तुम सबसैनाकेमालिकहौ यहकहहोनलागउत्पात १४
भूपयुयुत्सव गोपांडवदल लैकै लक्ष छत्र धर साथ ।
तुमकछुबर्ज्योनापांडवका जनुकोउनाहिंसैनकोनाथ १५
तादिन भीषम बोलनलागे सुनिये महाराज कुरुराय ।
हमकामिलिबेपांडवआयो यहुनिजमानौबचनबनाय १६

कायरराजा हमरे दलका पांडव संग गयो अलगाय ।
यहिकै शंका कछुमानौना सुनिये महाराज कुरुराय १७
करौतयारी तुमलरिबेका सबविधिशंकर करहिंसहाय।
हमअसयोधा कछु नाहीं हैं जोरणचढ़िकै जायँहेराय १८
हमतेरणकरि भृगुपतिहारे कीन्ह्यो महाघोरसंग्राम।
मारिभगायोमैंभृगुपतिका ओकुरुनाथबुद्धिबलधाम १६
हमतेरणचढ़ि सुरपतिहारे देवताभये हारिभयमान।
बड़े २ राजन के मुंह मार्यों हारेबड़े २ बलवान २०
जीतिस्वयंबरमैंभैयाका अपनेभुजबल लायोंबिवाहि।
मैं कछुसमुझौनापांडवका कोटिन माधवकरैंसहाय २१
यहुप्रणराखौं मैं लस्करमा भाषौं समर उठाये बाहं ।
दश सहस्रनितयोधामारौं मारौंसमर सुभटनरनाह २२
काह विचारे हमसन लरिहैं सूधे भूप युधिष्ठिरराय।
सुनिकै बातैंतब भीषमकी मनमा खुशीभयेकुरुराय २३
तब दुर्योधन बोलन लागे सुनिये भीष्मपितामहबात।
बचनहमारेसुनिजियमागुनि तबकछुकहोयुद्धकीघात२४
कौरवपांडव दूनोंदलकी क्षोहिनि अट्ठारह परमान।
ताहिसंहारनकोदोउदलमा हैकोसुभटवीरबलवान २५
सुनिकै बातैं कुरुनंदन की तब भीषमने दियो जवाब।
सुनौदुलारे गंधारीके ओकुरुनायक बात बनाउ २६
तेज संभारौं जो कबहूंमैं मारौंदुओखेदि मैदान ।
एकैदिनमादोउदलमारौं फिरिनाहुआ हाथधनुबान२७
कबहुंककोपैंजो संगरमा द्रोणाचार्य गुरू महराज।
तीनि दिनौनाके अंतरमा दोउदल हनैंशूरशिरताज२८

समर भूमिमा रविसुत कोपै लस्करहनैझारि दिनपांच
तीनि दंडमा द्रोणीमारै फिरिना बचैकोउदलमांझ २६
एकौ पलजो पारथकोपै दोउदल काटिकरै खरिहान ।
हैपुरुषारथअसपारथमा करुदुर्योधनबचनप्रमान ३०
सुनिकै बातैं तबभीषमकी कौरव खाय सनाका जाय ।
दाबिअंगुरिया रेदंतनमा मनमा शोचिश्चरहिजाय ३१
फिरिकैबोल्यो तबभीषमते सुनियें मेरे पितामहबात ।
योधा अर्जुनअसजानतजो तौकारच्योसमरकीघात ३२
बिजयहमारीकेहिबिधिहोइहै पांडवसमरजीतिनाजाय ।
हालबतावो तुमसंगरके केहिबिधिलरबसामुहेजाय ३३
सुनिकैबातैं कुरुनन्दनकी दीन्हो भीष्मपितामहज्वाब ।
हैंबलशाली सबपांडवसुत हैप्रज्वलिततेजकीदाब ३४
करु रखवारीअपनेदलमा नितउठि समरकरौं मैदान ।
दशौं दिनौनामा पांडवदल सबियांकाटिकरौंखरिहान ३५
यही भरोसे निजभुजबल के लेहौं बिजैपत्र लिखवाय ।
मारि पांडवनका मुहुंफरौं चाहै कृष्णौ करैं सहाय ३६
यहौ हकीकति ऐसी गुजरी अबआगेका सुनौ हवाल ।
आयो युयुत्सवपांडवदलमा लैसंगधर्मराजभूपाल ३७
बिनै सुनावैं तबकेशवका करिये नाथयाहि प्रतिपाल ।
पांचौ भइयाहमजैसेहन तैसोइसमुझौदीनदयाल ३८
हंसिकै माधव बोलन लागे तुम्हरी मंशा होयसहाय ।
करौतयारीअब लरिबेकी तौकछु सोझै फेरिउपाय ३९
तुर्त महावत का बुलवायो राजा धर्मराज महराज ।
जल्दीजैयोतुमलस्करमा औसजिलाउमोरगजराज ४०

पवन बराबरचल्यो महावत लायोतुरत गयंदमजाय।
सुमिरिभवानीजगदंबाका औगोविंदकोमाथनवाय ४१
जोरिगदोरिया रेसुर्जनका हौदा फांदि होय असवार।
धरिलेलकारयोरेशूरनका ओरणबाघहोउहुशियार ४२
बजेनगारा ई घनगरजनि बारिस यथामेघघहरायं।
सुनिसुनिचोपैजैडंकाकी दुश्मनखायसनाकाजायं ४३
मारुमारु सहनैया बाजैं हौकैं हाव हाव करनाल।
जेरणमोहरिरणमाबाजैं सुनिभटवीरहोयंविकराल ४४
शंखध्वनिहोइदूनौदलमा कोउसमुझैना अपनिपराय।
रणअभिलाषीक्षत्रीगरजैं हाथनअस्त्रशस्त्रकोलाय ४५
जोरिगदोरिया अरजुनबोलै सुनियेकृष्णचंद्र महराज।
तुमरथराखौदोउसैनाबिच तौबनिजायभलीबिधिकाज
बाग बढ़ायो रथवाजिनकै सारथि कृश्नचंद्रभगवान।
गरजै पारथ रथऊपरते लीन्हे हाथ शरासनबान ४७
दोउदलकेबिचरथठाढ़ोकियो द्धौकर गहेवछेड़नदाम।
धनिधनिकहियेरेअरजुनकाजिनकेभयेसारथीश्याम ४८
ध्याननआवैं मुनियोगिनके नितउठिजिन्है तपस्यैकाम।
योगजगाये बनखंडनमा निशिदिनजपैंरामकोनाम ४९
शेष शारदा अन्तनपावैं गावैं कीरति वेद पुरान।
दीनदयालीसोबनमाली सारथिभयेदासहितआन ५०
पारथदीख्यो दल कौरवका गंगासुत परपरीनिगाह।
आगेस्यंदन है भीषमका जाहिरमहारथी जगमाहँ ५१
उज्ज्वल चांदीसोस्यंदनहै उज्ज्वलघटाटोपरह्योछाय।
श्वेत बछेड़ा रथमा जोते श्वेतैध्वजारह्योफहराय ५२

श्वेतै धन्वा है हाथेमा श्वेतै लगे चाप गुन बान ।
उज्ज्वलकंचनकामुकुटाहै मानौंमयेप्रज्वलितभान ५३
काला स्यंदन गुरुनायकका जोते चारि बछेड़ाश्याम ।
तापर सोहैं द्रोणाचारज शिक्षक अस्त्र शस्त्रकेधाम ५४
लखिदलभीतरकृपाचार्यको अरजुनबिस्मयकियोबनाय
फिरिसोंभैयाकौरवदेख्यो शिरपरश्वेतछत्ररहेछाय ५५
फिरिकैदीख्योसिंधुराजको मामाशल्यहिलख्योबनाय ।
शोचआइगोतबपारथको मनमाखायसनाकाजाय ५६
बंधु कुटुंबी सब चढ़िआये आयो युद्ध करन परिवार ।
इन्हैंमारिकैकाजयपइहौं करतेधनुषबानदियोडार ५७
होइ न भटता कुलमारेते ईना काम शूरमन केर ।
भैया बांधव सब मेरे हैं कापरगहौंधनुष गुनहेर ५८
तबसमुझायो यदुनन्दन ने पारथ सुनौ हमारी बात ।
धर्म क्षत्रियनकेछोड़ौना यह मतिफेरिनलाइयतात ५९
रणपर चढ़िकै जो क्षत्री डरै जावै अंतकाल यमधाम ।
धिकहै बाना क्षत्रीपनका धिकहै शूरबीर असनाम ६०
कोपिकै आयो रणखेतनमा पायोकहां शोचिअबज्ञान ।
संभरिकै बैठौ तुमस्यंदनमा लैकरगहौधनुषऔबान६१
शत्रुसंहारौ समरभूमि मा पारथधीर बीर बलवान ।
स्वर्ग बसेरा सबकाहूका इकदिनअवशिजाइहै जान६२
वृद्धबाल औ ज्वान सयाने कोउ न बचै कालकीफांस ।
सृष्टिबिधाताकैजहंलगहै इकदिनहोयअवशिकैनास६३
दोषतुम्हारो कछुनाहीं है दुनिया फंसी कालकीदाम ।
साहसचहिये रेक्षत्री का उनके लरन मरन केकाम६४

समर भूमिते जोतजिभागै ताकोहोय न कीरति नाम।
हँसै शूरमासबतारीदै औना मिलै अंतमम धाम ६५
दानमान औविजयवीरता यहसबधर्म क्षत्रियन क्यार।
तातेपारथधनुहाथेगहु यहुना समयशोचिबो त्वार ६६

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षित निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व
कृष्ण कृत अर्जुन शिक्षा वर्णनन्नाम द्वितीयोध्याय: २॥

हाथजोरि कै पारथबोले सुनिये दीन बंधु यदुनाथ।
मारिकुटुम्बो औ मैयनका मैंकेहिभांतिन होउंसनाथ १
पुण्यखोइजाइ जन्म जन्मकै होवै महापापकै खानि।
अंतकालका यम पुर देखै होवै सुकृत सर्व की हानि २
कुलगुरुबंधव सबरण मारैं ऐसा कहा होयममकाज।
राजिन लेहैं। गोत्र बद्धकै जैहैं। बनैं छोंड़िकै राज ३
तब समुझायो फिरिमाधवने पारथ वचन करौपरमान।
वेदवाक्य हम तुमसनभाषें भाषैं जो कछु कहैपुरान ४
जीवत संगै के साथी हैं माता पिता बंधु गुरु भ्रात।
होयनसंगी अंतकालको उ झूठो सबै जगत को नात ५
अपनो संगी धर्म कर्म है दूजो जाय संगना साथ।
मायाफंदन कोउ छूटना लागो जन्म मरण के हाथ ६
जन्म मरणते वा दिन छूटै होवै पुण्य पापते नास।
शरण हमारी सो पावतिहै पावै सोई स्वर्ग को बास ७
सृष्टि विधाता को जहंलगहै बांधो पुण्य पापकी दाम।
नर देही की जर एही है आवे धर्म कर्म निजकाम ८

माया बंधनते सोइ छूटै जाके हिये प्रकाशै ज्ञान ।
मन चंचलता औधीरजते पावै भुक्ति मुक्तितन प्रान ९
दशहू इन्द्रिन को राजा है यह मन भुक्तिमुक्ति दातार ।
दयाविराजै जाके उरमें ताउर धर्म करै परचार १०
सृष्टि विधाता की जहंलग है सब के हृदय मोरहै बास ।
बेद बखानतहै नीकी बिधि आतम जीवमोरपरकास ११
नदियन मैहांहैं गंगाजी पारथ रूप हमारोइ मान ।
पीपरजानौमोहिंवृक्षनमा ऋषियनमांझदेवऋषिजान १२
औऐरावत है हाथिनमा देवन मध्य कपिल महराज ।
हयउच्चैश्रव मैं बाजिनमा बेदनसामबेद सों काज १३
मैं हौं शंकर रे भक्तनमा पुरुषन मध्य नृपतिमोहिंजानु ।
हौं सुर नायक मैं देवनमा सर्पनमध्य बासुकी मानु १४
नागनमैहांजानु अनंतहि औ नव ग्रहन मध्य मैं भानु ।
जानुहुताशनरेतेजनमा नारिन श्रेष्ठ अंगना जानु १५
गुणतीनौ मा सतगुण जानौ पारथ वचन करौ परमान ।
जोकहुं उपजौमृत्युलोकमा चारिउबरणमध्यअनुमान १६
लिखे विधाता के सब होइ हैं अपने धर्म कर्म अनुसार ।
तातेशंका तुममानौना होइ है सब प्रकार निर्धार १७
विजयपत्र लेव रणसागर में होइ है सदातोर कल्यान ।
वहिक्षनपारथबोलनलागे सुनियेकृष्णचन्द्रभगवान १८
ज्ञानदृष्टि जोमोहिंदरशावो तौबनिजाय मोरसबकाज ।
सुनिअसवाणीहरिअर्जुनकी कीन्ह्योयथातथ्यसोइसाज
दिव्य दृष्टि अर्जुन कीकीन्ह्यो हरि दरशायोरूपविराट ।
ब्रह्मअण्डसबमुखमहंदीख्योमेघावरणशीशनभआट २०

भानु चंद्रमादोउनयनन को सुंदर शुद्धलख्योपरकास।
लख्योहुताशनशुभआननका रसना लख्योशारदावास
कंध महेशहि तारादंतन बाहू लख्यो सुभग सुरराय ।
लख्योविधातारेहिहिरदयका नाभीअंबुधिलख्योबनाय२२
पीठि अष्टवसुजंघादिगपति हैं पदविष्णु रोमतरुजानु।
हाड़ पहाड़नको तुम जानौ है मन बेदकारिकामानु२३
मांसवसुंधरिनखहैं नदिया अर्जुन दीख्यो रूपविराट ।
मुखविस्ताख्योकृष्णचन्द्रतब पारथलख्योनैनसोंडाटि२४
मृत्युवश्य सब दुनियां जान्यो अर्जुनअचरजरहेभुलाय।
कंपीदेही तब पारथकी रथपर नैन मूंदि रहिजाय २५
जब यह जानो यदुनंदनने अर्जुन रूपदेखि चकितान ।
रूपप्रथमहींकाधारणकियो तुरतैहरिविराटकोज्ञान २६
हंसिकै बोले तब पारथते पारथ नैना देहु उघारि ।
नैन उघारे जब पारथने सन्मुख लख्यो रूपवनवारि२७
गहेबछेड़न की जोतीकर रथ पर बैठ सारथी श्याम।
अस्तुतिठानीतबपांडवने हैयुगचरण नाथ परणाम २८
संत सहायकहेकमलापति तुम प्रभुअहौदीनजन प्रान।
जन्ममरणऔभक्तिमुक्तिके होतुम देनहारभगवान २६
शंका मेट्यो मोरे जियरेकै हेयदुनंदन दया निधान।
अबमैंलरिहौंसमरभूमिमा यह कहिलियोहाथधनुवान
शंख बजायोरे माधवने घूमन लागे लाल निशान।
खलभलपरिगा दूनौ दलमा संभरेसबैबीरवलवान ३१
सिंहदहारनि क्षत्री गरजे इतउतबंबदीन बजवाय ।
युद्धनगारा बाजन लागे क्षत्रिन अस्त्रलीनलवलाय३२

भयोकुलाहल दूनौंदलमा हाहाकार भयो असमान ।
बड़े २ योधाभे आगेको कैकै महादेव को ध्यान ३३
भीष्म पितामह द्रोणाचारज आगे बढ़े कर्णमहराज ।
भीमभयंकरआगेबढ़िगयो आयोसमरमनौयमराज ३४
धरिलैलकारीतव माधव ने पारथहाथ लैहुधनुवान ।
मुर्चालीजो तुम भीषम का करिये समर भूमिमैदान ३५
चाप संभार्यो करअर्जुन ने औभीषमहिं सुनाईहांक ।
करौंबंदना तुवचरणनमैं करिये समरयुद्ध की शाक ३६
यह कहि अर्जुनधनुषवान लै औभीषमपै दीनसंधानि ।
बीचहिकाट्यो गंगासुतने औकहि सुनौकृष्णभगवान ३७
भक्तकेकारणतुमसारथिभयो पाण्डवकसनाहोयंसनाथ ।
धनि पुरुषारथ हैपारथ का सारथिरथैभयेयदुनाथ ३८
रथै बढ़ायो तव सारथिने भीषम पाणिगह्यो धनुबान ।
युद्ध अरंभ्यो दूनौंदलमा उठिगे दोउ ओर घमसान ३९
अपने २ लै बरबरिहा मुर्चन लरन लाग बलवान ।
धरि२ गरजैं दोउदलयोधा आयोप्रलयकेरसामान ४०
भीमसेनदुश्शासनभिरिगे धृष्टद्युम्न द्रोण महराज ।
नकुलजयद्रथकामुर्चाभिरो कीन्हेसकलयुद्धकेसाज ४१
सहदेवशकुनीका जोटाभयो छोटाकोऊ समरमानाहिं ।
शल्ययुधिष्ठिरकै बरणीमैं लागोहोन युद्धरणमाहिं ४२
भिरिगसात्वकि औ भूरिश्रव औकृतवर्माभूप बिराट ।
द्रुपद नरेशहुके मुर्चापर लियोभगदन्तयुद्धकोठाट ४३
सोमदत्त ते उत्तर भिरिगो हैबलवन्ता तनय बिराट ।
काशिराजऔकृपाचार्यसों जारीभयो युद्ध को ठाट ४४

भूपअलंबुषते घटउत्कच औ शशिबिंदु शंख संग्राम।
द्रोणिशिषडीते मुर्छापरयो अपने किये युद्धके साम ४५
हैद्रुषमेनो चेतिकरिक्षा रणमाघोर युद्ध घमसान।
बानकैबरी छूटन लागे सबहुशियार भये बलवान४६
मर्मर २ उठैं घर्लुहियां रोदा ठनकि ठनकि रहिजाय।
बरसैंशायकदूनौंदलमा मानौ मघानखत झरिआय४७
अपन परावोपहिंचानैना क्षत्रिन मारुमारु रटलागि।
अपनो २ जीति मनावैं करषा ढाढ़ी सुनावै लाग ४८
बानअसंख्यनकैझरिबरसैं चहुंदिशि मारु २ रटलागि।
युद्धनिशाना बीरनबाना उड़ि २ करैं बढ़ेड़न मारु ४९
हौदाहौदाते इकमिलभयो ऊपर होय महउतनमारु।
शूरबरोबरिकै बरनी है एकते एक दई का लाल ५०
धुसेबढ़ेड़ा इक एकनमा हाथिन अड़ो दांत सां दांत।
पैदल पैदलको मुर्छापरो है असवारसंग असवार ५१
खरखर २ ई रथ दौरैं सारथि घोड़ा नचावति जायं।
गरजैं हाथी दूनौंदलमा कायरयुद्धछोड़िभगिजायं ५२
हलुके घायनके सहिजादे उठि २ फेरि गहैं धनुबान।
अपने २ मुर्छा डाटैं बरसैं बान भूमि असमान ५३
इन्द्रसकाने इन्द्रासनमा औ शिवडोलि उठे कैलाश।
देवता कंपे स्वर्गलोक मा रणमाउठिगे युद्धमसान ५४
देखैं तमाशा नभपर बैठे इत उत शूर समरकै मारु।
महाभयानकरणहल्लाभयो धरु २ मारु२ ललकारु ५५

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि पं० रामरत्नस्याज्ञाभिगामी पं० बन्दीदीननिर्मितभीष्मपर्वे युद्धारंभ बर्णनन्नाम तृतीयोध्यायः ३ ॥

सुमिरि भवानी जगदंबा का रघुनंदन के चरणमनाय ।
भीषमपारथको महभारथ रहिगेआसमान शरछाय १
दोऊ योधा रणमा कोपे लोपे अन्धकार मा भान ।
क्रोधित ह्वैकै तब भीषमने मार्योबीशबानहनुमान २
कौनोकौन्यो ते कमती ना योधा महारथी बलवान ।
ऐंचिकमनियां फिरिरोदाते मार्योकृष्णहृदयदशबान ३
सहसबानसोंपारथतोपेउ पांडव स्यन्दनरह्योछिपाय ।
औंकुइबाननतेवाजिनका घायलकियोपितामह धाय ४
बरषाकीन्ह्यों रे शायककै रणमामच्योघोरघमसान ।
तीरकैबरी भर भर छूटैं खरखरउठैं अगिनियांबान ५
जीति मनावैं अपनी अपना औकुलदेवता रहेमनाय ।
आजु अखाड़े मा बरणीहै हे गणनायक होहुसहाय ६
सबदल बिचल्योहै पांडवका रोपे समर रहैं नापायं ।
सातै शरते ध्वजा गिरायो पांडव गयो सनाकाखाय ७
बान सुधार्यो रे धन्वा मा लैकै नाम दूर्गा माय ।
साठिकशायकहनिभीषमउर राख्योआशमानशरछाय ८
हनि २ मारैं सुत कुन्तीका जैसे गिरै इन्द्र की गाज ।
सातबाणते हन्यो पताका सारथिहिये बेधिदशबान ९
घायल कीन्ह्योहय भीषमके पारथ घोरबीर बलवान ।
तकिर मारैंदलकौरवका घैहागिरैं कराहि कराहि १०
बानकैबरी जेहिके लागै सोरण गिरै पछारा खाय ।
बड़े २ हाथी रे कौरवके सोरण भूमि गिरैं भहराय ११
करिसौखण्डारे स्यंदनके केतनेउ धरती दयेगिराय ।
मारिपछार्यो दलपैदल सब शंकाखायजायकुरुराय१२

बड़ि २ रानिनकेइकलौता हाथे लियेधनुष औवान।
कायरभागैंसंगरतजिकै अपने अपने लये परान १३
दूनौदलमा ढाढ़ी बोलैं करषाबीर सुनावति जायं।
स्वर्गबसेरासबकाहूके आखिर सबै स्वर्ग काजायं १४
उड़ि २ जुझौ कुरुक्षेत्रमा सोहराचले अगारी जायँ।
जैसे पातागिरितरवरते फिरिकै बहुरि वृक्षनाजायं१५
मानुषदेही यह दुर्लभ है ह्वैहैफेरि जन्मना आय।
जोकोउजूझै सन्मुख दलमा तेहिका इन्द्रपरीलैजाय१६
घायल ह्वैह्वैरणके दुलहा धरती गिरैंभरहराखाय।
हलुके घायन के सहिजादे उठि २ फेरिमारुवरायं१७
अतिरिसकोपेउपारथरणमा जलथल पूरिदीनबहुवान।
भागपखेरू तबजंगल का अपने लैलैभगे परान १८
एक वान जो पारथजोरैं धनुगुनहोयँ जोरि दशवान।
छोड़तसौतेहोयहजारन सब दलकाटिकीनखरिहान१६
युद्ध देखिकै तब पारथ का कौरव खायसनाकाजाय।
अतिशयकोपेउभीषमरणमा शायकधनुषलीन्हलवलाय
गनि २ मारयोपांडवदलका भागे समरछोड़िवलवान।
कायर भागैरे मुर्चनते अपने डारि भूमि धनुवान २१
ऐसिनौकरी हम करिहैंना नाभारू हैं कछू परान।
शूरहजारनघायलकरिकै भीषमहने अनगिनतबान २२
दोऊ बरोबरि पुरुषारथमा एकतेएकदई को लाल।
बहुरणदुलहाधरतीगिरिगयेनदियाबहैरक्तबिकराल२३
गिरिगइं पगड़ी रनशूर न की मानौकमलफूलउतराय।
कटि २ बाहूंभुइंमागिरिगइं मानौनागरहेमननाय२४

छोटे पर्वत सम हाथी गिरैं कल्ला कटैं बछेड़न केर।
गिरैं सांड़िया समर भूमिमा बेहरा गिरैं सिपाहिन केर २५
क्रोध आइ गो तब भीषम का लीन्ह्यो अग्निबान संधानि।
पांडवदलमा शंका होइगै अबतौ प्रलय आयन गिचानि २६
ज्वाल हुताशन शरते प्रगटी जस बड़वानल जरै कराल।
जलनै लाग्यो दल पांडव का क्षत्री भगे हालबेहाल २७
खलभल परिगै पांडव दलमा लागे जरन शूर सरदार।
पारथ साध्यो वरुणबाणका बरसन लाग मेघ जलधार २८
अग्नि बुतायो तब इक पलमा सम्हरे शूर पांडवन केर।
बल्लभी जिगरणशूरन के भीजे पुंखसहित शरढेर २९
छुटे नशायकरे धम्वाते व्याकुल भये बीर बलवान।
पवन अस्त्र कर भीषम लीन्ह्यों क्षनमहं पानी किह्यो उड़ान
सूखि सनाहै गई शूरन की लागे उड़न शूर असवार।
छूटे भुअंगम शर पारथके कीन्ह्यो नागपवन आहार ३१
फन फुफकारे अजगर धावैं लीलैं सैन शत्रु को धाय।
भये हलाहलते भट व्याकुल गिरि २ परें धरणि महराय ३२
लीन्ह पितामह तब खग पति शर देखत नाग भाग भयखाय।
हनि २ छोटै भीषम मारैं शूरन धरती देय गिराय ३३
धनुसंधान्यो फिरि पारथने भीषम रथैं दियो शर छाय।
हंसिकै बोले तब गंगासुत सुनिये महाराज यदुराय ३४
रथ दनहांक्यो यदुनंदनने भीषम पास गये नियराय।
जोरि गदोरि या भीषम बोलैं सुनिये संतभक्त सुखदाय ३५
लरिबे लायक अर्जुन नाहीं यह निजु बचन करौ परमान।
पांडुवंश के तुम रक्षक हौ सारथि भये आप भगवान ३६

संभरिकै बैठो अब स्यंदन पर घोड़नवागधरौमनलाय।
तीक्षणशायकमैंछांड़तिहैं अब पारथकोकरौसहाय ३७
जबसंधान्यों शरभीषमने गयोसुरलोक सनाकाघालि।
पांडवदलसबकांपनलाग्योऔभयमानभयेदिगपाल ३८
थर थर थर थर वसुधा कंपी कंपे शेष नाग पाताल।
जोशर पायो भृगुनंदनते भीषम छोंड़िदीन शरजाल ३९
भयोउजेरारेदशहूदिशि मानों उये सैकरन भान।
फिरिकैमाधवबोलनलागे पारथ खबरदारहो ज्वान ४०
सावधान ह्वै रथपर बैठो देखौ युद्ध केर सतिभाव।
अर्जुनशोच्योअपनेमनमा भीषम देनचहतशरघाव४१
जादिनपारथगे सुरपुरका दैत्यनमारि कीन सुरकाज।
मुकुटबंधायोशिरसुरपतिने मनमाखुशीभयेसुरराज ४२
शायक दीन्ह्यो तबअर्जुनको औपांडवसुतबातबनाव।
जब रणसंकटतुमका व्यापै शायक तुर्तछियो करिचाव
सो सुर शायक पारथ पाये तबते भयो किरीटी नाम।
शरसंधान्योसोइ पारथने औपढ़िमंत्रफोंकदियोबान ४४
जितने शायकरहैं भीषम के क्षनमाकाटिकीनखरिहान।
देखिशूरताअब अर्जुन कै मनमा खुशीभये भगवान४५
तब ललकारयोरे भीषम का सुनु गंगासुतबात हमारि।
साधिकैधन्वारथपर बैठो कीजै आजुसमरमारारि ४६
दूनौयोधाफिरि रणकोपे लाग्यो होन महासंग्राम।
जो कोउयोधासन्मुखजूझै तुरतैचलाजायसुरधाम ४७
भीमभयंकर मनमाकोपेउ रथतेउतरिपरयोअरगाय।
युद्धमचायो कौरवदलमा लस्करबीचगयोसमुहाय ४८

गदाकिचोटै जेहिकेलागैं मानौ कालिहकमारा आय ।
गदाप्रहारै जेहिहाथीके दलमाचिघरि२ रहिजाय ४६
गदाबह्वेड़के हनिमारै संगर गिरै भरहरा खाय ।
गदाबहादुरकेतनलागैं सोसुरलोक रहै नगिचाय ५०
मारिशूरमनके मुहं तोर्‌यो लस्कर मारिकीनसंहार ।
जोकोउपावै लखिआगेपै तेहिकाधरती हनैपछार ५१
स्यंदनस्यदन परधरिपटकै पहिया चूरचूर ह्वैजाय ।
बाजिबाजि पर धरि२ पटकै गजपरगज पछारैधाय५२
सबदलभाग्योरेकौरवका अपनी छोंड़िविजयकी आश ।
दूनौलस्करइकमिलहोइगे जहंसूझैनाअपनिपराय ५३
संभरिशूरमागे कौरव के अपने हाथ लिये धनुबान ।
इतउतशायक बरसनलागे लोपेअंधकार सा भान ५४
शायकछूटैं महारथिनके घैहा गिरैं करहिकराहि ।
कालबरोबरि क्षत्री छूटैं लागेघायकरैं ना आहि ५५
केतनेउं योधा रे कौरव के दीन्ह्यो पठै भीम यमधाम ।
जोकोउ योधा सन्मुखपावै रणकेफेरि न राखैकाम ५६
खलभलिपरिगैकौरवदलमा दीन्ह्योद्रोणगुरूतबहांक ।
सावधानहोसमरभूमिमा आोपाण्डवके पुत्रचलांक ५७
तुइंदलमारे रे कौरवका तेहिते बढ्यो गर्बबिकरार ।
आजुसोवैहौ तोहिंसंगरमा सुनुरेभीमसेन सरदार ५८
कामपर्‌योनाकोहु योधाते अबरणसहौ बीरकीघात ।
अबलग खेले तैं कूरन संग अबभोशूरसामुहोंतात ५९
धनुसंधान्यो द्रोणाचारज मार्‌यो भीमहृदयदशबान ।
भग्योवृकोदरअपनेदलका तबरथहांकिदीनभगवान६०

सन्हरेक्षत्री दूनौदलमा छूटनलगे कैबरी बान ।
पारथभीषमकोमुरचापरो एकते एक बीरबलवान ६१
लोहेआंकर दूनौ योधा काहू अंग न आवै घाव ।
पारथदेख्यो भीमसेनका भाग युद्धछोंड़ि बलराव ६२
दुचि तेदेख्यो रे पारथका भीषमहनेसहस दश ज्वान ।
शंखबजायो समर जीतिका घूमनलागेलालनिशान ६३
युद्धअन्तभा दूनौदलमा संध्याकाल अस्त भेभान ।
भईपराजय रे पाण्डवकै भीषमविजय कीन मैदान ६४
सैनाफिरिगइं दोउओरनकी क्षत्रिनलियोभवनकीराह ।
जीतिकोडंकाबाजनलाग्यो कौरवखशीमानहोइजाहि६५
मुर्चा फिरिगे दूनौदलके क्षत्रीगये आपने धाम ।
करैंरोसइयांसहगामिनितियक्षत्रिनखानपानकेकाम६६
हौदाउतरे तब हाथिनते औ तंग छूट बछेड़न क्यार ।
बख्तरउतरे रेक्षत्रिनके ज्वाननछोरिधरे हथियार ६७
पांचौ भैया भूप युधिष्ठिर गंगाजलसों कीन नहान ।
कलशमंगायो भरिगंगाजल तबस्नानकीन भगवान६८
पूजन करिकै महादेव का चौका गये युधिष्ठिरराय ।
कंचनथारनसजी रोसइयां भोजनकरैंसाथयदुराय ६९
तबै द्रौपदी बोलनलागी सुनिये कृष्णचन्द्र भगवान ।
आजु मूर्चा केहिक्षत्रीलियो केहितेरह्यो खेतमैदान ७०
सुनिकैबातैं रे द्रुपदीकी दीन्ह्योज्वाब कृष्ण महराज ।
आजुशूरता रहि भीषमते भीषमलियोखेतरणआज७१
सुनौदुलारे रनिकुन्ती के पारथ सुनौ हमारीबात ।
शंखशूरमा तुम्हरेदलका दलपतिकरौ होतपरभात७२

तुमसंहारो रे कौरवदल　तौ कछु बनै युद्ध की घात ।
कही द्रौपदीतबगोबिंदते सुनियेमहाराज यदुनाथ ७३
एक अंदेशा मोरे मनमा　सोमैं कहौं जोरिकै हाथ ।
शंखककरिहौ जो सेनापति　तौकाकरैं पांडुसुतनाथ ७४
इनतेयोधा को दूजोहै　मुर्चालेय पितामह क्यार ।
तब समुझायो रे माधवने　रानी सुनियेबचनहमार७५
हालतुम्हारो कछुजानोना　चहियेसमर युद्ध की घात ।
फिरिसलेलकार्योनृपबिराटको यदुपतिकृष्णचंद्रकहिबात
आजुचमूपति शंखैकरिहैं　देखिहैंसमरभूमि मैदान ।
तबबुलवायो धर्मराजको　दीन्ह्योमुकुटशंखशिरआन७७
जोरिगदोरियाबोलनलाग्यो　सुनियेभक्तनाथअसुरारि ।
तुवपदपंकज की दाया ते　होइहै नहीं पांडवनहारि७८
तुमअससारथि भे पारथके　भीषम लियोसमरमैदान ।
जोमैं सारथि तुमअसपावौं　सबदलहनौंएकहीबान ७९
दलबिचलावों रे कौरवका　योधासमर सोवावोंआज ।
केतन्योभीषमजो चढ़िआवैं　केतन्योंचढ़ैंद्रोणमहराज८०
पारनपावैं समरभूमि मा　सुनिये कृष्णचन्द्र महराज ।
तबहरिसात्वकिते बोलतभयो　सारथिहोहुशंखरथआज
बाग बछेड़नकी रथसाधौ　देखौ शंख भीषममैदान ।
लैकैअज्ञा तबमाधवकै　सात्वकिसजै शंखरथवान ८२
नवलबछेड़ारथमाजोतै　जिनकी थांभिबाग ना जाय ।
शंखसारथीहवै रथबैठ्यो　श्रीमाधवके चरणमनाय ८३
लैकैअज्ञा धर्मराज की　स्यंदन शंखबिराज्यो जाय ।
मुकुटबिराजैशिरसुबरणका मानौंभानुप्रभारहिछाय ८४

बिजयनगारे दलमाबाजे क्षत्री फेरि भये हुशियार ।
अपने अपने बाहन लैकै तुरतै फांदि भये असवार ८५
नंदिघोषपर पारथ सोहैं जोती गहे जगत के नाथ ।
मारूबाजाबाजनलागे क्षत्रिन अस्त्र शस्त्र लियेहाथ ८६
चलिभो लस्कर रे पांडव का जहंपर कुरुक्षेत्र मैदान ।
खम खम खमरस्यंदन दौरैं गरजैंगरूहांकदैज्वान ८६
चिघरैं हाथी रे लस्कर मा बाजै टाप बछेड़न केरि ।
घहरैं पइहा रथ रब्बनके कायर भगैं शायरनहेरि ८७
ढाढ़ी करखा गावन लागे सुनि भट बीररूप ह्वैजायं ।
घरीपहारुकके अरसामा पहुंचे समरभूमिमा जाय ८८

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशांतर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्वचतुर्थदिन
युद्धारंभबर्णनन्नाम चतुर्थोध्याय: ४ ॥

सुनिदुर्योधनतबपांडवदल पहुंच्योसमरभूमिकेख्यात ।
जोरिगदरियाबोलनलाग्यो सुनियेभीष्म पितामहबात १
धनि२मातातुम्हरीकहिये जिनकीकोखिजन्मलियोतात ।
धनि२तुम्हरे क्षत्रीपनका राख्यो मोरिसमरमा बात २
अर्जहमारी यक सुनिलीजै तौसबबनैं सहजमा काम ।
मुर्चालीजौ रे पारथका करियेसहित पराजय श्याम ३
पारनपावैं अरजुन रणमा होइहै युगनयुगनलौंनाम ।
तादिनभीषमबोलनलागे सुनुकुरुनाथबचनअभिराम ४
करौतयारी समरभूमि कै हैना काम शोचिबे क्यार ।
मारूबाजातब बजबाय दये क्षत्री सबैभये हुशियार ५

विजय नगारा बाजनलागे घूमन लागे लालनिशान ।
रणकंडालैं हहरनलागीं सुनि सुनिसिंहभयेबलवान ६
बंब बोलिकै क्षत्री चलिभे घूमत ध्वजा बैरखै जायं ।
चिघरतहाथीदलमाआवैं इतउतघोड़ानचावतिजाय ७
हाथजोरिकै कौरव बोले ओ रणबाघौ बात वोनाव ।
भागिनजैयो कोउ मुर्चनते हैपति धर्म केरसतिभाव ८
जीति लड़ाई जो घर जैहौ दूनी तलबै देहौं बढ़ाय ।
देहौंजगीरै मैं क्षत्रिनका लरिकासातसाखिलगखाय ९
चलिभो लस्कर रे कौरवका आयोकुरुक्षेत्र मैदान ।
रथहैआगेभीषमपतिका अतिशयमहारथीबलवान १०
देख्यो भीषमपांडवदलका बांध्यो मुकुटशंखशिरआज ।
कीन्हौ कारण समरभूमिमा सैनापतीशंखमहराज ११
तबहिंबढ़ायोसात्यकिरथका कीन्ह्योभीष्मसामुहेंजाय ।
चारिउ नयनाइकमिलहोइगे करधनुबानलीनलवलाय
गिरैसलामी तब शूरनकै दीन्ह्यो शंखछोड़ि दश बान ।
काटिगिरायो सोभीषमने मारे शंख हियेदशबान १३
शंख सामुहैं सोशर काटे लागो होन परस्पर मारु ।
फिरिकैमार्यो रेभीषमका राजाशंखबानकतिफारु १४
देखिलड़ाईतबभूपतिकै मनमाभीष्म बहुत रिसिआन ।
बज्रप्रहारीकरशरलीन्ह्योछोड़्योकालसरिससोबान १५
बख्तर काटे रे अंगनके जूझन लगे सुघरुआ ज्वान ।
शायक बरसैं चौतर्फाते मानौ मेघ वृष्टि के धान १६
अपन पराओ तौसूझै ना क्षत्री गिरैं भरहरा खाय ।
तबरिसिआन्योराजाशंखौ घाल्योभीष्मअंगशरधाय १७

भीष्मपितामहके मुर्चापर शंखारहिगयो पार्थअड़ाय।
शूरन शूरन कै बरनीभै घरनीरही लोहसों छाय १८
पैदलपैदलकी बरनीभै औ असवारन ते असवार।
खटखट २ तेगा बरसैं चमकै छपक २ तरवारि १६
चलै सिरोही दूनौंदलमा घैहागिरैं कराहि कराहि।
रथीरथीसोंसारथिसारथि औ गजदंतदंतधरिखाहि २०
हल्लाहोइगयो दूनौंदलमा क्षत्रिन धरे हाथपर प्रान।
सुमिरिभवानीजगदंबाका पारथ हाथसुधार्योबान २१
स्यंदनहांक्यो यदुनन्दन ने अर्जुन करनलाग मैदान।
कटकपदातिनकाबहुमार्यो गिरिगेधराक्षारमोंज्वान २२
स्यंदनस्यंदनसंबचूरणकियो औअसवारउपरअसवार।
सैनसंहार्यो बहुकौरवकै शंकाखायजायं सरदार २३
कटि २ बोटीगिरैं खेतमा उठि २ रुण्डकरैं तरवार।
मुड़नकेरे मुड़चौराभये औ रुण्डनके लागपहार २४
गिरैंसुघरुआ रणखेतनमा नदिया बहै रक्तकी धार।
गिरेसिपाही दुर्योधनके कितनेउँ जूझिधराकीक्षार २५
धर्मकिसारथीकाललैलकार्यो मनमाकोपकियोकुरुनाथ।
जहांकपिध्वजकोरथठाढ़ो सन्मुखअस्त्रसुधार्योहाथ २६
दब्योदुशासनलैयोधनका स्यंदन घिर्योपांडुसुतक्यार।
धनुसंधान्यो दुर्योधनने लै कै नाम दूर्गा क्यार २७
तोप्योबाणन रथ अर्जुनका जैसे मेघ झरैं जलधार।
छायअंधेरिया दलभीतरगइ उड़िरहिसमरभूमिमाक्षार
अपनपरावो कछु सूझैना तबपारथ ने कियो बिचार।
बाणसुधार्यो रे धन्वामा जो शरदियोरहै सुरराज २८

सबशर काट्योदुर्योधन के औ हनिमारे भूप हजार ।
तबशंखध्वनिअर्जुनकीन्ह्यो वहपाण्डवनशूरसरदार ३०
छत्रभूपतिनके भुइंमागिरे मणिमयचर्मकि २ रहिजायं ।
शीशहजारन धरतीपाटे काटे रुण्डमुण्ड अलगाय ३१
जौनीदिशिकाअर्जुन ताकैं तहं रथहांकिदेयं भगवान ।
अथजल मुर्दा धरती लोटैं जिनके लगेकरेजेबान ३२
लोथिचिह्हारीलैलैभागैं चहुंदिशि कागरहे मड़राय ।
लिहेयोगिनी खप्पर नाचैं औ बैतालकलोलैंगाय३३
रुण्डमुण्ड लै पक्षी भागैं लरिलरि खायं शूरमनस्यार ।
सबदल विचलयो दुर्योधनका रोंपेरहैंसमरनापायं ३४
कौनशूरमा है धरतीमा मुर्चालेय कपिध्वज क्यार ।
बैठसारथीजिहिके रथपर त्रिभुवननाथकृष्णकर्तार ३५
गरजिदुशासनरे सन्मुखभयो मार्योसातपारथहिबान ।
कोपिकैपारथशायकमारोसारथिगिरोदुशासनक्यार३६
उतरि दुशासन भुइंमाआयो मारोकृष्णहिये दशबान ।
हट्योदुशासनजबमुर्चाते सन्मुखभयोसुयोधनज्वान ३७
झुके शूरमा दूनौ दलके अंधाधुंध चलैं हथियार ।
मारिशायकनतेरथपाटो स्यंदनछिप्योधनंजयक्यार ३८
धायवृकोदरतबसन्मुखभयो औरणमांझ दीनिललकार ।
भागिगजैयोकोउसन्मुखते करियेयुद्ध साजिहथियार ३९

क० । कूपतड़ागनबाग जहां सुरमन्दिर हीन सो ग्राम नहींहैं ।
हैंद्विज सेव न पूजनदेव न मंगल भेव सो धाम नहींहैं ॥
धर्म सुकर्म के पंथ लग्यो नहिं बंदितसोवह दामनहींहैं ।
कूरन को रनमें डरपे रन शूरन के यह काम नहीं हैं ४०

भीमसेन के तब मुर्चा पर संगररच्यो द्रोण महराज ।

दुओशूरभाइकमिलहोइगे अपने युद्धविजयकेकाज४१
तब लैलकारयो गंगासुतने सुनिये गुरुद्रोणमहराज ।
कौरव पारथ का मुर्चा है एकते एक शूरशिरताज ४२
शंख भूप का तुम मुर्चा लेव तौकछुबनै युद्ध के काज ।
मैंबलदेखौंतौपारथकाकिहिविधिकरै समरकोसाज ४३
इतनाकहिकै गंगा सुतने अपनो स्यंदन दियो बढ़ाय ।
रथ दुर्योधन का पाछेकियो आगे हांकसुनायो धाय४४
सम्हरौ पारथ समरभूमिमा तुम्हरोकालरह्योनगिचाय।
तुइँदलमारे बहुधोखेमा अबकरुसमरशस्त्रकरलाय ४५
कृष्णसहायनते बचिआयो ओ पांडवके राजकुमार ।
सुनिकैबातैंतबभीषम की अर्जुनकियोकोपविकरार ४६
बाणसुधारो धरिधन्वामा औ भीषम का दयो जवाब ।
ऐसी बातैं तुम भाषौना गंगासुवन भीष्म महराज ४७
मैंमंसइया सब की देख्यों जादिन घेरो नगर विराट ।
मारिशूरमनको मुहं फेरो जीत्यों बड़े बड़े सम्राट ४८
बड़ि २ बातैं तुम ब्वालौना देखिहैं आजसमरमैदान ।
भिरिगे योधा दोउआपसमा छूटनलागकैबरी बान ४९
बड़े लड़ैयादोउ धनुधारी एकते एक समर बलवान ।
रहि २ गरजैं रथऊपरते बर्षामनौ मेघ घहरान ५०
यहोलड़ाई पीछे परिगै अबआगे के सुनौ हवाल ।
शंखद्रोणते मुर्चापरिगो मानौं लरैं समरमा काल ५१
बाण बाण ते धरि २ काटैं लागे अंग घाय विकराल ।
चारिउघोड़ागुरुस्यंदनके डारो शंख एकशरघालि ५२
स्यंदनटूट्यो गुरुनायकका घायल कियो सारथी धाय ।

बहुदल मारो दुर्योधनका शंकाखाधगयोकुरुराय ५३
मुर्छाफिरिगो गुरुनायक का राजा शंख लीन मैदान ।
मनमाक्रोधितगुरुनायकभये कीन्हों ब्रह्मअस्त्र संधान
शंख सामुहं तब ललकारो रे शठसंभरु हाथ लै बान ।
एकैशायकतोहिंकामरिहैं। हैमोहिंपरशुरामकीआन ५५
लाखुदोहइया शिवगंगाकै लैहैं। हाथ न दूजो बान ।
करिअभिमंत्रिततबशायकको जोरोद्रोणधनुषमाबान५६
थर थर थरथर बसुधा कंपी डोले शेषनाग भय मानि ।
डगमग २ दिग्गजडोले देवतनछांड़ि दीनअस्थान ५७
जगमग २ शायक चमकैं मानों उदय हजारन भान ।
ज्वालाजमकीरेलस्करमा मानौंप्रलयआयनगिचान५८
डरो सात्विकी रे जियरेमा अबधौंकाह होयभगवान ।
ब्रह्मअस्त्र ना खालीजैहै जैहैंसमरआजु हठिप्रान ५६
तब समुझायो रे शंखाका ओ महराजा बात बोनाव ।
अज्ञातुम्हरी जो मैंपावैं स्यंदनफेरि समरलैजावं ६०
ब्रह्मअस्त्रसों तुमबचिहौना यहममबचन करौपरमान ।
धरिकैडाटो तबसात्वकिका सारथि करौ बचनपरमान
कृष्णबनायो मोहिंसेनापति बांधोशीशमुकुटनिजहाथ ।
जो मैं भागों रणखेतनते क्षत्री धर्म रहै ना साथ ६२
पीठिदेखैहैं। ना ब्राह्मणका चहैरणजूझि जाउंमैदान ।
इकदिनदेही यह रैहै ना कीरति गैहैं बेद पुरान ६३

क० । पूरब होत दिवाकर उदयत पश्चिम पाउं धरैं कबहूं ना ।
सज्जनदुःख लहैं कितनौ परबात असत्य करैं कबहूं ना ॥
नारिसतीसतपै चढ़िकै फिरि आवत भागि घरै कबहूं ना ।
कै प्रण शूर चढ़ै रणपै तौ लरै औ मरै पै टरै कबहूं ना ॥

मैंनाभगिहौंसमरभूमिते चहैयहिबान जायंममप्रान ।
धर्मक्षत्रियनके नाहीं हैं रणते भागि सहैंअपमान ६५
धिकहैऐसे क्षत्रीपन का जोतजि समरघरै भगिजाय ।
तोहिं दोहाई यदुनंदनकी जोरथफेरिभवनलैजाय ६६
जोकोउआयोहै पृथ्वीपर इकदिनहोय कालते नास ।
तेहितेभगिहौंमैं रणतेना लैयशकरौं स्वर्गकोबास ६७
जोमैं भागौं समरभूमिते तौ मुखकाहि देखिहौं जाय ।
लरिहौंमरिहौंपैटरिहौंना करिहौंआजुयुद्धसुखपाय६८
यहकहिरणमा शंखौकोपेउ औ संधानिलीनजलबान ।
सुरपुरदेवताकंपनलागे दीन्होंद्रोणछोड़िविधिवान६९
सबदल कांप्यो रे पांडवका कोबचिजाय ब्रह्मकेबान ।
थर थर २ कंप्यो सारथी औरथफेरि दीनभयमानि७०
शंखसामुहे रथते कूद्यो निर्भय भयो समर बिकराल ।
ब्रह्मअस्त्रसोंघायलह्वैगयो जरिगेअंगअस्त्रकीज्वाल ७१
दोउदलदेखें रे नयननते अधरम युद्ध कियो गुरुराय ।
शंखबजायो गुरुनायकने धरती गिरो शंखभयखाय ७२
तबललेलकारो धृष्टद्युम्न ने कलुगुरु समरभूमिमैदान ।
युद्धअधर्मी रणमा कीन्हे मारेकुंवर ब्रह्मके बान ७३
खबरदारहो समरभूमिमा देखिहौं तोर आजुसंग्राम ।
पहिलेघातैअपनीकरिलेव नाहिंतशोचहोययमधाम७४
रे अभिमानी बालकमारे अब परिगयोकठिनतेकाम ।
जियतनछोड़िहौं त्वहिंस्यातनमा हैशठधृष्टद्युम्नममनाम
शूर बरोबरि संगरमाच्यो बरसै लाग कैबरी बान ।
सवापहरभरिशायकबरसे दोउदलउठोघोरघमसान७६

कोपित ह्वैकै धृष्टद्युम्नने मारोतीनि द्रोण शिरवान ।
गाफिलदोरूयोरेअर्जुनका भीषम हन्योसहसदश ज्वान
जीतिको डंकाबाजनलाग्यो संध्याकालआयनजिकान ।
दूनौं दल के मुर्चाफिरिगे क्षत्री भगे समर लैप्रान ७८
कछुकअबेरामगमा लाग्यो आये सकल आपने धाम ।
तंग बकेड़न के सब छूटे क्षत्रिनकियोरैनि विश्राम ७६
चढ़ीरोसइयां उमराइन की शूरन भोजन कियो बनाय ।
लैबढ़िघरबा बाढ़ि धरावैं बानन तीक्ष्सानधरवाय ८०
टूटे स्यंदन कोउबनवावै कोउ सुधरावै शक्ति सनाह ।
करैं तयारी सबलरिबे की साधत अस्त्र शस्त्रनरनाह८१
औरिबयरियाडोलन लागीं औरै होनलाग व्यवहार ।
धर्मराजऔ माधवसंगह्वै पहुंचे नृप विराटदरबार७२
तब समुझायोरे राजा का छांड़ौ शोच भूप वैराट ।
धर्म क्षत्रियन के येई हैं जूझो शंख युद्ध के ठाट ८३
तादिनराजा बोलन लाग्यो सुनिये कृष्णचन्द्र महराज।
याकी शंका कछुनाहीं है जूझ्यो पुत्र धर्म के काज ८४
काज पराये जो मरिजावै होवै युगन २ लौनाम ।
सोहरागावै सब दुनियामापावै अंत बास सुरधाम ८५
इतनासुनिकै तबराजाने कीन्ह्यो गवनभवन सहश्याम।
चरण पखारे तबमाताके धरिधरिशस्त्रकीनबिश्राम ८६
खंची रोसइयांतब द्रुपदीने जेंवन बैठधर्म सब भाय ।
षटरसभोजनबनिबनिआये व्यंजनकनकथारभरिलाय
पंचकौर करि जेंवन लाग्यो बोली तबै द्रौपदी रानि ।
आजुमूर्चाकेहिभटतेरह्यो कहियेकृश्नचंद्रभगवान ८८

तब समुझायोरेमाधवने अर्जुन हन्योसहसदसज्वान।
युद्ध अधर्मीगुरुनायककियो मारयोशंखब्रह्मकेबान ८६
भूप युधिष्ठिर तबबोलतभये सुनियेदोनबंधुयदुराज।
एक अँदेशाहै जियरेमा सोसमुझायकहौमहराज ६०
भीषम मारै समरभूमिमा नितउठिदशहजारनरराज।
पार न मिलिहै अबभीषमते कैसे लेहौजीतिकैराज ६१
मोरे मनमा ऐसी आवै पैहौ नहीं जीति कुरुराज।
तब समुझायोरेद्रुपदीने सुनिये पांडुधर्मशिरताज ६२
वादिन केरी सुधिनाहीं है जादिन गयोबनै तुमसाथ।
तुम्हैं मिलन दुर्वासाआये औकुरुनाथदीनपठवाय ६३
जहँपर कूटी रे तुम्हरीरहै आधी राति पहूँचे जाय।
कोपके अंकुर उरमाजामे नैना अरुणरहेदरशाय ६४
लिहे कमंडल रे हाथेमा औ चेला संग सातहजार।
तुमते भोजन उनमांगते सुनु महराजाबातहमारि ६५
क्षुधा सतायो हमकाराजा भोजन तुरतदेउमंगवाय।
जोपै भोजन तुम देहौना देहैं ब्रह्मशापजरिजाय ६६
सुनिकै बातैं दुर्वासा की पांडव गये सनाका खाय।
नहिंकुछभोजनमोरिकूटीमा ऋषिका काहदेउंमंगवाय
तब मैंदोरयों रे पांडवका सबरे गये भरहरा खाय।
जोरिगदोरियादुर्वासातेकीन्ह्योंबिनयबहुतसमुझाय६८
खंचौ रोसइथां मैंयहिक्षनमा भोजनतुरतकरौंतयार।
घरोपहारुक केअर्सा मा देहौंऋषिहिमंजुआहार ६६
अस कहि टारोदुर्वासाका कीन्ह्यो जियेबहुतकैत्रास।
बिनयसुनायोंयदुनंदनका हेप्रभुकरौदुःखकोनास१००

जोपै भोजन ऋषि पैहैं ना　देहैं हमै क्रोध करि शाप।
सबमिलिध्यायोकृश्नचरणका आो महराजरह्योतहंआप
बिनय ओनायो तब माधव ने दीख्यो भक्तपरे जंजाल।
पायंपियादेप्रभुधायेते वइयदुनाथभक्तप्रतिपाल १०२
तब द्रुपदीख्योयदुनंदनका तुरतैगिर्योचरणमाधाय।
क्षुधाक्षुधाकहियदुपतिटेरो भोजनहमैंदेउमंगवाय १०३
जोरिगदोरिया तबमैंबोलिउँ दीनानाथदयाकीखानि।
अन्न कणूको ना कूटीमा भोजनकाहदेउँमैंआनि १०४
लौटिनिहारो तबमाधवने बासनलख्योशाककोधाय।
शाक कणूका तामें पायो सोई कृष्णचंद्रगयेखाय १०५
क्षुधा पटानी दुर्बासा के श्री हरि उदर दीन भरवाय।
जेतनेचेलादुर्बासाकेभोजनलियोऋषिनसबखाय १०६
मंशा माफिक भोजनकीन्हो होइग तृप्तसबैऋषिराय।
गये वृकोदर दुर्बासाते बोलेहाथजोरितहंजाय १०७
भई रोसइयां है कूटी मा भोजन करै चलौ महराज।
तबदुर्बासासमुझायोरहै सुनियेबचनबृकोदरराज१०८
जो मैं मंशाकरि आयोंरहै सो सबजानिगयेभगवान।
तृप्तक्षुधातेसबकाकीन्हो बैठेउदरकृश्नअनुमान १०९
मैं छल कीन्हों पांडवतुमते तुम्हरे माधव भयेसहाय।
सदासर्बदातुमयशपैहौ यहकहिचलेगयेऋषिराय ११०
तुम्हैं सहायक नारायणहैं तुम्हरे कहाशोचरहोछाय।
जहं कहुं संकटतुमकापरिहै तहंकरिहैंयदुनाथसहाय
नाथअनाथनकेमाधव हैं अजहूंवेदरहेयशगाय ११२
सुनिकै बातैं तब द्रुपदी की छांड़ोशोच युधिष्ठिर राय।

तबचलिआयोअपनेदलमा संगैलियेनाथयदुराय ११३

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि वाजपेयि पं० रामरत्नस्या
श्चाभिगामी स्वप्रदेशांतर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्वपंचमदिन
युद्धारंभबर्णनन्नाम पंचमोध्याय: ५ ॥

मैं पद बन्दौंरघुनन्दन के लक्ष्मण भरत शत्रुहनभाय।
सुमिरिदुलारोरेअंजनिका भारतसमरकहौंफिरिगाय १
भोरभोरहरे पहफाटतते दोउदल सजै लागसरदार।
बजे नगारा दूनौं दलमा क्षत्री सबै भये हुशियार २
बजैं नफीरी तब लश्करमा औ नरसिंह रहे हहराय।
मारू बाजा बाजन लागे क्षत्री बीर रूप ह्वैजायं ३
खुलिगइंअहदू तब हाथिनकी बागैं छूटबछेड़नक्यार।
रथन सारथी साजन लागे क्षत्रीफांदि होयंअसवार ४
मेघकिगर्जनिहाथीचिघरैं दामिनिदमकिरहे हथियार।
दूनौंलश्करइकमिलहोइगे गरजे शस्त्रधारि सरदार ५
मुर्चन २ क्षत्री भिरिगे लागी उड़न धरा ते क्षार।
करि २ हांकैंक्षत्रीभिरिगे कम्मरछोरि २ हथियार ६
खट खट २ तेगा बरसैं बरसै छपक २ तरवार।
बरछीतिरछीदोउदलछूटैं कहुं २ होय कटारिनमार ७
करसंगीनैं नंगी चमकैं लागत अंगभंग होइजाय।
भाला घूमैं असवारन के लगतै जायं करेजा खाय ८
मघाके बूंदन शायक बरसैं कहुं २ होय बज्रकीमार।
लंबी धोतिनके पहिरैया जिननाधरे हाथ हथियार ६
भागनलागे बनजंगलका कायर लैलै अपनपरान।

जिन्हैंपियारी घरतिरियारहैं जेघरलाये गवनवांआनि
डारिसिरोहीरणमादीन्ह्यो तनमारम्यो भस्मकैक्षार ।
लियेकमण्डलअलखजगावें लैलैनामभगवतीकयार ११
हमैं न मरियोकोउरणशूरौ हम भिक्षा के मांगनहार ।
धायोलरिकातबपाण्डवको जेहिकाकहीभीमसरदार१२
गदाप्रहारन मारनलाग्यो कीन्ह्यो महाघोर संग्राम ।
मारिसिपाहिनकेदलकाटे हनि २ पठैदीनयमधाम १३
खलभलि परिगैकौरवदलमा क्षत्रीभगेछोंड़ि रणशाक ।
बढ्योपितामहतबआगेह्वै स्यंदनदीनसारथीहांकि १४
जहां हुलरुवारे पाण्डवको पारथ धीरबीरबलवान ।
नंदिघोषरथमाधवहांकैं औ फहराय ध्वजाहनुमान १५
सिंहनादकरिभीषमगरज्यो पाण्डव खबरदारहोइजाय ।
कै तोरिमातानेब्रतकीन्ह्यो कैकरछत्रधरो यदुराय १६
इतनीबेरा जोबचिआयो अबगहिधरौ हाथ धनुबान ।
यहकहिशायकबरसनलाग्योगंगासुवनबीरबलवान१७
दुनौंशूरमन झुरमुट परिगै लागीहोन परस्पर मारु ।
सावनमेघा जस गरजतहैं तैसे शूरकरैं हहकार १८
लैकर धन्वा तब पारथने मारे भीष्महिये शरपांच ।
रक्तकिवर्षाबरसनलागी इत उत झुण्ड चलेनाराच१९
रिसहाहोइकै तब गंगासुत कीन्ह्यो चोटपार्थपरजाय ।
भयेसहायक श्रीनारायण पारथ अंग न आयेघाय२०
उतगुरुनायक के मुर्चापर धृष्टद्युम्न रह्योशरछाय ।
दांतहलायो गुरुनायकके दीन्हे अंगअंगहनिघाय २१
तेहीसमइयाके अवसर मा उत्तरहन्यो द्रोण परबान ।

आजचिरइयापरजसझपटै झपटैशशाहेतजिमिश्वान २२
झपटैंक्षत्री तस क्षत्रिनपर दोउदलमचे घोर घमसान ।
अंधकारभयो समरभूमिमा क्षत्रीभगेहाथधरिप्रान २३
कृपाचार्यकेतबमुहरापर रहिगये नकुलधारिधनुबान ।
सकुनीसहदेव ते संगरमचो छूटनलाग कैबरीबान २४
धरि २ डाटैं रजपूतनका ज्वानौं संभारिहोउहुथियार ।
फिरिकैजननीअबजैहैना फिरिनामिलैक्षत्रिअवतार २५
उड़ि २ जूझौ कुरुक्षेत्रमा कोरति कहै सकलसंसार ।
भागि नजैयोकोउमुर्चनते है धिरकार जिंदगीक्यार २६
भिरो अलंबुष के मुर्चापर बांकोपूत हिडबीक्यार ।
सरसरशायक बरसनलागे थरथर कंपिउठेसरदार २७
शल्यसात्वकी के भिरनी है औ कृतबर्माभूप बिराट ।
ओसरिनख्यालैंसबरशादुलहा अपनेकियेयुद्धकेठाट २८
हाथीघूम्यो भगदंता का मानौं आय पहूंच्यो काल ।
कोहुकमारे धरिपायंनभे शूरन मींजि करैबेहाल २९
शूंड़िलपेटै कोहुक्षत्रीका कोहुदन्तन सों करै अहार ।
धरि २ चिघरै रे लस्करमा मारेशूरबीरसबझारि ३०
खलभलिपरिगैपायडवदलमा आगेभीमदीनिललकार ।
बीसक शायकहनि२मारेदीन्ह्योकरीशुरडफटकारि ३१
अग्निक्रिज्वालाभगदंतौभयो अपनोहाथलीनधनुबान ।
हृदयवृकोदरकोताड़ितकियो शायकहन्योपचीसकतानि
घाउआइगयो तब भिम्माके लागीबहन रक्तकी धार ।
कोपिगयंदातबधावतभयो स्यंदनजहांवृकोदरक्यार ३२
झपटिलपेटो रे शुरडामा औ रथफेंकिदीन बिकरार ।

कोसकस्यंदनउड़िधरतीगिरो औमिलिगयोधराकीक्षार
गिरेबछेड़ा कहुं धरतीमा सारथिगिरो भरहराखाय ।
योगानलसोंभिम्माहोइगयो नैनाअग्निज्वालह्वैजायं
तबललकारो भगदन्ताका रे शठ खबरदारहोइजाय ।
हमरोस्यालहनअबबचिहैना यहनिजुबचनमानुमनलाय
गरजि वृकोदर आसमानगयो मारोगदा गयंदै जाय ।
चिघरोहाथी रे दलभीतर झपटोभीमसेन परधाय ३७
सेल्हप्रहारो भगदंताने भिम्मा गिरो भरहरा खाय ।
भिम्मागिरतैपरलयहोइगै पाण्डवगयेसनाकाखाय ३८
द्रुपदशूरमा सन्मुखधायो लैकैसंग सुभट बलवान ।
ऐंड़ दबावै तब घोड़े के काशीराज उत्तरा ज्वान ३९
झुकयो शिषंडी रे हल्लाकै चारिउ शूरपाण्डवनकेर ।
चहुंदिशिशायकबरसनलागे रणमाअंधकाररहोघेर४०
छेदिगयंदमका शिरडारो दलमा चिघरि २ बिरुझान ।
सावनमेघा जैसे बरसैं तैसे बरसिरहे रणवान ४१
तबरिसकीन्ह्यो भगदंताने नैना रक्तबरणहोइजायं ।
दूनौकल्ला फरकनलागे रिससोंगयो करेजाछाय ४२
लैकैकमनियां धामनवारी छोड़नलागअगिनियां बान ।
चारिउशूरनकामुर्च्छितकियो भारतसमरभूमिमैदान४३
हाथी घुमायो पाण्डवदलमा कौनौशूर न आड़ैपायं ।
जौनशूरमा सन्मुख पावे तेहिदांतनसों जायचबाय ४४
पकरिभुशुण्डा सों धरिदाबै धरतीमांजि मिलावैक्षार ।
ठोकरमारै जेहियोधाके बाहनसहित गिरैअसवार ४५
मस्तकमारैजेहि स्यंदनमा सबियां चूरचूर ह्वैजाय ।

डोल्योबैरख रे लस्करमा रिसहाभयोयुधिष्ठिरराय ४६
नाळतितुम्हरे क्षत्रीपनका जोकोउधरै पछारिक पाय।
नमकहमारो जो खायोहै सो हाड़नमारह्योसमाय ४७
उड़ि २ जूझौ कुरुक्षेत्रमा अपने निमक अदाहोइजाव।
कीरतिगहैसब दुनियांमां जूझेविष्णुधाम काजाव ४८
मानुषदेहो फिरिपैहौना ज्वानौ मानिकहालेब म्वार।
सन्मुखजूझिहौसमरभूमिमा ह्वैहैमुक्तिकेरअधिकार४६
क्षत्रीह्वैकै रणमाजूझै तेहिका यशगावै संसार।
जोकोउभागैसमरभूमिते तेहिकाकाग न करैंअहार ५०
सुनिकै बातैं तब राजाकी क्षत्रिन फेरि धरेहथियार।
झुकेशूरमा पाण्डवदलके लैलैनाम भगवतीक्यार ५१
जैसे भेड़हा भेंड़िन पैठै जैसैं सिंह बिड़ारै गाय।
जैसेलरिका गहबांड़िखेलैं गिनि २ धरैंअगारीपायं ५२
शायक बरसैं चौतर्फाते चलिरहि चमकि २ तरवारि।
फरसाघूमैं दूनौंदलमा भालनमारिरहे असवार ५३
शेलघुमावैं कोउ २ क्षत्री लागत शीश अंत ह्वैजाय।
ठोकरलागै जेहिक्षत्रीके भुइमागिरैं भरहराखाय ५४
कहुं२तेगा कहुं २ फरसा कतहूं कड़ाबीन कै मारु।
खाँड़ोदुधारा जेहितनलागै आवैं अंगघायबिकरार५५
कहूंकटारिनकै झरिलागी कतहूं परी बंदूकन मारु।
कहुं २ शक्तिनते धरिमारैं बरछीतिरछीकरैंप्रहार ५६
झुकेशूरमा पाण्डववाले सबदल काटिकीन खरिहान।
तबभगदंतारिसहाहोइगयो अपनालियोधारिधनुबान
जौनी अलगन धरिकैदाबैं तौनीओर छोर होइजाय।

केतनेउंक्षत्रो हनेगयंदम घरिशुग्डनते जायचबाय ५८
केतनेउंस्यंदनचूरणकरिदयो क्षत्री मींजिमिलावैक्षार ।
पकरिभुशुग्डा ते क्षत्रिनका पटकैलात घातकोमार ५९
हनि हनिमारै रनभगदंता पांडवसैन गई अघियाय ।
नृपभगदन्ताके मुहरापर कोऊ शूर न आड़ै पायं ६०
भगेसिपाही पांडववाले कायर लै लै भगे परान ।
गरुहरमुर्चाभगदन्ताका सन्मुखरहैनकौनौं ज्वान ६१
भूप सैकरन रणमा जूझे केतनेउं चूर भये हथियार ।
कल्लाउड़िगे बहुघोड़नके औ हाथिनकेलगे पगार ६२
केतनेउंस्यन्दनगर्दामिलिगे पांडव गयोसनाकाखाय ।
तबलेलकारोभगदन्ताने क्षत्रिउखबरदारहोइजाय ६३
केहिकीमाता सिंहिनिजायो केहिरणबाघघरेअवतार ।
कौनदुसरिहाभाधरतीपर सन्मुखआयगहैहथियार ६४
मारिशायकनचिथराकरिहौं धरतीमींजिमिलैहौंक्षार ।
बंशनशैहौं मैं पांडवका मरिहौं समरभूमिसरदार ६५
राजदेवैहौं रे कौरव का लेहौं बिजयपत्र लिखवाय ।
काहबिचारे रण करिहैंये कायर पांडुपुत्र सबभाय ६६
यहकहिझपट्यो धर्मराजपर लैकै हाथ शरासन बान ।
तबलेलकारोरेअर्जुनका श्रीपति कृष्णचन्द्रभगवान ६७
हनुभगदंतै समरभूमि मा पारथ बीर एकही बान ।
बागबढ़ायो रे बाजिन कै कैकै रामचन्द्रकोध्यान ६८
छम छम २ बजैं पैंजनी गरजैं ध्वजा बीच हनुमान ।
सन्मुखआयोभगदन्ताके धनुगांडीव लीनकरतानि६९
खैंचिबढ़ायो रे रोदाका कीन्ह्यो बज्रबान संधान ।

धरिकैंडाल्योभगदन्ताका रेशठसाधुहाथ धनुबान ७०
गजके जोरन क्षत्री मारे अवरन संभरिधारुहथियार।
लरेनअबलगतैंअर्जुनते डरिहौंएक बानमुंहफारि ७१
काल झोटइयापर नाचतहै जैहै सहगयंद यमधाम।
पहिलीवारै करु संगरमा अब परिगयो बीरतेकाम७२
हाथीबढ़ायो भगदंताने अर्जुन सन्मुख दियोजबाब।
अबै तुम्हारो कछुबेगराना मनमासमुझिलौटिघरजाव
तुमकाखोजतमैंरणमारह्यों अबशठछांडुजियनकीआश।
एकैशायकअर्जुनमरिहैं जैहैं अबहिंकालकेपास ७४
मारिसोवैहौं समरभूमि मा यहकहिलीनशरासनधारि।
धनुसंधान्यो तब अर्जुनने दूनौ शूरभयेहुशियार ७५
बानअसंख्यन बरसनलागे रहिगयेआशमानशरछाय
ओसरिनखेलैं दोउबलवंता काहूअंग न आवैंघाय ७६
केतनेउंशायकअर्जुनमारे सबभगदन्तगिराये काटि।
पेलिगयंदमरथपरदीन्ह्यो केतनेउंशस्त्रदीनतनपाटि ७७
असीबानतन केशव मारो मारे सहसबान हनुमान।
पांचबानतेछेदिपताका केतनेउं शायकहनेनिशान ७८
मारिबछेड़नका घायलकियो स्यंदनरोपिदीनबलवान।
कुद्धितपारथभाजियरेमा अबरणकरुसहायभगवान७९
खैंचिशरासन अर्जुन मारो धन्वाधरतीदयो गिराय।
शक्तिउठायो भगदंताने पारथहने शक्ति शरधाय ८०
खेदआइगयोभगदन्ताके मनमाबहुतलाग पछिताय।
जौनीशक्तिन गजहनिमारो केतनेउ बाजिअंगदयेघाय
केतनेउं स्यंदनचूरणकीन्ह्यों घायलकियोंसहस्त्रनज्वान।

सोईशक्ती पारथ काटो अबका होनहार भगवान ८२
यहकहिधारोफिरिधन्वाका गरज्योसमरभूमिरिसिआय
रणमाअर्जुन तुमबचिहौना औयमलोकदेहौंपठवाय८३
अबकीसंभरौतुमस्यंदनपर तुम्हरोकालरह्योनगिचाय ।
सहितसारथीऔबाजिनके यहिसंगरमादेहौंस्ववाय८४
पेलिमहावत तबहाथीदियो औ भगदन्तधरोधनुधाय ।
झुकयोगयंदमतबसंगरमा रथपरगयोतुर्तनगिचाय८५
झपटिभुशुण्डालयोस्यंदनका ऊपरफेंकिदीन अरराय ।
शायकमारो भगदन्ताने पारथ अंग आयगे घाय ८६
तबदलकांप्योरेपांडवका हे प्रभुप्रलयकालगयोआय ।
दूसरशायक भगदन्तालयो राख्यो कृष्णचन्द्रपरजाय
तकितकिमारो रे श्रीपतिका श्रीपतिगयेमूर्च्छाखाय ।
तबहरिसुमिरो रे पायकका करुअंजनिकेपुत्रसहाय८८
गाढ़े संकट तुम टारो है जाहिर सदा सकल संसार ।
भक्तशिरोमणि तुम सांचेहौ पारथरथै होहुरखवार८९
रामजबै लंका का गेहते लक्ष्मण बेधते शक्तीवान ।
मूरि सजीवनि तुमलायेरहौ पूतअंजनीकेहनुमान ९०
संकट टारोतुम सीताको लंका जारि कियो तुमक्षार ।
बंदिकटायो रे देवन कै लीन्ह्यो भक्त हेतअवतार ९१
आयमूर्च्छागइ अर्जुन का मोरेउअंग आयगयेघाय ।
रथकेरक्षक अबतुमहीं हौ सहरथपारथमोरसहाय ९२
इतनी कहिकै यदुनंदनतब रथपरगिरे मूर्च्छाखाय ।
धन्य२ उनपांडवसुतका श्रीपति संकट लेतबटाय ९३
जगउपजावैंजेइकक्षनमा औपालत हैं सकलजहान ।

भृकुटीफेरतसबनाशतहैं जिनतेकालहोतभयमान ६३
ते प्रभु मूर्च्छित भे संगरमा अपने भक्त हेतभगवान ।
अर्जुनगिरतैपरलयहोइगै औभगदन्तकीनअभिमान ६४
गजकेपायंनते रथतोरैं अर्जुन शोश फोरि हैं धाय ।
इतनाकहिकै रथपरधायो गर्जे हनूमान तहंआय ६५

क० । कोप कराल बढ़ो कपिनायक स्यंदन ते करि चक्र फलंगा ।
लागि अकाश प्रकाश कियो तन देखत होत सबै उरशंका ।
घोर गरज्जनि सों गरजो रणमध्य पसारिदयो अहतंका ।
काल समान बली हनुमान चल्यो जनु जारन कोफिरि लंका ८६

रेअभिमानीतोहिंकासूझी मनमाबहुतबढ्योअभिमान ।
रथके नेरेअबआयो ना यहनिजुबचनकरौपरमान ६७
हैं। रखवारी मैं स्यंदनको सौंप्यो मोहिंकृष्णभगवान ।
बलनादेखौंऐरावतका स्यन्दनसमरछुवै जोआनि ६८
ब्रह्मा शंकरकै गिनतीना औ यमबरुण देव सुरराज ।
जोचढ़िआवैकोउसंगरमा स्यंदनछुवननपावैआज ६६
पूंछलपेट्यो तबस्यंदन मा कोपे समरभूमि हनुमान ।
कोपिगयंदम भगदंताले गर्ज्योकालरूपबलवान१००
बानहजारन कपिपर मारो निर्भय खड़ोबीरहनुमान ।
फूलकेगेंदन जस हाथीहनै तसहनुमान अंगलगैंबान
क्रोधित ह्वैकै तबअंजनिसुत दूनौंदंत गह्योगजराज ।
तबधरिदाब्योरेधरतीमा अपनेभक्त काजमहराज१०२
झपटिपूंछसों दांतनतोरो औ बहिचली रक्त की धार ।
खलभलपरिगैकौरवदलमा क्षत्रीभगेडारिहथियार१०३
धरिद्वउदंतन को कांधे पर घूमे समर भूमि हनुमान ।
सिगरेयोधाकांपनलागे कायर लैलै भाग परान १०४

मुर्च्छा जागी रे पारथकै उठिकै गह्यो हाथ धनुबान ।
उठेझड़ाकैतबस्यंदनपर श्रीपतिभक्तज्ञानभगवान १०५
बागबढ़ायो तब बाजिन कै गर्जे हनुमान असमान ।
तबललकारोभगदंताको पारथधीरबीरबलवान १०६
लाखुदोहइया शिवगंगाकै रे शठ बचनकिहेपरमान ।
हनौंगयंदम एकैशरमा हैभगवानकेरिमोहिंआन१०७
दूजेशायक त्वहिंमारौं ना तौ ना गहौं हाथधनुबान ।
एकबानजोतोहिं मारौं ना क्षत्रीधर्मकेरधिकजान १०८
सुनियहपारथ को अगारणमा बोलेकृष्णचन्द्रभगवान ।
करुरखवारी अपनेप्रणकै हनु भगदंतएकही बान १०६
सुनिकै बातैं मधुसूदनकी अर्जुन चढ़ो कोपकी सान ।
तबसंधान्योब्रह्मबाणका औगांडीव शरासनतानि११०
तबहनिमारयो गजराजाको लीन्ह्योएक बानसोंप्रान ।
गिरैपहाड़ी जनुकज्जलकै ह्वैगे भूपसबै भयमान१११
गिरतगयंदमधरतीदेख्यो लियो भगदंतजंघसों साधि।
शंकाहोइगैतबपारथके हैभगवान भई का व्याधि११२
गिर्योगयंदमना धरतीमा झूंठी आनि भई भगवान ।
लाजआयगइ तब अर्जुनका करते दियो डारिधनुबान
तबसमुझायोहै श्रीपतिने पारथ बीर करी कह साधि ।
प्राणगयंदम तजिदीन्हो है लियो भगदंत जंघसोंसाधि
संगर तेरोप्रणछूट्योना गहु निज हाथ फेरि धनुबान ।
भयोअनंदितपारथमनमेंलीन्ह्योफेरिशरासनतानि११५
अर्द्धचन्द्रशर अर्जुन मारयो औभगदंत शीश फहरान ।
छेदिदुनइयासो शिर काट्यो औभगदंत भयोबिनप्रान

गिरो गयंदम तब धरतीमा औ भगदंतगिरोभहराय।
हल्लाहोइगयोकौरवदलमा क्षत्रीगयेसनाकाखाय ११७
स्याबसिदीन्ह्योरेअर्जुनका मनमाखुशीभयेभगवान।
भूपयुधिष्ठिर स्याबसिबोल्यो औसबखुशीभये बलवान
रण अगाराख्योहै अर्जुनने स्याबसि करैं युधिष्ठिरराय।
सबदलमारोरेकौरवका बसुधारुण्डमुंडरहेछाय ११९
अधजल मुर्दा धरती लोटैं औ बिनमुंडरुंडबिललायं।
लिहेयोगिनीखप्परनाचैं लरि२ मासभूतगनखायं १२०
प्रेत पिशाचन के गण धावैं औ लैमुंड रुंड उड़िजायं।
झुकींचिल्हारीरेसंगरमा इतउतकागझुंडमड़रायं १२१
मुंडन केर मुड़ चौरा भये औ रुंडन के लाग पहार।
चलैं पनारा रे लोहुन के नदिया बहैं रक्तकीधार १२२
तब हरि हांकयोरथआगेका औअर्जुनसोंकह्योबुझाय।
करुभटसंगर अबभीषमते तौकछु काम सिद्धिहोइजाय
वहीं समइयाके अवसरमा जबरथहांकिचलेभगवान।
शंखनादतबभीषमकीन्ह्यो लीन्ह्योबिजयपत्रमैदान१२४
मारु बंद भै दूनौ दल के अपने धाम चले बलवान।
रामरत्नकीअनुमतिलैकै बन्दीदीन कीन यहगान१२५

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बूंथरग्राम निवासि वाजपेयि पं० रामरत्नस्याभिमामो स्वप्रदेशांतर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व भगदन्त वध वर्णनन्नाम षष्ठोध्यायः ६ ॥

पूत अंजनी के सबलायक पायक सुभट एकबलवान।
मन्शा मेरी तुम पूरण करौ हे बलवंत बीर हनुमान १

कौरव पांडवकै रणकीरति जाहिर वेदपुराणनगाय ।
अपनी मतिसम मैंगावतिहौं भाषा भीषमपर्वबनाय २
फिरिगे मुर्चा जबदोउदलके शूरन छोरिधरेहथियार ।
गद्दा उतरे रे हाथिन के औ तंग छूट बछेड़ न क्यार ३
चढ़ी रोसइयां उमराइनकी क्षत्री करनलागजेवनार ।
तबदुरयोधनमहलनचलिगो जहंरनिवासकौरवनक्यार
सिढ़ियन२ ते ऊपरगयो धरि२ नेत कढ़िनपर पायं ।
आवत दीख्यो दुरयोधनका रानी लीनसहादरधाय ५
कंचन पलका पर बैठारो शोभा देखिजाय मनवारि ।
बना पलंगरा मलयागिरिका औरेशमकैभरोनेवारि ६
परागलोचामखमलवाला तकिया कीमखापकैलागि ।
फूलबिछायेचुनिकलियनसों निरखत जायचित्तअनुरागि
हीराचमकैंचहुंमचवनपर बिच२ मणिनहोयउजियार ।
कंकण बांधे दुहुं पाटिनपर मानौ उदयचंद्रमाक्यार ८
बैठ दुलहवा रे कौरवका रानी पंखा करै बनाय ।
संग सहेली चंवर ढुरावैं जिनको रूपबरणिनाजाय ६
पहिरे घांघर दक्षिण वाले पट्टा लालमणिनकेझारि ।
जरी जरकसी हैंतारनसों सारो अंग किनारीदार १०
चीर लहरिया शिरपरसोहैं अंगियाकसेउरोजनभार ।
बिथुरीअलकैंजहंनागिनिसी सींचेअतरसुगंधनबार ११
माथम बंदा बुंदन झलकैं मानौ उदय चंद्रमाक्यार ।
सुंदर कजरा नैनन सोहै मोहै रूप देखिकै मार १२
नाकम बेसरि झूकनझूमै लटकन जड़े जवाहिरलाल ।
पानकिबीरीमुखमासोहै झुमकाझमकिचूमिरहेगाल१३

दुलरीतिलरी गलमासोहैं छतियनबीच नौलखाहार।
सोहैं बजुल्ला भुजदंडनपर टाड़ैं सोहैं हाथछबिदार १४
अगे अगेलिया पछे पछेलिया चूरी हाथ नगीनेदार।
बाजूबंद औ जौसनसोहैं बिच२ लईपनरियाडार १५
ककना सोहैं रेकंचन के पहुंची बंधो खवारेदार।
पगन बाजने पायलसोहैं नूपुर बेशमंद झनकार १६
छलामुंदरियाअंगुरिनसोहैं अंगुठा बांकरहीछबिछाय।
क्षुद्रघंटिका करिहायेंमा औ करधनीघनीझहनाय १७
कड़ाके ऊपर छड़ा बिराजैं देवता रूप देखि सरमायं।
ऐसी दासीमहरानिनकी तिनकीकौनकहैछबिगाय १८
कंचन थारा लिये हाथेमा रानी आरति रही उतारि।
शकुन मनावैं रे जियरेमा सखियां करैंमंगलाचार १९
बेला चमेली औ केवड़ाके दीन्हे अंग अतरसिचवाय।
कंचनकलशनमागंगाजल करिस्नान लीनकुरुराय २०
बस्त्र मंगाये तब रेशमके लीन्हे अंग मनोहर लाय।
भूषण सोहैं सबसोनेके मणिमय चमकि२रहिजायं २१
सजी रसोइयां गैमहलनमा तुरतै भोजन भयेतयार।
षटरस ब्यंजन मनरंजनशुभ रानी रचेदेवआहार २२
भयो बुलौआ तब राजाका चंदन पीढ़ा दीन धराय।
बैठिजेंवायो दुर्योधनका सुंदर सेज संवारी जाय २३
ताहि सोवायो दुर्योधन का रानी सेवा करें बनाय।
औरबयरियाडोलनलागी औरैंहोनलागब्यवहार २४
गये महलियन राजाधर्मौ पांचौ भायसहितभगवान।
हनवन करिकैगंगाजलके धरिकैमहादेवकोध्यान २५

खंची रोसइयां तबद्रुपदीने सबके होनलागजेंवनार ।
भूपयुधिष्ठिरतब बोलतभये सुनियेकृश्नचंद्रकर्तार २६
धीरनआवै मोरेजियरेमा होइहै कौन हाल भगवान ।
दशसहस्रभटभीषममारैं नितउठिसमरभूमिमैदान २७
कठिनलड़ाईभगदन्ताकियो पारथसहितगिर्‌योभगवान
घायलघोड़ाभेस्यंदनके तबरथसाधिलीनहनुमान २८
बिजयपितामह ते पैहौना तजियेप्रभू बिजयकीआस ।
कुलैलड़ाईकछुनीकीना नितउठिसमरहोयपरिहास २९
सुनिकै बातै महराजा की रानीबचनकह्यो समुझाय ।
तुम्हैंअंदेशानृपचहियेना तुम्हरेमददगारयदुराय ३०
चरण मनावो यदुनंदनके नितप्रति धरेरहौपदध्यान ।
भक्तसहायकप्रभु साँचेहैं रक्षककृष्णचंद्र भगवान ३१
जहंकहुसंकटहोयदासनकहं तहंप्रभुप्रकटहोयँततकाल।
वेदपुरानौयशगावत हैं साँचे नाथ भक्तप्रतिपाल ३२
जबसंकटपरो प्रहलादै का बांधोखंभ पिताने जाय ।
खंभफोरितहंनरहरिप्रगटे औ प्रहलादैलीनबचाय ३३
उदरबिदारो हिरण्याक्ष को औयमलोक दीन पहुंचाय ।
सोजगनायक तुवरक्षकहैं जियरेशोचरह्योकाछाय ३४
करहुअंदेशानाजियरे मा करिहैं क्षेम कुशलयदुनाथ ।
राजतुम्हारीसबमिलिजैहै होइहैबिजयपत्रतुवहाथ ३५
सुनिकैबातै तबरानी की लस्कर चले धर्म अवतार ।
बिजयनगाराफिरिबाजतभये क्षत्रीसबैभये तय्यार ३६
डंकाबाज्यो समरभूमिमा धोवा सजनलागहथियार ।
सबदलसजिगयोमहराजाका आगेभयेभीमसरदार ३७

चलिभोलस्कर तबपांडवका आयोसमरभूमिके द्वार।
धरोपहारुककेअरसामा लस्करचल्योकौरवनक्यार ३८
घन २ घन २ घंटाबाजें कहुं २ बजैलागघरियार।
शंखहहारें समरभूमिमा औनरसिंहनकीधुधुकार ३९
पहुंच्यो लस्कर कुरुक्षेत्रमा क्षत्रीभयेसमर हुशियार।
अपने२मुर्चाफिरिगये फिरिकैचलनलागहथियार ४०
पैदलपैदलको मुर्चा भयो औअसवारन सौं असवार।
हाथिनऊपरहाथी भिरिगये ऊपरहौसमहौतनमार ४१
रथीरथी सौं सारथि सारथि योधादेतगरू ललकार।
सुमिरयाकरिकैगणनायकका धारोसम्हारिहाथहथियार
धन्वालीन्ह्यो तब भूरिश्रव सन्मुख भीमसेनके जाय।
हांकसुनायोसमरभूमिमा भिम्माखबरदारहोइजाय४३
हमरी वारनते बांचहौना लगतै बान जाहु यमधाम।
वहीसमइयाकेअवसरमा तबरथहांकिदीनभगवान ४४
जहां पितामहका रथठाढ़ो पारथ गरूदीनि ललकार।
सम्हरौभीषमअबरथऊपर खेलौसमरशस्त्रकोसार ४५
यहकहि धारो दोउधन्वा का लैकै नाम दूर्गाक्यार।
बरसैंशायक दूनोंदलमा होइगयोअंधकारबिकरार ४६
अपन परावा कछुसूझै ना क्षत्री मारुमारु बर्राय।
तबहिंसुधर्माकाधरिडाट्योऔ समुझायकह्योकुरुराय४७
मारिगिरावोपांडवदलका कोउनसमरछांड़िभगिजाय।
सुनिकैबातै दुर्योधन की लै धनुबान सुधर्मा धाय ४८
दशसहस्त्रसंगयोधालीन्हो लस्करतक्योयुधिष्ठिरक्यार
खरभर परिगा चौतर्फाते घुसिगे सैनमध्यसरदार ४९

जैसे भेड़हा भेड़िन पैठै जैसे सिंह विड़ारै गाय ।
जैसेलड़िकागबड़ीखेलैं गिनिगिनिधरैं अगारीपायं ५०
जौनगोलमा घुसै सुधर्मा सोगलियासी जायमंझाय ।
खलभलपरिगैपांडवदलमा दीख्योभीमसेनयहधाय५१
तुरतैकूद्यो रथ ऊपरते धायो क्रुद्ध गदा लै ज्वान ।
हन्योसुधर्माशायकतनमा योधालगेचलावनबान ५२
घुस्योवृकोदर तबकौरवदल मनमा धरीकोपकै सान ।
गदाप्रहारैजेहिक्षत्री के भुइमा गिरैं छोड़िसोप्रान ५३
गदाप्रहारै जेहिहाथीके दलमा चिघरि २ रहिजाय ।
गदासांड़ियाके धरिमारै दलमागिरैं चकत्ताखाय ५४
गदा बछेड़ के हनिमारै चारिउ सुम्म गर्द होइजायं ।
गदाप्रहारैं जेहिस्यंदनमा धरतीगिरतचूरह्वैजायं ५५
गदा सारथीके हनिमारै डब्बाउखरि शीशका जाय ।
सबदलबिचल्योदुर्योधनका कोनौ शूरन आड़ैपायं ५६
गदावृकोदर हनि २ मारै मानौकालसमरगयोआय ।
भागेक्षत्री तबसन्मुखते इतउत दलमारहे छिपाय५७
तबहिंसुधर्मा सन्मुखआयो मारे भीम अंग दशबान ।
झपटिवृकोदर स्यंदन तोरो भागो छोड़िबीरमैदान५८
तबहिंवृकोदरने ललकारो रे शठभागजातकेहिकाज ।
क्षत्रीह्वैकै रणते भागै आवै तोहिं जिये ना लाज ५९
यहसुनिधायो तबभूरिश्रव समुहें गरूदीनि ललकार ।
सिंहनादकरिरणमागर्ज्यो भिम्मासम्हरिहोउहुशियार
वीरवृकोदर तबललकारो रे शठ सावधानहोइजाय ।
हांकयोसारथि तबस्यंदनका दीन्ह्योसमरमध्यपहुंचाय

खैंचिकमनियां तबभूरिश्रव भिरूमाअंग हन्योदशवान।
तुरतवृकोदरसोशरकाढ्यो अपनोधनुषकीनसंधान ६२
दोउ शूरमा संगर कोपे एकते एक दई का लाल।
द्रोणगुरूके तबमुर्चापर धृष्टद्युम्न भिरोतत्काल ६३
शल्यसात्वकी सों भिरनीभै औ कृतवर्मा भूप विराट।
द्रोणीअभिमनुकामुर्चापरो कीन्हेकठिनयुद्धकेठाट ६४
नकुलजयद्रथ कैबरनी भै अपने गहे हाथ हथियार।
फिरोघटोत्कचतबसङ्गरमा दोऊहाथन लियेपहार ६५
जौनेदलमा धरिकै झोंकै केतनेउं शूर करै संहार।
पैदललस्करधरि२ मारो औअसवारउपरअसवार ६६
झपटिलपेटै रे कुंजर का औधरि दन्तन करै अहार।
झुंड पछारै रे घोड़नके दै दै घोर शोर ललकार ६७
कठिनहिडंबिनिकालरिकाहै सन्मुख कोउ शूरनाजाय।
तबहिंअलंबुषकाललकारोतुमरणहनौघटोत्कचधाय ६८
सुनिकैबातै कुरुनन्दनकी राक्षस चल्योअलम्बुषधाय।
संगनिशाचरकोटिनलीन्हे औहहकाररहीरणछाय ६९
लैलै धन्वाशर हाथेमा क्रोधित भये निशाचर झारि।
जहांवृकोदरकोलरिकारहैसन्मुखसमरदीनललकार ७०
खैंचिकमनियनमारोदाधरि बरसनलगेअसंख्यनबान।
तबैघटोत्कचका हनिमारो बीरनधीर अलंबुषज्वान ७१
भयोघटोत्कचतबक्रुद्धितअति रथतेउतरिपरयोअरगाय।
लैकैमुद्गरतबहाथेमा गर्ज्यो कालरूपरण धाय ७२
गदाप्रहारैं दोउ रणयोधा काहू अंग न आवैं घाव।
अस्त्रछोड़िदियोदोउ ज्वाननने सन्मुखभिरेकालसमआय

मुठिकन मारैं कोउ रथायोधा कोऊदांतन डारैं चबाय।
नखन बिदारैंरे अंगन का धरिकै केशपकारैं धाय ७४
बड़े २ दंतनते धरिकाटैं देही मेघघटा रहिं छाय।
देहीकापैंरे क्रुद्धितह्वै नैना अग्नि ज्वालह्वैजायं ७५
झपटिकै खंभाकोउ स्यंदन के धमकैशीशशीशपरदांय।
पकरिभुशुण्डारे हाथी का औकुम्भस्थल डरैंचबाय ७६
भिरोघटोत्कचतबसंभरामरि औरनहन्योअलंबुषज्वान।
पकरिपछार्योरेधरतीमा लखिभअमानभयेबलवान७७
रामरत्न की अनुमतिलैकै बन्दीदीन कह्यो यह गाय।
मातुशारदा की दायाते सप्तम पूरभयोअध्याय ७८

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं०रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व घटोत्कचअलं
बुष युद्ध व अलंबुष बध वर्णनन्नाम सप्तमोध्यायः ७ ॥

संजयभाष्योफिरिआगेकहि कौतुकसुनौपरीक्षितलाल।
युद्धमनोहर कुरु पांडव को सुन्दररचिबतावहुंहाल १
गिरो अलंबुष जब धरतीमा कौरव गये सनाकाखाय।
बढ्योपितामहतबआगेका सारथिस्यंदनदियोबढ़ाय २
हाथ सुधारो फिरिधन्वा का अर्जुन तीर गये नियराय।
शायकछांड़योतबपारथपर रोक्योआसमानशरछाय ३
दशशरमारे कृष्णचंद्रउर औशरबीस हन्यो हनुमान।
रिसहाह्वैकै तबपारथने भीषम अंग प्रहारो बान ४
घावआइगयो तब भीषम के औमाधवसोंलागबतान।
यहपुरुषारथना पारथमा तुम्हरी कृपा अहैभगवान ५

रक्षा कीन्ह्यो अब स्यंदन की ओमहराजावातवोनाउ।
बहुतक योधाइन मारे हैं एकैवार लेहुं सब दाउं ६
यहकहिलीन्ह्योगहिशांरगका मारोतानिसुतीक्षणवान।
पीछे टारोरथ पारथका तब यह कह्यो कृष्णभगवान ७
धनिपुरुषारथ गंगासुतको दीन्ह्यो नंदिघोषरथटारि।
बाणघाततेस्यंदन डोल्यो है बड़महारथी धनुधारि ८
बाण बढ़ाये तब यदुनंदन राख्यो समर भूमि रथजाय।
वही समइया के अवसरमाभीषमहन्योसहस्रदशराय ९
शंख बजायो समर भूमिमा दलमा मारु बंदह्वैजाय।
निज २ घरका क्षत्री चलिभे गंगासुवनकीन्हिमंशाय १०
चले युधिष्ठिर तब मंदिरका औसंगलियेकृष्णभगवान।
कीन्ह्योभोजनरेमहलनमा औविश्राम करैसबज्वान ११
तादिनराजा बोलन लाग्यो ओमहराज कृष्ण कर्तार।
होयपराजयनित संगरमा भीषम हनैसमरसरदार १२
छूटी आशा अब जीतनकी भीषम समर जीतिनाजाय।
तादिनकुंती बोलन लागी सुनिये भूपयुधिष्ठिरराय १३
तुम्हरे रक्षक तौ माधव हैं तुमको कहाशोचरह्योछाय।
तुमका सुधिनालरिकैयांकी खेलनसंगजातसबभाय १४
सबौदुलरुवारे कौरव के खेलत संग जायकुरुराय।
होतलड़ाईतहंआपुसमा तबधृतराष्ट्रकह्योसमुझाय १५
भीमसेनऔ दुर्योधनते नित उठिहोतरहै बहुरारि।
बसौअन्त तुमलरिकन लैकै दूजोमंदिर देहैंसवांरि १६
मंत्रविचारो कुरु राजाने औशकुनीते कह्यो बुझाय।
नगरबारुणामें तबतुर्तै दीन्ह्योलाखभवनबनवाय १७

लाखै केरो सब मंदिर बनो लागो कोटईंट सब लाख।
यहीजलैंहींपांडवसुतका यहधृतराष्ट्रकोनअभिलाष१८
भई तयारी सजि मंदिर कै पाछेक बिदुरलीनबुलवाय।
उन्हें पठायोरे देखनको देखहु पांडुभवन तुमजाय१६
बिदुरविलोकयोजबमंदिरका औथवइनतेसुन्योहवाल।
हालबतायोतबथवइनने सुनियेबिदुरसत्यप्रतिपाल २०
हमैंबुझायो कुरु राजाने ऐसोभवन रचौतुम जाय।
लाखैकेरो सबमंदिर बनै औकोहू ना परै बुझाय २१
आयपाण्डवा यहिमा रैहैं देहौंतुर्त आगि लगवाय।
बिनाउपायेपाण्डवमरिहैंयहसुनिबिदुररहेभयखाय२२
जोकहुं पाण्डव यहिघर रैहैं तौबिन मारेमरैं बनाय।
घटिहाराजा यहुकौरवहै मारैराज हेतु कुलभाय २३
हाथमुद्रिकाथवइनदीन्ह्यो औयहबिदुरकहीसमुझाय।
सुरंगबनाओयहिमन्दिरमा जोकौरवनापरैलखाय २४
यहसुनिथवइनसोरचिदीन्ह्यो ऊपरखंभदीनलगवाय।
बिदुरसिधारेतबभूपतिढिग औसबहालकह्योसमुझाय
उत्तममंदिरतुमबनवायो जेहिकी शोभाबरणिनाजाय।
जनुरचिराख्योविश्वकर्माने निरखतइंद्रधामसकुचाय२६
पूछिसगुनवारे ब्राह्मणते हमका दियो भवन प्रस्थान।
साथ पठायोभीषमगुरुका उनसबकीन्हेहोमविधान२७
तब चलिआये वै मन्दिर का हमसबरहे भवनमेंजाय।
हालुबतावोंफिरि आगे का सुनिये पूतयुधिष्ठिरराय२८
पांडुनामकोयकव्याधारहै नितउठिजंगलकरैशिकार।
जेतने जीवन वनमापावै लावै मारिसो करै अहार २६

एक दिनौना की बातै हैं जंगल खेलन गयोशिकार।
वनमादेख्योयकहरिणीका तुरतैलियोशरासनधारि ३०
गर्भधारे वह हरिणी रहै आये गर्भ दिनन परमान।
ताहिमारिबेहितव्याधाने कीन्ह्योविविधभांतिउन्मान ३१
जाललगायोपश्चिमदिशिमा उत्तरदिशाआगिदियोबारि।
श्वाननराख्योपूरवदिशिमा दक्षिणलियेशरासनधारि
चहुंदिशि हरणी रस्तादेखै कौनिउंओरन पावैजान।
हरिणी संवरैतबबहिक्षनमा हेप्रभुदीनबंधुभगवान ३३
मृगीविचारी मैं जंगल कै नितउठिबनतृणकरौंअहार।
मोहिंमारिबेकोव्याधाने कीन्हयोनाथकोटिपरकार ३४
जोमैंभागौंपश्चिमदिशिका तौफंसिमरौंवधिकके जाल।
उत्तरदिशिकाजोभागतिहौं तौजरिजाहुंअग्निकीज्वाल
पूरवदिशि काजो मैं भागौं तौ सौंटूककरैं तनश्वान।
दक्षिणदिशिमाव्याधाठाढ़ो लीन्हेहाथशरासनवान ३६
तुमबिन रक्षककोउनाहीं है यहिक्षनदीनबंधुभगवान।
नाथ अनाथन केतुमहींहौ कीरतिगावैं वेद पुरान ३७
जहं २ संकटपरैंदुखियन का रक्षाकरौ तहांभगवान।
मोहिं उबारौहेकमलापति व्याधालेनचहतहैप्रान ३८
धीरज छूट्यो है जियरेते हौंबूड़तहौं सिंधु अथाह।
ऐसे संकट के अवसर मा हैप्रभुतेरे हाथनिबाह ३९
आरतटेरी जबजंगलमा हरिणी दुखितदेखिभगवान।
वहीसमइयाकेअवसरमा आये घूमरि मेघअसमान ४०
घटा घूमिघनबरसनलागे तुरतै बुझी अग्निकी ज्वाल।
बाघझपटिकैकुत्तनमारो उड़िगयोपवनझूंकमाजाल ४१

दमकीदामिनिआसमानमा ब्याधाशोभागिरीश्वरराय ।
चहूंओरते संकट टारो दीनानाथ भक्तसुखदाय ४२
रक्षाकीन्ह्यो तब हरिणी कै संतन सुखोसदाभगवान ।
सोई रक्षक हरितेरे हैं करिहैं सब प्रकार कल्यान४३
औरिबयरियाडोलन लागी औरै होनलाग ब्यवहार ।
कथाअनूपमफिरिवरणतहैं। अपनेज्ञानबुद्धिअनुसार४४
ब्याधनआयो जबमंदिरका सहसुतत्रियाकियोप्रस्थान ।
वहोसमइयाकेअवसरमा द्विजइककियोयाचनाआन४५
पांच पूत जबनयनन देख्यो पूछ्योबचन सबरितेधाय ।
हाल बतावो तुमजियरेका अपनोनामदेहुबतलाय४६
दिवसवितावोकयहिउद्यममा यहतुम हमैंदेहुसमुझाय।
पांडुनामस्वामीकोभाष्योओम्वहिंकुंतीकह्योबुझाय ४७
नामयुधिष्ठिरतुम्हरोभाष्यो दूजो भीमसेनकह्योनाम ।
तीजोअर्जुनअसभाषतभयोचौथोनकुलकीन्हअनुमान४८
नामपांचवों सहदेवराख्यो तबमैं हर्षितभइउ बनाय ।
आनिजेवायोंमैंलरिकनका औफिरि पलंगादियोसोवाय
उलकालरिकारहैशकुनीका त्यहिदुर्योधनलीनबुलाय ।
त्यहि समुझायोदुर्योधन ने दीन्ह्योभवनआगिलगवाय
ज्वालहुताशन जागनलागी द्वारे दैदियो ब्रजकेंवार ।
ज्वालाजागीतबआगीकै लागीजलन लाखकीक्षार ५१
जोकहुंलाख परैदेहीमा तुरतै खाल भस्म होइजाय ।
ब्याकुलहोइकैतबजियरेमा टेर्योंकृष्णकृष्णयदुराय ५२
शरण तुम्हारी प्रभुदासी है यहि संकटमाहोहुसहाय ।
वहीसमइयाकेअवसरमा सहदेवकहीभीमसमुझाय ५३

हालबिचारो कछुजियरेमा तौ जियजानजात बचिजाय ।
नाहिंतजरिहौयहिआगीमा एकहिसाथपांचहूभाय ५४
हालबतायो तबसहदेव ने सुनिये भीमसेन यह बात ।
खंभउखारौयहुभुजबलते तौफिरिबनैचलनकोघात ५५
खंभउखारो तबभिम्माने बाहर निकसिपरे अरगाय ।
गदाछूटिगो तहंभिम्माका फिरिकैगयोलेनकोधाय ५६
गदाउठायो जबभिम्माने हांकयोभवनअग्नितहंआय ।
जरतविलोक्योरेभिम्माका तहंप्रभुवहिक्षनकियोसहाय
प्राणउबारोतहं पांडवके लीन्ह्यो व्यथानाशिअपनाय ।
रहेद्वारकामातबमाधव रुक्मिणि संगसेजपरजाय ५८
वहीसमइयाकेअवसरमा रुक्मिणिअगलगीतब आंच ।
जोरिगदोरियापूंछनलागीं हेप्रभुकहहुबचनतुमसांच ५९
अग्निकिज्वाला कहंतेंआई तातीअङ्गलागिगइ ज्वाल ।
तबसमुझायोकमलापतिने रानीसुनोअग्निकोहाल ६०
बहुछल कीन्होहै कौरवने पांडवदियोलक्ष गृह बास ।
अग्निलगायोरेमन्दिरमा पांडवतजीजियनकीआश ६१
जरतबचायों मैं पांडवका तातेलगी अग्नितन आंच ।
हालबतायो ना काहूते रानी बचनजानु यहसांच ६२
शोचनकरिये सुतजियरेमा तुम्हरेरक्षक कृष्ण सुजान ।
जरतबचायोजिनआगीते रखिहैंलाजवईभगवान ६३
यहसुनिपांडवधीरजकीन्ह्यो सबहिनरैनिकीनबिश्राम ।
भोरभोरहरेके पहफाटत लागेसजन युद्धके साम ६४
दोऊ लश्कर सजि २ आयो वहिरणकुरुक्षेत्र मैदान ।
मारूबाजा बाजनलागे औफहराने लालनिशान ६५

अपने २ तब मुर्चनपर सबियां शूर भये हुशियार ।
ठाढ़ो करषाबोलनलागे फेरनलागअश्व असवार ६६
पैदलपैदल सों भिरनी मैं औ असवारनसोंअसवार ।
हाथिनहाथिनझुरमुटपरिगे ऊपरहोतमहौतनमार ६७
हहरकायगयो कुरुक्षेत्रमा देवता लखैं खड़े असमान ।
दूनौदलके मध्यस्थलमा तबरथहांकिदोनभगवान ६८
धनु टंकोरैं गरजन लागीं छूटन लाग कैबरी बान ।
झुकेशूरमा दूनौदलके लागो होन युद्ध घमसान ६९
इन्द्रबज्रसम शायक छूटैं मानौ प्रलय मेघ घहरान ।
अर्जुनभीषमके मुर्चनपर जहंसतुदेखिरहेभगवान ७०

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
त्मजाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्म पर्व भीष्म
अर्जुन घोर युद्ध बर्णनो नामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

सुमिरि भवानी जगदम्बाका औ शारदके चरणमनाय ।
भीषमपारथकोपुरुषारथ निजमतिसरिसकहौंफिरिगाय
अर्जुनबोले तब भीषमसों सुनियेभीष्मपितामह बैन ।
दिनाचारितेनितउठिरणमा तुमरणहनौसहसदशसैन २
शंखनादकरि समरभूमिमा नितप्रतिचलेजातहौधाम ।
आजुमूर्चातुमपैहौना करिहौं कठिन युद्ध को साम ३
तादिन भीषमबोलनलागे पारथ बचनकरो परमान ।
हमरोतुम्हरो पुरुषारथसब जानतकृष्णचन्द्रभगवान ४
सारथिस्यंदनहरिहोवींना तौरणभूमिरहतउधाय ।
चलैन उद्यम कछु माधवते रक्षकतोर सदायदुराय ५

सम्हरिकै बैठौ तुम स्यंदन पर रक्षाकरो सैनकोआज ।
घरी पहारुकके अरसामा मरिहौं दशसहस्रभुविराज ६
यह कहिलीन्होंकरधन्वाको कीन्ह्योतीब्रवाणसंघान ।
हनिसोमारो पारथतनमा पारथ काटिगिरायोवान ७
वोसक शायकहनि भीषमउर क्रुद्धितभयोपार्थभगवान ।
तेशरकाटे गंगा सुतने पारथ लियो अगिनिको वान ८
झपटिशरासनमा संधाने व्यापीसमर अगिनकीज्वाल ।
उठेबवंडरआसमानलग चहुंदिशिलपटचलीविकराल ९
खलभलपरिगै कौरवदलमा लागे जरन शूरसरदार ।
चिघरि २ गजरणते भागे भाग्यो यूथबछेरनक्यार १०
कितन्योयोधाजरिधरतीगिरे स्यंदनभयेअसंख्यनक्षार ।
वरुणबाणतबभीषमलीन्ह्योबरसनलगेमेघजलधार ११
अगिनिबुतानीसबयकक्षनमें लस्करबुड़तपांडवनक्यार ।
तबसंधान्यो पवनबाणका अर्जुन समरशूरसरदार १२
बायु झकोरनते जलसूख्यो धरती ध्वजागिरोअरराय ।
तज्योभुवंगमशरभीषमने अहिफुफकारिचलेफनघाय १३
शेषनाग सब दलमातोपे तुरतै कियो पवन आहार ।
डसिडसिखायोपांडवदलका जझजहरअंगकोझार १४
सैनसंहारी बहु पांडवकै अर्जुन गरुड़बाणलिघोतानि ।
सोहनिमारीकौरवदलमा लागेगरुड़नागसबखान १५
अंधकार शरभीषम छोड़यो भाजे सकलसोरतेहिकाल ।
अपनपरावो कछु सूझैना छायो अन्धकारविकराल १६
स्यंदन स्यंदनते धरिटैहै औअसवार उपर असवार ।
कुंजर २ माधरिअभिरैं करिकरिअलयकारचिग्घार १७

रविशर पारथ तब संधान्यो होइगो अंधकारकोनास ।
उयोदिवाकरकोमण्डलसो औरणभूमिभयोपरकास १८
मनमा कोपेउ तब गंगासुत पारथ अंगहन्योदशबान ।
घायल कीन्ह्योरथ वाजिनको मारेसातबानहनुमान १९
बान सत्तरिककृष्णहिं मारो स्यंदन चूरण कीनबनाय।
चारिचक्रधरणीमागिरिगे पारथगयोसनाकाखाय २०
तबरथ हांको यदुनंदनने गहिकैबागबछेड़न केरि ।
पारथकोपेउसमरभूमिमा लीन्ह्योबानधनुषगुनजोरि २१
सोहनिमारो तन भीषम के आयो अंगघाउबिकरार ।
भीषमघायल भे स्यंदनपर औबहिचलीरक्तकीधार २२
चारिबान हनिबाजिनमारे घायल कियोबछेड़नधाय।
तीनिबाणसों सारथिमारो इकशरसोंदियोध्वजागिराय
यह पुरुषारथलखि पारथको भीषमसमरदीनितबहांक
सावधानहोअर्जुनरथपर अबलखुमोरियुद्धकीशाक २४
फिरिकै बोल्यो यदुनंदनते सुनिये कृष्णचन्द्रभगवान ।
वाग बछेड़नकैअबथांभौ भीषम लियोहाथधनुवान २५
घल्योशरासनतबकुद्धितह्वै दीन्ह्यो नंदिघोषरथछाय ।
शायकमारोतबपारथने औतिनुका समदियोगिराय २६
ओसरिनखेलैं दोउसमयोधा दुइमा एकनमानैहारि ।
शायकशायकपरधरिधमकैं निरखैंघोरयुद्धअसुरारि २७
कटि२ योधागिरैंधरणीमा कहुं२ मुण्डरुण्डबिललायँ ।
लागीबर्षा है शायककी रणमाअंधकार रह्योछाय २८
शंकाहोइगइ तब देवनके होइहै सत्य सृष्टि संहार ।
अर्जुन भीषम कोरणमाचो होइहैकौनहाल कर्त्तार २९

गिरैं भुशुराडाकृटिहाथिनके मानौ अजगर परेकराल।
गिरैंबछेड़ा चकृतहवैकै जिनके लगैं अस्त्रविकराल ३०
भीषम लीन्ह्योतब पर्वतशर औपांडव दलझुकेबनाय।
एकबाणके हनिमारेते सहसन शूरगिरैं भहराय ३१
सबदलभाग्यो तबपाण्डवका रोपेरहैं समरनापायँ।
नंदिघोषरथप्रभुगहिराख्यो औअभिमन्युभीमरहिजायँ
औरणदुलहासबभागतभये रहिगयेतीनिसमरसरदार
गरुईगाजैंगंगासुतकी कोसहिसकै बिनाकरतार ३३
भूप युधिष्ठिर रणते भागे भागेशूरबीर भय खाय।
रस्तालीन्ह्योवनजंगलकी जहंकोउसकैखोजुनापाय३४
मारिशायकनसबदलतोपेउ भीषमअंधकारदियोछाय।
देवडेरानेआसमानमा औविधिशंभुध्यानछुटिजाय ३५
तब ललकारो हरिपारथका रेबलबीर लेहिकर बान।
मारिसंहारौंकौरवदल का भीषममारुसमरमैदान ३६
बाणबछेड़नकै हरिसाध्यो अर्जुन वज्रबाणलियोतानि।
धरिगुनजोरोतबशायकका कौरवदलहिदीनसंधानि ३७
गिरिते दूनो वज्रबान भयो कीन्ह्यो तुर्तपहारहिछार।
तबसुखपायो नरदेवनने आयेसमर भूमिसरदार ३८
बर्षाकीन्ह्यो तबफूलनकै हरषे अमर पार्थ जैपाय।
चढ़ेबिमाननमारणदेखैं शूरनसमरबरणिनाजाय ३९
तबललेलकार्योफिरिगंगासुत पारथखबरदारहोइजाय।
शायकमारतहौंसन्मुखमा यहकहिदियोबाणबहुछाय४०
सोशरकाट्यो सबपारथने मारथ समरगिरेभहराय।
दोऊ बरोबरिपुरुषारथमा सहिनासकैंशस्त्रकेघाय ४१

सबदलमारनभीषमचाहैं पारथ करैंसमर रखवारि ।
पारन पावै कोउकोऊते यकते एक शूर सरदार ४२
पलक न लागै कोहुनैननमा मुर्चन शूररहैं हुशियार ।
इतनेईअंतरमा क्षत्रीगन भीषम मारिमिलावैंक्षार ४३
दुचितो दीख्यो जबपारथका भीषम वृष्टिकीनवहुवान ।
तेहीसमइया के अवसर मा औहनिगये सहसदशज्वान
शंख बजायो तब गंगासुत पारथ गयोसनाका खाय ।
जोरिगदोरियाबोलनलाग्यो सुनियेविनयनाथयदुराय
शंखबजायोकिमिगंगासुत कार्वाधिगयेसहसदशज्वान ।
तब समुझायोरेपारथका सारथि कृष्णचंद्रभगवान४६
राख्यो आपनप्रणगंगासुत औवधिगयेसहसदशज्वान ।
मनमाशोच्योतबपाराडवसुत भीषमबड़ोवीरवलवान ४७
संध्याहोइगइतवलस्करमा सविताअस्तकालगयोआय ।
फिरिगयेमुर्चा दूनौदलके अपनेगेह चलेसमुहाय ४८
नंदिघोषरथमाधव फेरो आई सैन्य पाराडवन केर ।
हौदाउतरे तब हाथिन के औतंग छूट बछेड़नकेर ४९
खैरोसइयां सबलस्कर मा क्षत्रीकरनलागजेवनार ।
औरिबयरियाडोलनलागी औरैहोनलागव्यवहार ५०

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशांतर्गत मसबासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व
भीष्मजयवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः ९ ॥

गयोदुर्योधन तबभीषमतैं बोल्योहाथजोरिशिरनाय ।
सुनौ दुलारे तुमशंतनुके यहनिजुबचनदेहुसमुझाय १

पांच दिनौंना रणमाबीते नितउठि समरकरौसंग्राम।
हारि नमानैं पांडव वाले जावैं क्षेम कुशल सों धाम २
जगत तुम्हारो बलजानतहै औ सुरलोकदेवताआदि।
बड़े२योधा रणते भागे कबहुंन भयो पराक्रम बादि ३
शस्त्र संभारौ जादिनरणमा तादिन पांडवकरौबिनाश।
कौनेदिनका तुमराख्योहै पांडवकरतबिजयकीआश ४
ताक्षन भीषम बोलनलागे सुनु दुर्योधन बातहमारि।
पूरबगाथात्वहिंसमुझावौं यहांनिजमनमाकरहुबिचार ५
नंदगेहमा जब गोबिंदरहे नितउठि बनैचरावतगाय।
सुरपतिपूजासबकरतेरहैं तबहरिपुज्योगोबर्द्धनजाय ६
जानिअनादर अपनेमनमा अतिशय गर्बकीनसुरराज।
टेरि बोलाथो रेमेंघनका औ समुझायकह्योयहसाज ७
जायकैब्रजपरतुमडेराकरौ बरसौप्रलयकालजलधार।
खोदिबहावो ब्रजबासिनका औसबगोपगायघरद्वार ८
सुनिकै अज्ञा सुरराजाकै चलिभेमेघसहित अभिमान।
मूसलधारा बरसनलागे कीन्ह्योमहावृष्टि जलदान ९
दमकिदामिनीघनघहरावैं सुनिब्रजलोगभयेभयमान।
त्राहित्राहिकहिटेरनलागेयहिक्षनराखुकृष्णभगवान १०
कोपिकैसुरपति चढ़िआयोहै बेराप्रलयआयनजिकान।
होहुसहायक जनसुखदायक अबब्रजलोगभयेबिनप्रान।
लखिकैआरतब्रजवासिनको औलखिइन्द्रकेरअभिमान
वामहाथगोबर्द्धनधारो रक्षक भये कृष्ण भगवान १२
बारुनवांकोब्रजबासिन का राख्योकृष्णभक्तकीलाज।
सातदिवसजलमेघाबरसे मान्योहारिहियेसुरराज १३

शरणासोताकयोयदुनंदनकै सुनुकौरव के राजकुमार।
तेई रक्षक हैं पांडव के श्रीपति कृष्णचन्द्र कर्तार १४
तहंपुरुषारथ ममचलिहै ना कौरवबचन करौपरमान।
कबहुक रक्षक हरिहोवैंना पांडव हनौंएकहीवान १५
जोकछु मंशा नारायण कै होइहै सोई अंदेशा नाहिं।
सुनिकैबातैतबभीषमकी कौरवशोककियोमनमाहिं १६
होयतयारीफिरिलरिबेकी दोउदलसजनलागनिजसाज।
बजेनगारातबलस्करमा लाग्योसजनशस्त्रकुरुराज १७
मारूबाजा बाजनलागे बैरख ध्वजा लाग फहरान।
ढाढ़ीकरषा बोलन लागे घूमनलागे लालनिशान १८
हाथीचढ़ैया हाथिनचढ़िगे घोड़नचढ़े छबीले ज्वान।
दूनौ लस्कर सजिठाढ़े भये आये कुरुक्षेत्र मैदान १९
महारथीहैं ते आगे चले सारथि गहे बछेड़न बाग।
अपने २ तबमुर्चनपर क्षत्री शस्त्र चलावन लाग २०
पैदल पैदल ते मुर्चाभयो औअसवारन ते असवार।
हाथी हाथी झुरमुटपरिगे ऊपरहोय महौतनमार २१
रथी रथी सों सारथि सारथि गरजैं कुरुक्षेत्र मैदान।
बलकरिदपटैंइतउतझपटैं तकि२हनैंसुघरुआज्वान २२
खटखट २ तेगाबरसैं बोलैं छपक छपक तरवारि।
शेलदुधारा बाजनलागे भालनहनैंलाग असवार २३
शायक बरसैं दूनौदलमा मानौ मघानखतझरिलागि।
शूलतमंचाकड़ाबीन औभरिपिस्तौलचलावतआगि २४
गदा प्रहारैं मुदगर मारैं झारैं कतैं तेग के हाथ।
छुरीकटारिनकै झरिलागी थांगैं चलैं हवाके साथ २५

खांड़े दुधारा बाजनलागे भाजन लगे भगैयाज्वान।
तीरकैबरी छूटनलागे बरसनलगे अगिनियांबान २६
बड़े २ समलनके बंधवैया सरके डारि २ हथियार।
अपनपरावो जहं सूझैना आमाझोर चलैतरवारि २७
कल्ला कटिगे हैं घोड़न के चेहरा कटे सिपाहिन केर।
गिरैंसांड़ियाअधखंडे ह्वै रणमालाग मुण्डकोढेर २८
कटेभुशुण्डा रे हाथिनके कटि २ गिरैंसुघरुआज्वान।
दशाभयंकररणअंतरकै सुनिसुनि चित्तहोतभयमान२६
बसुधातोपी रुण्ड मुंडसों क्षत्रिनछत्र भूमि गिरिजायं।
घायकरेजे बिषधर लागैं लगतैअंगभंग होइजायं ३०
लहुरोभैया रे पांडवका सहदेव कीन समर मैदान।
भूमिसोवायोबहुक्षत्रिनका रणमाउठिगेगीधमसान३१
आयोशकुनी रे मुर्चनपर मामालगै कौरवन क्यार।
तीनिबाणसहदेवकेमारे सहदेवकाटिमिलायेक्षार ३२
नंदिघोषतबमाधवहांक्यो पारथ समरभयो हुशियार।
धनुगांडीवहिलै हाथेमा बरसनलाग अस्त्रजलधार३३
भूप जयद्रथ के मुहरापर बढ़िकै नकुल लीन मैदान।
औसरिनक्षत्री खेलनलागे एकतेएक बीरबलवान ३४
धृष्टद्युम्न औभूरिश्रव ते रणपरिगयो रामते काम।
श्यामध्वजारथसारथिहांक्यो गुरुमहराजकीनरणसाम
हनिहनिशायक मारनलागे जूझनलगेसुघरुआज्वान।
बिचल्योलस्करजबपांडवका तबअभिमन्युलीनधनुबानि
झपटिशरासन शायकजोरो गुरुपदपद्म कीनपरणाम।
रक्षकसवंरो पितुअपनेका अर्जुनसखासांवरेश्याम ३७

खैंचिकमनियां हनि रोदाते गांसी सेरभरे को खाय ।
मरमरमरमर उठेंधनुहियां रोदाठनकि २ रहिजाय ३८
बाणसैकरनहनिहनि मारै कौरव सैन्यकोन परिहार ।
कहुं २ हाथीकहुं २घोड़ा कहुं २ जूझिगिरै असवार ३६
हानकैशायकजेहिके मारै धरती गिरै भरहरा खाय ।
गुरुमहराजातवधनुलीन्ह्यो अभिमनु सन्मुखचलेसमाय
बानकैझरी हनिहनि मारै अभिमनु अंग न आवैंघाय ।
तबखिसियानेद्रोणाचारज शायकहन्योफेरिउरधाय ४१
बारुनबांकोभयोअभिमनुका मनमावहुतलागपछिताय ।
हायबिधाताकामर्जीहै सबदलअभिमनुदियोगिराय ४२
भीषम अर्जुनते रणमाचो सारथि कृष्णचन्द्रभगवान ।
तबैपितामह धरिकैडाट्यो पारथ वचनकरेपरमान ४३
पांचदिनौनामोहिंरणमाभये नितउठिसमरकरौंसंग्राम ।
घावनलाग्योतेरीदेहींमा पारथकुशलजातनितधाम ४४
संभरिकै बैठौ रे स्यंदनपर परिहै आज रामते काम ।
मारिसोवेहौं रणसंगरमा रक्षाकरैंकृष्णसुखधाम ४५
सावधानह्वै तब जियरेमा भीषम घरो हाथधनुबान ।
झरिअसिशायकबरसनलागे छिपिरहेअंधकारसोंभानु
घायलकीन्होतबपारथका सारथिसहितकृश्नभगवान ।
हन्योबहुडेड़ातबस्यंदनके मुर्छितकियोध्वजाहनुमान ४७
खलभल परिगै पांडवदलमा हाहाकार रहोना जाय ।
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठै जैसे सिंह बिडारै गाय ४८
जैसे लरिका गबड़ी खेलैं गनिर धरैं अगारी पायं ।
जौनगोलमाभीषमपहुंचै सोगलियासोजायमझाय ४६

क्याकुरु कीन्होंतबबीरनका कोउन धरैसमरमापायं।
केहिके जियरा रे भारूहैं भारतग्रामगँवावैंजाय ५०
तबैधनंजय रिसहाहोइगयो लीन्होहाथशरासनबान।
नंदिघोषहरिआगेझेल्यो सन्मुख भयोवीरबलवान ५१
असीवाणसोंहनि गंगासुत घायल कियो बछेड़नधाय।
दशशरमारेसारथिउरमा औरथध्वजागिरोभहराय ५२
तबललेलकारोकौरव दल का कितनेउंहनेरथीअसवार।
केतनेउंस्यंदनचूरणकीन्ह्योकितनेउंजूझिगिरेमतवार ५३
गिरैं सुघरुआ भट धरतीमा नदियाबहैरक्तकी धार।
अधजलमुर्दाधरतीलोटैं औमिलिजायंधरणिकीक्षार ५४
परेपगारन से हाथीरण मानोकच्छ मच्छ उतरायं।
जौनशूरमा सन्मुख जूझैं तिनका इन्द्र परीलैजायं ५५
लखिकै संगररणपारथ का देवता फूल रहे बरसाय।
करैंअचंभवहियअपनेमा जन्म्योकौनकालयहिमाय ५६
धनि २ माता इनकी कहिये जिनकीकोषिधरोअवतार।
असरणयोधाजिनकेदलमा काहे न खुशीहोयंकर्तार ५७
भीषम अर्जुन कोसंगरलखि देवता खुशीमानहोइजायं।
जालिमयोधादोउदलअभिरे जिनकेतेजवरणिनाजायं
लक्षन योधा धरणीगिरिगे परिगे समररास तेकाम।
उठैं कबंध वीर रण जागैं मुर्दा देखि परैं मैदान ५९
शंकरनाचैं समर भूमिमा पहिरे मुण्डमाल बेताल।
बहुपुरुषारथपारथकीन्ह्यो कौरवसैनकीनिबेहाल ६०
तब ललकारो गंगासुतने अर्जुन खबरदार होइजाय।
अबकीवारनमाबचिहैना रक्षकहोयंकृष्णयहिदायं ६१

यहकहितान्यो नारायण शर पढ़िकै मंत्र कियोसंधान ।
कोटिनदामिनिसमरणचमक्यो मानौउदयकोटिशतभान
देवता कंपे आसमानमा इन्द्रौ गयो भरहराखाय ।
छूटि समाधीगइंयोगिनकी पांडवगये सनाकाखाय ६३
प्रलय कालकोजसदावानल आखिर सृष्टिकरैसंहार ।
तबधरिडारोगंगासुतने पारथ संभरिहोसिहुशियार६४
पांडवकुलमाकोउ राखिहैना मरिहैंबीनि २ सरदार ।
देखिनरायणशर भीषमका मनमा शोच करैंकर्तार६५
तब समुझायो यदुनंदनने पांडव सब दलसुनो बनाय ।
भीषम शरते कोउबचिहौना नाकोउयोधाकरैंसहाय६६
शस्त्र डारि देव सब हाथेते औरणभागौ पीठिदेखाय ।
जियनकिआशा अबनाहींहै यहनिजवचन सुनौमनलाय
सुनिकै बातैं यदुनंदन की पारथदियो अस्त्रकरडारि ।
जितनालस्कर रहैपांडवका सब मुंहफेरितज्योहथियार
भूप युधिष्ठिरशस्त्रडारिकर भीषम तनरहेपीठिदिखाय।
सिगरेदलमाधायकघूम्योकोहुकरशस्त्रनपरोलखाय६९
गदानभिम्मा करते डारो सन्मुख भयो अस्त्रकेधाय ।
तब समुझायो यदुनायकने करते गदाडारिदेभाय७०
कसम हमारीतोहिं भिम्माहै जल्दीछोड़ु हाथहथियार।
भागिनबचिहै भीषम शरते रक्षा कोटि करैं कर्तार ७१
सुनिकै बातै यदुनंदन की सन्मुख भीमदई ललकार ।
होनी बातै तुम बोलौना यहनाकाम शूरमनक्यार ७२
नालति ऐसे क्षत्रीपन का औधिरकार जिंदगीक्यार ।
फेरिकैक्षत्रीपनमिलिहैना नाफिरिकोषिमिलैअवतार७३

प्राणगंवैहैं समर भूमिमा छुड़िहैं हाथनहींहथियार।
तब फहरान्यो नारायणशर पहुंच्यो भीमसेनकेबार ७४
खलभलपरिगै पांडव दलमा माधवगयेसनाकाखाय।
जान्यो भिम्मा अबबचिहैना रथते कूदिपरेअरगाय ७५
पेट लुकायोरे भिम्माका सन्मुख लियोचोट शर धाय।
संकट देखै जब बालक का जननी तुरतै होयसहाय ७६
दुखियादेखै जबबछुवाका हुंकरतिचलैधायजिमिगाय।
तेहिविधिराख्योप्रभुभिम्माका देवताजयजयरहेसुनाय
भयो अनंदिततब पांडवदल आनंदभये युधिष्ठिरराय।
भयेअनंदितसुरअम्बरमा जयजयकाररहे मुखछाय ७८
ताक्षन भीषम बोलन लागे धनि २ कृष्णचंद्रभगवान।
सबविधिरक्षकतुमपांडवके काहेनबचैंसमरमाप्रान ७६
सुदिनबालकनकुन्तीजायो पायो हरिअसहितूसहाय।
तिन्हैं अंदेशाकहुकाकोहै सुनिकै कृष्णरहेहरषाय ८०
तबबढ़िआये नंदिघोष पर अर्जुन सहितसारथीश्याम।
हाथ सुधारो तबधन्वाका पारथयुद्धविजय केकाम ८१
तब हनिमारो शर भीषमने पारथ अंग बेधिगेबान।
वहोसमइयाकेअवसरमा भीषमहनेसहसदशज्वान ८२
शंख बजायो समरभूमिमा सैना सकल भयोविश्राम।
मुर्चा फिरिगे दूनौ दलके क्षत्री गये आपने धाम ८३
युद्ध भयंकर महभारथ का देवता जात सनाकाखाय।
भीषमपारथकोपुरुषारथ कोकविसकैसमररणगाय ८४

इतिश्री बंथरग्राम निवासि पं०गमरत्नस्याज्ञाभिगामी पं० वन्दीदीनर्मिमित
महाभारत भाषा भीष्मपर्ब भीष्मजयोनाम दशमोध्याय: १० ॥

श्रीयदुनंदनपदसुमिरणकरि गोकुलगोपगायब्रजराज।
भीषम पारथ कौ पुरुषारथ गावोंहिये हर्ष के काज १
कह्यो युधिष्ठिरतब माधवते सुनिये दीनबंधुमहराज।
यतन सोकरिये अब संगरमा जाते रहै दासकीलाज २
नितउठि संगरभीषमजीतैं केहिविधिविजयहोयकर्तार।
केतनेउं योधा संगर जूझे बहुतक जूझिगयेअसवार ३
हन्यो नराधयाशर गंगासुत राख्योभीमसेनप्रभुआप।
करौं तपस्याबरुजंगलमा भीषम संग गहौंनाचाप ४
त्यहिक्षनअर्जुन बोलनलागे राजा बचनकरोपरमान।
शोचसमान्योकाजियरेमा करिहैंकुशलकृष्णभगवान ५
सब दिनराख्यो प्रभुमेरोप्रण सोई मोरसारथीश्याम।
शोचनकीजैकछुजियरेमा निशिदिनजपोकृष्णकोनाम ६
कथा पुरातन तुमते भाषौं श्रीमहराज युधिष्ठिरराय।
एक दिनौना की बातै हैं सुनिये धर्मराज मनलाय ७
पारिजातकोसुमनमंगायो सोसतिभामहिंदियोगहाय।
सोसनेहलखियदुनंदनको रुकमिणिहियेरहीरिसिआय
बचनसुनायोकमलापतिकोयहकहिदयोरुकमिणीरानि।
सुमन जोपहौं सुंदरयाते तब निज बदनदेखैहौंआनि ९
तबसमुझायोम्वहिंयशुदासुत पारथकरौआजममकाज।
तुमचलिजैयोरेकदलीवनयहिक्षनराखुजातममलाज १०
वही समइया के अवसरमा मैं कदलीवन कीनपयान।
लिहेशरासनअरहाथेमा पहुंच्योंउदितहोतहीभान ११
पुष्पसुगंधितलखिचारिउदिशि तोरनलग्योतहांमनलाय
तेहीसमइया केअवसरमा बानरचारि गयेतहंआय १२

फूल तोरतेम्वहिं तिनदेख्यो तुरतै गये कपिध्वजपास।
हालबतायो हनूमानते सुनिये महाराज यहबात १३
एकशूरिमा चलिआयो है धारे हाथ शरासन वान।
फूलसोतूरैकदलीवनमा मानत नहीं भराअभिमान १४
सुनिकै बातैं तिनबंदरनकी धायो क्रोधवान हनुमान।
हांक सुनायो तिनपारथ का कोहैबीरधरेधनुवान १५
चोरीचोरी फूलतोरि रहे जैहै अबहिंआजु यम धाम।
श्रीरघुनन्दन की पूजाहित राखे फूलन दूजोकाम १६
ताक्षन उत्तर अर्जुन दीन्ह्यो रे शठसमुझिनबोलतबात।
हमहूं जानत रघुनंदन का मानतजाहि इष्टकोनात १७
शाखाशाखा पर डोलत है मर्कट मूढ़ महाअज्ञान।
ममएरुपारथतैंजानैना कायर मानु बचनपरमान १८
पाथर ढोवतबन्दर मरिगे तब बंधिसेतु पारगे राम।
तेधनुधारी त्वइंभाषत है गावत रामचंद्रअसनाम १९
सुनिकैबातैं तब अर्जुन को अतिशय क्रोधकीनहनुमान।
नीचनजानैं रामद्रचंका कीरतिगावत वेदपुरान २०
जिनहनिमारयोदशकंधरका कीन्ह्योकुंभकरणकोनाश।
बालिसंहारयोजिनएकैशर पूरणकियोसुकंठकिआश २१
लंकविभीषण काराजाकियो बांध्योसेत उदधिमेंजाय।
बिशिषबांधदल भारनसैहै कैसेसैन सकै उतराय २२
कोपिधनंजयतबयहबोल्यो कपिसोंकहोबचनललकार।
सेतुबनाओंमैंबाननका तेहिचढ़िउतरिजायसंसार २३
तबसमुझायो हनूमानने पारथ सुनौहमारी बात।
बांधदेखावोम्वहिंबाननका नहिंतबहोयजानकोघात २४

आयेयोधादोउ सागरतट जिनकेतेज वरणिनाजायं ।
शरसंधान्योतबपारथने दीन्ह्योबांधिसेतशरछाय २५
अर्बखर्बशर कोटिनछांटे सागर दीन बाणसोंताम्न ।
शंकाकीन्ह्यो हनमानने हैयहकोऊ बीरबलवान २६
तौलेलकारोफिरिपारथका यहनिजुबचनकरौपरमान ।
सेतुनटूटै मोरे भारनते तौत्वहिंहोय प्रान कोदान २७
यह कहिधायो उत्तरदिशिका पहुंच्यो तहां तुर्तहनुमान ।
पर्वत बांध्यो रोमरोममा दोऊ हाथलीन कछुतानि २८
केतनेउंपर्वतधरि कांधेपर केतनेउं लीन्ह्यो पीठिचढ़ाय ।
रूपभयंकरअतिशयबाढ़यो लाग्योआशमानमेंजाय २६
भार असंख्यनधारणकीन्ह्यो छिपिगेअंधकारसोंभान ।
मेरुअसंख्यनलैतहंआयो धरिविकरालरूपहनुमान ३०
रूपदेखिकैकपिनायकको अर्जुन गयो सनाकाखाय ।
शीशलागिगयोरविमण्डलमें तनविकरालवरणिनाजाय
हाय गोसइयां कामर्जी है पंजाखैंचिलीन भगवान ।
रूपभयंकर हनुमत धारो रहिहैनहीं सेतुअरुबान ३२
हाय विधाता क्यामर्जी है का मतिफेरिदीनिभगवान ।
सरबरिकीन्ह्योंकपिनायकतेजान्योनहींवीरहनुमान ३३
बड़ो शूरिमा अंजनिसुतहै जाको यशगावत संसार ।
भक्त सुसांचो रघुनायकका जाके प्रभूरामकर्तार ३४
पारथसुमिर्योतबमाधवको श्रीहरिनाथभक्तप्रतिपाल ।
लाजराखिलेअबअनुचरकीओसंतनपतिदीनदयाल ३५
होहुसहायक यहि अवसरमा यहुप्रणमोरराखुकर्तार ।
सुनिकैबानीरेपारथकी तबकमलापतिकीनविचार ३६

भक्तसयाने दोउ मेरे हैं दोऊ ठानि रहे हठ आज।
भूमिन बोझासहैहनुमत को कैसेरहैसेतशरसाज ३७
जीति कपिध्वज जोकहुंपावै पारथ पठैदेय यमधाम।
कौनिउंविधितेफिरिर्वाचहैंनाजाकोसत्यनाथहैराम ३८
यतनसोसाधैं यहिअवसरमा जाते रहै दोउकोलाज।
भक्तहमारे दोउसांचेहैं साधौं आज सबनके काज ३९
कमठरूपतब श्रीपतिधारो औछिपिरहे सेतुतरजाय।
पृष्ठिलगायो तबबांधेमा औ सागरमारहे समाय ४०
सिंहकिगर्जनिहनुमत गर्ज्यौ औपारथसोंकह्योबुझाय।
सेतुसंभारेअबबाणनका पहुंच्योहनूमानअबआय ४१
भारसंभारे मेरि देहीका नाहिंत होयकालकोघात।
पारथगर्ज्यौतेहिअवसरमा सुनिले हनूमानयहबात ४२
यहिकैशंका कछु नाहीं है शंका तनिककालकैनाहिं।
तुम चलिजैयौरेबांधेपर नाकछुशोचहोयमनमाहिं ४३
क्रुद्धितहोइकै तबअंजनिसुत दीन्होकोपि बांधपरपावं।
देवता कंपेआसमानमा यहिक्षनचलै कछूनादावं ४४
दिग्गजडोले दशहूदिशि के डोलन शेषनागतबलाग।
अग्णनारहिहै पांडवसुतका है हनुमानबड़ोबलभाग ४५
चल्यो बांधपर तब कपिनायक लैकैतीनिलोककोभार।
पीठिदबानीकमलापतिकै मुखतेचलीरुधिरकीधार ४६
रक्तवरणसबसागरहोइगयो दीख्योनैनखोलिहनुमान।
शंकाहोइगै तबजियरेमा तबकपिधरोनाथकोध्यान ४७
सेतकेनीचे श्रीपतिजान्यो तब कपिगयोसनाकाखाय।
लौट्योहनुमतशर बांधेते पहुंच्योतुरतसिंधुतटआय ४८

ाहि२ तवकपिपतिकीन्ह्यो हेप्रभुभक्तवच्छलभगवान ।
ताहमारो प्रभु अव भेटो मैंशठभेदनपायोंजान ४६
करमकीन्ह्योंयहिअवसरमाधारोचरणनाथशिरमाहिं ।
हुअचमेरोअवकसमिटिहै पायोंभेदनाथतवनाहिं ५०
मठरूपतजित्यहिक्षन श्रीपतिआयेनिकसिधरेधनुवान
रूपदेखिकैकमलापतिको औगिरिपरोचरणहनुमान ५१
तुर्तउठायेप्रभुहनुमतको औ समुझाय कहोभगवान ।
करौनशंकाकछुजियरेमा होतुमदोउबीरबलवान ५२
भक्तहमारे दोउसांचेहौ यहनिजुवचनकरौ परमान ।
नेहलगावो तुमआपस में छांड़ौबैरभावको ज्ञान ५३
बहुशिषदीन्होतबकमलापति औदोउनकोकियोमिलाप ।
आशिष दैकैदोउभक्तनको द्वारावतीगयेप्रभुआप ५४
हमलैआये तवसुमनको सुनिये भूपयुधिष्ठिरराय ।
सर्बदिनमेरोप्रणराख्योहै श्रीपतिसंतननाथसहाय ५५
शोचछांड़िदेवयहिअवसरमा औसंगरकोकरौविचार ।
तुमजयपैहौसमरभूमिमा रक्षक कृष्णचंद्रकर्तार ५६
मनसा बाचाजो हरिध्यावै औपरिहरैसकलकीआश ।
ताकेरक्षक हरिसांचेहैं करिहैं सकलदुःखकोनाश ५७

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्म पर्व भीष्मार्जुन
युद्ध कदलीवन चरित्र बर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ११ ॥

उदयदिवाकरभे पूरबदिशि प्रातःकाल भयोपरकाश ।
बजेनगारा दूनौ दलमा क्षत्रिनभई युद्धकी आश १

मारूबाजा बाजनलागे औ यश भाटसुनावनलाग ।
ढाढ़ीकरषा गावनलागे सुनि २ बढ़ै युद्ध को राग २
पहिलनगारामा जिनबंदी दुसरे बांधिलीनहथियार ।
तिसरेनगारा के बाजतखन क्षत्री साजिभयेतय्यार ३
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बांके घोड़न के असवार ।
बड़े २ योधारथपरचढ़िगये अपने सजेअंगहथियार ४
घरी पहारुक के असीमा आये कुरु क्षेत्र मैदान ।
सिंहकिगर्जनि क्षत्री गर्जैं सन्मुख गरूदेयंललकार ५
अपने २ मुर्चन परिहां क्षत्री सबै भये हुशियार ।
ओसरिनयोधा खेलनलागे जैसे कुआंभरैं पनिहारि ६
चलैं दुधारा दक्षिण वाले कोता खानी चलै कटार ।
बड़े २ भालानागदौनिके लटुआनागुऔसमननाय ७
अपन परावा कछु सूझैना क्षत्रिन मारु २ रटलागि ।
झुकैशूरमादोऊदल के रणमा उठे घोर घमसान ८
मघा के बूंदन शायक बरसैं योधा गरुसुनावैं हांक ।
भाजिनजैयौकोउ मुर्चनते है पतिधर्म तुम्हारे हाथ ६
जैसे पत्तागिरि तरवरते फिरिकै बहुरिन लागै डार ।
मानुष देहीया दुर्लभ है यारौं जन्मन बारम्बार १०
उड़ि २ जूझौकुरुक्षेत्रमा सोहरा गावै सकल संसार ।
जोकोउभागैसमरभूमिते तेहिकागिद्ध न करैंअहार ११
कटि २ बोटो गिरैं खेतमा उठि २ रुण्ड करैं तरवारि ।
मूशलधाराबरसन लागे क्षत्री गिरैंकराहिकराहि १२
भीमसेन के मुर्चन परिहां कौनौ शूर न आड़ैपांय ।
कौरवदलमाखलभलपरिगै योधाधरतीदयेगिराय १३

तबै कलिंगाने ललकारो रेशठ खबरदार होइजाय ।
झुकयोकलिंगापांडवदलमाऔनवलाखसंगअसवार १४
इकसौभैया गरजति आवैं सुनिरखहांक भजेंसरदार ।
मुर्छापरिगयो भीमसेन का एकतेएकदई के लाल १५
धनुषबान लैदव्यो कलिंगा हाहाकार कीन दलमांझ ।
मारिशायकनभीमहिंपारो रहिगोअंधकारनभछाय १६
तीरकैबरी हनि २ मारे खायो वीर वृकोदर घाय ।
तबौरिसानोभिम्मारणमा लीन्ह्योगदाकोपिकैधाय १७
भूपकलिंगाका धरिडाटो रे शठकरिहैं आजु अनाथ ।
भाजिनजैहै जो संगरते तौहनि डारौं वज्रके हाथ १८
उतरिकै धायोरथ ऊपरते तान्यो गदा कोपिकै हाथ ।
सोहनिमारयोगजमस्तकपरद्वजेगदाबिदारयोदांत १९
पांवप्रहारन तेरथ तोरयो कौरव सैनदीन बिचलाय ।
गदाभिम्मकाजेहिकेलागैजान्योकालिहकमाराआय २०
भूप कलिंगातबधन्वालै मारयो भीम अंगदश बान ।
गदाझपेटनसोंशरतोरो सन्मुखगर्जिचल्योबलवान २१
कैतोरिसाताने व्रत कीन्हे कलिंगा रहे वर्त इतवार ।
अबकोओसरिनतेबचिहैना पठवोंतोहिं यमपुरीपार २२
तोहिंसवैहौंसमरभूमिमा मरिहौंनवोलाखवल धाम ।
स्वर्गबसेरा सबका करिहौं मेरोभीमसेन है नाम २३
कोटि दोहइया यदुनंदनकै अबनावचैं समरमाप्रान ।
खबरदार हो खबरदारहो जल्दी धारुहाथधनुबान २४
तेजपठायोमधुसूदनने प्रविश्यो भीम अंग सोजाय ।
पवनसहायोरे भिम्माके सोसब बैठगदापर आय २५

धाय वृकोदर तव सन्मुख गयो हाथी उड़े पवन बल पाय
गदा पवन ते सैन उड़ानो कुंजर आसमान रहे छाय २
पकरि भुशुण्डा रे हाथिन का लंका छोरन देय चलाय
शीश विदारो मस्तक फारो तोरे दुवौ हाथ औ पाय २
केतने उं योधा धरि २ झोंके ते उड़ि गिरैं सिंधु तट जाय
सरथ सारथी चूरण कीन्ह्यो हाहाकार गयो रण छाय २
क्रोध आय गयो गुरुनायक के सैना हनी भीमसब धाय
जाय सामने तब ललकारो भिम्मा खबरदार होइ जाय २
लियो शरासन तब हाथे मा भिम्मै हन्यो हजारन बान
जर्जर कीन्हों तन भिम्मा का बहुतक जानत शस्त्र विधान ३
बख्तर भेदो भीमसेन का भिम्मा अंग क्रोध गयो छाय
उदर विदारो गुरुनायक का शायक हन्यो उरस्थल घाय ३
घाउ आइ गयो गुरुनायक के औ परि गये रामते काम
नकुल जयद्रथ को मुर्छा भिरो औ सहदेव शकुनि संग्राम ३
द्रोणी अभिमनु ते झुरमुट है बरसत घने अगिनिया बान।
सुखना भोरैं कोउ संगर ते यह सतु देखि रहे भगवान ३३
तीक्षण शायक हनि २ मारैं जिनते फूटैं घने पहार।
अभिमनु क्रोधित भयो संगर मा द्रोणि हि हनो साठि शर धारि
चूरण कीन्ह्यो तब स्यंदन का घायल होइ गये नवलबक्यार।
उतरो द्रोणी रथ ऊपर ते दूजे रथै भयो असवार ३५
लियो शरासन तब हाथे मा सन्मुख गरू दीनि ललकार।
सिंह बिपानी जेहि की माता सन्मुख होय तौन सरदार ३६
सुने हुलरुवारे अर्जुन के यह मम बचन करे परमान।
खबरदार हो समरभूमि मा हनिहौं तोहिं एकही बान ३७

यहकहि धारो धनुद्रोणीने अभिमनु अंगहनेदशबान।
गरुहर शायक हनि २ मारैं एकतेएकवीरवलवान ३८
अपने २ मुर्चन परिहां क्षत्री भिरे युद्ध के काम।
द्रुपद शूरिमासों भूरिश्रव कीन्हों महा घोर संग्राम ३६
नंदिघोषतब माधव हांक्यो पारथतक्येपितामहधाय।
उठे शरासन तबदोऊके शायक चलेझुण्डअररराय ४०
दिव्यवाणतन अर्जुन मारो स्यंदन हटो पितामहक्यार।
कांपे क्षत्री तब कौरवके द्रोणी द्रोण आदि सरदार ४१
तबललकारो गंगा सुतने पारथ गहो शरासन हाथ।
मोरपराक्रम अबदेखतैं रक्षक होयं आजयदुनाथ ४२
बाण चलायो तब भीषमने खैंच्यो कान मूलपरमान।
सोहनि मारो नंदिघोष पर टारोतीनिपैगरथतानि ४३
तब यदुनंदनस्याबसिकीन्हों हँसिकैकह्योसमरमाबात।
धनिपुरुषारथ गंगा सुतको तेरो धन्यपिताऔमात४४
ऐसो स्यंदन शरटारे तैं जापर तीनि लोक को भार।
तबरिसियानेपारथरणमालीन्होंकोपिहाथधनुधार४५
सोहनि मारो गंगासुत को सो शरउदर मध्यफहरान।
घायलह्वैगोतबगंगासुत सारथिअंगहन्योत्रयवान४६
चारिवानसों घोड़न मारो कितनेउँ हनेसुघरुआज्वान।
घोड़ाहाथी कै गिनतीना लागेरुण्डमुण्डखरिहान ४७
वरषा कीन्होंघन वाणनको जूझे चारिलाख असवार।
केतनेउं हाथी दलमागिरिगे जसधरतीपरपरेपहार४८
मुर्च्छाजागीतबभीषम के लीन्हों कोपिशरासन हाथ।
झपटिसारथी स्यंदनहांक्यो शायक हनैहवाकेसाथ४६

घायल कीन्हो वहुपांडवदल धरती रुण्डमुण्डरहेछाय ।
जेहिउरशायकहनिकैमारै सोगिरिपरै भरहराखाय ५०
एकवाणहनियाविधिमारो धनुगुनहन्योधनंजयक्यार ।
तुरतै जोरो पारथ धनुगुन अवसरदियोतुरतकर्तार ५१
तेहीसमइया के अवसरमा धरती गिरे सहसदशज्वान।
शंख बजायो तब गंगासुत लीन्हों विजयपत्र मैदान ५२
मारुबन्द भै दूनौदलमा क्षत्रिन कियोपयानो धाम ।
मुर्चा फिरिगे दोऊदल के सैना सकलकीनविश्राम ५३

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि वाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशांतर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व
कलिंगयुद्धबधवर्णोनाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

दोउदलआयेनिजमन्दिरका क्षत्रिनजायकीनजेवनार ।
तबहिबोलायो गंगासुत को वहुकौरवको राजकुमार १
हाथजोरिकै बोलनलागे सुनिये नाथपितामह बात ।
सातदिनौनाभैसंगरमा पारथगेह कुशल सों जात २
तुम्हैंपराक्रम प्रभुऐसोहै पांडव करौक्षनक में नाश ।
सोतुममारौना पांडव का राखौकौन कुशलकीआश ३
दोषतुम्हारो यहमिटिहैना पांडवकाल्हि करौना घात ।
लाखुदोहइया शिवगंगाकै सबदलहनौहोतहीप्रात ४
सुनिकैमन्शादुर्योधन की यहप्रणकियो पितामहजाय ।
महाकालशर तुरतैकाढ्यो औकौरवतन कह्योबुझाय ५
यहिशरमारौं मैं पांडवदल पांडव सहितकरौं संहार ।
कालिहपांडवारणबचिहैंना रक्षा कोटि करैं कर्तार ६

तबदुर्योधनमनआनंदभयोनिश्चयबिजयहोयरणकालिह
यहप्रणकीन्ह्योहैगंगासुत डरिहै समरपांडुदलघालि ७
अलगगड़ायोइकतम्बू को तामहंकियोपितामहबास ।
तेहीसमइयामापांडवदल निजनिजमंदिरकियोनिवास८
पांचौभैया कुन्तीवाले बैठे सभा बीच तब जाय ।
द्रुपदबिराटहुसे क्षत्रीजहं सन्मुखबैठ नाथयदुराय ९
तबहंसिबोलेश्रीकमलापति सहदेवसुनौ हमारी बात ।
हालबतावोसमरभूमिके होइहैयुद्धकालिहकेहिघात १०
ताक्षन सहदेवबोलनलागे करियेनाथबचनपरमान ।
अन्तर्यामी तुमसबकेहौ जानतसकलहालभगवान ११
महाकालशरभीषमकाढ्यो यहप्रणकियोनाथअनुमान ।
कालिहसमरमासबपांडवदल सहपांडवके बधौंनिदान
द्वारबसेरो भीषमकीन्ह्यो औनागयो आज निजधाम ।
सोसबजानौतुमकमलापति जासोंबनैसोकीजैकाम १३
सुनिकैबातैं तबसहदेवकी राजागयो सनाकाखाय ।
तबसमुझायोयदुनंदनने करुनाशोचयुधिष्ठिरराय १४
मोहिसंगदीजै तुमअर्जुनका लावोंमहाकालशरमांगि ।
तबैयुधिष्ठिर बोलनलागे पैहौबानकौनहितलागि १५
तबसमुझायो यशुदासुतने सुनियेभूप धर्म महराज ।
जबैबसेरो तुमबनमाकियो छायोकुटीपत्रसों जाय १६
बहिक्षनपायककुरुनायकका कौरवतेयहकहोसोआय ।
हैंनजदीकैं सबपांडवसुत बनमा पर्णकुटीरहेछाय १७
तबचढ़िधायो तहंकौरवपति लैकैभीष्मद्रोणको साथ ।
सुरगणशंकितसबमनमाभे पांडवबधनजातकुरुनाथ१८

चित्ररथहि तब सुरपतिटेरो जातैं बांधिलाउ कुरुनाथ ।
आज्ञालैकै तबसुरपतिकै तुरतै गहे शरासनहाथ १९
औसजिधायेआसमानपथ औचढिचल्योविमानहिंधाय ।
ताकिसोधारोकरधन्वाका दीन्होंबाणबुंदझरिलाय २०
सबदलबिचल्यो रे कौरवका रोंकेरहैं समरना पायं ।
कठिनलड़ाई गन्धर्व करि क्षत्री धरतीदये खवाय २१
लागयेगन्धर्वशरउरतीक्षणभाग्येतबहिंभानुकोलाल ।
धनुगुणकाटोइकशायकमा सबदलहोइगोहालबिहाल २२
नागफांसतबगंधर्वसाध्यो बांध्योताहित्वरितकुरुनाथ ।
लैरथधायेआसमानकाकीन्हेत्राहि जोरियुगहाथ २३
तेहीसमइयाके अवसरमा सुनिकैबैन युधिष्ठिर राय ।
मनमाशोचेबाणीसुनिकै यह ममबन्धुअहैकुरुराय २४
आरतटेरोयहिअवसरमा गन्धर्वलिये जात असमान ।
तबसमुझायोतुमपारथका हेभटसाधुहाथधनुवान २५
फंसिदुर्योधनगो गंधर्वकर आरतगगन पुकारतजात ।
बेगिगंधर्वतुमहनिमारो बन्धनमुक्तकरौनिजभ्रात २६
तबसमुझायोभीमसेन ने सुनिये धर्मराज महराज ।
यहिक्षनबन्धवककुकहियेनागंधर्वकियोहमारोकाज २७
आज्ञालैकै सुरराजाकै गंधर्व लिये जात कुरुराज ।
सुखसोंचलियेअबमन्दिरका करियेहरषसहितअबराज २८
बातभीमकी तुममान्योना औअर्जुनते कह्यो बुझाय ।
करुपुरुषारथपारथयहिक्षन गंधर्वमारु गगनमहंधाय २९
धरोशरासनतबअर्जुनकर दीन्हो बाणवृष्टिझरिलाय ।
हनिहनिशायकअर्जुनमारे गंधर्वहियेबाणदियोकाय ३०

शरतेरोंक्यो तबगंध्रबरथ तबतेहिंडारि दीन कुरुराय ।
करिपुरुषारथतबपारथने बांध्योसेतुभूमिअसमान ३१
त्थहिंचढ़िआयोदुर्योधनभुवि मनमाविविधभांतिसरमान
तेहिक्षनभाष्योयह पारथते राखेबंधुआजतें प्रान ३२
जोकछु मन्शातवअर्जुनहोइ याहिक्षणमांगिलेहुबरदान ।
तबयह मांग्योरहैपारथने असमयपरे लेवबरआन ३३
तेहितेजेहैं। मैं अर्जुन लै औबरलेहैं आजयहिलागि ।
नाहितभीषमतेजीतबना है प्रज्वलिततेजकीआगि ३४
सुनिकैबातें मधुसूदनको आनंदभये युधिष्ठिर राय ।
पारथलैकैसंगकमलापति गेदुर्योधन भवनसिधाय ३५
तबसमुझायोहरि अर्जुनको ठाढ़ोरहैं गेह के द्वार ।
तुमचलिजैयो दुर्योधनतै लावोमुकुटमांगियहिबार ३६
फिरिकै चलिये गंगासुत तै तौर्बानजाय भलींविधिकाम।
अर्जुनचलिगयोतबद्वारेको औप्रतिहारकीनपरणाम ३७
कहि समुझायोतब अर्जुनने द्वारकखबरिदेहु पहुंचाय ।
कह्योसंदेशा दुर्योधनते पारथ खड़ो द्वार तव आय ३८
सुनिकै बातें तबअर्जुन की पहुंच्यो भूपपासप्रतिहार ।
कह्यो संदेशामहराजाते पारथ ठाढ़ोपंवरिदुवार ३९
तुर्तपठायोसो द्वारक को कह्यो अर्जुनकोलाउ लिवाय ।
पहुंच्यो अंतःपुरपारथ तब आसननृपतिलीनबैठाय ४०
कौनकाजहित चलिआये हौ बंधव बेगिकहौसोहाल ।
जोरिगदोरियाबोलनलागो वहबलवीरपांडुकोलाल४१
आंगन आयों मैं पूरुबवर हर्षित देहु आजु वरदान ।
सत्यआपनोपालनकरिये यहनिजबचनकरौपरमान४२

सुनियाचन्नातब अर्जुन को दीन्हों शीश मुकुट कुरुराय ।
बांधि मुकुटसोअर्जुनचलिभे लैकैसाथनाथयदुराय ४३
अकिले अर्जुनचलितहंवांगयो भीषमकेरजहांअस्थान ।
उठिकैलीन्होंतबगंगासुतऔकुरुनाथलियोजियजान ४४
तादिन भीषमबोलन लागे आयोभूपआज केहिकाज ।
जोरिपाणितबअर्जुनबोले सुनियेगंगसुवनमहराज ४५
महाकाल शरमोहिंमांगे देव पांडव करौंसमरमानाश।
हंसिशर दीन्होंतब गंगासुत पूरणभईपार्थकीआश४६
तेही समइया के अवसरमा प्रगटे तहां तुर्त भगवान ।
मनसकुचान्योतबगंगासुत जान्योआजुभयोछलआनि
हाथ जोरितब भीषम बोले हेकमलापति दीनदयाल ।
कियोअकारथतुममेरोप्रण कीन्होंपांडुसुवनप्रतिपाल४८
मैंयशपायोंनाभारतमा नितउठिकरौं समर संग्राम ।
सबविधिरक्षकतुमपारथके हेयदुनाथसंतसुखधाम ४६
शिवसनकादिक अंतन पायो शारदशेषरहे गुणगाय ।
सोत्रिभुवनपतिभक्तिभावसोंरहेपांडुसुतहाथबिकाय५०
जहां भक्तितहं नारायण हैं लीन्हों भक्त हेतु अवतार ।
भक्तसहायक हरिसांचे हैं श्रीपति कृष्णचंद्रकर्तार ५१
तब समुझायो गंगासुतको श्रीमहराज कृष्णभगवान ।
तुमयशपैहौसमरभूमिमा तुमसमधन्यनभीषमआन ५२

इतिश्रीबंथरग्रामनिवासिपं० रामरत्नस्यात्माभिगामीपं०बन्दीदीननिर्मितभीष्म
पर्वेदुर्योधनप्रतिअर्जुनकीटमुकुटयांचावर्णनो नामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

भयोपितामहतब आनंद उर शोभा अंगवरणिनाजाय ।
पारथआयेधर्मराज पहं औ सब हालकह्योसमुझाय १

सुपर्युधिष्ठिरमनआनंदभयो चातकयथास्वातिजलपाय ।
सुनिकैबातै ईं छलबल की कौरवगयो सनाकाखाय २
भोर भोरहरेपह फाटतखन पूरबदिशा उदयभयेभान ।
सजि २ सैना सबदोउंदलिकी चलिभेकुरुक्षेत्रमैदान ३
बजेनगारा तब लस्करमा क्षत्री साजि भये तय्यार ।
मारू बाजा बाजन लागे ठाढ़ो करषाकहैं अगार ४
लस्कर सजिकै दोउओरन के आये कुरुक्षेत्र मैदान ।
ध्वजापताका घूमन लागे फहरन लागे लालनिशान ५
शूरन २ झुरमुट परिगै झूमिकै चलनलागहथियार ।
पैदलपैदलसों मुर्चा परो औअसवारनसों असवार ६
छुरीकटारी झोरनलागी कहुं २ चलनलाग तरवारि ।
कहूंकुधारा बाजन लागे कूटन लागबजू हथियार ७
रथीरथीसों सारथि सारथि औगजदंतमहौतनमारु ।
सिंहकिगर्जनि क्षत्रीगरजैं दैदै समर घोर ललकार ८
लियेकमनियां धाननवारी छूटनलाग अगिनियांवान ।
मघाके बूंदन छायक वरसैं उठिगो महाघोर घमसान ९
कूदि २ रथ क्षत्रीधावैं लैलै बज्र गदा दोउ हाथ ।
हनि २ मारैं रे क्षत्रिनका धरतीगिरैंचोटके साथ १०
तोमर फरसाकरलैधावैं परि रहे शेल शक्तिके घान ।
जोकोउयोधासन्मुखजूझै सोचलिजावैस्वर्गविमान ११
तेहीसमइया केअवसरमा हांक्यो नंदिघोष भगवान ।
संभारिकैपारथरथपरबैठो औगहिहाथशरासनबान १२
देखिकै स्यंदनतबपारथ का बोल्यो गंगसुवनयहबात ।
मुकुटबांधिकुलमोसनकोन्हो अर्जुनलखौआजरणघात

अस्त्रगहावोंना माधवकर तौना पूतजाह्नवी क्यार ।
दलबिचलैहैं मैं पांडवका मरिहैं बीनिर सरदार १४
गर्व जोलीन्हों मैं गंगाउर तौप्रणपूर्ण होयरण आज ।
नदीबहै हैं मैं शोणितकी देहैं आजकौरवनराज १५
तीव्रबाणगुणशारंगजोर्यो वरसनलगोबाणजिमिगाज ।
देवता कांपे आशमानसा शंकित भयेहियेसुरराज १६
देवता कंपे आसमानमाआये निज २ साजि विमान ।
भीषमपारथक्रोपुरुषारथ हाहाकारमच्योअसमान १७
कौतुकदेखैं सब देवता गण अबधौंकाह करैं कर्तार ।
महारथी रण संगररोपे साधो न रहैशेशको भार १८
प्रणजगतारण यहकीन्हों है हमनहिं धरैंहाथधनुबान ।
यहप्रणकीन्ह्योहैगंगासुत गहिहैंअस्त्रहाथभगवान १९
देखतकौतुक यहसंगरमा काकोरहै समरप्रण आज ।
शूरबरोबारकैंझुरमुटहै देखतचरितगगन सुरराज २०
तबललकारो गङ्गासुतने पारथ होहु आजु हुशियार ।
यहकहिशायकबरसनलागे सारथिकृष्णचन्द्रकर्तार २१
जे शर छूटैं पारथ करते मानहु बज्र गिरैं असमान ।
पावसवर्षाकियोबाणनकी उठिगैसमरघोरघमसान २२
अपन पराओ पहिंचानैना छिपिगे अन्धकार सों भान ।
क्रुद्धितहवैकै तबगङ्गासुत लीन्होहाथशरासनबान २३
क्षणमहँअर्जुनके शरतोरे धरती काटि मिलाये क्षार ।
तोण्योपाण्डवदलबाणनते कटि २ गिरैंशूरसरदार २४
जलथल बाणनसों पूरणभयो कीन्होमहाघोर संग्राम ।
टूटिसनाहैगईं ज्वाननकी केतनेउँशूरचलैंभजिधाम २५

हन्योपितामहउरपारथशर अतिबलवीरपाण्डुकोलाल।
काटिपताकाअरुस्यंदनहय सारथिहन्यो बाणविकराल
लियोशरासन तबगङ्गासुत अर्जुनहृदयहन्यो बहुबान।
शतशरमार्योहनूमानउर मार्योसाठिबाणभगवान२७
घायलकीन्ह्योनंदिघोषहय कितनउँकटककीनरणनाश।
रङ्गबिरंगेअस्त्रहोइगे जनुऋतुराज सज्योमधुमास २८
ब्रह्मबाणतबअर्जुन लीन्हो मानों उदयभये नभ भान।
अस्त्रअस्त्र सोंभंजनकेहित भीष्मौलियोबिधाताबान २९
अयुतबाणहनुमन्तहिमार्यो गरुड़ध्वजतनकियोप्रहार।
झांझरकीन्होरेपारथतन कितनेउंजूझिगिरेअसवार ३०
नन्दिघोषरथ शरतेछायो लागे तीक्ष्णबाण उर श्याम।
अरुणरंग तबपीताम्बरभयोक्रुद्धितभयेसन्तसुखधाम ३१
चक्रपाणि कर चक्र संवारो रथते उतरि परेभगवान।
पांयपियादे रणमा धाये देवतादेखि रहे असमान ३२
कोक्तिविबरणौ नारायण कै सोहैकाम अंग शुभश्याम।
अंग अंग पीताम्बरसोहै काननकुण्डललसैं ललाम ३३
चक्र बिराजै रे हाथे मा संगर चले पियादे धाय।
कोकबिबरणौ वहिसमयाको औद्युतिभानुअंग रहिछाय
बुन्दपसीनाकेतनसोहैं जस मोतियनके बुन्द बिशाल।
यकदिशिशोणितकेबुन्दाहैं जिमितनसोहैंमालप्रबाल३५
क्रुद्धितधायेतबयदुनन्दन दिग्गज डोलि करैं चिक्कार।
डगमगडगमग धरती डोलै लागेकरनशेशफुफुकार३६
आतुरगवने श्रीकमलापति औ फहरातपितम्बरजाय।
कोगतिबरणौवहिसमयाकै शोभा अंग २ रहिछाय ३७

कौरवदलसब देखतडरप्यो जैसे चलै विहग परबाज।
त्यहिविधिधायेभीषमपाछे कुरुदलमध्यनाथब्रजराज ३८
अर्जुनधायो तबस्यन्दनते औयदुनन्दन गह्योबनाय।
हाथजोरिकै बोलनलागे श्रीपति दीनबन्धुयदुराय ३९
अस्त्रसुधार्योतुमक्यहिकारण काअपराधकीनमैंनाथ।
तुमप्रणछांड्योप्रभुसंगरमा धायेअस्त्रचक्रगहिहाथ ४०
अयशकरायेमहभारतमें निजप्रणछांड़िदयेकर्तार।
तुमप्रणराख्योगंगासुतका हेप्रभुभक्तलाजरखवार ४१
चरणकमलगहिपारथफेर्यो देख्योछष्टिपितामहधाय।
टेरसुनायेतबश्रीपतिका हेप्रभुभक्तनाथयदुराय ४२
सदाभक्तप्रणकेरक्षकहौ यहकहि डारिदियेधनुबान।
अस्तुतिकीन्हेहाथजोरिकै हेघनश्यामरामभगवान ४३
ममप्रणराख्यो तुम भारतमें सांचेभक्तनाथप्रतिपाल।
विप्रसुदामादारिद भंजन जनमनरंजन दीनदयाल ४४
हेगजतारण व्याध उबारण गणिकागीधमुक्तिदातार।
हेगिरिधारण गोकुलगोपति गोपीनाथकृष्णकर्तार ४५
तुमपरतक्षकअचलकियोध्रुव राख्योद्रुपदसुताकीलाज।
बड़दुखतेप्रहलाद उबारो मारो दैत्यहोयनरराज ४६
तुमवधकीन्हो दशकंधरका दीन्होंअचलविभीषणराज।
शापशिलासोंतरीअहल्या तारोधनुषजानकीकाज ४७
पारनपावैं शिवशंकरविधि धारे रहतचरणनितध्यान।
तेप्रभुधाये रणमम पाछे औप्रणमोरराखिभगवान ४८

इतिश्री बंथरग्राम निवासि पं०गमरत्नस्याज्ञाभिगामी पं० बन्दीदीननिर्मित महाभारत भीष्मानुशयुद्धकृष्णाकृतचक्रधारण वर्णननामचतुर्दशोध्यायः १४

सुनिकै अस्तुतिगंगासुतकी मनमाखुशी भयेभगवान ।
धायविराजे उबस्यंदन पर अर्जुनगह्योहाथधनुवान १
इन्द्रबान संधानहिं कीन्हो कौरवदलतन कियोपयान ।
दिव्यशायकनकैवरषाकियो बाणनपूरिदियोअसमान २
कितनेउयोधा धरती गिरिगे भूपतिमुकुटमिलायेक्षार ।
अर्जुन बाननकेलागतखन वसुधागिरे जूझिसरदार ३
तबहिं शरासन भीषमलीन्हों धनुगुनजोरसंभारोबान ।
खबरदारहो रथपारथ अब देखहु मोरसमरमैदान ४
यह कहिशायक वर्षनलागे दीन्हों परिचहूंदिशिवान ।
खण्डनकीन्ह्यो सबपांडवदल मारे बीनि२ रणज्वान ५
नन्दिघोष रथबाणन तोप्यो जहंसूझैना अपन पराव ।
तेहीसमइयाके अवसरमा खेल्योभीष्मपितामहदाव ६
दशसहस्त्ररथक्षनमहं खंड्यो बसुधापूरिदीन असवार ।
शङ्खबजायो तब भीषमने अजहूं विजयदीनि कर्तार ७
मुर्चा फिरिगे दूनौं दलके क्षत्री चले आपने धाम ।
हउदा उतरेसब हाथिनके क्षत्रिनसकल कीनविश्राम ८
भई रोसइयांतब महलनमा ज्वाननजेइं लीनजेवनार ।
जोरिगशोरियातबद्रुपदीकह्यो सुनियेकृष्णचन्द्रकर्तार ९
तादिन पारथबोलनलागे हरिरणकियो मोर अपमान ।
इनप्रणराख्योरणभीषमका धायेहाथ अस्त्र संधानि १०
तबसमुझायोहै द्रुपदीने सुनियेपांडु सुवन यह बात ।
भक्तसहायक प्रभुसांचेहैं लीन्ह्योयाहिहेत नरगात ११
अंत न पायो शिवसनकादिक गावतकीरतिथकेपुरान ।
तिन फलखायो बनसबरीके जूठेभक्ति हेतभगवान १२

नारदशारद कोउ जानैना महिमाशेश न पावतपार।
सो दधिखायोरे गोपिनको घर २ चोरि २ कर्तार १३
हाथबिकाने हरिभक्तनके जसबलिभूप और हनुमान।
प्रातकाल नित द्वारे ठाढ़े दर्शनहेत भक्त भगवान १४
धनितेमानुषहैं दुनियांमें जिनके हृदयबिराजतश्याम।
संतसहायीसबजगगावै जिनके औरनदूजो काम १५
सुनिकेबातैं तबद्रुपदी की मनमा खुशी भयेब्रजराज।
भोरभोरहरेपहकेफाटत पूरबदिशा उयेदिनराज १६
बजेनगारा तबलस्करमा दोउदलसाजिभयेतय्यार।
अस्त्रशस्त्रभटसाजनलागे कीन्ह्योसिंहहांकहहकार १७
पहिलनगारा भइजिनबंदी दुसरेबांधि लीनहथियार।
तिसरेनगाराकेबाजतखन योधाफांदिभयेअसवार१८
घरी पहारुक केअरसामा आये कुरुक्षेत्र मैदान।
मुर्चाभिरिगेदूनौदलके क्षत्रिनहाथ लीन धनुबान १६
पेलिमहावत कुंजर लाये खेलन लगेयुद्ध सरदार।
घोड़ाहाथिन केचढ़वैया फेरत चलेहाथ हथियार २०
जोरजोरसोंभिरनीहोइगइ दलचतुरंग भयोघमसान।
बागबछेड़नकेभटफेरैं लीन्हे पाणि शरासनबान २१
झरिझलसिशायकबरसनलागे घूमनलागधनेहथियार।
ज्वानसुघरुवाजूझनलागे कटिकटिडनकेलगेपगार २२
अर्जुनभीषम कोरणमाचो सारथि कृष्णचंद्रभगवान।
ओसरिनखेलैंदोउरणदुलहा मारैंहांकिशहिथबान २३
केतनेउंयोधाधरती गिरिगे पारथबरषैंबिशिषअपार।
कटैंभुशुण्डारेहाथिनके पदचरकाटिमिलायेक्षार २४

हाथशरासनभीषमलीन्ह्यो अतिशयकोपिचलैनाराच।
हनि२मारैंपाण्डवदलमा सहिनासकैंबाणकीआंच २५
बीरहजारन घायलकीन्हे औधरतीमादयो गिराय।
खैंचिकटारीहाथनलीन्ह्यो दीन्ह्योधमकिकरेजेघाय २६
हाथकेशधरि पकरिपछारैं द्रोणीकरण आदिसरदार।
पाण्डवदलतेझुक्यो वृकोदर हनि२गदा मींजिअसवार
बहुतकस्यंदनचूरणकीन्ह्यो केतनेउं कुंजरहनेपछारि।
शीशबिदारेबहुक्षत्रिनके फटिफटिगिरतधराकीपारि २८
नंदिघोष यदुनंदन हांकत पारथ समरकरै भटनाश।
मारिगिरायो बहुकौरवदल क्षत्रिनतजी बिजय कीआश
बहुतकयोधा धरती गिरिगे नदिया बहैंरक्त कीधार।
कटि२बख्तरबसुधापूरी मिलिगेकीटमुकुटरणछार ३०
गिरींकटारी हैं हाथनते मानौं नाग परे मननाय।
ढालैंगिरिगइंसरदारनकी मानौंकच्छमच्छउतराय ३१
कटिकटिजुल्फैंगिरैंशूरनकी जसनदियांमाबहैसिवार।
रुण्डनमुंडनबसुधातोपी जैसेपरे मगर घरियार ३२
समर योगिनी मंगल गावैं नाचैंभैरव भूत पिशाच।
हारबिराजैंहियआंतनके लीन्होमुंडमालउरखांचि ३३
गजमुक्तालैकाननपहिरैं लरिलरिमासहिंकरैंअहार।
झुंडचिल्हारिनकेरणतोपे सबदिशितोपेकागसियार ३४
समर चुरैलै मंगल गावैं लीन्हे शीशकुंडसजिहाथ।
उठैंकबंध बीर रणनाचैं मुर्दा झुकेझुंड लैसाथ ३५
भयोकुलाहलअतिसंगरमा गीधनलियोसुमंडफछाय।
भयेबराती सबजंबुकगण भैरव नाचैंमौरधराय ३६

हनितबशायकभीषमसार्थो रथकोध्वजागिरयोमहरा
दशशरमार्योपारथतनमा मार्योसातबाणयदुराय ३
दुर्चितोकैकैतब भीषमको पारथ हने सहस दशज्वान
शंखबजायोतबसंगरमा दीन्ह्योबिजयपत्रभगवान ३
मुर्छाफिरिगे दूनौ दलके क्षत्री चले आपनेधाम
होंदाउतरेसबहाथिनके क्षत्रिनजायकियोबिश्राम ३
औरिबयरिया डोलनलागी औरै होन लागब्यवहार
भईरोसइयांतबमहलनमा क्षत्रिनजेंयलियोजेवनार ४
धर्मराजतब बोलन लागे श्रीपति कृष्णाचन्द्रमहराज
धीरन आवैमोरेजियरेमा केहिबिधिरहोदासकोलाज ४
नवदिनहोइगेरणसंगरमा भीषमहनै सहसदशज्वान
कौनयतनते अब बरिआहौं पैहौंसमरविजयमैदान ४
तबसमुझायो कृष्णचन्द्र ने सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय
हमतुमपारथकासंगलैकै चलियेभीष्मभवनमनलाय ४
दरशनकरिये गंगासुत के कारण लेहिं मृत्युकोजाय
तबजयपैहौ महभारतमा औरन दूसर चलीउपाय ४
निशासमयहरिपारथचलिभे संगलै धर्म राजमहराज
जायकैपहुंचेतबद्वारेपर श्रीपतिकृष्णाचन्द्रब्रजराज ४
हाल बतायो प्रतीहारते यहकहु गंगसुवनसों जाय
आये माधवहैं द्वारे पर पारथ संगयुधिष्ठिर राय ४
तबहींद्वारकगयोभीषमतै बोल्यो हाथजोरि शिरनाय
पवंरि बिराजे यदुनंदन हैं अर्जुन संगयुधिष्ठिरराय ४
तुरतपितामह तब उठि धाये द्वारे तुरतपहूंचे आय
चरणपखारे यदुनंदनके रहिगेहाथ जोरिशिरनाय ९

चरणपखारे तब भीषम के पारथ और युधिष्ठिरराय ।
आशिषदैकैतबगंगासुत लीन्होंभुजगहिकंठ लगाय४६
लायो आसन पर माधवको शीतल वारिपखारे पायं ।
हंसिकैबोले तब गंगासुत सुनिये भूपयुधिष्ठिरराय ५०
कौनसेकाजनचलिआयेहो सो सबहालकहोसमुझाय ।
सुनिकैबातै गङ्गासुतकी बोले धर्मराज शिरनाय ५१
बारहबरसक कौरवबनदियो बन२फिरे महादुखपाय ।
प्रथमपठावोमैं माधवको मांगे पांच ग्रामतहंजाय ५२
सोकुरुनन्दनम्वहिंदीन्ह्योना तबहरिठान्योयुद्धउपाय ।
दोषहमारो कछुनाहींहै मानियमोर वचनमनलाय ५३
नवदिनसंगरमहभारतभयोतुमनितहनौसहसदशज्वान।
केहिंविधिजीतबहमसंगरमा बनकाफेरिकरबप्रस्थान
दूसरिआशा अबनाहींहै सुनिये भीष्मपितामह बात ।
तादिनभीषमबोलनलागे सुनियेभूप युधिष्ठिरतात ५५
कृष्णसहायक जेहिसांचेहैं सो जय लहैसमर मैदान ।
जहांधर्मतहंकृष्णविराजैंऔजहंकृष्णविजयतहंमान ५६
धर्मराजने तब यहभाष्यो कीजै आपु युद्ध कैहिआश ।
विजयहमारीजो चाहतहौ हमतेकहो आपनोनाश ५७
तब गंगासुतबोलन लागे पांडव वचन करौ परमान ।
कोटिदेवताजय पैहैंना जबलगलेहौं हाथधनुबान ५८
यहितेतुमको समुझावतहौं सुनियेमोर मृत्युको हाल ।
अर्थशिखंडीजादिनकरिहै। तादिनअवशिहोय ममकाल
देखि शिखंडी जो आगेपरै तौ हमडारि देन धनुबान ।
कन्यातनतेवहमानुषभयोयहनिजवचनकरौपरमान ६०

अस्त्रनपुंसकसंग गहिहौंना यहहै मातपिताकी आन।
ओटपारथ हित्यहिकरिदीन्ह्योतबममअंगबेधिहैबान ६१
यह समुझायो गंगासुतने हरषे तबहिं युधिष्ठिर राय।
हाथजोरिकै भीषमबोले सुनिये दीनबंधु यदुराय ६२
भारथ स्वारथकेकारणते कीन्ह्यो मोरपराक्रम बादि।
पारनपौतींसमरभूमिमा अर्जुनभीमसेन भटआदि ६३
धनि २ कहियेरे पारथका पायो सखा नंद के लाल।
आज्ञालैकैतबभीषमकी चलिभेश्यामसंत प्रतिपाल ६४
संगयुधिष्ठिर औ अर्जुन हैं आये तुर्त आपने धाम।
भोजनकरिकैरनिवासेमा कीन्हीरै निजानिविश्राम ६५
उदयदिवाकरभे पूरबदिशि क्षत्रिन सजे युद्धके साज।
मारूबाजाबाजन लागे परिगै चोप नगारनगाज ६६
सजिगे सेनारे दुहुंदिशि की आये कुरुक्षेत्र मैदान।
ध्वजापताकाघूमनलागे फहरनलागे लालनिशान ६७
घंटा बाजैंरे हाथिन के नूपुर रथन रहे झहनाय।
मारु २ कहि मौहरिबाजैं कहुं २ शंखनाद हहराय ६८
चले तुरंगम चंचल चालैं चढ़ि २ कैल भये असवार।
हाथी झूमैंदलके भीतर जसधरणी पर धरे पहार ६९
सुमिरिभवानी जगदम्बाका क्षत्रिन हाथ लीनहथियार।
अपने २ मुर्चा ताके दुहुं दल बड़े २ सरदार ७०
भीमदुशासनकै बरणीभै छूटन लाग कैबरी बान।
गदाहाथलैझुकयोबृकोदर केतनेउंहनेसुघरुवाज्वान ७१
घायआयगे सरदारन के तनमा बहै रुधिरकी धार।
रंगबिरंगे योधा होइगे किंशुकफूलमनो घनियार ७२

भिम्मगदालैसन्मुखआयो मारयोझपटिदुशासनगात ।
आयमूर्च्छागइकौरवका औगिरिपरयोमरहराखाय ७३
आयकै स्यंदनभिम्मावैठो तबगुरुद्रोणलीन धनुआड़ि ।
भीमअंगहनिशायकमारो औहनिडारोनवलवक्कुयाड़ ७४
तुर्तसारथी घायलकीन्हो स्यन्दन हन्यो पांचही बान ।
तबहिंसुभद्रासुतआगेभयो कीन्होहाथधनुषसंधान ७५
खैंचिशरासन शायकमारो गुरुनायकृतन कटीसनाह ।
अंगविदीरनभोलागतशरकाट्योशीशझपटिरथनाह ७६
तुर्तसारथीधरतोगिरिगो स्यंदनतज्यो गुरू महराज ।
देखिपराक्रमपारथसुतका औगुरुनाथखायगे लाज ७७
दूसरस्यंदनसजिसारथिलै तबगुरुनाथभयेअसवार ।
युद्ध भयंकर भे संगरमा योधाहिये न मानैं हारि ७८
तेहिक्षनभीषमसारथिटेरो करुअबस्यन्दनसमरअगार ।
लखौंपराक्रमहैंपारथका सारथिकृष्णाचन्द्र कर्तार ७९
सारथिहांकोतबस्यन्दन का भीषमगह्योशरासनहाथ ।
अशुभभयंकरतबरणमाभयेरथपरकागझुंडमड़रात ८०
बिनघन बादर पानी बरसैं इतउतदरशैंगीधसियार ।
खड्गनिकरिजायरे म्याननेते डोलैखम्मनबहैबयारि ८१
अशकुनदीख्यो यहक्षत्रिनने कौरबगयोसनाकाखाय ।
नवदिनसंगरभोखेतनमा कबहुंनभयोअशुभअसआय
तबहिंसारथीबोलनलाग्यो सुनियेभीष्मपितामहबात ।
अशकुनदरशैबहुसंगरमा कम्पतमोरत्रासससोंगात ८३
हंसि गंगासुत तबबोलतभे सारथिबचनकरोपरमान ।
अशकुनकारहैंकछुमेरोना सन्मुखकृष्णाचन्द्रभगवान ८४

बागबढ़ायोतब वाजिनकै वसुधा हिली शेषथहरान।
दिग्गजडोलेदशहूदिशिकै होइहैंआजयुद्धघमसान ८५
सिंहनादकरि भीषम बोले पारथ होहु हियेहुशियार।
बागबछेड़नकै हरिथांभौ अर्जुन केर होहुरखवार ८६
यहकहिशायकबरसनलागे औअर्जुनतनहन्योहजार।
दशशरमारेयदुनन्दनको बीसकशायकपवनकुमार ८७
नंदिघोष हयघायल कीन्हों मारे चारि २ तन बान।
तबहिंसरोषितभोकुंतीसुत लीन्होंहाथधनुषसंधानि८८
औसरिनखेलैं दोउ रण योधा एकते एकदई केलाल।
तिनपुरुषारथकविगावैको औकहिसमरबतावैहाल८९
जलथलपरितभे शायक सों देवतादेखत चढ़े विमान।
अर्जुन भीषम को मुर्चाहै अबधौं काहकरैंभगवान ९०
पारथ मारो शरभीषम उर सोशरकाटिमिलायेक्षार।
अपरशरासन शायक जोरे रथके बाजिकीनसंहार९१
साठि बाण अर्जुन तन मारे मारेअसीबानहनुमान।
सत्तरिशरयदुपतिउरमारे घायलभयेसहितभगवान९२
अरुणरंगपीतांबर होइगो अर्जुन विस्मयकियोबनाय।
बहिक्षनबोलोसमरभूमिमा सुनियेदीनबंधुयदुराय९३
पाडंनवाजिन का आगे परैं भीषम चोटसहीनाजाय।
हरि समुझायो तबपारथको छांड़ोसंगरकरहुउपाय९४
शंखबजायोतब कमलापति आगे आयो द्रुपद कुमार।
नैनशिखण्डीभीषमदीख्यो तुरतैतज्योहाथहथियार ९५
हाथ जोरिकै बोलन लागे सुनिये दीन बंधुभगवान।
कपटद्वयुकरिमारनचाहौ पांडवसमरविजयकेकाम ९६

कियोअकारथममपुरुषारथ हे यदुनाथयशोमतिलाल ।
नाहित संगरजय पावैना सन्मुख चढ़ैशस्त्रलैकाल ९७
ओटशिखंडीकेअर्जुनकियो औगहि हाथ लीनधनुवान ।
तेशरचोटैकियो भीषम उर देवता देखिरहे असमान ९८
धनिपुरुषारथ गंगासुत को है धनिधन्यपिताऔमात ।
धर्मनछांड्योजिनक्षत्रिनका सन्मुखसमरघावलियेगात
हनि २ शायकअर्जुन मारै घायल भयो गंगकोलाल ।
पार्थनपाछेरथलेटारोमुखसों जपतयशोमतिलाल १००
झांझर तनभयो शरचोटनसों औबहिरहीरकतकीधार ।
रोम२मेंशायक बेधे लागे अंगन्न वान अपार १०१
धरणीगिरिगे तब गंगासुत यहुबलखंभकौरवनक्यार ।
खलभलपरिगैकौरवदलमा मचिगो समरसुहाहाकार
शोककरण दुश्शासन क्षत्री रोवैं डारिडारि हथियार ।
अहोपितामह तुमतनत्यागो कुरुपतिभयोबिनासरदार
शीशपटकि दुर्योधन रोवै भयो कौरवदलआजुअनाथ ।
कोऊयोधा अबदेखौंना पारथसंग गहैधनुहाथ १०४
तुमप्रणटारोरेमाधवका निजप्रणसमरकीनप्रतिपाल ।
जीतिस्वयंबरभैयाब्याहो तेरणभयेआजुबेहाल १०५
तुमरणठान्यो परशुरामते बड़े २ शूर कीन संहार ।
मोरेजियमायहआशारहै पांडवसहितजितौकरतार१०६
धर्म क्षत्रियन के तुम पायो यहसबभयो कुदोषहमार ।
कीरतिहोइहैतवदुनियामा औयशकहैसकलसंसार१०७
धर्मराज संग माधव लैकै आयेतबहिं पितामहपास ।
बीरवृकोदर औअर्जुनसंग देखनचले भीषमलखिनाश

सन्मुखदीख्योयदुनंदनका घायलकह्योपितामहबात ।
अंगविराजैशरशय्यापर जर्जरभयोवाणसोंगात १०६
तुर्त पुकारो कुरुनायकका लाइय शीशशिराहन आज ।
रेशमअंबरलैदुर्योधन सोलैआयोपितामहकाज ११०
हंसिकैभाष्योतबगंगासुत यहुनासमय पटम्बरक्यार ।
उचितशिराहनअर्जुन देहै सुनतैधनुषलीनसंधार १११
छेदिललाटहिशायकदीन्हों भेदोशीशनिकरिवहिपार ।
तबशरशय्याभीषमपायोसन्मुखलख्योकृष्णकर्तार ११२
धर्मराज तब रोवन लागे औयह कह्यो तहांपरबात ।
दुर्योधनअघभृगुपतिशापतेपायोमृत्युसमरमातात ११३
तबैपितामह बोलन लागे सुनिये कृष्णचंद्र कर्तार ।
जबउतरायणदिनकरहोइहैं तबमैंतजैांदेहकोभार ११४
तबलग क्षत्रिन कोबलदेखिहैं। संगर कुरुक्षेत्रमैदान ।
मोरे मंशायहआवति है अजहूंकरियेप्रीतिसुजान११५
राजबांटिलेवअर्द्धभाग करि जोकछुमानो कहोहमार ।
कुलकोविग्रहकछुनीकोना होइहैजीतिजहांकर्तार ११६
तबदुर्योधन बोलन लागे मैं यहमनप्रणकियोविचार ।
करिहैंासंगरमहभारथमेंचाहैविजयहोयकिमिहार ११७
तादिन भीषमबोलन लागे सुनिये बचनसत्यकुरुराज ।
जोरणइच्छाहैभारथकी बांधौ मुकुटकर्णशिरआज ११८
द्रोणकरणकाकरुसेनापति अर्जुन समरहोय संग्राम ।
जोछलकरिहैंनायादवपति तौनाहोयपार्थकोनाम ११६
जहंशरशय्यारहै भीषमकी तहं पर तंबू दीनगड़वाय ।
अपने २ रेमन्दिर का क्षत्रिनगमनकीनमनलाय १२०

मनमाहर्ष्यो सब पांडवदल घर घरचलेजीतिमैदान ।
पारथसारथिसहघरआये श्रीपतिकृष्णचंद्रभगवान १२१
जोफल पावै तीर्थाटनसों गंगा मध्य किये असनान ।
साधूदर्शनतेजोफलहोय औशतकोटिकियेगौदान १२२
शंकरसेवासे जो फल मिलै औएकादशि किये उपास ।
भूमिदानसोंजोफलपावै सो फललहैसमर केनाश १२३
ब्रह्मध्यानमा जोफलपावै औद्विज दिये दान कल्यान ।
भारतगाये सोफलपावै होवै पुण्यपाप कीहानि १२४
बाजपेयिकुलकमलदिवाकर श्रीवर रामरत्नद्विजराज ।
तिनकीआज्ञासोंयहभारथ गायोंसमरहर्षकेकाज १२५
बंदीदीन विप्रदीक्षित वर वासी शुभ मसवासी ग्राम ।
गंगाजीके उत्तर तटपर है शुभ जिलाजासु उन्नाम १२६
व्यासदेव कृत महभारतयह कीरतिसमरशूरमनकेरि ।
सोइ निजमतिसमसैंगायोंहै शंकरशेशशारदाटेरि १२७
पढ़ै पढ़ावै औजो गावै दूजे पुरुष सुनावै गाय ।
धर्मअर्थसुतसंपतिपावैकलिमलसकलदूरिहवैजाय १२८

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशांतर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत भीष्मपर्व भीषमबधबर्णनोनाम पंचदशोऽध्याय: १५ ॥

भीषम पर्वसम्पूर्णम्

दोहा ॥

श्रुतियुगनवविधु वर्ष शुभशुक्ल मास वैशाप ।
भीष्म पर्व पूरण भयो सहित सकलअभिलाप ॥

—※—

अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड द्रोणपर्वप्रारम्भः ॥

दोहा ॥

गणनायकपदहृदयधरि मेटिदुषह दुखदम्भ ।
भारत भाषा करत शुभ द्रोणपर्व प्रारम्भ ॥

सुमिरण ॥

चरणमनइये शिवशंकर के नन्दीनाथसुभगअसवार ।
भस्मरमाये अंग अंगनमें औ शिर गंगभंग आधार १
बालचन्द्रमा मस्तकसोहै पहिरे हृदय मुंड की माल ।
सर्पआभरणतनमासोहैं अम्बुजसरिसनयनत्रयलाल २
जटितजटोलेदिग अम्बरबर हैंअर्द्धंग अम्बिकामाय ।
प्रेतपिशाचनके संगडोलैं बोलैंकलबल वचनबनाय ३
इककरडमरू सुन्दरबाजै इककरशूल रही दरशाय ।
हैंबरदानी सब देवनमा जिनके वेद रहे गुनगाय ४
मदनविनाशीशिवअविनाशी बासी सुभगमेरुकैलास ।

दीनसहायकसबसुखदायक पूरणकरौदासकीआस ५
भारतभाषामैं गावतहौं तुव पदपद्म हियेमा धार।
अंशापुरवौ निज अनुचरकै करिये द्रोणपर्व तैयार ६

छं०। श्री नंदन न्दन वन्दनकै प्रणमामि गुरू पद पद्मसुखारो।
ज्ञानप्रकाशक व्यास विनय शुभदै उरधारिपुरारिदुलारो॥
वायु प्रसूतबली हनुमान तुहो सब भांतिनसों रखवारो।
गावतछन्द यथामतिसों सुदछन्द प्रबन्धकैद्रोणपवारो ७॥

सुमिरणकरिकैश्रीशारदको मच्छोदरिसुतचरणमनाय।
गुरुनायकपदवन्दनकरिकै भाषाद्रोणपर्वकहौंगाय ८
जबशरशय्यासोपमलीन्हो अगणितजूझिगयेरणज्वान।
रह्योनसेनापतिसंगरमा तबकुरुनाथबहुतबिलखान ९
बीरपितामह घायलहोइगे बहुतक जूझिगये सरदार।
काहिबनाऔं अबसेनापति कोह शिरदेहुंयुद्धकोभार १०
सुनिअसबातैंदुर्योधनकी बोल्योकरणबीर शिरनाय।
शंकाकीजैनाकुरुनन्दन धरियेधीर कुअवसरपाय ११
कबहुंककरियेम्बहिंसेनापति निश्चयबातमानुकुरुराय।
मारिसंहारौंभारत रणमा पारथभीमसेनकाधाय १२
सेनासहित पांडवन मारौं एक न भागि समरतेजाय।
लक्षदोहइयाशिवगंगाकै कोटिनमाधवहोयंसहाय १३
सुनिअसबातैंसूरजसुतकी बोल्योद्रोणपुत्ररिसिआय।
मंत्रहसारोयहसुनिलीजै ओमहराजसुयोधनराय १४
पांडव जीतब मुश्किलहोइहै जोतुमकरौ कर्णसरदार।
कायेलरिहैरणपारथसों जिनकोदियोयुद्धशिरभार १५
मुकुटबंधावो जो मोरेशिर छलिकै लखौ समरमैदान।
झारिसंहारौंमैंपांडवदल करिहौंबिजय सहितभगवान

मनमाकोप्योतबसूरजसुत नैनाअग्निज्वालहौ
धरिकैडाट्योतबद्रोणीका तैंका जानै युद्धके त
तोहिंसंहारौं मैं यकक्षणमा द्रोणीमानि कहाले
बचनतुम्हारेमैंसहिलीन्हो जातेभयेपुत्रगुरुक
तुमअस योधाकितनेउं मारौं संगर मध्य एक
तुमकाजानौगतिशूरनकै जिननाधरोहाथधनु
सुनिप्रत्युत्तरसूरजसुतका रिसहाभयेपुत्रगुर
खड्गसंभारोतबहाथमा औतनबढ्योकोपबरि
पुनिअसभाष्योरेद्रोणीने मोहिंसमकौनबीरब
अरथरथीहैंभीष्मपितामह जेहिंपरिवारहीनजग
तुम्हैंबनायेते सेनापति हैबड़ क्षत्रिनको अ
सुनिअसबातैंगुरुनन्दनकी करणौजरोकोपकोस
खड्गपाणिलैधावनलाग्योतबसमुझायोभूपको
बिनयहमारीसुनुसूरजसुत नाकछुहोतसुमतिमेंह
मंत्रबिचारो जोसबरेमिलि तेहिशिरमुकुटदेहुस
बिनयमानिकैदुर्योधनकी तबयहकहीकर्णनेबा
कुरुगुरुनायकको सेनापति जासोंबनै युद्ध
महारथीअसदूसरनाहिन जानतनीकेअस्त्रबिध
कौरवपांडवदोउदलमानैं औगुरुजानिकरतस
यहमनभायो सबशूरनके शकुनीकह्योफेरिसमुझ
सुनुमहराजा रे कौरवपति सबहियगई बात य
कुरुगुरुनायककासेनापति अज्ञाकारीअन्यसर
शल्य जयद्रथ कृपाचार्यसे राजाकर्ण वीर ब
इसबरक्षक हैं सेनाके मुर्चा लेहिं धनंजयक

यहसलाह सबके मनभाई बहुनीको है यहै विचार ।
तबदुर्योधनबोलनलागे सुनियेमहाराजगुरुनाथ २६
तुमहौ रक्षक यहि सेनाके भारत युद्ध तुम्हारे हाथ ।
लाजरखैयाअबतुमहींहौ जसबनिपरै सोकीजैबात ३०
जोगुरुनायकतुवमन अैहै कै है बेगि पांडवन घात ।
यहकहिबांध्योमुकुटशीशपर विप्रनकियोमंगलाचार ३१
वेदकारिका बांचन लागे आरति करी स्वर्णकेथार ।
दियोरोचनागोरोचनका औदधिदूबपुष्पकेहार ३२
लैलैवस्तूसबशुभदायक अर्पणकियो आनिकुरुराज ।
मंगलगावैंसहगामिनितिय बर्षाकरतमांगलिकलाज ३३
तब समुझायो द्रोणाचारज सुनियेबचनमोर कुरुराय ।
कोटिहुहइयापरशुराम की पांडव हनौंसमरमाजाय ३४
पांच दिनौंना भारत रचि हौं करिहौं महाघोरसंग्राम ।
कोटिनपांडवजयपैहैंना केतनेउहोयं सहायकश्याम ३५
भिन्न जोपारथका करिपावौं लावौं बांधिसमरते धाय ।
फिरिकोउ पाण्डवदलदेखैंना हमसनकरैसमरमनलाय
तब दुर्योधनभाषणकीन्ह्यो सुनुगुरुनायकबातहमारि ।
जोमनलावौ तुमसंगरमा कोटिन अर्जुनसकौसंहारि ३७
शिष्यतुम्हारेतौ पारथहैं तुमसनसीख्योअस्त्रविधान ।
तुमरणलायककबपारथभे तुमसनगहैंसमरधनुवान ३८
हंसिगुरुनायकतबबोलतभे सुनिये मोरवचनकुरुराय ।
हालतुम्हारोनाजानो हैपारथ समर जीतिनाजाय ३६
महारथी जग पारथजाहिर सारथिनंदिघोषरथश्याम ।
अग्निदेवता धन्वादीन्ह्यो जेहिगांडीव धनुषहैनाम ४०

सुरपुरनरपुरश्रौअहिपुरमा पारथसरिसनाहिंबलवान।
इकपललागत त्रैलोकी का नाशैहाथ धरैधनुवान ५३
युक्तिबतावो मैं नीकी विधि सोतुमकुरुपतिरचौउपाय।
युक्तिशोचिकैसोमतिसाधौ पारथकटकदेहु अलगाय ५४
सुनि असबातैं गुरुनायक की बोल्योजोरिसुशर्माहाथ।
सबविधिकारजमैंयहकरिहौंआयसुमोहिंदीजियेनाथ ५५
यहप्रणभाषौं मैं भारतमा सुनुगुरुनाथ बुद्धिबलधाम।
अतिरणरोंपौं मैं पारथते अंधा धुंध करौं संग्राम ५६
घेरि पारथहि घरलै जैहौं रणते तुर्तदेहुं बिलगाय।
बड़े २ योधामोरिसेनामा भुजबलदेखिशूरभयखाय ५७
सहसचतुर्दशजिनकी संख्या हैंसबमहारथी बलवान।
पीठिदेखावैंनासंगरमा सन्मुख लड़ैंधारिधनुवान ५८
पीठिदेखावैंजोअर्जुन का तौमोहिंहोयअधोगतिवास।
शंकालाइयनाजियरेमा करिहौंयुद्धछोड़िजियआश ५९
भयोअनंदित तबजियरेमा सुनिअसबचनसुयोधनराय।
भूप सुशर्मैअतिसन्मान्यो औयहबचनकह्योसमुझाय६०
हितूआपनो ऐसोइचहिये जो संकट में होय सहाय।
सोयशपावैरे दुनियांमा होवै बास स्वर्ग में जाय ६१
उठ्योसुशर्मातब हुंवनाते औपांडव दलचल्योमंझाय।
जहां बिराजेपारथ माधव तिनढिगवेगिपहूंचोजाय६२
होइवार्तारण भीषम की स्याबसितिन्हैं देयंभगवान।
एकधनुर्द्धरहै दुनियांमा जासमऔरनहीं बलवान ६३
तेहीसमइया के औसरमा पहुंच्योभूप सुशर्मा जाय।
लीन्हसहोदर उठिपारथनेऔक्षरनिकटलीनबैठाय६४

भूप सुशर्मा यह भाषत भो अर्जुन सुनौ हमारीबात ।
मैंप्रणपारथतुमसनभाषौं करिहौंकाल्हियुद्धकीघात ६५
सन्मुख लरियेरे संगरमा गहिकै हाथ शरासन बान ।
छलबलकरियेजोसंगरमा तौतोहिंलक्षसौंहभगवान ६६
तबरोषित ह्वै अर्जुनबोल्यो सुनिये वीर सुशर्माबात ।
मोहिंशरासनकाधारणा कहै करिहौंयुद्धहोतहीप्रात ६७
यहप्रणकीन्होंमैं जियरेमा करिहौंकाल्हियुद्धघमसान ।
जोकोउ योधा सन्मुखएहै मरिहौंताहिएकहीबान ६८
भूपसुशर्मा तब चलिआयो जहंदरबार कौरवनकेरार ।
हालबतायो दुर्योधनते लस्कर वेगिहोय तय्यार ६९
भोरभोरहरे पहफाटत ते पूरबदिशा उदय भे भान ।
बजेनगारा तब दोउदलमा घूमनलागेलालनिशान ७०
मारु २ कहि मोहरि बाजे बाजै हाव हाव करनाल ।
बिजयशंखतहंबाजनलागे क्षत्रीसजैंठोंकि भुजताल ७१
बोलिदरोगा हाथिनवारो कंचन कड़ा दयो पहिराय ।
जितनाहाथीपीलखानमा सबियांतुर्तलाउसजवाय ७२
हुक्मपायकै महराजा का हाथी सजे महावत लाग ।
शोभाबरणौंका हाथिनकै मानौं इन्द्रदेवके नाग ७३
बड़ २ कुंजर इकदन्ताहैं औ दुइदंतनील सजवाय ।
अंगदगजते औ पंगदगज हाथीसजैंअगिनियांलाय ७४
जैंराभौंरा मस्ता साजैं नकुलेहाथी लीन सजवाय ।
धरिकैगद्दामखमलवाले रेशमररसन दीनकसाय ७५
हीराबिराजैं अंबारिनमा झालरिलगे जवाहिरलाल ।
चुम्बकपत्थरकेहौदाहैं जिहिमाखायबलौंचास्याल्ह ७६

परीजंजीरैं हैं पावंनमा नैनन घटाटोप पहिराय।
जितनेहाथिनके हलकाहैं दलकातुर्तलीनसजवाय७७
नवलबछेड़ा साजनलागे गहि २ बागडोरि थनवार।
लैनहवावैं गंगाजलसों खिदमतदार बछेड़नक्यार ७८
कच्छीमच्छी ताजीतुर्की अबलखघोड़ा सजावैलाग।
हंसानकुला औकुम्मैदा साजैं बांधि रेशमी बाग ७६
इन्द्रपवनके सजैं बछेड़ा औ दरियायीपारकीखानि।
हरियलमुश्कीऔअरबीहैं जिनकी मन्दमन्दहेहनानि
धरिकठिनाली तबपीठीपर ऊपरदीन दुसाला डारि।
बड़ि २ हैकलगरेमबांधे कंचनकलंगीशीशसंवारि ८१
बिचबिचकल्लनसोहैंहमेलैं जिनमा जड़े जवाहिरलाल।
पायंपैजनीझमझमबाजैं उड़िरहिमन्द २ धुनिताल८२
परी रकाबैं हैं चांदी की गंगायमुनी परी लगाम।
रेशमधागाकण्ठनसोहैं जिनमाझारिजरकसीकाम ८३
शोभाबरणौं को घोड़न कै निरखे देववाजि सरमायं।
पायंननालैंअष्टधातकी चमचमचमकि२ रहिजायं ८४
रथनसारथी साजनलागे धरिधरिरेशम केरबितान।
कनीचमंकैं नगहीरनकी मानौंउदयंभयेशुभभान ८५
जोरिबछेड़ा चंचलगतिके सबियांस्यंदन किये तयार।
वाहनसजिगेश्याशूरनके पीछेकसजनलागअसवार ८६
हनवनकरिकै गंगाजलसों धोतीपहिरि पोतियाकेरि।
कसैंजांघिया रेशमवाले ऊपर दै लंगोट के फेर ८७
बंधेबजुल्लाभुजदण्डनपर कण्ठम कण्ठा रहे लुभाय।
कड़ा सुबरणकेहाथेमा कुंडलश्रवणझूमिरहिजाय ८८

भस्मबिराजै शुभमस्तकमा सुबरणमुकुटरहेदरशाय ।
नीचेपहिरैं तबकपचीबंद ऊपर लई बख्तरैलाय ८९
पहिरिसनाहै तबलोहेकी जिहिमाअंग न आवै घाय ।
टोपझलरिहा धरिमाथेपर लोहेकुंड़ी शीशञाँधाय ९०
बारह करदैं कम्मर बांधैं क्षत्री दुइबांधैं तरवारि ।
अगलबगलमादुइपिस्तौलैं भालानागदौनकेधारि ९१
जोड़ी तमंचाकै दहिनेपर बांयेभुजा गैंड़कै ढाल ।
दुइसंगीनैंदुइचकमाकै इक २ पेशकब्जकी फाल ९२
छुरीकटारी बरछी बांधैं खांड़ा लीन दुधारा हाथ ।
कसि२तरकस करिहायँमा यक२धनुषबाणहैसाथ ९३
बड़े २ नायक दुर्योधन के सबियां सजे शूर सरदार ।
श्रीगुरुनायक हैं सैनापति तेऊ साजि भयेतय्यार ९४
हाथीचढ़ैया हाथिन चढ़िगे बांके घोड़न के असवार ।
रथीमहारथिरथपरसोहैं यक२ सारथि बैठ अगार ९५
सुमिरि भवानी जगदंबा का धरिकैमहादेवकोध्यान ।
सुर्यदेवताकासुमिरणकरि औरणभूमिकीनप्रस्थान ९६
आगे स्यंदन गुरुनायकका है फहरातपता काजाय ।
श्याम बछेड़ारथमा जोते श्यामैध्वजारह्यो फहराय ९७
तिनके पीछे सबदलबादल सजि २ चलेरंगीले ज्वान ।
भूप सुशर्मा औभूरिश्रव सूरज पुत्र कर्ण बलवान ९८
शकुनीमामा दुर्योधनका औ हैशल्यसुभट सरदार ।
शेषप्रकाशगणअश्वत्थामा सजि२ चलेघनेहथियार ९९
अगणितसेनादल बादलहैं कोकवियुद्ध बतावै थाह ।
ढाढ़ीकरखाबोलनलागे सुनिसुनिसिंहहोयंनरनाह १००

बेदकारिका ब्राह्मण बांचैं सखिया करैं मंगलाचार ।
शकुनमनावैंदुर्योधनके करिबुधज्योतिष चक्रबिचार १
मारूडंका बाजन लागे कहुं २ शंखनाद हहकार ।
विजयनगाराअतिघन गरजैं बाजैंघनेघंट घरियार २
उड़ी अंधेरिया आसमान का सविता रहे धुंधिमाछाय ।
डगमग २ धरती डोलै लागे शेष नाग थहराय ३
आगे हलकाहैस्यंदनका अतिधुनि २ मंदमंदरहिछाय ।
तेहि केपाछेहैकुंजरदल अतिमदर्चिघरि २ रहिजाय ४
नवल बछेड़ा तिनपाछे हैं उड़ि रहिटापथापसोंछार ।
उड़ैं बछेड़ाआसमानका तिन पर चढ़ेछैलअसवार ५
चित्रचालपैमोरचालपै कहुं २ हिरण चौकड़ी जायं ।
कहुं २ सरपटधावत आवैं अम्बरपंख देयं फैलाय ६
ऊपर नाचैं आसमानमा घोड़न सूर्य रहे ललचाय ।
मर्जी पावैं असवारे कै तौ इन्द्रासन लावैं देखाय ७
डंका बाजैंरे सांड़िनिन पर मारू बंबरहे बजवाय ।
क्षयाइकअसोषगमालाज्यो पहुंचे समरभूमिमाजाय ८
यहांकिबातैं तौ ऐसीभइं अब पांडव का सुनौहवाल ।
जितनी सैनाधर्मराजकै रणहितसजै पांडुको लाल ९
रथी महारथि सारथिसाजैं बड़े २ कुंजर भयेतयार ।
नवलबछेड़ा रणका सजिगे सजिगेबड़े २ सरदार १०
पांचौ भैया धर्मराज के संगै कृष्णचंद्र भगवान ।
तेऊ सजिगे समरभूमिका औरौ सजे शूरबलवान ११
नन्दिघोषरथमाधव साजैं राजैं ध्वजा मध्य हनुमान ।
निजकरसाज्योहरिअर्जुनका लीन्ह्योहाथ शरासनबान

बाहनसजिगे महराजनके तिनचढ़िचले छैलअसवार।
माताकुन्तीआरतिसाजै सखियां करैं मंगलाचार १३
देयंनिछावरि रे विप्रनका पढ़िसंकल्प धेनु पुजवाय।
वेदकारिकाब्राह्मणबांचैं औसबशकुनमनावतजायं १४
घरीपहारुकके अर्सामा सबियां लश्कर भयोतयार।
सुमिरिभवानीजगदंबाका औ वरिध्यानकृष्णकर्तार १५
चलिभोलश्कर धर्मराजका अगणितशूरबीरसरदार।
आगेस्यन्दनमहराजाका सुन्दरध्वजारहोफहराय १६
नन्दिघोष रथ तिहिपाछेहै जिहिपरबैठ धनंजयराय।
चंचलगतिसोंचलैंबछेड़ा सारथिभक्तनाथयदुराय १७
खर २ खर २ जहंरथदौरैं रथाचलैं पवनकी चाल।
झूमैंकुंजरगलिधारेनमा चिघरतजात मत्तविकराल १८
सूतपुराणन की गाथाकहैं बन्दी वंश प्रशंसत जायं।
वेदकारिका ब्राह्मणबांचैं ढाढ़ी करखा रहेसुनाय १९
अगणितलश्करमहराजाका एकतेएकसमरबलवान।
घरीपहारुक के अर्सामा पहुंचे कुरुक्षेत्र के थान २०
निरख्योपांडवदलदुर्योधन औद्विजबरसोंलागबताय।
करुरखवारीअबसेनाकी पहुंच्योपार्थसमरमाआय २१
अपने २ मुर्चनधरिकै क्षत्री सकल होयं हुशियार।
सबमिलिलरियेएकमन्त्रसों करियेकैदधर्मसरदार २२
लश्करआयो जबपांडवका भारत समरक्षेत्र मैदान।
ताक्षनपारथबोलनलागे सुनियेसकलबीरबलवान २३
मंत्रहमारोचितमा धरिये करिये खूब समर घमसान।
सावधानह्वै मुर्चामाधौ मैं संगरते करौं पयान २४

बड़े बड़े योधा कुरुनायकके द्रोणी कर्णसरिससरदार ।
शल्यदुशासनऔशकुनीसे हैं जिनकेबलबाहुअपार २५
सेनसहायकगुरुनायकहैं जिनबलबाहुबिदित संसार ।
हैधनुबिद्याभृगुपति दीन्ह्यो पावैं अमरसमरनापार २६
कबहुंक मनमालरिबोलावैं तीनिहुंलोक जितें मैदान ।
घोरपराक्रमरणमाकरिहैं धरिहैंकापिहाथधनुबान २७
फिरिसमुझायो धर्मराजका राजासुनिये बचनहमार ।
घोरपराक्रमगुरुनायकका रहियोआपसमरहुशियार २८
जबलगभीमादिकरणमारहैं औसहदेवनकुलसबभाय ।
सूरसेनभटजबलगरहिहै तबलगलरौसमरमाधाय २६
नातरुजैयो नृपमन्दिरका मान्योअवशि हमारीबात ।
बड़ेधनुर्धरद्रोणाचारज अवसरपाय करहिंरणघात ३०
यहकहिपारथ मारगसोध्यो औरथहांकि चलेभगवान ।
चंचलगतिसोंचलेबछेड़ा गरजैं ध्वजा मध्यहनुमान ३१
तब दशयोजनकेअन्तरपर पहुंच्योनन्दिघोष रथजाय ।
जहां सुशर्माको लश्कररहै तहंहरिरथैदीनपहुंचाय ३२
वीरसुशर्मा तब अवलोक्यो आयोपार्थ बीर बलवान ।
सारथिरथपरश्रीयदुनन्दन गरजैंध्वजाबीचहनुमान ३३
तबललकारो सबशूरनका क्षत्रिउ खबरदार हुइजाव ।
आयोलरिकापाण्डववाला जानतनीकयुद्धको दांव ३४
पहिलेनगारामाजिनबन्दी दुसरेमबांधिलीनहथियार ।
तिसरेनगाराकेबाजतखन चौदहसहससजे सरदार ३५
जहंपरस्यन्दनरहैअर्जुनका पहुंच्योबीरसुशर्माजाय ।
औललकारोहै अर्जुनका रे भटखबरदारहोइजाय ३६

संभरोपारथतबस्यन्दनपरमनमासुमिरियशोमतिलाल।
ह्यथसंभारोशरधन्वाका नैननलख्योसमरकोहाल ३७
तज्योसुशर्मा शरधन्वा सों दीन्ह्योनन्दिघोष रथछाय।
अगणितयोधाशुभशर्माके अकिलेबीरधनंजयराय ३८
शायकसाध्यो तबधन्वामा अगणिततजेबाण बिकराल।
धरि २ झोंकैतबसैनापर नभमहंयथानखतके जाल३६
पूरबपश्चिम उत्तर दक्षिण चारिहु दिशा बिभेद्यो बान।
जैसे सावन मेघा बरसैं लोपेअन्धकार सों भान ४०
खलभलपरिगै क्षत्रिनदलमा रोपे रहैं समरना पायं।
झपटिदपटिहटिशायकबरसैं धरु २ मारु २ बरायं४१
बहैं पनारा तन लोहुन के फागुन यथारंग की मारु।
रंगबिरंगे क्षत्री होइगे टेरत मारु २ ललकार ४२
बाणअगिनियां अर्जुनमारैं लागत अंगभंगहोइजाय।
केतनेउंयोधाधरतीगिरिगे शोणितनदीचलीउतराय४३
कटि २ हाथी गिरैंधरणिमा जसकज्जलके परे पहार।
रुण्डमुण्डसोंबसुधापूरी गमकै अस्त्रअस्त्र परिहार ४४
बख्तर कटिगे रणशूरन के भिदिगे अंग २ मा बान।
हलुकेघायनके सहिजादे उठिउठिकरैं युद्धघमसान४५
जौन गोल ह्वै अर्जुनघूमैं औ रथ हांकि देयंभगवान।
तौनीदिशितेक्षत्रीभागैं जनुटीड़ी के झुंड उड़ान ४६
जानगदोरियापरधरिलीन्हे भागेछांड़िसमरहथियार।
गरुई गाजैं हैं पारथकी पावै कौन शूर रणपार ४७
सबदलअर्जुनबाणनछायो चहुंदिशिछायगयोअंधियार।
अपनपरावोकोउचीन्हैना ह्वैरहिमारु२ललकार ४८

आरि शायकन मस्तकतोरैं हाथी गिरैं चकत्ता खाय ।
कल्ला कटिगे बहुघोड़नके धरती रुंडमुंड रहेछाय ४९
लम्बी धोतिनकेपहिरैया जिनना गहे हाथहथियार ।
तेतजि भागे समर भूमिते जैसे भगैं जोवलै च्वार ५०
इतै लड़ाई यहअर्जुनकी ह्वैरह्यो महाघोर घमसान ।
उतगुरुनायकधर्मराजसों ह्वैरह्योकुरुक्षेत्र मैदान ५१
श्री गुरुनायक संगर आये लै संग बड़े२ बलवान ।
कोछबि बरणैरणशूरनकै देखत देववृन्दअसमान ५२
पहिरि सनाहैं अंगअंगनमा लोहे जिरहैंलईसवांरि ।
यकयकतरकसकरिहांयेंमा करमाधनुषबाणलियेधारि
टोप झलरिहा धरिमाथेमा औ दुइनयना रहेउघार ।
हैंदस्ताना दोउहाथेमा जिहिना लगै तेगकीधार ५४
बख्तरझलकैंरणशूरनके जनुचपलागणआयसमान ।
गदा बिराजैं रे हाथेमा ह्वैरहेकालरूपअनुमान ५५
अत्रि दुशासन औद्रोणसे भूरिश्रवा करण महराज ।
औ सौ भय्या दुर्योधनके कीन्हे घने युद्धके साज ५६
औ कृतबर्मा राजाशकुनी अगणित शूर बीर सरदार ।
कोउबिराजैंहाथिनहौदा कोउकोउचपलबाजिअसवार
कोउकोउ क्षत्री हैं स्यंदनपर साजे घनेहाथहथियार ।
तिहिकेपाछेहैंपैदलदल जिनकीघोरघोरललकार ५८
आगे स्यंदन गुरुनायकका जेहिफरहरैपताका श्याम ।
श्याम रंगके बाजीजोते गंगायमुनी परी लगाम ५९
तिनकेपीछेहैकौरवपति जिनकीशोभाबरणिनहिंजाय ।
कंचनकलंगीहैमस्तकपर माथेमुकुटरह्योदरशाय ६०

आगे हलका है स्यंदन का पीछे जात मत्तगजराज।
नवलबछेड़ा तिनके पाछे जिनकी चाल हंस रहो लाज ६१
धनी नाल की तिनके पाछे तिनपर चढ़े छैल असवार।
बजैं नगारा जहंसंड़िनिनपर औ गजघंट शब्द हहकार ६२
मारुमारु करि मौहरि बाजैं बाजैं हावहाव करनाल।
शंखनफीरिनकी ध्वनि छाजै ह्वैरहे प्रलयकाल के हाल
डगमग डगमग धरती कंपै डोलन लाग शेश महराज।
देवविलोकैं आसमान सों अतिरण कुरुक्षेत्र को साज ६४
छाई अंधेरिया चारिउ दिशिमा लोपे समर क्षार सों भान।
गरजैं क्षत्री गजके हौरसे एकते एक बीर बलवान ६५
दूनौं लस्कर यक मिल ह्वैगे क्षत्रिन लीन हाथ धनुबान।
इतगुरु नायक हैं सैनापति औ उत भीमसेन बलवान ६६
पैदल पैदलते मुर्चाभो औ असवारन सों असवार।
रथीरथी सों सारथि सारथि औ गज दंत महौतनमार ६७
हल्ला होइगा सब लस्कर मा ज्वानन खैंचि लीन हथियार।
घाउ धड़ाका दै खोपरोपर क्षत्रिन मारिमिला वैक्षार ६८
भाला छूटैं नागदौनिके कहकह करैं अगिनियां बान।
पावक फहरै चहुंओरनते परिरहे अस्त्र शस्त्र के घान ६९
गदा घुमावैं लैकर धावैं औ शिर हनैं तड़ाका जाय।
गदा कि चोटैं तनमा लागैं धरणी गिरैं भरहराखाय ७०
सांकरि घूमैं मतवारन की झुकिझुकि गिरैं हजारन ज्वान।
पकरि भुशुंडा सों रथ फेकैं सो उड़िजाय अर्द्ध असमान ७१
छुटैं तमंचा असवारन के इतउत पेशकब्ज की मार।
खांड़ेदुधारा कहुंकहुं गमकै धमकैं शस्त्र शस्त्र पर वार ७२

द्रोणाचारज भीमसेनिते लागो होन महा संग्राम ।
नृप भूरिश्रव औसात्यकिते संगर परेरामते काम ७३
बान हजारन ते तनभेदैं दुइमा एक नमानैं हारि ।
नामुहुंमोड़ैं कोउकाहूसों गमकैं खड्गतेगतरवारि ७४
करणसामुहैं अभिमनुभिरिगो यहुबलवन्तपार्थकोलाल ।
सरसैं धन्वा रे दोऊकर बरसैंअमितबाणकेजाल ७५
द्रुपद जयद्रथ का मुर्चाहै कौरव पांडु केर सरदार ।
झपटिदपटिरणकौतुकखेलैं झेलैंघनेघावहथियार ७६
रंग बिरंगे क्षत्री होइगे शोणित बूड़ि बसन भेलाल ।
पै मुखमोरैं नासंगरते बढ़िबढ़िकरैंयुद्धविकराल ७७
भूप सुशर्मा सों रण लीन्ह्यो सन्मुखआयवीरबैराट ।
तकितकि दावँन घावनघालैं कीन्हेप्रबलयुद्धकेठाट ७८
धरि लेलकारैं औझड़ मारैं फारैं अंग शस्त्रकीझाड़ ।
विषधर चोटैं देखोपड़ीपर रोकैं हालढालकीआड़ ७९
अत्रिअलंबुष ते रण माचो सहिना सकैं तेग कीआंच ।
दै अरझारैं अंगन फारैं छूटत घने घने नाराच ८०
लैसुरदायक शायकबरसैं नायक हनैं करेजे चाय ।
उमड़ीनदियारशोणितकी अगणितलोथिपरेउतराय ८१
धृष्टद्युम्न औ कृतवर्मा सों ह्वै रहे प्रबलयुद्धके हाल ।
मत्तमतगन की पीठोपर सोहैं भूपरूप जनुकाल ८२
सोमदत्त सोंशारंगसाधी अतिबलवीरशिखंडीज्वान ।
मघाकेबूंदनशायकबरसैं कहकहकरैंअगिनियांबान ८३
शल्य घटोत्कच तेबरनीभै करणी युद्ध क्रुद्धअरुझान ।
अंग बिदारैं मस्तक मारैं दैदैं गदाघाव बलवान ८४

कृपाचार्यसोंनकुलौजुटिगो अतिबलधर्मराजकोभाय ।
देयदुचावा झुंकिस्यंदनते औतनहनै तड़ाकाघाय ८५
अतिमद छाके युद्धमबांके भिरिगे क्रुद्धउद्धदै हांक ।
भालनठेलैंधरिउरझेलैं खेलैंसुभग समरकीशाक ८६
जम्भनराजाके सन्मुखमा जुटिगोबीर बनारसराज ।
अतिपुरुषारथसोंरणराच्यो अपनेयुद्धविजयकेकाज ८७
पांचौंदुलरुवा द्रुपदीवाले तेशशिविन्दुसाथअरुझान ।
जोरघोरसोंभिरे भयानक गरजैंधरे शरासनबान ८८
अपने २ रे मुर्चन पर क्षत्रिन कियो घोर घमसान ।
झुकेशूरिमापांडववाले सबदलकाटिकीनखरिहान ८६
अपनपरावा कोउ चीन्हैना छूटत अधाधुन्ध सों बान ।
हलुके घायनके सहिजादे उठिफिरियुद्धहेतअरुझान ६०
बहुदलजूझतद्रोणविलोक्यो औसारथिसोंकह्योबुझाय
हांकयोस्यन्दनतबसारथिने राख्योमध्यसमरमाजाय ६१

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन दीक्षित निर्मित महाभारत भाषायुद्ध खण्डान्तर्गत द्रोणपर्व द्रोणा चार्यस्य प्रथमदिन युद्ध वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

मातुशारदापदसुमिरणकरि उरधरिव्यासदेवभगवान ।
युद्धमनोहर कुरुपांडवका भाषत द्रोणपर्व सामान १
जहँपरस्यंदन धर्मराजका तहंरथगयोद्रोणगुरुक्यार ।
साथै सैना रण शूरनकै इत उत घने २ सरदार २
तबअवलोक्योधर्मराजका चहुंदिशिघिरेअमितबलवान ।
शारंग साध्यो रण शूरनने छांड़न लाग कैबरी बान ३

पाछेकीन्ह्यो महराजाका सन्मुख भयोद्रोणके जाय ।
रथबिचलायोतबक्रोधितह्वै राख्योआसमानशरछाय ४
चंचलगतिरथ सारथिहांकै इतउत हनैहजारन बान ।
तीनिसहसरथघालनकीन्हे बहुतकजूझिगिरेमस्तान ५
जोदलपावै लखिआगेका सोदलमारि मिलावैक्षार ।
खड्गकिचोटैधरि २ घालै यहुसरदारपांडवनक्यार ६
पाउंनडारैकोउ आगेका कटि २ गिरैं सुघरुवाज्वान ।
रुण्डमुंडसोंवसुधा तोपी बहु दिशिशोरघोरघमसान ७
तबगुरुनायकउररिसव्यापी लीन्ह्योहाथशरासनबान ।
अतिरिसछांड़ोशूरसेनपर जिमिघनगगनघटाघहरान ८
सोशर काट्यो शूरसेन ने मारे बाण पचीसक तानि ।
युद्धपरस्परमाचनलागो बरसन लाग शस्त्रके घान ९
तेगतमंचा धरि धरि झेलैं काहू अंगन आवो घाउ ।
हारिनमानैकोउ काहूसों दूनोहृदयजीतिकोचाउ १०
पैदलपैदल सों मुर्चाहै औ असवारन सों असवार ।
हौदाहौदा पर झुरमुटहै औगजदन्त महौतनक्यार ११
रथी रथी सों सारथि सारथि अटके कुरुक्षेत्र मैदान ।
जलथलशायकसोंपरिलभे छायोअन्धकारअसमान १२
कटि २ कल्लागिरैंबछेड़ा औबिन शुण्डमुंड गजराज ।
गदाकिचोटनसों रथतूरैं मानों गिरै इन्द्रकी गाज १३
तबललकारो गुरुनायकने रहुभट शूरसेन हुशियार ।
तैं बहुयोधा मर्दन कीन्हे मारेघने घने सरदार १४
जियतनजैहै अबभारतते निश्चय मानु हमारी बात ।
करुअबधन्वाधारणकरमा करिहौंएकबाण सोंघात१५

गह्योशरासनतबक्रुद्धितह्वै मारेसहसबाण करधारि ।
बाजिसंहारोरे स्यंदनके चारिउचक्रबिदारोमारि १६
जबरथटूट्यो शूरसेनका आयो उतरिभूमि परधाय ।
सहितसारथीकेधन्वाधरि गुरुपरबाण जालदियोछाय
देयदुचावा गुरुनायकका दूजोचोट धर्मकयोरुयाल्ह ।
करोदुखंडगुरुनायकने डारोसेल्हबाणसोंघालि १८
खड्ग उठायोतब राजाने दीन्हो चोटशीशपरजाय ।
बचिआचारजगेस्यंदनपर लीन्होचोटढालपरधाय १६
बाणअगिनियांधारणकीन्ह्यो पहुंच्योशूरसेनढिगजाय ।
हनिसोमारोरेखपरीमा धरती गिरोमुण्डअलगाय२०
कुंडलझलकैंदोउकाननके सुवरणमुकुटमिलायोक्षार ।
रुंडधड़ाकाभो धरतीपर करते छूटिगिरेहथियार२१
देखि तमासा गुरुनायक का जूझो शूरसेन मैदान ।
धर्मबढ़ायोतबस्यंदनका धारणकियोहाथधनुबान २२
औललकारो आचारजका धरियेनाथहाथ हथियार ।
यहकहिमारोदशशायकतन काटेद्रोणतेगकीधार २३
तबगुरुनायक शोचनलागे औयहमनमा कीनविचार ।
हनौंयुधिष्ठिरजो संगरमा धरतीगिरैबुन्दकी धार २४
भस्मत्रिलोकौताक्षिनहोइहैं यहिमातनिकअंदेशानाहिं ।
कबहुंकपारथजोसुनिपावै माचैप्रलयकालरणमाहिं २५
भलोयुधिष्ठिरको मारबना बन्धनकरौं समरमाधाय ।
औलैजावोंदुर्योधनतै तौसबकाज आज बनिजाय २६
मंत्रविचारो तबजियरेमा लीन्हें नागफांस गहिहाथ ।
सन्मुखधायेमहराजाके कौरवसैन्यस्वामिगुरुनाथ२७

भगे युधिष्ठिर रथ ऊपरते नाकोउ संगसैन सरदार ।
देवता कंपे आसमानमा अबधौं काहहोय कर्तार २८

स० । धर्मप्रकाशन फांसनको अहिफांस लियो करमेंगुरुस्वामी ।
पांडव सैन अचैनभई रणमध्य हिये अतिशै भयजामी ॥
संगर त्यागि भगेबलवान रहे नहिंधीरजता उरथामी ।
भूप युधिष्ठिर पैं विपदायह जानिगयेहरिअन्तर्यामी २९

नागफांस कर गुरुनायकलै बंधनभूपकियोअनुमान ।
त्यहिक्षनसंगरकोसबकौतुक निश्चयजानिगयेभगवान
तब समुझायो कहिअर्जुनते करुममबाततातपरमान ।
यहिक्षनसंकटधर्मराजपर बांधनचहतद्रोणबलवान ३१
गहरुनकीजै यहि अवसरमा हैनासमयबिलंबकोभाय ।
हनुशरतीक्षणरणभारतको बांधतद्रोणयुधिष्ठिरराय ३२
सुनिअसआयसुजगतारणको धारणकीनहाथधनुवान ।
हैअरुणारे तबनैनाभे भभक्योहियोकोपकोसान ३३
सुमिरिशारदाशिवशंकरकोधरिउरध्यानयशोमतिलाल ।
शरमनव्यापोअर्जुनमारो औसमुझायकह्योयहहाल ३४
संकटभारी मोरेभैया का बंधन कीन चहत गुरुराय ।
यहिक्षनधावोतुमभारतरण दुखतेधर्मउबारहुजाय ३५
चल्योसोशायकक्रुटिधन्वाते चंचलचालव्यालसोगात ।
ज्योतिजालसों जक्रप्रकाश्यो मानहुंइन्द्रबजूभुविजात
लखिउज्ज्वलतारणभारतमें सुनिशरवेगचालफहरानि ।
मनअनुमान्योगुरुनायकने हैयहअवशिपार्थकोवान ३७
पाशउठायो जोहिसमयापर रथतट वाणगयोनियराय ।
भेदनकीन्होंगुरुनायककर धरतीगिरीपाशमहराय ३८
पुनि शरभेद्योगुरु अंगनमा घायल कियोद्रोणमहराज ।

सहितसारथीरथचूरणभो धरती गिरेजूझिरथबाजि ३९
तबगुरु देख्योशर अर्जुन का लागे गरुड़पक्षहैंमाथ।
नोकफोंकमहंकंचनलागो अंकितनामपार्थकोसाथ४०
मनआचारजयहअनुमान्यो अर्जुनआयगयोरणमांझ।
तुरतपधारो तबमंदिर का सविताछिपे ह्वैगईसांझ४१
चल्योयुधिष्ठिरनिजमंदिरका लैसंगसैनसुभटसरदार।
द्रोणपधारेलैकौरवदल जहं कुरुनाथकेर दरबार ४२
तबदुर्योधन बोलनलाग्यो सुनिये वचनद्रोणमहराज।
बांधनगेहत्योधर्मराजका औकरिआयोकौनरणकाज४३
तुमफिरिआयो समरभूमिते बांधनगयो युधिष्ठिरराय।
परैभरोसानाजियरेमा केहिविधिबिजयहोयगुरुराय४४
तब गुरुनायकनेसमुझायो करुकुरुनाथबचन परमान।
पाश उठायो मैंदक्षिणकर बंधनधर्मकोनअनुमान ४५
वहीसमइयाके अवसरमा पहुंच्योनिकट पार्थकोवान।
पाश काटिसो धरतीडारो कीन्होंमहाघोरघमसान४६
रह्योनचेतन मोरेजियरेमा ताते बचे युधिष्ठिर आज।
सांझजानिकै मैं दलफेरो सुनियेसत्यबचनकुरुराज४७
यहकहिउतरेरथ ऊपरते औसब छोरिधरे हथियार।
अपने २ गृह गवनतभे सारथिरथी शूर सरदार ४८
दोउदलपहुंचेनिजमंदिरका औकरिभोजनकियेनिवास।
आशालागी दुर्योधन के होइगइ आजयुद्ध मेंहास ४९

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्याज्ञाभि
गामीस्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
विरचितमहाभारतभाषा द्रोणपर्वबर्णनन्नामद्वितीयोध्यायः २॥

सदाभवानीभवदाहिनहैं गणपतिकरैविघ्न कोनाश ।
तुववल भारत मैं गावतहौं कौरव पांडवयुद्धप्रकाश १
उदयदिवाकर भेपूरुब दिशि जागे महारथी सरदार ।
कुरुपति आये गुरुनायकतै बैठोचरण शीशपर धार २
औयहभाष्यो आचारजसों श्रीगुरु सुनौ हमारी बात ।
बड़ोअंदेशा मोरे जियरेमा कम्पितहोतसहजही गात ३
तुम असयोधा त्रैलोकीमा नाहिन और दूसरो नाथ ।
अस्त्रपरीक्षा तुमसनसीखे पांडव सकलधारिधनुहाथ ४
तुम रणठान्यो परशुरामसों कीन्होंजोरघोरसंग्राम ।
बड़े २ राजनको मुहंमारो औ आचार्य धरायोनाम ५
कालिहकतुमयहुप्रणकीन्होरहैबंधिहैंआजयुधिष्ठिरराय
तेउन बांधेगेसंगरमा अब लग अमर पांचहू भाय ६
हैयहनिश्चय मोरेजियरेमा स्वामीसत्य कहौंयहबात ।
जोमनलावौ तुमसंगरमा पांडव करौक्षनक में घात ७
काहविचारौ तुम अपनेहिय जोनितपांडवराखौबचाय
सोसमुझैयैम्वहिंनीकीबिधि सुनियेसत्यबचनगुरुराय ८
सुनिकै बातैंदुर्योधनकी द्रोणाचार्य कह्यो समुझाय ।
कथा पुरातनयकराजासुनु गाथा कहौंपार्थकीगाय ९
जसकछुकरणीअर्जुन कीन्ही तसनाकरैदूसरोज्वान ।
नाजगयोधाकोउअर्जुनसम करुकुरुनाथबचनपरमान
रच्यो स्वयंबररे कन्याका श्रीमहराज द्रुपद भूपाल ।
इकलखयोधातहंआयेरहैं अतिशयधीरबीरबलशाल ११
त्यहीसमइया तहंअर्जुनगे संगै गये श्याम बलराम ।
कौतुकदेखनतहंहमहूंगये सुनुकुरुनाथबुद्धिबलधाम १२

यन्त्र बनायो तहंराजाने जाकी कथा बरणिनाजाय।
बनीमछरियाइककंचनकी लागीध्वजागगनमहंजाय१३
कनिका छोटो लैहीरनकी तामेंनयन दये बनवाय।
निरखैयोधाजोमछलीका तुरतैजायसनाकाखाय १४
द्रुपदराजने यह भाषणकियो औ शूरनते कहोबुझाय।
मैंप्रणआपनकहिभाषतहौं सिगरेशूरसुनौमनलाय १५
जो कोउ क्षत्री बलवन्ताहोय भेदैमीननयनमहंबान।
जीतिस्वयंबरसोकन्याबरै यहप्रणभूपराजपरमान १६
यहप्रण सांचो महराजाको सुनिसबमौनभयेबलवान।
भयो पराक्रम नाकाहूको भेदैमीन नयनमहंबान १७
हिये हारिगेयोधा सबरे औ होइगयो तेजकोनाश।
तहँ सभामहं पारथ बैठो कीन्हे बिप्रबेषकोभास १८
कोउनचीन्होतहंअर्जुनको अतिशयरच्योबेषबलवान।
सोउठिठाढ़ोभोत्यहिक्षनमा लीन्होकरणकेरधनुबान१६
सिंहठवनिसों अर्जुन ठाढ़ो शायक धनुपकीनसंधान।
चोटपताकामहंमारतभो भेद्योमीननयनमहंबान।२०
तुमसबमिथ्याभाषणकीन्हो पारथ प्रणराखोभगवान।
कोपिधनुर्द्धरधन्वालीन्हो नैननधरीकोपकोसान २१
दूसरशायक फिरिधारतभो दीन्होधनुपजौनसुरराज।
तकिशरमारोमीननयनमहं हियमहँसुमिरिसखाव्रजराज
गिरीमछरियातबधरतीमा जहंधरिराख्योतेलकराह।
सत्यपरिक्षा तबसबकेभै शंकितभयेसकलनरनाह २३
गलजयमाला द्रुपदीडारो कीन्हे अंगअंग श्रृङ्गार।
बारहु भूषणतनमाराजैं रतिसमरूपअनूपअधिकार २४

जबअवलोक्योतुमद्रुपदीका आयोलोभचित्तकुरुराय।
दूतपठायोतबशकुनीका कहुयहबेगि बिप्रसोंजाय २५
कौरव ब्याहौ द्रुपदीका लीजैअमितरतनधनखानि।
कन्या दीजैरेकौरवका दोउबलबुद्धिरूपसमजानि २६
पहुंच्यो शकुनी तबअर्जुनतै औयहहालकहोसमुझाय।
कन्या दीजै दुर्योधन का लीजै द्रब्यभूपसनजाय २७
सोसुनिपारथमनरोषितभो औशकुनीसनकह्योबुझाय।
मारत छांड़ो यहनिश्चयकरि कीकहुदूत न मारा जाय
तुम यह कहियोदुर्योधनते शकुनीमानुबचनपरमान।
भानुमतीका जोमोहिंदेवैं धनपतिद्रब्यदेहुं अनुमान२६
आयोशकुनीतबतुम्हरेढिग औसमुझायकह्योयहबात।
सोसुनिक्रोधिततुममनमाभयो कीन्होबिप्रबधनकोघात
अज्ञा दीन्हो रणशूरनका अति बल कर्ण आदिसरदार।
तेसबपहुंचेरे अर्जुनढिग कीन्होसमरशस्त्रकीमार ३१
जरासंधजोअति बलयोधा अर्जुन मारिकीन घमसान।
कोऊयोधा नासन्मुखभो जोरणलरै धारिधनुबान ३२
खेत न काहूसों आड़ोरहो हमहूं रहे शरासन धारि।
भागे क्षत्री सब संगरते सब भटगयेहृदयतेहारि ३३
अैसपराक्रम है अर्जुनका सुनिये सत्य बचनकुरुराय।
अैसोयोधा कोउ देखौंना आवैपार्थसमरजयपाय ३४
तबदुर्योधन फिरिबोलतभो हेगुरुदेव मानिममबात।
असबिधिकरियेअबसंगरमा पांडवअवशिहोयंसबघात
तबगुरुनायकभाषणकीन्हो सुनुममबचनभूपकुरुराय।
प्रातहिरचना असरणमाकरौं रचना चक्रब्यूहकरवाय

तासुमध्यह्वै रणक्रीड़ाकरि हनिये धर्मराजसबभाय।
भेदनजानैकोउअर्जुनबिन लरिहैकौनचक्रमधिजाय ३७
मंत्र बिचारो सबकाहूने कीन्हो त्वरित चक्रनिर्मान।
निशिभरिरचिपरिपूरणकीन्हो पायोकहूभेदनाजान ३८
सातदुअरवा तामहं राखे रक्षक एक एक सरदार।
तिनसंगअगणितगढ़सैनाहैधारणकिहेहाथहथियार ३९
प्रथम जयद्रथ है द्वारेपर रक्षक शूर भूरिबलवान।
द्वारद्वितीये गुरुनायक हैं धारणकिहेहाथधनुबान ४०
तिसरे द्वारेपर रक्षकहैं सूरज सुअन करण महराज।
रथी सारथी बहुयोधाहैं बाहनअश्वमत्तगजराज ४१
चौथे द्वारे कृपाचार्य हैं औ गुरु पुत्र पांचयें द्वार।
छठयेद्वारे हैभूरिश्रव लीन्हे संग सुभट सरदार ४२
द्वार सातयें कुरुनायक है लीन्हे संग बली सौभाय।
भूपसहस्त्रयजेहिसाथीहैं रहिअभिलाषयुद्धकीछाय४३
पुष्ट द्वार करि तबसातौका रक्षक भये सप्त सरदार।
दूत पठायो तबपांडवतै पहुंच्योधर्मगेहप्रतिहार ४४
जाय जनायो तब द्वारकने सुनिये धर्मराज महराज।
दूत पठायो कुरुनायक है कीन्होमहायुद्धकोसाज ४५
दूत बुलायो तबराजाने लाग्यो कहन जोरिकै हाथ।
मोहिंपठायोनृपभाषणको कीन्होचक्रव्यूहगुरुनाथ ४६
कह्यो संदेशा यह कौरवने सुनिये भूप युधिष्ठिर राय।
कैचलिकरियेव्यूहभेदको नातरुदेहु पत्र लिखवाय ४७
मौनधारिये जोलरिबेना करिये फेरिजाय बनबास।
सुनिअसबातैंनृपद्वारकको लागेहियेकरनअभिलाष४८

बोलि पठायो सब सैयनका बड़े २ महारथी सरदार ।
कहिसमुझायो सबशूरनसों जोकछुकह्योहालप्रतिहार
व्यूहभेदिबेकी गतिजाको सो कहिमोहिं देयसमुझाय।
ता दिन क्षत्री बोलनलागे सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ५०
शूरनऐसो कोउ संगरमा जानै चक्रव्यूह को हाल ।
दीखन काहू रे नैननसों सुनिये धर्मराज भूपाल ५१
सुनि असबातैंरण शूरनकी शंकितभयेधर्म के नाथ ।
व्यूहभेदिबो अबकठिनोहै कोरणकरैधारिधनुहाथ ५२
विफलपराक्रमयहिअवसरमा नाहिनगेहशूरिमापार्थ ।
चक्रविदारतिअर्जुनक्षणमा जानतसोगतिव्यूहयथार्थ ५३
भयोअकारथरणपारथबिन निश्चयफेरिभयोवनवास ।
पुनिसहदेवसोंपूछनलागे जानतकौनचक्रगतिनास ५४
सहदेववरण्यो तब राजाते सुनिये धर्मराजमम बात ।
चक्रव्यूहगतिइकगुरुजानै दूजो और धनंजयतात ५५
की गतिभेदन प्रद्युमन जानै जानै अन्यनहींसरदार ।
शोचआइगोतबराजा के होइहैकौनभांतिनिस्तार ५६
बहुछलहोइगामोरे लश्करमा गोबहुदूरिधनंजयराय ।
भूपसुशर्माकैकरणीहै यहछलकीनजानिकुरुराय ५७
चक्रबनायो गुरु नायकने चाहत घनो होन संग्राम ।
करैकोभारथबिनपारथके अबमोहिंभयोविधाताबाम ५८
तेहीसमइया के अवसरमा अर्जुन पुत्रगयो दरबार ।
देखिउदासोमहराजाका बोल्योशोशचरणपरधारि ५९
काहअंदेशानृपजियरेमा सोम्बहिंकहौनाथ समुझाय ।
तबसोभाष्योमहाराजाने कीन्होचक्र व्यूहगुरुराय ६०

नागति जानैकोउभेदनकी अर्जुन धीर बीरना धाम ।
लरैकोचलिकै अब संगरमा होइहैआज घोरसंग्राम६१
त्यहिछिन पारथ सुतबोलतभो जानत चक्रभेदमैंतात ।
करौनथकारेजियरेमा करिहौंअवशिव्यूह कोघात ६२
मैंगतिजानौंछः द्वार तक सतयें द्वारहोंहुं अनजान ।
जेहिविधिजान्योंगतिभेदनकोसोसमुझावतभाषविधान
अवशिविदारौं छहद्वारनका रक्षक होहिंबलयासुरराज।
द्वार सातयेंगति जानीना सुनिये धर्मराजमहराज६४
भूपयुधिष्ठिर तब पूछत भे कहुसुतमोर बचनपरमान।
भेदन जान्योभीमादिकका तुमकससीख्यो व्यूहविधान
ताक्षनअभिमनुयहभाषण कियो सुनियेधर्मनाथकर्तार।
गर्भप्रकाश्यो जेहिअवसरमा जननीपेटलीनअवतार६६
प्रसवकिबेरासोरि जननी के बाढ़ी उदर पीरआंधकार।
चक्रव्यूहगतिपितुभाषण कियो तबमैंश्रवणकीनहियधार
भेदसो जान्यो छहद्वारेलग सतयेंमध्य लीन अवतार।
अनँदबधैया बाजन लागीं औआनन्द भयोपरिवार ६८
ताक्षन राजापुनिबोलतभे कहुसुतसत्यबचनपरमान ।
वयसतुम्हारीलरिकाईकी औनादानबालअनजान ६६
केहिविधिमेजैंमैंलरिबेका जहंगुरुनाथसरिसबलवान।
कुलअवलंबन सुततुमहीहौ मातापिता केरहौप्रान७०
तबअभिमनुनेकहिसमुझायो हेनृपमोहिंजानुमतिबाल।
लरिकाकहिये तबअर्जुनका कौरवसैन्यकरौंबेहाल ७१
द्रोणकर्णसेबलयोधा हैं तिनमांधिलख्योपराक्रमम्बार।
जेहिक्षनधारौंकरधन्वाका मारौंताकिर सरदार ७२

जीतिपुरंदरकालैआवों डारौं अमितसेनदल घाल ।
मारिभगावोंरणशूरनका तौपारथकोलाड़िलोलाल ७३
बाणवृष्टिकरिदशदिशिव्यापैं धरतीगगनछायअंधियार।
पहटौंवसुधारणमुण्डनसों सरिताबहैंरुधिरकीधार७४
शोचअकारथ नृपकरियेना साजियसेन युद्ध के काज।
चलिअवलोको पुरुषारथमम कैसोकरौंयुद्धकोसाज७५
भाषण कीन्हों तब भिम्माने सुनिये धर्मराजमहराज।
अभिमनुमारैछहद्वारेलगि सतयेंद्वारसाधिहैंकाज ७६
क्षत्रीघुसिहैंसब अभिमनुसंग गहि२घनेहाथहथियार।
छहौंदुअरवा अभिमनु भेदै सतवांद्वारशीशममभार७७
गदा प्रहारनसों धरितोड़ौं लेहौंपलक मांझ मैदान।
करियेशंकाना जियरेमा साजनदेहुसैनबलवान ७८
आयसु दीन्ह्यो महराजाने दुंदुभिशब्दघोर घहरान।
भेरिनफीरीबाजनलागींअगणितध्वजालागफहरान ७९
सुमिरिशिवाशिवसबक्षत्रीगण साजनलागअंगहथियार।
सारथिस्यंदनसाजनलागे गहि२ चंचलचालबछ्यार८०
सजैंमहावतदल कुंजरके कज्जलवरण श्यामगजराज।
बहैंपनारामदधाराके झरना झिरैं यथा गिरिराज ८१
परीअंध्यारी है नैननमा औ जंजीर बिराजैं पायं।
ठाढ़े झूमैं दलबादलसे अतिमदचिघरि २ रहिजायं ८२
सबदलसजिगामहराजाका पैदल रथी सारथी ज्वान।
ढाढ़ीकरखा बोलन लागे पंडित करैं वेदको गान ८३
दूबरोचनादै मस्तकमा जननी करैं आरती झार।
सगुनमनावैंयाचक गण सखियाकरैं मंगलाचार ८४

चलिभोलस्कर तब पांडवका लैकै कृष्णचन्द्रको नाम।
आगेहलकागजराजनका तिनपरगाजतचलेदमाम८५
कंचनहौदा झलझलझलकै मानौं सूर्य देव परकाश।
तेहिकेपाछेबाजिनहलका बहुफहनातउड़ातअकाश८६
छमछमछमछम बजैं पैंजनी धमकैं अष्टधातकीनाल।
तिनकेपीछेदलस्यंदनका जिनपरचलेलड़ाइतलाल८७
तिनके पीछे दल पैदलका बांधे अंगघने हथियार।
चक्रव्यूह जहंगुरुनायकका पहुंचेजाय धर्मसरदार८८
चक्रकिरचना अवलोकनकरि क्षत्रीगयेसनाकाखाय।
कबहुंनदेख्योअसनैननसों मारगकौनसध्ययहिजाय ८९
तबसमुझायोसुतअभिमनुने हेबलवन्तहोहु हुशियार।
जेहिमगहांकौंमैंस्यंदनका अंतरचलौताकिसोइद्वार ९०
यहकहिआज्ञादयोसारथिका अभिमनुधरोहाथधनुबान।
तबकरजोरेसारथिबोलै अभिमनुबालबुद्धिनादान ९१
क्रियान जानौ तुमसंगरकै कबहुंन धरोहाथधनुबान।
बड़े २ क्षत्रीकौरवदलमा द्रोणिद्रोणकर्णबलवान ९२
पारनपैहौ गुरुनायक सों हैं बहुदक्ष युद्ध के काम।
कहीहमारीयहशिक्षाकरि अभिमनुशीघ्रलौटिचलुधाम
वचनसारथीकेश्रवणनकरि अभिमनुजरोकोपकीज्वाल।
धरिकैडाट्योतबसारथिका जानैकहामूढ़रणहाल ९४
वयसबखानैमोरिबालकको बलनालखेमोररणमाह।
कोटिप्रतापीको जानीना ताको लखीपराक्रमथाह ९५
कथाविदितहै रामायणमा कीन्ह्यो अश्वमेध जबराम।
रामलक्ष्मणऔकुशलवसों माचोमहाघोर संग्राम ९६

सबदलमारो कुशबालकने बन्धनकीनबलीहनुमान ।
अतिघमसानीसंगरकीन्ह्यो निजसुतजानिलीनभगवान
हांकहुस्यंदनअबआगेका श्रीयदुनन्दन करहिंसहाय ।
देखौंरचनागुरुनायककी विरच्योचक्रव्यूहमनलाय ९८
सुमिरिशारदागणनायकका औरथसारथिदीनबढ़ाय ।
चञ्चलगतिसों चलैंबछेड़ा जिनकै टाप भुईंनाजाय९९
पीछे सेना सब पांडवकै औरणभूमि चले सरदार ।
दूनौ लस्कर भेसन्मुखमा क्षत्रिनधरेहाथहथियार १००
सशरशरासन धारनकीन्ह्यो छूटन लाग कैबरीबान ।
ढाढ़ीकरखा बोलन लागे पण्डितकरैं वेदका गान १
पैदलपैंदलसों भिड़नीभड़ औअसवारन सों असवार ।
रथीमहारथिसारथिअरुझे औगजदन्तमहौतनमार २
अगणितसेनादोउओरनकै चहुंदिशिछायरह्योअंधियार ।
थर २ थर२वसुधा कांपै फन फन शेश करैं फुफकार ३
हैअभिलाषा उरजीतनकी दोऊ ओर उठो घमसान ।
अपने २ रण मुर्चन पर खेलन लाग युद्ध बलवान ४
जुटोजयद्रथ भटकुरुपतिको दूजोसिंधु राजसरदार ।
भपयुधिष्ठिरको भिस्माहै औलाड़िलो धनंजययार ५
खैंचिकमनियां भुजदंडनपर मर्मर मर्मर उठै कमान ।
शरशरशरशर शायकछूटैं लागो होन युद्धघमसान ६
जलथलशायकपूरण कीन्हे सूरणकरे खरे बलवान ।
झकोहुलहुलवा अर्जुनबालो सबदलकाटिकोनखरिहान ७
भईउजेरियासबलस्करमा मानौ चंद्र उये आकास ।
मुहरामारो तबअभिमनुने पहुंच्यो चक्रव्यूहकेपास ८

पलकनिवारतरणशूरनके औ रथहांकिदीनरथिवान।
प्रबललड़ाइतलबपारथ को पहुंच्योचक्रव्यूहमैदान ६

इतिश्री उन्नाम प्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि श्री वाजपेयिपं०रामरत्न
स्यात्मजाभिगामी स्वप्रदेशांतर्गत मसवासीग्राम निवासिपं० बन्दीदीन
दीक्षित निर्मित महाभारत भाषा भारतखण्डान्तर्गत
द्रोणपर्व चक्रव्यूह युद्धबर्णनोनाम तृतीयोध्याय: ३॥

चक्रव्यूहगतजबअभिमन्यो धारणकीनहाथधनुबान।
युद्धभेद रथ सारथिहांकै पहिलो चक्रब्यूह मैदान १
भूपजयद्रथ तहंरक्षक है सोऊ भयो वेगि हुशियार।
करशरधन्वा धारणकीन्हो बड़बलवंत शूरसरदार २
पावसझरिशर बरसनलाग्यो लागोहोन घोरसंग्राम।
भिम्माउतरो रथऊपरते लैकै कृष्णचंद्र को नाम ३
गदासंभारो दक्षिणकरमा धायो चक्रव्यूहकी पारि।
मनौप्रलयहितरणमाआये लैकैकालदण्डत्रिपुरारि ४
संगसेना महराजा को सोहैं घने २ बलवान।
चढ़ाउतारू भुजबलसोहैं नैना अरुण रंग अनुमान ५
हैंमहराजा धर्मसंगै औ नृप सात्वकि भूप विराट।
धृष्टद्युम्नऔनकुली सहदेव कीन्हे प्रबल युद्धकेठाट ६
लोह लोहसों बाजन लागी शरशर चले कैवरी बान।
गरजैं क्षत्री वहिसमयापर बरषा यथामेघघहरान ७
भीम जयद्रथको मुर्छाभयो लागी होन परस्पर मारु।
अपन परावा कछुसूझैना धरु २ मारु २ लेलकारु ८
हन्योजयद्रथतबभिम्मापै धनुगुनतानि तीव्र दशबान।
उदरबिदारोरे भिम्माको मुर्छा खाय गयो बलवान ९

फेरिचलायो रथसारथिने मनमा गयो सनाको खाय ।
कठिनोमुर्च्छा रण शूरनका आड़ेरहैं समरना पाय १०
दशशर लागे धर्मौउरमा औ दशहने नकुलके गात ।
सहदेवसात्वकिसबतनबेध्यो कीन्ह्याबानवानसोंघात ११
झंडशायकनकेझरिलागे भागे नबचैंबिनाकोउघाय ।
भयेशूरमा मुर्छितरणमा अंतर चक्रब्यूहके आय १२
चक्रब्यूहगतिकोउ जानैना संकटपरे सकल सरदार ।
अकिलेअभिमनुसंगरराच्यो अतिबलपूत धनंजयक्यार
मुर्छाजागीमहराजाकै तब सहदेव सों लाग बताय ।
भेदनजानोचक्रब्यूहका करियेसहदेवकौनउपाय १४
भूपजयद्रथने रणराच्यो कौनों शूर न पावै पार ।
हालबतावौयहिभेदनका केहिबिधिविजयदेयंकर्तार १५
सुनिअसबानीमहराजाकी सहदेवकहोहालसमुझाय ।
हैबरदानीयहु शंकरका मानहुबचनमोरमनलाय १६
यहिंबर पायोहै शंकरते सुनु महराजा बचन हमार ।
बनोबासका जादिन गेत्यो पांचौभायसंगइकबार १७
तबदुर्योधन आयसुदीन्हो औ जयदर्थकह्योसमुझाय ।
चल्योद्रौपदीसोबनकालै पारथमिल्योपंथमहंआय १८
क्रोधित पारथ नागफांसधरि लीन्हो तुर्तजयद्रथबांधि ।
मनअनुमानोतबमारनको पुनिअसमंत्रलीन्हियसाधि
शीश जयद्रथकामुड़वायो औबहुभांति कीनअपमान ।
मारतछोंड्यो तब पारथने औदै दियोजीवकोदान २०
लाजजयद्रथका बहुलागी तुरतै भाजिगयोनिजधाम ।
तबअवराध्योशिवशंकरका निशिदिनजपैशंभुकोनाम २१

अर्चा लखिकै शिवआनंदभे औजयद्रथहिकहोबुझाय ।
मैंपरतोषित तुवपूजासों अब बरदानमांगुमनलाय २२
सुनिअसआयसुगंगाधरका पदपरिकह्योजयद्रथबात ।
पांचौपांडवरणमाजीतैं असअभिलाषमोरिहैतात २३
तबशिवशंकरने समुझायो सुनियेभूप बचनमनलाय ।
चारिबांधवातुमरणजीतौ पारथसमरजीतिनाजाय २४
यह बरपायो शिवशंकरते सुनिये धर्मराज महराज ।
याकोजीतनअतिकठिनोहै पारथनाहिंसमरमेंआज २५
द्वारदूसरे को अभिमनुगो रक्षक जहां द्रोणगुरु नाथ ।
सनमुखआवतअभिमनुदीख्यो धारणकीनशरासनहाथ
औललकारो रणशूरनको क्षत्रिउ बेगि होहु हुशियार ।
व्यूह भेदकरियहआयोहै भंजनकीन्होप्रथमदुआर २७
धारण कीन्हो शरधन्वाको दर्पन लाग अस्त्रसरदार ।
इतै अकेलो है अर्जुनसुत औ उतयोधा जुटेहजार २८
खींचिकमनियांशरगुनजोरैं बर्षतअमितअगिनियांबान ।
छायकपूरेदशहूदिशिना औ मचिगयोयुद्ध घमसान २९
झुक्यो दुलरुवा अर्जुनवालो लोपे बाण वृष्टि गुरुराय ।
साठिसाठिशर इकइकमारै क्षत्रीगिरैं धराअरराय ३०
घायल कीन्ह्योरे द्विजबरको स्यंदनरहे मूर्च्छाखाय ।
फेरिहोशकरिधन्वालीन्ह्यो कीन्ह्योबाणवृष्टिबरसाय ३१
सोसबकाटे अर्जुनसुतने तृणसमकाटि अस्त्रकी धार ।
बहुतक योधा धरतीपारे मारे बड़े २ सरदार ३२
व्यूहदुवारेअभिमनु घूमैं जस गजवृंद मध्यमृगराज ।
तनिकनशंकाज्यहिहियरेमा बहुबिधिकियोपांडवनकाज

धरिशर छोरै ना मुखमोरै फोरै शीश भेदि भटवान ।
सन्मुखधन्वाकोउ धारैना भागेछोंड़ि द्वारबलवान ३४
द्वारदूसरोअभिमनुतोरो लीन्ह्योबिजयपत्र लिखवाय ।
फेरिचलाघोरथसारथिने चंचलगतिसोंबाजिबढ़ाय ३५
द्वारतीसरेदाखिलहोइगयो यहुअर्जुनकाराज कुमार ।
करणशूरिमातहं रक्षक है बांकोबीरकौरवनक्यार ३६
सन्मुखदीख्योजबअभिमनुका भाषणकियोकर्णमहराज
व्यूहयुद्धनाअर्जुनआयो पठयो तुम्हैं लरनकेकाज ३७
शस्त्रपरीक्षा तुम जानौना ना गतिजानौयुद्धकोलाल ।
चक्रव्यूहकालरिबेआयो कोमलगातबयसकेबाल ३८
सुनिअसबातैं सूरजसुतकी तबअभिमनुनेदियाजवाब ।
बालबयक्रम हमजानैना ना यहुक्षत्रिनकेरहिसाब ३९
युद्धक्रियाहित मैंआयोहौं दृढ़करि गहौहाथ धनुबान ।
बालपराक्रमरणअवलोको जोमनबनैधनै बलवान ४०
झेल्योस्यंदनतब द्वारेका कोपितकर्ण लीन धनुबान ।
शायकबर्षा अभिमनुकीन्ह्यो छायोअमितधराअसमान
सोसबकाटे सूरजसुतने धनुगुणजोरि सुतीक्षण बान ।
हनिहनिमारैरथअभिमनुके काटैअस्त्रचोटबलवान ४२
उज्ज्वलशायकअभिमनुमारो दशहूदिशाभयोपरकास ।
शंकाव्यापीसबक्षत्रिनके हियसोंतजीबिजयकीआस४३
कठिनीचोटैंपारथ सुतकी सन्मुख कौन करै संग्राम ।
अपनपराचापहिचानैना जहंपररहे युद्ध के घान ४४
रह्योनरोंकोरथअभिमनुका खालीगई शस्त्र की वार ।
द्वारचतुर्थेअभिम नुपहुंच्यो जहंपरकृपाचार्यसरदार४५

सुमिरिभवानीजगदम्बाका धारणकीन्हहाथधनुबान ।
भईसनाका सबक्षत्रिनके आयोपार्थ सुवनबलवान ४६
कृपाचार्यतब धन्वा धारो सारथिरथैकीन्ह हुशियार ।
खैंचिकमनियांभुजदंडनपर बर्षनलागबाणजलधार ४७
जुरिगे क्षत्रिय चौतरफासे छूटनलाग घने हथियार ।
अबलल्लड़ाई तेहिक्षनमाभइ एकतेएक शूरसरदार ४८
शर शर २ शायक बरसैं क्षत्रिय गिरैं भरहरा खाय ।
जोकोउक्षत्रियसन्मुखजूझै तिनकाइन्द्रपरीलैजाय ४६
मूड़न केरे मुड़चौरा भै औ रुंडन केलाग पहार ।
अगणितयोधाधरतीगिरिगे सरितावहैंरक्तकीधार ५०
धरि २ गरजैं रे सुरचनपर घरुघरु मारुमारुललकार ।
छूटेशायककृपाचार्यके अभिमनु काटिमिलायेक्षार ५१
सहषशरासन तर आसनदै मारे हिये मध्यशरपांच ।
रहोनचेतनकृपाचार्यको घायलभयोलगत नाराच ५२
चौथोद्वारो अभिमनु तोरो मारू बम्बदीन बजवाय ।
ध्यानधारिकै नटनागरका सारथिरथैबढ़ायोधाय ५३
द्वारपांचयें दाखिल होइगो रक्षक द्रोण पुत्रबलवान ।
सन्मुखआवतअभिमनुदेख्यो धारणकीन्हहाथधनुबान
औललकारो रे अभिमनुका सुनुरे बीर धनंजयलाल ।
जूझनआयोमोरसन्मुखका कोमलगातवैसकेबाल ५५
सुनिअसबातैंतबद्रोणीकी अभिमनुगरजि सुनाईहांक ।
बालकसमझौनाजियरेमा धरिधनुकरहुयुद्धकोशाक ५६
बलदेखलैहौं मैंसंगरमा मरिहौ बीनिबीनिसरदार ।
यहकहिधायोदोउधन्वाकाबरषनलागबाणजलधार ५७

अगणितशायकदोउदिशिछूटैं छिपिगेअंधकारसोंभान ।
बाणकरेजेतकितकिमारैं बसुधागिरैंअर्द्धमुखज्वान ५८
कहर छाइगो चक्रांतरमा रोपे रहैं समरना पायं ।
गरुई गाजैं रणशरनकी लागत अंगभंगहोइजायं ५६
अभिमनु द्रोणसों रणराचो देवता देखतसजेबिमान ।
दुचितोकरिकैगुरुनंदनको अभिमनुकीनबानसंधान ६०
हृदय ताकिकै भटद्रोणीका मारे झपटि तीव्रदशबान ।
धनुगुनकाटोतबद्रोणीका स्यंदनमुर्च्छिगिरोबलवान६१
अन्य शरासनमोशायकभरि कीन्होसकलसैनसंहार ।
सारथिहांक्योरथआगेका भंजनकियोपांचवोंद्वार ६२
छठयें द्वारेमापहुंचतिभो मनमासुमिरियशोमतिलाल ।
तबअवलोक्योभूरिश्रवने पहुंच्योआइपार्थकोबाल ६३
साजि शरासन शायकछोड़े बरसैं यथा बुंदकी धार ।
सहितसारथीस्यंदनछिपिगो छिपिगोपूतधनंजयक्यार
इन्द्रबाणतबअभिमनुछोंड्यो काटेनिमिषमांझसबबान ।
छायउजेरियागैदशदिशिमा मानौउयेपूर्बदिशिभान ६५
लैबहुशायक पुनितरकसमा सरकसयुद्धपार्थकोलाल ।
मारिभगायोसबसैनाका कीन्होसमरतेजबिकराल ६६
करिअतिमुर्च्छितभूरिश्रवको औबिनचेत खेतकरिज्वान ।
बाग बढ़ायो रथबाजिनकै सतयेंद्वारजायनियरान ६७
जाको रक्षक दुर्योधनहै अतिबल संगभूरि बलवान ।
बड़ेबड़ेयोधासहस्रत्रिंशहैं धारणकियेघने धनुबान ६८
अवातदीखोरेअभिमनुका क्षत्रिनालियेशस्त्रसजिहाथ ।
हल्ला होइगयोचौतर्फाते बोलत मारुमारुनरनाथ ६६

अस्त्र शस्त्र बहुबाजन लागे गाजत शूरयथा मृगराज ।
रथपरशायकबरसनलागे गिरिपरयथावृष्टिसुरराज ७०
धनु टंकोरैं भुजदंडन धरि गर्जत यथा मेघ घमसान ।
खड्गछटाजनुदामिनिदमकैबरषतबाणबुंदअनुमान ७१
शूल शक्ति करछूटनलागों मानहुं गिरतइन्द्रकोगाज ।
अगणितयोधाकौरवदिशिमा चहुंदिशिजुटेबिजयकेकाज
अकिलो लरिकाहैपारथका औउतभिरेअमितसरदार ।
सुमिरणकरिकैतबमाधवकालीन्होहाथशरासनधार ७३
जौन सिखाये शरअर्जुनने कीन्हो वही बान संधान ।
शायक काट्योसबइकपलमा दलमाभिरोसिंहअनुमान
यथा हुताशन जंगल दाहै तिमि सवहनेसैन्यसरदार ।
केतनेउरस्यंदनभंजनकीन्हे औगजराजबाजिअसवार ७५
सुनिरव क्षत्री धावन लागे द्रोणो कृपा कर्ण गुरुराज ।
चहुंदिशिघेरोरेलरिकाका लागेलरनअस्त्रकरिसाज ७६
तब समुझायो हैसारथिने करिये कुंवर बचनपरमान ।
भिरे हजारन भटकौरवके अधरम युद्धहोतमैदान ७७
उचित लड़ाई इकएकैसों यहकछु नहीं नीतिकी बात ।
छलकरिरोपेसबयोधारण चाहतकरनपुत्रतुवघात ७८
सुनिअसबातैं तबसारथिकी पारथ पुत्रकहीसमुझाय ।
लाइयशंकानाजियरेमा सारथिबचनमानुमनलाय ७६
अब चक्रांतर मैंआयोहौं कीजै अवशि शत्रु को नाश ।
परीआनिकैअबअपनेशिर छांड़ियवीरबिरानीआश ८०
शोचनकरिये कछुजियरेमा करिहौंयुद्धगातअनुमान ।
मैं शर बर्षौं चौतर्फाते तुव रथ हांकु चाकुपरमान ८१

हांको स्यंदन तब सारथिने जैसे चलैंकुम्हारकचाक ।
शर बर्षाये अर्जुन सुतने दैदै सबहि घोररणहांक ८२
जितने क्षत्री कौरव दलके द्रोणी द्रोण कर्ण बलवान ।
हनिहनिमारेसबअभिमनुने सौसौलागगातमाबान ८३
दशदशघायकतनसारथिके दुइदुइबानबाजिअसवार ।
पांचपांच शर गजराजनके पैदल एकएकशरमार ८४
सबरे क्षत्री घायल कीन्हे धायो क्रोधवंत कुरु राय ।
जेतने योधारहैं संगरमा सबकह हांकसुनाईआय ८५
धिक् है ऐसे क्षत्रीपनका हैधिक हाथ गहे धनु बान ।
धिकहैऐसेपाराक्रमका धिकजोनामकहतबलवान ८६
मैंपरितोष्यों यहि समयाका संकट परे करौ बड़काम ।
सबरे योधा घायलकीन्हे बालक एककरतसंग्राम ८७
अकिलोलरिकानाजीतोजाय करिहैाबिजययुद्धकेहिकाज
सबरी सैनाअभिमनमारी आवततुम्हैंहियेनालाज ८८
सुनिअसभाषणदुर्योधनका तबगुरुनायकदीनजवाब ।
बालके धोखेतुमरहियोना जानतनीकयुद्धकोदाब ८९
अस्त्र परिक्षा अर्जुन सिखई हैअभिमन्यु बड़ो बलवान ।
कोटिनयोधा जयपैहैंना जबलगरहेहाथधनुबान ९०
हैधनुधारी यह पारथ सम करिहै युद्ध घोर घमसान ।
कोउनक्षत्री सम तुवदलमा जीतैंयुद्धलेयंजयदान ९१
जैसे अकिले इककेहरिका जीतिनसकैं सहसगजराज ।
जैसेपक्षिनकेवृन्दनमा अकिलोजीतिजायनाबाज ९२
तैसे लरिका यहुअर्जुनका जबलग धरै हाथधनुबान ।
कोटिन क्षत्री जय पैहैंना सन्मुखलरैंखेतबलवान ९३

कटैशरासनयाके करको तब कछु बनै मारिबो काज ।
सुनिअसबातैंगुरुनायककी धायेशस्त्रसाजिनरराज ६४
करिहंगामाचहुंओरनसों लीन्ह्यो रोपिसमरबिचवाल।
तबहुंनशंका भइअभिमनुके सुमिरोंहियेयशोमतिलाल
लियोशरासन दक्षिणकरमा वरसतदशौंदिशाबहुवान।
अगणितसेना शरसोंछांटी लंकामध्यय्थाहनुमान ६६
तबसबक्षत्रीइकमिल धाये स्यंदनसहितघेरिरथिवान।
शूलसेलह औमुद्गर मारैं झारैं धनुषधारिबहुवान ६७
दच्योलाड़िला तब अर्जुनका लागोकरनघोरसंग्राम ।
तीनिवाणसोंक्षत्रिनमारो दीन्ह्योजौनवाणघनश्याम६८
काटिबिदारे एकहिक्षणमा क्षत्रिनतजे जौनहथियार ।
जैसेसविताकोआभासों चहुंदिशिविनशिजायअंधियार
कितनेउं कुंजरधरतीगिरिगे जनुकज्जलकेपरेपहार ।
कह्लाकटि २ गिरैंबछेड़ा ऊपरगिरैं जूझिअसवार १००
सहितसारथीस्यंदन गिरिगे कटि २ गिरेरथीसरदार ।
रुण्डनमुण्डन बसुधातोपी नदिया बहैरक्तकीधार १
कटि २ कुण्डलरणशूरन के कलंगीमुकुट मिलायेक्षार।
पगियाकेशनसोंलपटीगिरैं जसनदियनमाबहैंसेवार २
कटिभुजदंडै भुइंमागिरिगइं मानों नाग रहे उतराय ।
गिरैं सुगरुआभट धरतीमा जिनके लगेकरेजे घाय ३
अपनपरावोपहिंचानैना चहुंदिशिमारुमारु ललकार ।
झपटैंदपटैं शस्त्रनगमकैं धरिहथियार उपर हथियार ४
तेग तमंचाकी झरि लागी कहुं २ कड़ाबीनकै मार ।
खांड़ेदुधारा के अरझ्नवारा लागत होयगातके पार ५

छुरी कटारी औतरवारी भारी शूलसेल्ह की झाड़ ।
शस्त्र सामुहें आवत देखैं क्षत्री लेयं ढालकी आड़ ६
लमकैं चमकैं रणदामिनि से घमकैं शीश वोसदैवार ।
धरि २ धावैं दल बिचलावैं पावैंन एक एकसोंपार ७
खरखरखरखर स्यंदन दौरैं भरभरछुटैं अगिनियांबान।
कहरव्यापिगइदशहूदिशिमाहोइरहोशोरघोरघमसान८
लस्करमारोसबअभिमनु ने कायरभागछोड़िहथियार ।
कर्णरिसान्यो तबसंगरमा दैकरिहांक कीनललकार ९
झपटि सुधारोतबधन्वाका कीन्ह्योअग्निबाणपरिहार ।
सन्मुख आवतअभिमनु देख्यो तुरतैकाटिमिलायोक्षार
औपरिहारोजलशायकका क्षणमहंकियोअग्निकोनाश ।
जबजलधारादलमाबाढ़ीक्षत्रिनतजीजियनकीआश ११
बूड़नलाग्यो दलकौरव का परिगोचहूंओरहहकार ।
मारुतशरतबरविसुतप्रेख्यो सूखी तुरतनीरकीधार१२
नागवाण तबअभिमनुमारो तुरतै कीन पवन कोपान ।
डसिडसिमारोसबक्षत्रिनका कौरवसैन्यशूर बलखान
दशाभयातुरलखिलस्करकी रविसुततज्योमोरकोबान ।
भक्षणकीन्होंअहिराजनको भागेभभरिनाग अकुलान
रोषितह्वैकैतक अभिमनुने अगणितहनेकर्णउरबान ।
साठिबाणहनिगुरुघायलकियो शायकअन्यकीनसंधान
दशशरमारे कृपाचार्यउर द्रोणोहिये कीन परिहार ।
पांचबानसोंहनिभूरिश्रव मोहितकियोक्षत्रिसरदार १६
घायलकीन्ह्योदुःशासनको स्यंदनकाटिमिलायोक्षार।
अगणितशायककीवर्षा कियो पावस यथाबुन्दजलधार

सातलाख सबसेना मारी सबदल जूझि गिरोमैदान।
क्रोधितह्वैकैतबरविनन्दन धारणकीनअन्यधनुवान १८
तेशर चोटैकरि अभिमनु पर मारे अंग तीव्रशरपांच।
घावलागिगो अर्जुनसुतके लीन्हेधारितीव्रनाराच १६
सोधरिधमकेरविनन्दनपर घायलकीनबाजिरथिवान।
चूरणकीन्हीरेस्यंदनका बिनरथभयोकर्णबलवान २०
तबैशरासनगुरुनायकलै अभिमनुनिकट गयेनियराय।
लैदलकुंजररथ बाजिनका अर्जुन पुत्रगरांसोआय २१
कर्णदुशासन औभूरिश्रव हनि २ चोट देत तन घाय।
अकिलेअभिमनुकेस्यंदनपरअगणितशूररहेशरछाय २२
जितनी सेनाकौरवपतिकै घायलकीनलाड़िलेलाल।
करैनशंका कछु जियरेमा जैसेसमरसिंह विकराल २३
सुनिललकारो दुर्योधनने क्षत्रिउकरौ युद्ध मनलाय।
सोई क्षत्रीबलवन्ताहै अभिमनुहनै समरमहं धाय २४
कर्णशरासनतबसाधन करि जोशर दीनरहै भृगुराम।
सोशरमारोतकिअभिमनुतन काटोधनुषमध्यसंग्राम २५
धनुषटूटिगोजबआगे का अभिमनुलीनशक्तिकरधारि।
सोतकिमारो रविनंदनपर मानैकोउनहींसोंहारि २६
लागी शक्ती रबिनंदनके रथपर गिरे मुर्च्छि महराज।
अभिमनु घेरयो चौतर्फाते क्षत्री घुसे मारिबे काज २७
शूल सुधारो तबअभिमनुने केतनेउं हनेखेतमहंज्वान।
भागे योधा सबकौरवके करते डारि शरासनबान २८
देखैं तमाशा सब देवतागण नभते रहे फूलबरसाय।
धनिधनिकहियेपारथसुतका रणमाकियोबड़ीमंशाय २६

धनिधनिमाताइनकीकहिये जिनकीकोखिलीनअवतार ।
धन्यधन्यहैपितुपारथका हैधनिधन्यपांडुपरिवार ३०
बंशउजागर यहु बालकहै अगणित शूर कीन संहार ।
कटोशरासन शरहाथे का तबहुंनकीनशंकसरदार ३१
रुधिर पनाराबहैं अंगनमा छांड़ो हाथ नहींहथियार ।
लखिरणकरणीअर्जुनसुतकी कौरवरह्योहियेसोंहार ३२
लाखनक्षत्रीमोरेलस्करमा मारतकोउनबालकहंधाय ।
फिरिललकारोकर्णद्रोणका सुनियेमहाराजगुरुराय ३३
सेनामारयो सब बालकने अतिबल युद्धरहोदरशाय ।
ठाढ़े देखत तुम नैननसों कोनौ शूर नमारत घाय ३४
सुनिअसबातैं दुर्योधनकी फिरिसबदौरिचलेनरनाथ ।
खड्गकटारीऔशक्तीगहि लैलैशूलसेलहमटहाथ ३५
सन्मुखआवतअभिमनुदीख्यो कीन्होतेगबेगपरिहार ।
सन्मुखपावैजेहिक्षत्रीकातिहिरणमारिमिलावैक्षार ३६
धरोशरासन तबभूरिश्रव मारे ताकिताकि दशबान ।
खड्गविभंज्योअभिमनुकरका दूसरबानकीनसंधान ३७
तीनिबाणसों सारथि मारो शायक अष्ट बाजि संहार ।
सारथिजूझोजबअभिमनुका धायेशूरधारिहथियार ३८
खंभ उखारो तबस्यंदनका सोदलमध्य कीनपरिहार ।
केतनेक्षत्रीघायलकीन्हे कीन्हीकठिनखंभकीमार ३९
अतिरणयोधा अर्जुन बालो बांको कियो युद्धकोकाज ।
रूपभयानक रणमादरशै लीन्हे दंडयथायमराज ४०
दशसहस्रभटधरती गिरिगे तबउरकोपकीनकुरुनाथ ।
संगमहाबल सौभैयालै धायो बेगि गदा लै हाथ ४१

सन्मुख दीखो दुर्योधनका अभिमनुचलोखंभलैधाय।
सहसनराजाघायलकीन्हे मारेसमरमध्यबिचलाय ४२
तबचलिआयो दुर्योधनपै तबगुरु कीन धनुषसंधान।
तकिबक्षस्थलरेअभिमनुका मारेतीक्षबेगदशबान ४३
खंभाकटिगो तबहाथेका अभिमनु गयो सनाकाखाय।
निकुलदुलरुवाभाअर्जुनका जसमणिआवैफणिकगंवाय
अतिरिसव्यापीउरअंतरमा कीन्होकोपकुवंरबिकराल।
चरण घातसों धन्वातोरो भंजनकियेबाणकेजाल ४५
चक्रउठायो तब स्यंदनका औदलमध्य कीनपरिहार।
कोद्धतिचरणौवहिऔसरको मानौचक्रधरणकर्तार ४६
सोचलिआये हैं संगरमा सोहै तथा पार्थको लाल।
शोणितबरसैसबअंगनमा मानौफागुनउदयोगुलाल४७
सुरैन तबहूं रणसन्मुखते नभमा अमर रहेगुणगाय।
धन्य दुलारे अर्जुनवाले तेरोधन्य पिता औमाय ४८
तुमअसक्षत्री पांडवदलमा पैहैं बिजय युधिष्ठिर राय।
प्रबललड़ाईरणमाकीन्ही असकहिफूलरहेबरसाय ४९
चक्र धारिकै फिरि धावतभो धमकै शूरसमर दैघाय।
जौनशूरिमासन्मुखपायो तेहिहनिधरतीदयोगिराय ५०
चक्र चलायो दुर्योधन पर कौरव लीनगदाकीआड़।
चहुंदिशियोधाधावनलागे कुवंरहिदयोशस्त्रकीझाड़ ५१
गदा प्रहारीदुःशासनने लाग्यो कुवंर शीशपरघाय।
जूझिदुलरुवागोअर्जुनका बसुधागिरोमूर्च्छाखाय ५२
धन्यधन्यसबशूरनभाण्यो अकिलेकुवंर कीन्हमैदान।
साजि सिंहासन बिश्नुपार्षद सुरपुरलैगयेसाजिबिमान

अमर अंगना आरतिसाजैं नभते पुष्प रहे बरसाय ।
अतिरणकरणोअभिमनुकीन्हो जझोखायसमरमाघाय
अभिमनु जूझो जबसंगरमा शंकित भयेहियेगुरुराय ।
औकहिभाण्योसबशूरनते सुनियेवचनमोरमनलाय ५५
सुतबधजाक्षनपारथसुनिहै करिहैसमरभयानकमार ।
ऐसोक्षत्रीकोउदलमाना सन्मुखलरैधारिहथियार ५६
इन्द्रवरुणयमसुरआसुरसब रणमाकोटिनकरैंसहाय ।
अर्जुनजीतबतउकठिनोहै सुनियेसत्यबचनकुरुराय ५७
तेहीसमइया केअवसरमा आयो भीमसेन रणधाय ।
बहुतक चोटैं क्षत्रिनमारी उतजयदर्थदीनशरछाय ५८
शस्त्र परस्पर बाजनलागे क्षत्रिन धरेहाथ हथियार ।
पैदलपैदलते मुर्चाभो औ असवारन ते असवार ५९
भीमसेन औसिंधुराजते लागो होन शस्त्र परिहार ।
सहितसारथीस्यंदनभंज्योसिंधुहिदियोघावबिकरार६०
बढ़े युधिष्ठिर तब संगरमा सन्मुखतक्योजयद्रथजाय ।
शायक बर्षा तबआरंभी बसुधागगनबाणदयेछाय ६१
मारि जयद्रथ ने मुहंफेरो अतिबल बीर कौरवनक्यार ।
बिजयनगारातबबाजतभो कुरुपतिकीनशंखधुधकार६२
मुर्चाफिरिगे दोउओरनके सबिताभयोअस्तकोकाल ।
शंका व्यापी धर्मराजके जबनालख्योधनंजयलाल ६३
तेहीसमइयाके अवसरमा सुतवध सुन्योयुधिष्ठिरराय ।
सारे क्षत्रीरोवन लागे सहदेवभीमआदिसबभाय ६४
हावलधारी सुतरणजूझ्यो सबबिधिभयोविधाताबाम ।
पुत्रहुलरुवारणमा जूझ्यो आजुकभयोनपारथधाम६५

मुखदिखरैहैंकिमिअर्जुनका अतिहियधर्मकीनविललाप
सुतसपूतअसरणमाजूझ्यो केहिबिधिधीरधरैमाबाप६६
देखिविकलतामहराजाकी व्याकुलभयेसकलसरदार।
हालपहूंच्योअंतःपुरमा जहँरनिवासपांडवनक्यार६७
बढ़ीविकलताअतिमन्दिरमा सुतवधसुन्योसहोद्रामाय।
दोनमाछ्रीजसपानीविन मणिबिनफणिकयथाअकुलाय
कमलसूखिजायजसग्रीषममें पुतरीकाठयथाविनप्रान।
तिमिमहरानीसबव्याकुलभइं सूखैंयथाघाममाधान६९
हासुत प्यारेअतिप्रानन्के बिनपितुजूझिगयोरणजाय।
कमलसरीखो मुखदेखिहौंकहं केहिलैपरौंसेजउरलाय
हाअवलम्बन पितुमाताके कुलपरिवारप्राण आधान।
सुरतितुम्हारीअवलोकौंकहंहासुतबालवयसनादान७१
वंशदिवाकर हे पांडव के जूझे राज हेत रण जाय।
हायकुमोदिनिकेपूरणशशिआननबेगिदिखावहुआय७२
हाचखतारे प्राणन प्यारे बारो वैस कियो तन नाश।
अतिदुखदीन्ह्योपितुमाताकोनाकछुकीन्ह्योभोगविलास
मैं प्रतिपाल्यो लरिकैयांते अंगन तेल फुलेल लगाय।
सोतनमेल्योवसुधारजमा अगणितखायबाणकेघाय७४
पितातुम्हारे संगमाहोतीं जीवत कौन तुम्हैं रणमांझ।
हायदिवाकरसुतकहंअथयो कीन्ह्योमातुनिरासिनिबांझ
करि २ करुणामातारोवै ठोंकै हाथ हाथ धरि माथ।
सहितद्रौपदी कुंती रोवैं मानौं ह्वैगइंदीन अनाथ ७६
रतनहेरानो पांडव कुलका हा सुतकियोवंशअंधियार।
मानहुंकमलनकेकाननमापरिगोहिमऋतुमांझतुषार७७

हाहाविलपतसबमन्दिरमा पतिवधसुन्योविराटकुमारि।
गयो दराराउर अंतरमा नैनन रक्त आंशुरहिडारि ७८
बज्रकिछाती यह बिदरैना स्वामी जूझि गयो मैदान ।
बयसहमारीसुकुमारीकी पतिबिनरहैं कौनविधिप्रान ७६
हासुखदायक पतिकहंनागयो चक्रव्यूहविदारनहार ।
तुमगतिपायो रणशूरनकै मोहिंवैधव्य लिखाकर्तार ८०
सेजसंवार्योनानीकीविधि ना पद सेवा कीनि बनाय ।
नासुखपायों कछुस्वामीते जूझे खेतसमरमा जाय ८१
सुरपुरनरपुरमा योधाकोउ पायोननाथ पराक्रम थाह ।
मोहिंअभागिनिकाबिसरायो छोड़योशोकसिंधुबिचबाह
तुमयशपायो भलदुनियांमा सुरअंगननदोनिजयमाल।
कैशशिआननका दरशनदेउ कैलैसंगकरौप्रतिपाल ८३
सुःखसोहागिनि का पायोंना व्याहेभयोपांचवों मास ।
बालअवस्थामा बिछुरनमा नाकछु कीन्ह्योभोग विलास
हायविधातागतिजानीना यहदुखहमरेलिखालिलाट ।
लग्न विशोध्यो द्वैपायनने दातापितामोरबैराट ८५
लाल लड़ाइत सुतअर्जुन के जाहिरमहारथी संसार ।
मायसहोद्रा प्राणनप्यारे मामा कृष्णचंद्र कर्तार ८६
आरतवानी महरानी की सुनि २ उरमाउठेहुल्याल ।
कोगतिबरणैनरनारिनकी रोवतपशुविहंगकेजाल ८७

क० हा पति प्राणअधार कुलेअवलम्बन वंश प्रशंसकनामी ।
टाटकुठाटभयोसब मोयहकाह लिलाटलिखो विधिबामी
वालवये बैधव्य भई न भई कछु आश हुलास तमामी ।
संग सोहागले देय अभाग गये दुखबोजवये कहं स्वामी ॥

इतिश्री द्रोणपर्व चक्रव्यूहान्तर्गतअभिमन्युयुद्धवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

विघ्ननिकंदनपदबंदनकरि उरधरिध्यानयशोमतिलाल ।
भारत भाषाअभिलाषाकरि गावौं कुरुक्षेत्ररणहाल १
इतसुत जूझोजब अर्जुन का क्षत्रिन कीनसमरविश्राम ।
उतै सुशर्मा औअर्जुनते मचिरह्यो घोरशोर संग्राम २
ब्रह्मअस्त्रते अर्जुन मारो कीन्ह्यो संशप्तकाकोनाश ।
मारुबंदभइ दूनौदलमा अर्जुन बचन कीनपरकाश ३
आजुबिकलतामम्जियरेमा सुनिये कृष्णचंद्र कर्तार ।
बायों नैनामेरो फरकतहै जियअकुलातजातबिकरार ४
सुनिअसभाषणहरिपारथका पुनिअसबचनकहोसमुझाय
चलहु शीघ्रसोंतुम मंदिरका मोरहुचित्तरह्योअकुलाय५
कोगुरुनायकदलबिध्वंस्यो कीदुखग्रसेयुधिष्ठिरराय ।
असकहिहांकोहरिस्यंदनका चंचलचलेबाजिफहराय ६
सब रणकौतुक गोबिंद जान्यो पैनाकहो पार्थतेहाल ।
तत्क्षणजान्योहरिअंतरगति मारोगयोधनंजयलाल ७
चंचलगतिसों चलेबछेड़ा अशकुनलख्योपंथमहँश्याम ।
कागउड़ाने रथखंभन पर बोलत शिवाभयंकरबाम ८
कछुदिनबीत्योतबमारगमा पहुंचे आयस्वस्तिनिजधाम ।
जहं महराजारोदनठान्यो अर्जुनसहितगयेतहंश्याम९
मस्तक ठोंकत दोहाथनसों औबिलखातगातबिकरार ।
परे अचेतन बसुधा लोटत नयनन बहै अश्रु कीधार
उतरि शूरिमा दोस्यंदनते पहुंचे जाय तुरत दरबार ।
तहांनदाख्योसुतअभिमनुका रोवतबिकलसकलसरदार
सत्यबिचारो तबअर्जुनने अभिमनु जूझिगयोमैदान ।
पूछनलाग्योतबयोधनसों कहंअभिमन्युबीरबलवान १२

शेयशेयराजा बोलनलाग्यो भैयासुनौ धनंजयराय ।
बामविधाताभोसंगरमा जूझ्यो पुत्र खायरणघाय १३
चक्राव्यूह रचि गुरुनायकने कीन्हो सप्तद्वार तैयार ।
कह्योसंदेशादुर्योधनने ममढिग आयकहो प्रतिहार १४
चक्रविदारनकैनृपकरिये नातरुजाय करहु बनबास ।
मंत्रविचारो सबक्षत्रिननने भाष्योव्यूहयुद्ध परकास १५
भये निराशा सबक्षत्रियगण जानतहमनव्यूहसंग्राम ।
नकुलवृकोदरसेयोधागण लीन्होंमौनधारिविश्राम १६
कियोप्रतिज्ञातब अभिमनुने लीन्हों चक्रव्यूहकोपान ।
अवशिबिदारौंचक्रव्यूहका मारौंसकलसमरबलवान१७
मैंसमुझायोंबहुनोकीविधि पैअभिमन्यु कीन्हनाकान ।
व्यूहबिदारौंछःद्वारेलग सतयेंद्वार होंहुँ अनजान १८
सत्यप्रतिज्ञाअसअभिमनुकी सुनतैंभीमआदिसरदार ।
कहिसमुझायोयहअभिमनुसेसतयेंद्वारशीशममभार १९
साज्यो सैना तेहि अवसरमा पहुंचे कुरुक्षेत्र मैदान ।
भयेअचम्भितसबक्षत्रियगण निरखतचक्रव्यूह निर्मान
प्रथमद्वुआरोअभिमनुभेद्यो पहुंच्योचक्रव्यूहमधिजाय ।
पीछेकधाये सबयोधागण तिनजयदर्थदीनअटकाय२१
छहौंद्वुवारे अभिमनु मारे सतयें भयो घोर संग्राम ।
छलकरिमारो सबशूरनने जूझोपुत्रयुद्ध करिनाम २२
सुनिसम्भाषण असराजाको अर्जुन गयोमूर्च्छाखाय ।
शोणितआंशूडारनलागो लीन्ह्योकृष्णअंकमहंलाय २३
भईबिकलताअति अर्जुनके हाहा करतधनंजय श्याम ।
भयोसहायककौउक्षत्रियना जूझ्यो पुत्रमध्यसंग्राम२४

नकुलवृकोदरसेक्षत्रियगण नयननलख्योतमासाजाय॥
पुत्रजुझायो मोर संगरमा अपनारहे भवनमाआय२५
शिशुवय बालकरणमाजूझो चौदह वर्ष केर सुकुमार।
बड़े२क्षत्रिन सों रणठान्यो द्रोणद्रोण कर्णसरदार २६
रूप मनोहर सुंदर आनन लागे अंग अंग महं बान।
सुतअनाथसममेरोमारोगयो राखौंबिनापुत्रकिमिप्रान
जियत हमारे तुममारेगये आवत शोचयहीमनमाहिं।
प्राणनिछावरिसुतपरकरिहौं यामहं तनिकअंदेशानाहिं
प्राण गवांयो सुतसंगरमा करिहित धर्मराजकेकाज।
अन्यनक्षत्रीकोउ मारोगो जूझोलाल लड़ाइतआज २८
तबसमुझायो यदुनंदनने चलिये बीर बेगिरनिवास।
हालदेखियेमहरानिनके जोअति बिलखतबिकलउदास
ताक्षन अर्जुनबोलन लागो सुनिये कृश्नचंद्र कर्तार।
मुखदिखरैहौंकारानिनमें कार्चालिकरौंसानिआगार ३१
श्रीहरि आये तबअंतःपुर जहंरनिवासपांडवनकयार।
मिलीसहोद्राआरतगतिते बिलखतगिरतनयनजलधार
परमअभागिनिमैंसुतबिनभइउं जूझोराजहेतममलाल।
बर्षचौदहककोकोमलतनु कीन्हो बिबिधभांतिप्रतिपाल
पिता बखाने जेहिअर्जुनअस मामा कृश्नचंद्र कर्तार।
सोसुतजूझोरणखेतनमा औमिलिगयोधराकीक्षार ३४
लखिकै अंतःपुरमाधवको बिलखतआईबिराटकुमारि।
बहुविधिबिलपतअतिआरतबश रोवत नीरनैनसोंडारि
बोलनलागीश्रीमाधवसों सुनिये कृश्नचंद्र यदुनाथ।
आयसुदीजैयहिअवसरमा मैंचलिजाहुंस्वामिकेसाथ ३६

तबयदुनंदनने समुझायो सुनु बैराट सुता मम बात ।
बंशदिवाकरकुरुपांडवको होइहैगर्भ बालअवदात ३७
अतिबलदाताजगजाहिरहोइ बसुधाएकछत्रकरिराज ।
प्रजापालिहैअतिआनंदसों करिहैसकलधर्मकेकाज ३८
असससुझायोमहरानीको बाहरनिकसिचलेयदुराय ।
खानपान को कहुंकीन्हेना सेनारहेसमरमनलाय ३९
पुत्रशोकते धिक्जीवनकरि अर्जुननिकसिगयेबनबास ।
अससुधिपायोयदुनंदननेपारथमिलनचलेकरिआस ४०
काननभेट्यो हरिअर्जुनको भाष्यो ज्ञानपंथसमुझाय ।
मिथ्यानातासबदुनियांको बंधवशोचरह्योकाछाय ४१
काको माता पितु बंधवहै काकोसखास्वामिगुरुभाय ।
मानुष तनको यहुमेलाहै मिथ्या जीव रह्योभ्रमाय ४२
बड़ेबड़े राजा भेधरतीपर रावणबाण आदिबलवान ।
मीचु बनायो जिनदासीकरि ब्रह्माबेदद्वारनिर्मान ४३
औरसुरासुर बश करिलीन्हे रास्योएकहाथकैलास ।
तेउनअमरभयेदुनियांमा कीन्होअवशिकालनेनाश ४४
कोऊ काहू कोनाहींहै मिथ्या दिना चारि कोनात ।
जलके बुल्लासमदेहीहै क्षणप्रगटतओक्षणबिलात ४५
तुम्हरीमंशासुतदेखनकी चलियेअभिमनु लावोंदेखाय
यहसुनिपारथमनआनंदभो प्रेरोशेषशत्रुयदुराय ४६
श्याम संगमा अर्जुन लीन्हो भेतबगरुड़पृष्ठिअसवार ।
क्षणइकअसो पथमालागो पहुंचेनिशाईशदरबार ४७
चरितबिलोकयोतहंअर्जुनने अभिमनुलरतनिशाचरसाथ
हरिसमुझायोतबपारथको लावोपुत्रपकरिकैहाथ ४८

पहुंचेपारथतबअभिमनुढिग आतुर चलेमिलनकोधाय।
लखिकमलाननसुन्दरसुतको अर्जुनकह्योबचनसुखपाय
हेचखतारेसुतप्राणनप्रिय आयोमोहिंत्यागिकेहिकाज।
बेगिपधारौनिजमंदिरको कुलपरिवारलहैसुखआज ५०
सुनि असवानीमुखअर्जुनके उत्तरदीनपुत्र समुझाय।
काहबकतहौ तुमबावर से काकोपुत्र पिताकोभाय ५१
दिनाचारि कोजगनाता है झूंठो जगतस्वप्न अनुमान।
काको हाथी रथ सैनाहै नातो चारिदिनाको जान ५२
चक्रचालसम जगफेरासुत काकोपितापिता कोबाल।
बृथाकरोदनतुमठान्योहै स्वर्गहिंअवलोकुचंद्रकोलाल ५३
ज्ञान आइगो तबपारथ के जान्यो बृथासकलसंसार।
कोऊ काहूको नाहीं है बंधव पिता पुत्र परिवार ५४
तबचलिआयेयदुनंदनढिग औसमुझायकह्योसबहाल।
मोहिंधिरकारोवहिबालकने निश्चयजानुमोहिंशशिबाल
कहंपर पारथ तुवबालक है आयो इहां कौनसेकाम।
मैंतौबालकहैं निशिकरको जानहुबुद्दहमारोनाम ५६
केहिहितत्यागोसुतनातायहि सोसमुझायकहौभगवान।
तबसमुझायो हरिअर्जुनको करुमनसखाबचनपरमान
जादिन आये हमनरपुर का देवकिगर्भलीनअवतार।
सकलसुरासुरजगमहं आये क्षत्रीरूपलीनसबधारि ५८
धर्म अंशते धर्मराजभे औ कलिअंश जानु कुरुराय।
सुरहितकारोभेपांडव के कलिहितभयेनिशाचरआय ५६
तेहीसमइया के अवसरमा ब्रह्मा कही चंद्रसों जाय।
बुधसुतआपनमोहिंमांगेदेवतौयहुजन्मलेहिजगजाय ६०

विनय सुनायेतबनिशिकरने सुनियेसृष्टिकरनमहराज ।
अकिलोकलरिका बुधमेरो है सोतुवदेहु सृष्टिकेकाज ६१
काहिबिलोकनकरिजियरेमा धरिहैं धोरसृष्टिकेनाथ ।
तबसमुझायोफिरिब्रह्माने मांगतलुमहिंजोरियुगहाथ६२
वर्षपंचदशहित मांगे देउ अधिक न बेरहोयइकबार ।
जोकहु आवनयहुपैहैना ऐहैबेगिदोऊदलु मारि ६३
शोचअकारथ करुपारथना मानहुंसत्यबचनविश्वास ।
धामलैआयेहरिअर्जुनका उरतेभयो मोहकोनास ६४
क्रोधबढ़ावाभो अर्जुनके तबयह कही कृष्णासों बात ।
कालिहखेतमामैं संगररचि जोनाकरौं जयद्रथघात ६५
अग्निकिज्वालामातनजारौं यहुप्रणसत्यसुनहुघनश्याम
तबप्रत्युत्तर माधवदीन्ह्यो पारथकरहुरोषविश्राम६६
हाल तुम्हारेना जानो है शंकर दीन वाहि बरदान ।
वाहिभरोसाशिवशंकरका यहनिजुबचनकरौपरमान६७
अजयजयद्रथ है संगरमा केहिबिधिकरौसमरमाघात ।
ताते चलियेअबशंकरढिग तौकछुबनैयुक्तिकीबात ६८
नरनारायण तब भवनतभे जहं शिवमेरुशुभ्रकैलास ।
कोछुबिवरयोशंकरगिरिको ह्वैरह्योदशौंदिशापरकास
लताविकासीखांसीचहु दिशि दरशतप्रभाभरेऋतुराज ।
खिलीचांदनीऔचंपाभया शोभित फूलघनेरेसाज ७०
मधु गुंजारैंवन बेलिनपर मानहु कथैं छतीसौ राग ।
शोभानिरखतमन मोहतहै कुहंकतमोरभरेअनुराग ७१
शुभ्रसोहायो वटतरुवरहै राजत जासु घनेरी छांह ।
मन्दसुगंधैं मारुतडोलैं रचना मनहुंकौनिरतिनाह ७२

तेहितर आसनगिरिजापतिको उज्ज्वलरूसहरिणकीछाल
सहितअंबिकाहरिहरबैठेमनमहंजपतअवधपतिबाल७३
भस्मविराजी अंग अंगनमा सोहतहिये मुण्ड की माल ।
शीशसुरसरी कोधारा है विलसतबालचंद्रमाभाल७४
सर्पआभरणतनमा सोहैं लोचन तीनिजलज अनुमान ।
भरेमगनमनशिवशंकरअति आवतलख्योकृष्णभगवान
सखासांवरे संग अर्जुन हैं शोभाअंग काम परमान ।
शरदजुन्हैयासमआननहै विहंसतमंदमंदमुसक्यान७६
उठे भवानी पति आतुर ह्वै आसन सुभगबिठायेश्याम।
जोरिअंजलीशिवभाषतभे आयेकौन हेतभगधाम ७७
विहंसिकन्हैया पूंछन लागे सुनियेदासबचनप्रतिपाल।
कठिनजयद्रथकावरदीन्ह्यो कीन्होसमरमारु विकराल
जूझ्यो लरिका रण अर्जुनका ताहितआयरहेतुवपास।
यहप्रणकीन्होहैअर्जुनने कालिहनकरौंजयद्रथनास७६
अग्निकि ज्वालामातन जारौं सुनियेआदिदेववरदानि।
अबवर दीजैयह अर्जुनका रणमा करै जयद्रथहानि८०
हंसेभवानीपतिआनंदह्वै औपारथते कह्यो बुझाय।
तुवअभिलाषासमवरदीन्ह्योरणवधकरौजयद्रथजाय८१
सखातुम्हारे हैं त्रिभुवनपति तुमकहं कौनशोचसोंकाज।
तहांविजयमहंकासंशय है जहंपर राजिरहेब्रजराज८२
बिदामांगिकै तब शंकरसों अर्जुनचलेसहितहरिधाम।
समाचारसबकुरुपतिपायो वधजैदर्थलह्योवरश्याम८३
यहप्रण कीन्ह्योहै पारथने कालिहहिकरैं जयद्रथनाश।
नातरुजारौंतनज्वालानलकबहुंकजियनजयद्रथआश८४

सुन्योसंदेशाजयदर्थहुयह कौरवनिकटगयोचलिज्वान ।
औयहभाष्योकुरुराजासों करियेसत्यबचनपरमान ८५
मिथ्यापरिहैना पारथ प्रण मैं अबजाहुं आपनेधाम ।
कौनहुसरिहाभाबसुधातल पारथसंग करैसंग्राम ८६
शरणजाइहौंमैं शंकरको तबकछुबनै जियनकीआश ।
तबदुर्योधननेसमुझायो करियेबीर शोचकोनाश ८७
जोतजिजैहौतुमभारतरण होइहैजगतमध्यअपमान ।
रक्षाकरिहौंमैंसबविधिसों लरिहैंकर्णआदिबलवान ८८
करिपुरुषारथसबरणराचैं केहिविधिहोयवीरबधनाश ।
अमरनहोइहौकछुभागेते नानरलोकजियनकीआश ८९
मानुषदेहीयहदुर्लभहै ना कोउ भयोअमरजगमाहिं ।
याकोशंकाकछुकरियेना होइहै बधनतोररणनाहिं ९०
जियत हमारे पारथमारै रक्षक जहांबीर गुरु नाथ ।
सन्ध्याहोतैअर्जुनमरिहै विधिजयदीनिहमारेहाथ ९१
फेरि जयद्रथ उत्तर दीन्हो सुनिये महाराज कुरुराय ।
कोपिधरासनअर्जुनधरिहै तबकोलरीसमरमाजाय ९२
तुवदलयोधा असदेखौंना अर्जुन जीति करै संग्राम ।
तुम्हैंनसुधिहैनृपवादिनको गोधनहरिविराटकेग्राम ९३
एकै अर्जुन सब बश कीन्हे कोउन लरोसमरमैदान ।
बड़े २ योधाभगिआयेते भीषमद्रोणकर्णबलवान ९४
मोहिंसमुझायोहै शंभूयह पारथसमर जीतिनाजाय ।
नाधनुधारीकोउअर्जुनसम जाकेसखानाथयदुराय ९५
कर्णशूरमातब बोलतभयो सुनियेवीर जयद्रथबात ।
कालिहसमरमामैंरक्षाकरि देहौं टारिपार्थकोघात ९६

बधैनअर्जुनतुमकोपैहै यहमम बचन मानु मनलाय ।
ज्वाबजयद्रथनेपुनिदीन्हो कामोहिंकर्णरहोसमुझाय ६७
हममंशइया सबको जानैं जानत सबैपराक्रम थाह ।
करैंप्रतिज्ञा जोगुरुनायक राखैंमोहिंसमरगहिबांह ६८
तौतौरहैं मैं संगरमा ना तरु जाहुं आपने धाम ।
औरनदूजोकोउरक्षकहै जोमोहिंराखिसकैसंग्राम ६९
तबदुर्योधनसमुझावतभे सबमिलि चलहुद्रोणकेपास ।
हालबतावो गुरुनायकते तबकछुहोय जियनकीआश ।
बहिक्षनक्षत्री सब गवनतभे जहं गुरुद्रोणकेर अस्थान ।
आसनदीन्ह्योदुर्योधनको कीन्ह्योविविधभांतिसन्मान १
पुनिअसपूंछो महराजाते कारणकौन आगमन बात ।
तबदुर्योधनभाषणकीन्ह्यो सुनुआचार्यसत्ययहबात २
कियेधनंजयप्रणरणमायह कालिहककरैंजयद्रथघात ।
कबहुंजयद्रथनारणजूझै जारैं अग्निज्वालमहंगात ३
होहुजयद्रथके रक्षकतुम दृढ़करि गहौ अग्र ममबाहं ।
कालिहजयद्रथकाअम्मरकरु तौसबकाजबनैंगुरुनाह ४
अस्तदिवाकरपारथमरिहै होइहै विजयपत्रतुवहाथ ।
तबसमुझायोगुरुनायकने मैंप्रणकीन हियेकुरुनाथ ५
कालिहलड़ाईके अवसरमा करिहौं चक्रव्यूहनिर्मान ।
ज्यहिरणक्रीड़ाकोउजानैना भीतरकरौंजयद्रथज्वान ६
कर्ण दुशासन से क्षत्रीसब रक्षकहोहिं रोंकि कै द्वार ।
कोटिनपारथचढ़िआवैंजो तबहुंन विजय देहिंकर्तार ७
कालिहहिरणमापुरुषारथकरिपारथसहितजीतिहौंश्याम
सदलबिदारौंमैंपांडवका करिहौं जोरशोरसंग्राम ८

साजहुसैना तुम लरिबेका मैं रण चक्र करौं निर्मान ।
आयसुदीन्होतबकौरवपति साजनलागशस्त्रबलवान ९
बजेनगारा तबसैना मा सब हुशियार भये सरदार ।
गजनमहावतसाजनलागे लागसजनअश्वयनवार १०
सारथिस्यंदनसाजनलागे बाजनलगे घण्टघरियार ।
ढाढ़ीकरखा बोलन लागे औ बुधकरैं वेद निर्धार ११
सुभगअंगना आरति साजैं सखियां करैं मंगलाचार ।
देयंनिछावरिद्विजवृन्दनको मोतिनभरेस्वर्णकेथार १२
सबदलसजिगोमहराजाका बाजनलगोशंखधुंधकार ।
हाथीचढ़ैयाहाथिनचढ़िगे घोड़नचढ़ेछैल असवार १३
रथीमहारथिस्यंदनचढ़िगे पैदल सैन्य सजे हथियार ।
सुमिरिभवानीजगदम्बाका धरिउरध्यानवरदअसवार
गमनकरायो दलबादल का आये कुरुक्षेत्र के वार ।
रचनादीन्ह्योगुरुनायकको कीन्ह्योचक्रव्यूहतैयार १५
ओट कोटकी चौतर्फाते तामधि कमल चक्र निर्मान ।
शतदलघेराव्यूहांबुजको तामधिअमितव्यूहसामान१६
सोसबघेरे बहु शस्त्रनसों रक्षक तासु प्रबल सरदार ।
शक्रशरीखेबलवन्ताहैं धारणकिहेतीक्ष्ण हथियार १७
सोमदत्तऔ बाह्लीकतट रक्षक प्रबल भूप गंधार ।
मध्यस्थलमासुतदिनकरका रक्षककर्णशूरसरदार १८
चक्रगरेरा षट योजनका योजन तीनि चक्र चौड़ान ।
आठक्षोहिणीदलअंतरमा बरणत बनैनअस्त्रविधान
एकमहारथिसहसारथिके पाछेतेहि पचासगजराज ।
इकइककुंजरके पाछेमा सौसौरहैं अश्व शिरताज २०

पीछेइकइकअसवारनके इकइकशतपदातिबलवान।
इतनोसैनाजाकेसंगमा ताको महारथी परमान २१
होइंमहारथि जेहिपंचाशत ताकोकहोसैन्यअनुमान।
इमिदलसेनाजोजुरिआवै बाहिनिभईतासुपरमान २२
इमिदलबाहिनिकेसंघटको लीजै एकक्षोहिणीजानि।
आठक्षोहिणीदलअंतरमा ऐसो कियोचक्रनिर्मान २३
इतउतरक्षक सबक्षत्रीगण धारण किहे हाथधनुबान।
दृढ़ करिराख्योसबसेनाकोमर्कटकटकप्रबलबलवान२४
इतकरि सजनो चक्रव्यूहको साज्योगुरूलरनकोसाज।
उतैदिवाकरकेउतपतिक्षण साजतसैन्यधर्ममहराज २५
बजे दमामा दलअंतरमा साजन लगेसुघरुवाज्वान।
बड़ेबड़े योधापारथदलमा कीन्हीअस्त्रशस्त्रसंधान २६
बड़ेबड़े कुंजर साजन लागे बाहनबाजिबेगअसवार।
रथीसारथीस्यंदनसाज्यो धारणकरोतीव्रहथियार २७
सबदलसजिगोमहराजाका अर्जुनसजतपाणिनिजश्याम
पहिरिसनाहैं गजगाहैं धरि तरकसकस्योकमरअभिराम
मुकुट मनोहर शिरपर राजै टीकालसतअनूपमभाल।
लसैपितांबरअँगअंगनमा गलखुशबूयदारजयमाल २८
मदन बदन अतिसुंदरसोहै वारतकोटिकोटिशतकाम।
काननकुंडलजगमगराजैं सारथिकृष्नचंद्रभगधाम ३०
अन्तनपावैंज्यहिशारदश्रुति शंकरशेशधरतनितध्यान।
भक्ति बिकानेतेपारथको सारथिभयेकृष्नभगवान ३१
नवल बछेड़न कीबागैंगहि स्यंदनसाजिकीनतय्यार।
स्थितकीन्होरथपारथको ध्वज पर पूतअंजनीक्यार ३२

बिनय सुनायो तब गोविंदको दूनौ हाथ जोरि महराज
अर्जुनतुमकामैंसौंपतिहौं रक्षकतुम्हीमोरब्रजराज ३३
सुमिरिबिनायककेचरणनका कीन्होधर्मभूपप्रस्थान
आगे स्यंदनहै अर्जुनका सारथिकृष्णचंद्रभगवान ३४
समयव्यतीतोकछुमारगमा पहुंच्यो कुरुक्षेत्र मैदान
चक्रबिलोक्योसबसैनाने कीन्होजौनद्रोणनिर्मान ३५
तबसमुझायो यदुनंदनने सुनिये धर्मराज महराज
राखहु सैना इतमुर्चनपर मैं उतकरत युद्धको साज ३६
चक्रबिलोक्योतबअरजुनने अकिलेलख्योद्रोणकोद्वार
करिधनुधारणयहभाषणकियो सुनियेदीनबंधुकर्तार ३७
अकिले रक्षक गुरु द्वारेपर दूजो दीख परैना ज्वान
तेही समइयाके अवसरमा बोलेद्रोणधारिधनुबान ३८
हेहरि मैं यह प्रण कीन्होहै पारथ कोटिचढ़ैसंग्राम
आवनपैहैं नाद्वारेपर अर्जुनसहितजीतिहौंश्याम ३६
तब समुझायोकहिश्रीपतिने करिये बीर धनुषसंधान
कुरुपुरुपारथगुरुनायकते दशहूदिशाब्यापिहैबान ४०
हांको स्यंदन नंदनंदनने पारथ लीन शरासन हाथ
शीश नवायोआचारजको आशिर्बाददीनगुरुनाथ ४१
करसंधान्यो शरआसनको मारे तीव्र बेग दुइबान
पुनिहनिसाठिकशरअर्जुनतन दशशरहनेसुमुखभगवान
दुइदुइशायक बाजिन मारे मारे सहसबानहनुमान ।
देखिपराक्रमआचारजको अरजुनगह्योहाथधनुबान४३
बर्षाकीन्ह्यो अति शायककै सावन यथा बुंदघमसान ।
तीब्रनराचनतेजर्जरकरि मारेताकिताकिबलवान ४४

प्रबल लड़ाई गुरुचेलाकै कोकवि कहै बरणिसंग्राम ।
अगणित शायकगुरुधरिकाटैं पावत पगनबाजिबिश्राम
इन्द्रबाणतबअर्जुनलीन्ह्यो दीन्ह्योनोकफोंकशरतानि ।
करिअभिमन्त्रितत्यागनकीन्होगुरुतटचल्योबेगघहरानि
भयो आचरज सब क्षत्रिनके कंपित भये बेगसोंघात ।
बाणबिलोकतगुरुव्याकुलभे षटमुखबाणकीनअवदात
अतिहिप्रकाशयोबसुधातलमा दूनोज्योतिरहीरणछाय ।
यमशरप्रेरोतबपारथने चंचलचल्योगगनगतिधाय ४८
अस्त्रअस्त्रपरधरिधरिधमकैं चहुंदिशिउठेघोरहहकार ।
मृत्युबाणतबगुरुनायकलै पारथओरकीनपरिहार ४६
कालबाणफिरिपारथधमक्योहवैरहिमारुमारुललकार।
कठिनो मुर्चागुरुचेलाको मेलालगोदेवतनक्यार ५०
लखैं तमाशा सबअंबरते बरषत घने पुष्प कीधार ।
जयअभिलाषा दोउशूरनके पावत एकएकनापार ५१
तबसमुझायो आचारजने कठिनोआजुलड़ाइबहार ।
यहै प्रतिज्ञाहै जीतनकी पारथसहितकृष्नकर्तार ५२
मन्त्रबिचारो तब माधवने औअर्जुनसोंकह्योबुझाय ।
एकपहारुकरबिचढ़िआये द्वारोभेदजानिनाजाय ५३
बाहेर रस्ता मोरस्यंदनकरि चलियेअंतव्यूहहनिद्वार ।
तबै जयद्रथ काबधिपैहौ पारथकहामानिलेम्वार ५४
बिनयसुनायोतबअर्जुनने सुनियेत्रिजगज्योतिपरकाश
पोठिदेखावोंगुरुनायकको तौअगणितयहमारोनाश ५५
तबसमुझायो यदुनंदनने पारथकहा भई मतिआज ।
युक्तिआपनीसाधनकरिये द्विजगुरुतेनभगिबोलाज ५६

हांको स्यंदन नंदनंदनने घोड़ा चले पवन कीचाल ।
व्यूहमध्यतबअर्जुनआयो कीन्होशस्त्रचोटबिकराल ५७
बहुतेक क्षत्री पारथ मारे कछुरथचक्र दोन कचराय ।
बाजिकिटापनकितनेउंमरिगे इतउतभागशूरभयखाय
चलैव्यूहमधिइमिस्यंदनगतिजस अम्बुधिमाचलैजहाज।
धनुसंधान्योकरपारथने क्षत्रीहनत बाणकी गाज ५६
अगणितयोधाधरतीगिरिगे जूझेअश्वसहितअसवार ।
रुरहुनमुंडनकेदलबादल नदिया बही रक्तकी धार ६०
अपनपरावो जहँसूझैना ह्वैरहिमारु मारु ललकार ।
रथीमहारथिसारथिजूझे कटिशिरगयेबाणकीधार ६१
जहांसारथीश्रीगोकुलपति औअतिरथी पांडुकोलाल ।
तिनसोंरणमाजयपावैको करिदइसैन्यहालबेहाल ६२
चक्रबिदारेबहुस्यन्दनके अगणित हने मत्तगजराज ।
रहोनक्षत्रीकोउसन्मुखमा धरिधनुकरैयुद्धकीसाज ६३
भूपयुधिष्ठिरहियव्याकुलभे सुनिटंकोर धनुष संधान ।
हालनजान्योकछुअन्तरकापारथसहितगयेभगवान ६४
काहिपठावों चक्रांतर का जो सुधि बेगिसुनावै आय ।
आयसुलैकैमहराजाको सात्यकिचल्योव्यूहकोधाय६५
प्रथमहुवारे गुरुरक्षकहैं यह अवलोकिलीन बलवान ।
बचन सुनायो गुरु नायकने चाहतमूढ़कहांइतजान६६
कालबुलावो चलिआवो है होइहैअवशितोरइतनाश ।
भीतरजैबेकी आशाजो छांड़हु बीर जियनकी आश ६७
तबहिंसात्यकीतनकोपितभो मारे गुरुहितनिशरपांच ।
धनुटंकोरो भुजदंडन पर धारण कीन अन्यनाराच ६८

इतउतशायकबरसन लागे कीन्हीमहाभयानक मार।
रहैंबछेड़ारथ रोकेना घायल कीन द्रोण सरदार ६९
औहंसिभाष्योयहसात्वकिते जइबोठ्यूहत्यागुरुभि ऊाष।
सहित देवतनसुरपति आवैं तौमैं युद्धकरैंइकपाष ७०
जाननपावैं चक्रांतरका निश्चय मानु सात्वकी बात।
जानधनंजय हरिपायेना तौतैंकहाजानपछिताव ७१
सुनिअसबाचाआचारज की बाहरचल्योभूपबरिआय।
जौनोमारगसो अर्जुनगो लीन्ह्यो चक्र ठीकसुधि आय७२
इतउतराचतरण शूरनते बर्षा करत अमितगनवान।
आयकैसात्वकितहंदाखिऊभो भूरिश्रवाजहांबलवान७३
दूनौ क्षत्रिनते मुर्च्छाभो क्रोधित अस्त्र कीन परिहार।
निकटपहूंचे दोउआतुरहवै कीन्ह्यो मल्ल युद्धकोमार ७४
हाथहाथ सोंगहिशिरसों शिर लागे प्रबलचलाबनदावं।
धरिइकदस्ती कोझोंकादै भूरिश्रवा कीन जयनावं ७५
हैबरदानीशिव शंकर का कीन्ह्योयुद्ध घोर घमसान।
पकरिपछाराभटसात्वकिकोगहिशिरकेशखड्गसंधान७६
मारन चाह्योजेहिअवसरमा उतभगवानजानिगेहाल।
कहिसमुझायोतब अर्जुनका सात्वकिहोतनाशतत्काल
शरमनछ्यापो अर्जुन मारो काट्यो खड्ग बाहुसोवान।
समरशस्त्रबिनभाभूरिश्रव काट्यो शीशतासुयुयुधान७८
पहुंचिसात्वकी गाअर्जुनतै बिहंसेदेखिकृष्णभगवान।
स्यौबसिदीन्ह्योतबसात्वकिका आयेभलेइतैबलवान७९
नंदिघोष रथ तुमरक्षकहौ पीछे रह्योभूप हुशियार।
यहकहिहांक्योहरिस्यंदनकाअर्जुनकरतअस्त्रपरहार ८०

इकशरजोरततेदशहोइजायं छूटतहोतसहस परमान ।
सेनसंहारी क्षणअंतरभा धरतीगिरेअमितबलवान ८१
मचिखलभल्लागोचहुंदिशिमा धरु २ मारु २ ललकार
नामुहंमोरैं कोउसन्मुखते घैहाभयेअमित सरदार ८२
सोमदत्त नृप औ पारथ ते लागी होन परस्परसार ।
करिपुरुषारथदूनौंजुटिगे बरसतबाणयथाजलधार ८३
करिअभिमंत्रितरबिमंत्रनसों अर्जुनहन्योताकिहियबान
शीशबिदारोशरधारासों धरतीगिरोजूझिबलवान ८४
सन्मुखआये तब अर्जुन के राजा बाहुलीक गंधार ।
प्रबललड़ैयाहैं संगरके धारन किहे तीव्र हथियार ८५
शरकी बर्षाकरिअर्जुनपर कीन्ह्यो महाघोर संग्राम ।
शूलशक्ति लै कर मुदगरसों पारथ हनैं युद्धके काम ८६
पैमनशंका कछुलावै ना अति बलबीर पांडुकोलाल ।
चहुंदिशिसैनासोंछादितहै रोंकत अंगघाव बिकराल ८७
रुंडन ऊपर रुण्डतोपि गे मुंडन परे मुण्ड बिकरार ।
हाथिनऊपरहाथीगिरिगे औअसवारऊपरअसवार ८८
चोटचलावैं जो अर्जुनपर सन्मुखदेखि परैं जो बान ।
ताकिबढ़ावत हरिस्यंदनका अर्जुनराखिलेहिं भगवान
करिधनुधारणनृपकांबुजतब अर्जुननिकट आइनियरान
सौशरमारे नँदनंदनतन मोपटपीतअरुणअनुमान ९०
शोणितनिरख्योहरिअंगनमा पारथजरोअग्निकीज्वाल
शायक छूटे चौतर्फाते नृपकांबोज कीन बेहाल ९१
शीशबिदारो तब अर्जुनने घेरे आनि अन्यसरदार ।
पीछे सात्वकिरथ रक्षकहै आगे लसतकृष्ण कर्तार ९२

घायल शूरन सों पूरण भइ बसुधा कुरुक्षेत्र मैदान।
कठिनलड़ाईअर्जुनकीन्ही उठिगेरणमायुद्धमसान ६३
शायकभेदै जेहिस्यंदनपर चूरणकरै सहितरथबाजि।
बाणविभेदै गजदंतनके भेदिन शुंड मुंड गजराज ६४
थकेबछेड़ा अर्जुन रथके ना धरिसकैं कदम इकपायं।
भयेतृषातुररथबाजी हैं निश्चयजानिगयेयदुराय ६५
तब समुझायो हरिपारथको करियेबीर बचनपरमान।
बाजिपियासेतुवस्यंदनके चाहतकरनबेगिजलपान ६६
बिनयसुनायोतबअर्जुनने शोचनकरहुहिये घनश्याम।
युक्तिसाधिहौंजलआवनकी क्षनइककरियनाथबिश्राम
धारणकीन्हो कर धन्वाका जोरो तीव्र बेग का बान।
हनिसोमारोबसुधातलमा शरपातालजायफहरान ६८
जहां सुरसरी कै धारा है राजत भोगवती महरानि।
धाराफूटी शरलागत ते रणमाबह्योसरोवर आनि ६६
कौतुक दीख्यो यदुनंदन ने औ अर्जुनतेकहोबुझाय।
शुरूलड़ाईचौतर्फाते केहिविधिनीरपिआवहुंजाय १००
तब शर पंजर पारथ छायो कीन्होओट सरोवरबारि।
तजिरथबाजीहरिजलदीन्हो औनिजपाणिमल्योकतारि १
तृषाबुझानी रथ बाजिनकै धोयो अंग अंग भगवान।
बिनापरिश्रम के घोड़ा भे लागे मंद मन्दहेहनान २
आनितुरंगमरथसंगमकरि भगवन् साजिकीनतैयार।
शरअवलोकनकुरुदलकीन्होशंकितभयेसकलसरदार ३
धन्यसराहो बलअर्जुनका पारथ धन्य तोरपितुमात।
जासुसहायकहैं त्रिभुवनपति काहेनहोयपराक्रमगात ४

भयेअनन्दितसबयोधागण सरवरआनिकीन्हजलपान ।
जोकोउ योधासन्मुखआवै अर्जुन हनैताकिहियबान ५
फेरिअरंभ्यो रणभारतको क्षत्री चोट चलावन लाग ।
फरफरफरफरशायककूटैं मानौ उड़तकालियानाग ६
खरखरखरखर स्यंदन दौरैं भरभर उठै तुरंगन टाप ।
काटिदुखंडातब क्षत्रिनके बसुधा रुण्ड मुंड दयेछाप ७
शोणितबुन्दा अंगन दरशैं मानौ होत रंगकी मार ।
भयेगुलालातनक्षत्रिनके जसबनखिलैं पलासनझार ८
कठिनलड़ाई इत अर्जुनकी अटके शूर युद्धके काज ।
उतैअंदेशापांडव दलमा शंकित हिये धर्म महराज ९
समरपठायोमैं सात्वकिका तेहुंन लौटि बतायोहाल ।
अगणितक्षत्रिनकेलस्करमा पारथऔरयशोमतिलाल १०
मिल्योसंदेशाकछुरणकोना हैकिमिकुशल चक्रसंग्राम ।
लाउखबरियाहरिपारथकी सुनियेभीमसेनबलधाम ११
दिना अढ़ाइक रणमाबीते लौट्यो वेगि हाललैभाय ।
सुनिअसआयसुमहराजाको स्यंदनभीमबढ़ायोधाय १२
व्यूहदुवारो जहंपहिलोहै रक्षकगुरूद्रोण बलशाल ।
तहंपरस्यंदनदाखिलहोइगो निरख्योव्यूहपवनकेलाल
रक्षकद्वारे गुरुनायकहैं कीन्ह्यो त्वरित धनुषसंधान ।
सुमिरिबिनायकअघनायकको मारेद्रोणअंगहनिबान १४
तेशरकाटे गुरुनायकने लीन्हे अपर बाण धनुसाजि ।
सहितसारथीरथभंजनकरि घायलकियेमारिरथबाजि
हँसिआचारजयहबोलतभे भिम्मा भयो कहाअज्ञान ।
नंदिघोषरथहरिसारथिज्यहि पायेद्वारनपारथजान १६

तौलौंअभिमन्यु तुवगणनाहै जानत आइगयो तवकाल।
सुनिअसबातैंगुरुनायककोकोपितभयोपवनकोलाल १७
हांकसुनायोआचारजको अवगुरुद्रोण होहु हुशियार।
लाखुदोहइया शिवगंगाकै जैहौंभेदि व्यूहकोद्वार १८
असकहिधायोतजिस्यंदनको कीन्होद्रोणधनुषसंधान।
सन्मुखआवतलखिभिम्माको मारोतीव्रवेगहियबान १९
सोशर टूटैं सब अघबिचते लागत भीम बज्र सेगात।
धायकैपहुंच्योगुरुस्यंदनतट कीन्होझपटिगदाकोघात
भुजबलतान्योगुरुस्यंदनको लीन्होगदाहेठसोंतानि।
सोघरिफेंक्योआसमानको गेहुइकोशगुरूअनुमानि २१
गिरोधड़ाका रथधरतीपर सारथिसहितबाजिभेनाश।
द्रोणपयादे उठिधावतभे छोड़ी परहोन प्रणआश २२
कछुक अबेरापथमहंलागो पहुंचे तुर्त द्वार पर आय।
वहीसमइयामाभिम्माभट पहुंच्योव्यूहमध्यतबजाय २३
यहौलड़ाई लखिभिम्माको गेगुरुद्रोण सनाकाखाय।
बंदिदीनयहमतिसमभाष्यो भाषाद्रोणपर्वरणगाय २४

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
त्मजगाजीपुरप्रदेशान्तर्गत मलवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षित निर्मित सहा भारत भाषा द्रोणपर्वस्यान्तर्गत
चक्रव्यूह युद्धवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

सुमिरिदुलारोअंजनिसुतको बंदन करत बंधुसहराम।
भारतभाषा अभिलाषा सह गावौं द्रोण पर्व संग्राम १
गयोवृकोदरजबव्यूहस्थल सन्मुखहन्योहांकिसरदार।
मत्तगयंदमहनिर्हानिमारे बाजिनसहितछैलअसवार २

गदा प्रहारन स्यंदन भंजे शरन हनत खेत दै हांक ।
रह्योनक्षत्रीकोउसन्मुखमा कीन्होकठिनयुद्धकीशाक ३
कर्णविलोक्योतबभिम्माको धारणकियोहाथधनुवान ।
तकिबक्षस्थल रैभिम्माका मारो फोंकनोकतनतान ४
सोशरलागो जबभिम्मातन धायो बेगि गदा लैहाथ ।
सहितसारथीरथचूरणकरि चारिउबाजिहनेतेहिसाथ ५
प्रबल लड़ाई भिम्मैंकीन्ही छांड़तघोरशोर ललकार ।
यहिक्षनअर्जुनयहबोलतभे सुनियेनाथकृष्नकर्तार ६
आइ वृकोदर व्यूहस्थलगो देखियदेत घोररणहांक ।
शस्त्र प्रहारत शूरनमारत आवत करतयुद्धकीशाक ७
तबसमुझायो कहिमाधवने अर्जुनबचनकरहुपरमान ।
डेढ़क योजनके अंतरपर हैउत भीमसेन बलवान ८
दूसर स्यंदन सजिसारथिसह आयोफेरिकर्णसरदार ।
कियो सचेतनतबभिम्माको हेबलवन्तहोहुहुशियार ९
बहुतक सैना तुम मारीहै अब बल देखु मोरमैदान ।
लियो शरासनदृढ़हाथेगहि मारेभीमअंगबहुबान १०
शरकेलागतअतिकोपितभो कीन्होगदाधायपरिहार ।
स्यंदन भंज्यो रबिनंदनका भागेहारिकर्णसरदार ११
फेरि बिराज्यो रथ औरेपर कीन्होबाणवृष्टिबिकराल ।
दशशरमारेभिम्मातनमा औशिरहनेअमितशरजाल १२
झांझरकीन्होतनभिम्माको घायल गिरोसमरमैदान ।
रक्तकिधारातनसोंबरसै मुर्च्छितभयोबीरबलवान १३
रहोन चेतन कछु जियरेमा आये कर्ण बीरचलिपास ।
खोदिजगायोतबधन्वासे करिहौयहीभांतिजयआश १४

उदरपूरकरिभोजनकरतिउ लेतिउशयनजायनिजधाम।
यहां शूरमन केमुर्चापर नाहिन बीरतुम्हारोकाम १५
कुन्ती माता बरमांग्योरहै ताते दियो जीव कोदान।
थोरिकसमयाकेअवसरमा मुर्च्छातजीवृकोदरज्वान १६
पवन पारस्यो तनभिम्माको तुतैं भयोपरिश्रम नाश।
उठ्योअनंदित ह्वै वसुधाते अतिभोतेजगातपरकाश १७
बढ्योवृकोदर तबआगेको पारथ जहां करत संग्राम।
हांकसुनायोतब अर्जुनका बंधव करहुयुद्धजयकाम १८
तोरसहायकमैं चलि आयों होइहैं नंदिघोषरखवार।
भये सात्वकीरथरक्षक तब भिम्माकरत सैनसंहार १६
कोऊबिवरयौंवहि समयाकी देखत बनैं खेत संग्राम।
इतउत क्षत्री संगरराचैं अपने युद्धविजय के काम २०
बहैंपनारातन शोणित के जसजलझरना झरैं पहार।
बसुधातोपीशिररुण्डनसों नदियाबहैं रक्तकीधार २१
परेगयंदम कटिधरनो पर मानहुं सरितन कटेकगार।
परेबछेड़ाअसवारनसह दरशैं यथा कच्छघरियार २२
पगियां दरशैं जल फेनासी औसवोहमनो शिरवाल।
कुण्डलगिरिगेरणशूरनकेन दिषनयथाजवाहिरलाल२३
खड्गदुखंडा धरती पारे मानौ नाग रहे मन्नाय।
बख्तरगिरिगेवल्लबन्तनके जसजलग्राहरहेउतराय २४
लिहेयोगिनी खप्परनाचैं औ बैताल बजावैं ताल।
रूपभयंकर शंकरनाचैं पहिरे हृदय मुण्डकी माल २५
कागचिल्हारिनकेदलतोपेलारिलारिलौंथिनखायँसियार।
उठैंकबंधारण शूरनके बोलत मारुमारु हहकार २६

इतउत सैनाकुरुपांडवकी निरखतसूर्यअस्तकोकाल ।
चक्र बखानैंमैंपांडवदल कुरुदलजानुउलूकनजाल २७
हियेमनावत यह पांडव दल हाविधिहोयजयद्रथनाश ।
कौरव लस्कर यहचाहतहै आतुरछिपैंदिनेशप्रकाश २८
भाषोउपमा मुनिनायक यह लक्षण दोऊसैन निर्धारि ।
भूपजयद्रथ वध अर्जुनप्रण दूनोंबालप्रौढ़ानारि २९
अगणित शायक अर्जुन छांटतकाटत घने २ सरदार ।
वाहुलीक औकृतवर्मासे क्षत्री जुरे आय इकबार ३०
अश्वत्थामाकृपाचार्य भट दीन्ह्यो खेतबाणझरिलाय ।
अगणितशस्त्रनकेजालनसों दीन्ह्योंनदिघोषरथछाय ३१
पहरदिनोंनाबाकी रहिगो लागे करन शोचतबश्याम ।
अस्तदिवाकरआयपहूंचोना नृपजयद्रथनाशकोकाम ३२
जाक्षन संध्याकी बेराहोय अर्जुन करै अग्नितनक्षार ।
सखाहमारोसब गावत है करिहैमोरअयश संसार ३३
मेरे संपतिये पांडव हैं पारथ सखा पियारो प्रान ।
केहिविधिराखैंप्रणअर्जुनकामनमाशोचकरतभगवान ३४
चक्रसुदर्शन को आयसुभो दिनकरकरहुओटतुमजाय ।
धरिप्रभुआयसुतबमाथेपरनभपथचल्योसुदर्शनधाय ३५
छिपेदिवाकर तब छायामों निरख्योसकलशूरभइसांझ
भयो निराशासबपांडवदलऔ मुदसैन्यकौरवोमांझ ३६
अस्तदिवाकर पारथ देख्यो करते डारिदीन धनुबान ।
युद्धथिरानो महभारतको क्षत्रिनहिये कोनअनुमान ३७
पारथ भाष्यो दुर्योधनते करिये भूपचिता कोसाज ।
आयसुदीन्ह्योसोभैयन को लागेंचितारचनजयकाज ३८

चिताबिराजनजबअर्जुनचल्योतबयहकहीकृष्णभगवान
धर्मनछांड़ियकछु क्षत्रिन का धारियसखाहाथधनुबान
लीन्हशरासन शरहाथमा अर्जुन चल्योचितापरजाय।
बोलिजयद्रथकौरवलीन्होंऔयहबचनकहो समुझाय४०
तुवहित सैनासबमारीगइ तुमबचिगयोआजुरणआय।
याते बढ़िकै सुखदूजोना पारथ मरण देखुदृगलाय४१
बढ़्यो जयद्रथ तबआगे को निरखनलागधनंजयनाश।
कर्षिसुदर्शनमाधवलीन्ह्यो नभमहंभयोभानुपरकाश४२
भयोअचंभा लखिदिनकरको क्षत्रीगये सनाकाखाय।
तबसमुझायो हरिपारथ को अवसर नहिंबिलंबकोभाय
तोहिंजयद्रथ अवलोकत है अर्जुन कियोधनुषसंधान।
खैंचिबिनोदासहरोदाकोमारेउ कंठ ताकिकै बान ४४
कटिशिरवसुधाकोआवतते फिरिसमुझायकह्योव्रजनाह
गिरनन पावै शिरधरतीपर लैचलुअंतरिक्षकीराह४५
सत्यसुआयसुलहिमाधवको अर्जुन कियोधनुषसंधान।
वाणविभेद्योशिरनीकोविधि औलैचल्यहुपंथअसमान४६
चढ़िरथधायेहरिपारथलै औशिर तहांदीन पहुंचाय।
पिताजयद्रथकोकाननमा सुतहितकरतयोगमनलाय४७
अतिअवराधे शिवशंकरका अंजलिकरेधरेहिय ध्यान।
युक्तिबतायोप्रभुअर्जुनकोहेप्रियसखामारुतकिबान४८
शीश छेदिकै यह करणी करु जबशिरआनिपरैनृपहाथ।
क्रिया संभारयोसोइपारथनेडारेपाणिवाणशिरसाथ४६
ध्यान छूटिगो महराजाको करसे शीशदीनमहिडारि।
जबअवलोकयोशिरवालकका शंकितगयेहियेहहकारि

शीश आपनो सुरथहुकाटो वसुधारुण्डगिरो अलगाय।
देखितमासामहराजा का अर्जुनगयेसनाकाखाय ५१
हालसो पूंछ्योनंदनंदनते सुनिये कृष्ण चंद्र भगवान ।
करशिरआवतसुरथराजकेकारणकौनदियोतजिप्रान ५२
सुनिअसशंकारणविजयोकीपाछिलिकथाकह्योब्रजराज ।
सुरथनामकापृथिवीपतियकभोगतसिंधुदेशकोराज ५३
बड़ो धनुर्द्धर महराजासो कीन्ह्यो राजभोगबहुकाल।
आरत राजाअतिहियरेमा नाकुलवृद्धिहेतकोउवाल५४
गयोतपस्याहितकाननसो अर्चनकियोशंभुधरिध्यान ।
भयेअनंदिततबगिरिजापतिऔयहकहोमांगुवरदान ५५
तबवर मांग्यो सुरथराजने दीजै वंश वृद्धि इकवाल ।
अतिपुरुषारथहोइसंगरमा दीजैअमरनाथप्रतिपाल५६
सुनियह भाष्योपुनिगंगाधर मांगौअमरछांडिवरदान ।
भाषण कीन्हो तबराजाने मेरेकहे होयबिनप्रान ५७
मोहिंविलोकतबधवाकोहोइ जबमैंकरहुंशीशविनिपात ।
एवमस्तु तबशंकर भाष्यो राजाभयोअनंदितगात५८
पुत्रजयद्रथ तब पैदाभो दिन२ बढ़तयथा शशि बाल।
तीरसुरसरीकेशंकरव्रत साधत नित्तसुरथकोलाल ५९
दिन२ बालकबाढ़नलाग्यो जिमिनिशिचंद्रकलापरकास
बहिनिदुशालादुर्योधनकी कौरवकरीव्याहकीआश६०
कियोस्वयंबर तहंकन्याको जयद्रथ कंठदीनजयमाल।
जादिनआयोयहु भारतरण साध्योसुरथयोगप्रतिपाल
कियोतपस्यावनवालकहित साधतयोगतासुकेकाज ।
तुम्हैबचायोंयहिमारणकरि करियेभवनगवनशुभसाज

हांको स्यंदन नंदनंदनने गर्जत ध्वजा मध्य हनुमान ।
जेहिपथआयोरथअर्जुनको आवत धर्मसंगलियेज्वान
धर्म बिलोक्योरथ अर्जुन का हर्षित भयेसकलसर्दार ।
होयअनंदितजसहियरेमा चातकपायस्वातिजलधार६४
उतरि युधिष्ठिर रथऊपरते अर्जुनसहित भेंटिभगवान।
अस्तुतिठान्योनारायणकी धरिउरकृष्णचंद्रकोध्यान ६५
तुमहीं पारथप्राण रक्षकहौ संकट मोरमिटावन हार ।
लाषभवनतेबचिआयेरहैं तुम्हरियकृपाकृष्णकर्तार ६६
भक्तअनंदनहेनंदनंदन राख्यो द्रुपद सुताकी लाज ।
बूड़तराख्योब्रजगिरिकरधरितबतेभयोनामब्रजराज ६७
छल दुर्बासा बनमाकीन्हो रक्षाकर्योतहांतुमश्याम ।
भक्तबिभीषणकोआरतलखि रावणहन्योरूपधरिराम
बिषके भोजन कौरवदीन्हे तबहूं आप भये रखवार ।
पांचवबंधव बनप्यासेभये प्रगटो नीरतहांकर्तार ६९
नारायण शर भीषममारो तबप्रभुभीमकीनप्रतिपाल ।
हनुमतपारथहठठानोजब तबप्रणराख्योदीनदयाल ७०
चरण तुम्हारे जोजन ध्यावैं ताहितभक्तिमुक्तिदातार ।
टेर गयंदम के तुमधायो कीन्होजायग्राहपरिहार ७१
अतिआरत प्रहलाद उबारो ह्वैनरसिंह रूपभगवान ।
बलिछलिसाध्योहितदेवनको बामनभयोद्वारदरवान ७२
क्षत्रनिक्षत्रित बसुधाकीन्हो थाप्यो धर्महोय भृगुराम ।
व्याधअजामिलकोगतिदीन्हो गणिकागीधदीननिजधाम
प्रणपरिपूरणकरिभीषमको रणमाअस्त्रगह्योप्रभुहाथ ।
नंदयशोमतिसुखदेबेहित ब्रजमहंभयोआयब्रजनाथ ७४

जोचरणांबुजतुवध्यावतहै आवतसोनकबहुंयमफांस ।
पांडव रक्षकतौतुमहींहो हैमोहिंनाथचरणकोआस ७५
भप युधिष्ठिरकी अस्तुतिसुनि बिहंसेमंदमंद घनश्याम ।
दोउदलआयेचलिमंदिरको कीन्होधामशामबिश्राम ७६
युद्ध मनोहर कुरुपांडवको बंदीदीन बिप्र कहो गाय ।
भारत भाषा भरतखंडयह पूरणभयो षष्ठअध्याय ७७

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि बाजपेयि पं०रामरत्नस्यात्माभि
गामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
विरचितमहाभारतभाषा द्रोणपर्वजयद्रथवधवर्णनन्नामषष्ठोऽध्यायः६ ॥

बिंध्यबासिनी उरवासीकरि बिनवत माथहाथधरिपाय
तुव बलगावत गुनशूरनके जननी कंठ बिराजौआय १
आईसैना दोउ ओरनकी क्षत्रिन कीन जाय बिश्राम ।
कुरुपतिपहुंच्योगुरुनायकपै औसबकह्यो युद्धकेकाम २
रण प्रण पूरो हरि पारथको संगरभयोजयद्रथनाश ।
तुमअस योधातहंठाढ़ेरहे काहुनकरीछोड़ाउबआश ३
तब समुझायो आचारजने करुकुरुनाथबचनपरमान ।
यह पुरुषारथ ना पारथको कीन्होंयुक्तिकृष्नभगवान ४
निशाबिलोकेहमधोखेभये माधवचक्रछिप्योरबिगात ।
छलबल कीन्हो जगतारणने तातें भईजयद्रथघात ५
शोचनकरियेकछुजियरेमा लरियेभूपआजुनिशिकाल ।
साजियसैनाचलिमंदिरको एकएकस्यंदनबारिमशाल ६
आयसु लैकै गुरु नायकको साज्योसैनसुयोधनराय ।
रथीमहारथिसारथिसाजे औगजबाजिलीनसजवाय ७
बिजय नगारा बाजन लागे घहरन लागघंटघरियार ।

सुनिसुनिघोपैंघनदुन्दुभिको इतसजिगयेकृश्नकर्तार ८
सुमिरिभवानीजगदम्बाको दोउदलपहुंचिगयेमैदान ।
ढाढ़ी करषा बोलन लागे पंडित करतवेद को गान ६
मुकुट बिराजैं शिर शूरन के राजैं अश्व पृष्ठि असवार ।
बड़ेबड़ेराजागजराजन पर स्यंदनचढ़े हैंलसरदार १०
सातसुहागिन मंगल गावैं सखियां करैं मंगलाचार
करैंनिछावर महराजनपर आरतिबारिस्वर्ण केथार ११
औरि बयरिया डोलनलागी औरै होनलाग व्यवहार ।
मुर्चा जुटिगे दोउ ओरन के लागेकरनशस्त्रपरिहार १२
पैदलपैदलसों मुर्चाभो औ असवारन सों असवार ।
रथीरथीसों सारथि सारथि औगजदंत महौतनमार १३
सखासांवरेको सुमिरणकरि अर्जुनकीन धनुष संधान ।
ध्वजाके ऊपर हनुमतगजैं औरथहाँकिरहे भगवान १४
सन्मुख पहुंचे गुरुनायक के कीन्ह्योंवानधानपरिहार ।
मारुभयंकरनिशिअंतरको कोकबिगायकहै विस्तार १५
शकुनीसहदेवते मुर्चापरो बरसन लाग तीव्रहथियार ।
जनुदलबादलदामिनिदमकै छायोदशौदिशा अँधियार
भीम दुशासनसों रण राचो माचो गदा युद्ध संग्राम ।
नामुखफेरैं कोउकाहूसों अपने विजय युद्धके काम १७
नृपकृतवर्मा के सन्मुखभा आयो नकुलधर्म लघुभाय ।
उदरविदारैं शर पंजरसों मारैं वीर वीरहियधाय १८
भूपसात्वकी सोंधनुसाध्यो अतिबलकृपाचार्य सरदार ।
दशदिशिछायो बाणजालसों मानहुंसमरलरतघुगमार
जरासंधके सुत सन्मुखह्वै द्रोणी धनुष कीन संधान ।

तकिवक्षस्थलइक एकन का बेधतएकएक शतबान २०
शोणित बुंदा अंगनदरशैं रहिगे रोंपि समरमा पायँ ।
होतस्वयंबर जनुदेवनका कन्यनदीनमालपहिराय २१
शल्य युधिष्ठिरके बरणी है दोऊ लरत आपुजयकाज ।
लरतपरस्पर जनुसंगरमा गिरिमैनाकऔरसुरराज २२
धृष्टद्युम्नते संगररांचो अति वलवीर दिवाकर लाल ।
बाणहजारनकीवर्षा करि कीन्ह्योखेत युद्धबिकराल २३
श्रीगुरुनायक के सन्मुखह्वै आये द्रुपदभूपधनुतानि ।
झुंडनराचनके झेलतभे नाको उसकै काहुपहिंचानि २४
अतिरणमाच्योदोउऔरनते चहुंदिशिछायरह्योअंधियार ।
भईअंधेरियाजनुबादलकै दामिनिचमकिरहेहथियार २५
खड्गप्रहारो आचारजने लीन्ह्यो द्रुपदभूपशिरकाटि ।
शोच आइगोगुरुनायकउर ह्वैगइआजुसमरमेंघाटि२६
मित्र आपनो रणमा मारो अहौं कौन मोहिं अज्ञान ।
फिरिकैकोप्योसमरभूमिमा छोड़न लागबानकेघान २७
केतनेउंयोधा धरती गिरिगे कितनेउंमारेअश्वगजराज ।
पाउँपछारी कोउडारैना अपने युद्धबिजय के काज २८
निशाअंध्यारीते सूझैना तब गुरुद्रोण कही यह बात ।
युद्धनकीजै निशिअंतरमा धोखेमभयोमित्रकोघात २९
हालसो पूछ्यो दुर्योधनने कहिये महाराज समुझाय ।
भई मित्रता केहिकारणसों तुमसों द्रुपदभूपसोंजाय३०
हाल बतायो आचारजने सुनुकुरुनाथ बुद्धिआगार ।
कथापुरातनइकभाषतहौं सुनियेसत्यध्यानसोंधार ३१
गये तपस्याहित जादिनहम वनमाजाय कीनविश्राम ।

मज्जनकीन्हों मैं यमुनामा तौलौंद्रुपदकीनपरणाम ३२
आशिषदीन्हों मैं राजाको पूरण होय तुम्हारो काम
तबमैं पूंछ्यों महराजाते हौतुमकौनवर्णकहु नाम ३३
काहतुम्हारो नितउद्यम है आश्रमकौनकरहुविश्राम।
हालबतायो तबराजाने भूपति द्रुपदमोर है नाम ३४
परी आपदाममऊपरहै विधि वशत्यागकीननिजधाम।
राजकिरातन हरिलीन्होहै भागे हारिमध्य संग्राम ३५
जियलैभाग्यों मैं काननका औ इतआनिकीनविश्राम।
संगहमारे महरानी है दूसर संग एक परधान ३६
कठिनव्यवस्थायहिअवसरमाकरुद्विजसत्यबचनपरमान
दर्शनपायोंतुव आनंदसों दीख्योंविप्रवेषभगवान ३७
तब समुझायों मैंराजा को करियेगमनभूपममसाथ।
मारिकिरातनका रजलैलैं सौंपोंराजतुम्हारे हाथ ३८
सत्यपरीक्षा तुमसनभाषौं ना यहहोयतुम्हारो काम।
मुखदिखरावैंनाकाहूको नाफिरिद्रोणआजुते नाम ३९
तबयह भाष्यो महराजाने सुनिये विप्रहमारी बात।
हन्योंकिरातनजिनक्षत्रिनका तिनकोकरौकौनविधिघात
तुमधनुविद्याकछुजानतना ब्राह्मणवर्णकोमलगात।
तुमकालरिहौरणशूरनसों जानतकछुनयुद्धकीबात ४१
फिरिसमुझायों मैं राजाको गाथासुनियएकमहराज।
एकसमइयाकीबातैं हैं भृगुपति कियोयज्ञकोसाज ४२
दियोदक्षिणाद्विजदेवनको याचकजुरे अमिततहंजाय।
कौतुकसुनिसोतहंहमहूंगयेभृगुपतिनिकटपहूंचेजाय४३
रहोनबाकीकछु देबेको तब भृगुराम कहोसमुझाय।

रहीनसामा कछुमंदिरमा आयो विप्रकुअवसरपाय ४४
बच्योकमण्डलुऔकुशआसन दूजोहाथशरासनबान ।
अन्यनसामाकछुमन्दिर मा जोमैंदेहुंविप्र त्वहिं दान४५
तब मैं भाष्योंपरशुरामते सुनियेमहाराज द्विजराज ।
बहुतसतायो मैं दारिदको तुवढिगआयोयाचनाकाज४६
सुन्योपराक्रममैंकाननसों बसुधाकियोक्षत्रविननाथ ।
मोहिंसिखायोयहतिरियानेलाइयमांगितासुकरभाथ४७
यहअभिलाषाकरिआयों मैं पैचतुराननकीन निरास ।
भाग्यविहीनोजोदुनियामो ताकीहोतआशहू नाश ४८
दायालागीपरशुरामको औमर्मनिकटकह्योसमुझाय ।
जोकछुचाहौ तुमजियरेमा मैं धनुर्विद्या देहुं पढ़ाय४९
मानिसोलीन्ह्योमैंहियरेमा दीन्ह्योअस्त्रज्ञानभृगुराम ।
सहितशरासनशर दीन्होकर तीनौंलोकयुद्ध जयकाम
सुन्योहकीकतियहराजाने औखुशभयेइन्द्र पदमहराज ।
मानिमित्रताहमसनलीन्हो कीन्होसुक्तिमिळनको राज
सत्यप्रतिज्ञाहमसोंभाष्यो करिहौतुमकिरातबधआज ।
तौ अनुमान्योमननिश्चययह आधोबांटिदेहुंगोराज५२
संगलैआये प्रणशाला में औफलमूल दीनआहार ।
प्रातकिरातनकेढिगपहुंच्योकरमावाणशरासनधारि५३
जायकिरातनकाललकारो धायेसकलसाधिहथियार ।
जहँ पर द्रौपदहमठाढ़ेरहैं आयेतीनिकोटि सरदार५४
तब समुझायो महराजाने आये समरशत्रुद्विजराज ।
धारणकरियेकरधन्वाको लीजै समरजीतिकै राज५५
गह्योशरासन तबहाथेमा कीन्ह्योब्रह्म अस्त्रपरिहार ।

अगणितबाणनकीवर्षाकरि शत्रुनमारिमिलायोंक्षार ५६
द्रुपदबिठायोंसिंहासनपर कीन्होंतिलकछत्रशिरसाजि।
प्रजापरोस्योअतिआदरसह भोसबप्राप्तसैन्यगजबाजि
द्रुपदअनंदितभोजियरेमा मोसनकहो सुनौ द्विजराज।
नगरबसेरोअबयाहीकरि भोगियनाथचैनसोंराज ५८
मैं संबोधनकरिराजाको बोधित कीन ज्ञान परकास।
राजभोगिये नृप आनंदसों मैं तपहेतजातबनबास ५६
पायबिदाई महराजासों आयों बनै तपस्या काज।
योगअराध्योंप्राणशालामों जहंमुनियनकीरहैसमाज ६०
पुत्रविधाताते तबपायों अश्वत्थामतासु को नाम।
संगबालकनकेक्रीड़ाकरि खेलतजाय मुनिनकेधाम ६१
क्षीरपियावतमुनिबालनको सोअवलोकिमातुढिगआय।
दूधयाचनाकियोमातासों हठअधरह्योबालमचलाय ६२
बांटिसोतंडुल जलमातादयो कीन्ह्यों हर्षवंतसोपान।
जानिसोतंडुलजलरोदनकियो कीन्होंबहुतमातुअपमान
त्यही समइया के अवसरमा हमहूंभवन पहूंचे जाय।
रोवतदीख्योमैंबालकको पूछ्योसकलहालललचाय६४
माथहाथ धरिमातारोवै जानत दूधस्वाद नहिंबाल।
शंकितहोइगयोमैंजियरेमा करिकैश्रवणतहांअसहाल६५
द्रुपदनगरकोचलि आये तब पहुंच्योजाय भूपके द्वार।
कहो संदेशामहराजाको सो सबजायकहोप्रतिहार ६६
मीत तुम्हारोयक आयो है दुर्बल गातरंक द्विज राज।
सोवहठाढ़ो है द्वारपर आयसु कहाहोतत्यहिकाज ६७
तब नृपडाट्यो प्रतीहार को खेदहुताहिद्वारसों जाय।

समढिग आवनसो पावैना द्वारककहोहालयहआय६८
जानन पायेंगृहअंतरको तब मैं दीनक्रोध करि शाप ।
कियोनिराशाजसराजामोहिं तैसहिदुःखपाइहौआप६९
परीहस्तिना चलिआये तब कुरुपतिरहौतासमयबाल ।
गिरिगोकंदुकतबकुअंनामहं तुमसबभयोचित्तबेहाल ७०
सिद्ध बाणसों कंदुक काढ्यों सोदैदियो तुम्हारे हाथ ।
भयो अचंभातुमजियरेमा आयो भीष्मपासशिशुसाथ७१
हाल बतायो सब भीषमते भीषमजानि गयेमनमाहिं ।
द्रोणआइगे अबहस्तिनपुर यामहंतनिकअंदेशानाहिं ७२
गृहलैआयेमोहिंगंगासुत कीन्हों बिबिधभांतिसन्मान ।
बालदुग्धहितगैयादीन्हो दीन्हो पांचगांवकरिदान ७३
अस्त्रसिखायें सबबालनको गुरुदक्षिणादयोसबआनि ।
सोईयाचनाकरि पारथते मांग्योंधनुषबाणसन्मानि ७४
हालबतायें सबअर्जुनते पारथ कियो तहांरण जाय ।
बांधिलयायोनागफांससों डारोताहिचरणमलाय७५
जीवदान मैं द्रुपदहि दीन्हों बंधनतुर्त दीन छोड़वाय ।
गुरुदक्षिणाते अर्जुनतारो सुनियेसत्यबचनकुरुराय७६
मित्रहमारो इमिराजा रहै मारो आजताहितुव काज ।
बिदा करायो गुरुनायकने आये भवनभूपकुरुराज ७७
रचो रोसइयां महरानिनने क्षत्रिनकीनखानविश्राम ।
भोरभुरहरेपहफाटतखन बाजेदोउदलविजयदमाम ७८
सजि २ सैना सहबाहन के क्षत्री सबै भये तय्यार ।
दोउदलसजिगेमहराजनके लागेहोन मंगलाचार ७९
सुमिरि भवानी जगरानीको आये कुरुक्षेत्र मैदान ।

बीरपंवारो ढाढ़ीगावैं पण्डित करैं वेद को गान ८०
नंदि घोष रथ पारथ सोहैं सारथि कृष्णचंद्रभगवान।
विनयसुनायोदुर्योधनने करुगुरुनाथबचनपरमान ८१
आजुलालसा मोरेजियरेमा अर्जुन संग करौंसंग्राम।
सोसुनिभाषोआचारजने अर्जुनसमरजोतिबोकाम ८२
है अभिलाषा तुवमनमाजो पारथ संग करहुसंग्राम।
कवंचनरायणपढ़िदीन्ह्योंगुरु ऊपररामकवंचकोसाम८३
औ समुझायोदुर्योधनको अबचलि करहु युद्धमैदान।
दृढ़ह्वैलरियेरणपारथते करमहंसाधिशरासनबान ८४
खेतसामुहें कौरवआयो हांक्यो नंदि घोष भगवान।
दृढ़ह्वैपारथरथपरबैठ्यो धारणकियोहाथधनुबान ८५
तकिवक्षस्थल दुर्योधनका मारो प्रथम गातमें बान।
लागतबख्तरशरचूरणभे पारथहिये बहुतपछितान ८६
कहाहकीकतिनंदनंदनसों कहियेनाथहालसमुझाय।
बाणनलागे दुर्योधनके बसुधागिरेबाण अधियाय८७
तबसमुझायो नारायणने सुनिये सखा हमारी बात।
कवचबतायोगुरुनायकने तातेलगतबाणनहिंगात ८८
भेदसो जान्योजबपारथने कीन्ह्योंफेरि बाणपरिहार।
सहितसारथी रथचूरणभो बाजोमिलेधराकीक्षार ८९
नृपदुर्योधनको मुर्च्छाभइ तबगुरुद्रोण लीनधनुबान।
पांचबाणसों पारथमारो औदशबानहन्योभगवान ९०
दशशरमारो रथबाजिनको मारेसहसबाण हनुमान।
झुरमुटपरिगै तबसंगरमा देखतदेवठाढ़ असमान ९१
गहोशरासन तब हाथेमा पारथ सखा सांवरेक्यार।

हनिशरमारोगुरुओरनको भेरथघायलनवलबछुयार ९
टूट्योस्यंदन गुरुनायकको तबरथ अन्यभयेअसवार
मारुपरस्परबाजनलागी सबिताछिपेसमरकोक्षार ९
इतपुरुषारथगुरुपारथको औडतशल्य युधिष्ठिरराय
तेगतमंचा को झकझारैं फोरैंगदाचोटशिर घाय ९
जयअभिलाषा दोउओरनसों कोउनधरै पछारी पायं
मुद्गरतोमरकीझरिलागी रहिगेबानघानरणछाय ९
गदासंभारो तब भिम्माने कितनेउंहने छैल सरदार
शुंडबिदारैं गजझुंडनके मारैं हांकिहांकि असवार ९
प्रबलल‍ड़ाईलखिभिम्माको सन्मुखभयोदिवाकरलाल
महाभयंकर संगर राच्यो हाथनरोपि शस्त्रओढाल ९
धृष्टद्युम्न औ दुःशासनसों बाजै एकधार तरवारि
घायअनेकन अंगनआये पैकोउहिये न मानैहारि ९
नकुलसामुहैं रणराचोहै अतिबल कृपाचार्य महराज
खेलतफागुनमाचांचरिजनु करिकरि रंगकुमकुमासाज
भूपबनारसके सन्मुखमा कीन्ह्यो गुरू घोर संग्राम
बाणबिभेद्योदशहूदिशिमा छायोअंधकाररविधाम १०
नामुहमोरैं कोउकाहूसों उररहि बिजयलालसा जागि
अपनपरावो कछुसूझैना क्षत्रिनमारुमारु रटिलागि
गयोदिवाकरतबअस्ताचल होयगइ आनिसमरमाशाम
मारुबंदभई दूनौदल मा क्षत्री चले आपने धाम
हियेलालसा बाकीरहिगई कल्लाफरकि २ रहिजायं
नीकनलागैघरलौटनको क्षत्रीदांत पीसि रहिजायं

छ० । जूझिगये सरदारघने असवार महाबल छत्र धरैया ।
बालभुआल निहन्यभये अतिकालहुसों सहजोर लरैया ॥
बाजिघने गजराज हने गये सारथि स्यंदनके बिचरैया ।
शामभये बिसरामकियो निजधामगये संग्राम करैया ३

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत वंथग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षित निर्मित महा भारत भाषा द्रोणपर्वस्यान्तर्गत
द्रोणार्जुन युद्धवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

हरिहरबंदित आनंदितजन करिआधार रामको नाम ।
भारत भाषा अभिलाषासों गावत द्रोणपर्व संग्राम १
दोउदलआयेचलिमंदिरको कीन्हो असनपानबिश्राम ।
कह्योयुधिष्ठिरतबमाधवसों सुनियेभक्तभावतेश्याम २
चौदहदिनभे भारतरणको नित प्रतिहोतयुद्धमैदान ।
बड़े २ क्षत्रीदिशिकौरवकी भीषमद्रोणसरिसबलवान ३
दलबिचलायोजबभीषमने तबतुम युक्तिकीनियदुराय ।
तबशरशय्या भीषमलीन्हो कौरवगयोपराजयपाय ४
सोईप्रभुता गुरुनायककरि कीन्होसकल सैनसंहार ।
युक्तिशोचिये अबसंगरकी जासों बिजय होयकर्तार ५
हरिसमुझायोधर्मराजको करियेक्रियाकालिहयहप्रात ।
आयसुदीजै भीमसेनको साजैसमर युद्ध की घात ६
पहुंचि सामुहें भटद्रोणके फेंकै दूरि भूरि रथजाय ।
नैनबिलोकैं जो सुतकोना तौ बिन मारे मरैंगुरुराय ७
कहिसमुझायोतबभिम्मको क्षत्रिनकीनिसैनतबजाय ।
उदैदिवाकरके होतैंखन साज्यो सकलसैनमनलाय ८
सुमिरि भवानीजगरानीको दोउदलखेत पहूंचेजाय ।

चिघरत हाथीदलअंतरमा फहरतचले पताकाजायं ९
सिंह सरीखे क्षत्रीगरजैं जिनकी हांक मेघ घहरायं ।
गरदउड़ानी आसमानका रणमारहोअंधेरियाछाय १०
धनु टंकोरैं रणक्षत्रीगण मानौ दमकदामिनी चारु ।
द्रोणधनंजयको रणराचो सांचोहोत परस्परमारु ११
अपनपरावो कहुंसूझैना चहुंदिशि मारु २ लेलकार ।
श्वेत बछेड़ा रथ पारथके गुरुरथजुते बछेड़ा कार १२
हांक सारथी देहांकत रथ रोपे शूर युद्ध जय काम ।
यहअभिलाषाउर सूझतहै जूझे युद्ध होर्हिगोनाम १३
पैदलपैदल सों भिरनोहै औअसवारन सोंअसवार ।
रथीरथीसों सारथिसारथि औगजदंतमहौतनमार १४
शूल तमंचा औ तेगाहैं लीन्हे खांड़े दुधारा हाथ ।
भाला घूमैं असवारनके भाषतमारुमारुनरनाथ १५
रुण्डमुण्डसों बसुधा पाटी नदिया बहै रक्तकी धार ।
कार्कचिल्हारिनसोंरणछायो लरि२लोथिनखायंसियार
लिहे योगिनी खप्परनाचैं औ बैताल बजावैं ताल ।
महा मगन मनशंकरनाचैं पहिरेहृदयमुंडकीमाल १७
क्रोधितरणमागुरुनायकभे लीन्होधारिहाथधनुबान ।
हनिशरमारे उरपारथके कीन्होमहाघोरघमसान १८
तीस बाण सों अश्वनमारे मारे लक्ष बाण हनुमान ।
अरुणपितांबरकारिमाधवको मारे अंगअंगबहुबान १९
प्रबल लड़ाई गुरुचेलाकी एकते एक युद्ध बलवान ।
सिंह सरीखे रणमागजैं इतउतहने हजारनज्वान २०
रोषआइगो तबअभिम्नाउर रथते रहो भूमि पर आय ।

केतनेउं क्षत्री घायलकीन्हे दीन्हेशीघ्रगदाकेघाय २१
नृपकृतबर्मा को सार्थीयक अश्वत्थाम वासुगजराज ।
सो धरिघायोजबभिम्मापर अर्जुनहनोतासुदैगाज २२
भये सामुहें गुरुनंदन तब लागी होन भीमसोंरारि ।
बाण अनेकन भीमहिंमारे डारे अन्य शूर संहारि २३
चलोवृकोदरतबक्रोधितह्वै दोउकरस्यंदनलियोउठाय ।
फेंकिसोदीन्हो आसमानको त्रयशतकोशगिरोरथजाय
सहित सारथीरथचूरणभो चारिउबाजिभयेबिनप्रान ।
खायमूर्च्छागुरुनंदनगे कोमलगातजातकुम्हलान २५
गिरोजहांसुत आचारजको तहं भुवनेशशंभुअस्थान ।
अमरबालकागुरुनायकको ताते बचो नत्यागे प्रान २६
लैजल धाये तहं गंगाधर सींचो बदनजानिद्विजबाल ।
उतमहभारथगुरुपारथको माचोमहायुद्धबिकराल २७
हल्लाहोइगो सबलस्करमा मारो गयो पुत्रगुरुक्यार ।
भयोसनाकागुरुनायकके नयननचलीअश्रुकीधार २८
पूछन लागे सब सैनासों काहूं लखो बाल सुकुमार ।
सबहिनभाष्योआचारजसों देखोकरतशस्त्रपरिहार २९
लरत सामुहें भीमसेनके यहिबिधि लखोपुत्रमैदान ।
अन्त भागिगोकहुंसंगरते को रणहतो बालनादान ३०
फिरिकैपूछोगुरुभिम्मासों तुमसनलरतसमरमोंबाल ।
युद्धत्यागिसोसुतकितकोगयो सोसनकहौसांचसोहाल
कह्योवृकोदरआचारजसों मैंरथसहितकीनसुतनाश ।
तबअकुलानेगुरुहियरेमा जान्योकरतभीमपरिहास ३२
पुनिकैपूछो गुरुपारथसों तिनहुनकह्योबधोरणबाल ।

सुन्योहकीकीर्तिपारथमुखकी तबगुरुनाथभयेबेहाल ३३
मनअनुमान्योतबगोबिंदयह निश्चयभयेद्रोणबिनप्रान ।
पारथ पूंछोतबमाधवसों मोसनहालकहाभगवान ३४
सुतबधसुनिकैगुरुनायकको कारणकौनहोयतननाश ।
तबसमुझायोनंदनंदनयह पारथबचनकरहुबिश्वास ३५
कहौं वार्ता इक समयाकी साधत योगजहांगुरुराय ।
तहंपरआश्रमरहैमुनियनको क्रीड़ाकरतबालतहंजाय ३६
मुनिउद्दालककोबालकयक कीन्होकठिनतहांचिग्घार ।
सिंहकिगर्जनिसुनिलरिकाकीभययुतभईसकलमुनिनारि
पुनिसुतआयोगुरुनायकढिग कीन्होशब्दसिंहअनुमान ।
साधिघ्रासनगुरुनायकतबमारोशब्दबेधिहियवान ३८
सोशरलागतबालकमुखमा धरणीगिरोछोड़िसोप्रान ।
बिकलब्यवस्थालखिबालककी रोदनदीनसंगशिशुठान
धायेद्विजगणसबआश्रमसों रोदनसुनेबालकनक्यार ।
गुरूबिलोक्योमुनिबालकको दीन्ह्योप्राणत्यागिसुकुमार
सोच आयगो गुरुनायकके मनमा रहे सनाका खाय ।
मुनिउद्दालकतेबालकबधलरिकनजायकहोसमुझाय ४१
हेमुनिबालकतुवमारोगयो सुनिमुनिचित्तबहुतअकुलान ।
आयबिलोक्योजबबालकको दीन्ह्योबालत्यागिसोप्रान
क्रोधवंत ह्वै उद्दालक मुनि दीन्हो गुरुद्रोणकोश्राप ।
पुत्रशोकजसहमबिनजियभे सोइगतिलहौबालबधआप
प्राणत्यागिदयोमुनिनायकने दैयहश्रापदीन्हगुरुकाज ।
फसैनशंकाकछुपारथजिय ताते मरैंद्रोणगुरुआज ४४
फिरिगुरु पूंछो नंदनंदनसों मिथ्या जक्क तुम्हारी साय

आगत्यागिहैंसुनिबालकबध निश्चयपूछियुधिष्ठिरराय
तब समुझायो धर्मराजको सुनिये भूप युधिष्ठिरराय।
कबहुंनमिथ्यातुमभाषतहौसुतबधकहौसत्यसमुझाय४६
कह्योयुधिष्ठिरतबमाधवसों सुनियेनाथभक्तसुखदानि।
मिथ्याकहिहौंनाब्राह्मणसों हैममटेकसत्यकीबानि ४७
सुनिअसबानी धर्मराजकी कीन्हो क्रोधकृष्णयदुराय।
बचन क्रोधके तबबोलतभे सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ४८
जादिन खेल्यो तुमकौरवसंग क्रीड़ा द्यूतकर्ममनलाय।
सत्यनराख्योवहिसमयापरतबयहगयोधर्मकहंभाय४६
गह्योदुशासनजबद्रुपदीपट राख्योमांझसभामहंलाय।
सत्यनराख्योवहिसमयापर तबयहगयोधर्मकहंभाय५०
अंचल छोरतदीननारिको काहू शूर न कोन सहाय।
मोहिं पुकारो तबद्रुपदीने क्षणमहंबस्त्रबढ़ायोआय ५१
सभा बिराजे पांचौ भैया कीन्हो तहां न नेक उपाय।
सत्यनभाष्योवहिसमयापरतबयहगयोधर्मकहंभाय ५२
बिरच्योकुरुपतिलक्षगेहजब निशिमहंदियोआगिलगवाय
सत्यनभाष्योवहिसमयापर तबयहधर्मगयोकहंभाय ५३
होशिलाइयेपुनिवादिनको भीमहिंगरलदीन्हकुरुराय।
बोरिसुरसरीकीधारामहं कौरवरहेभवनमहंआय ५४
भयोसहायकतेहिअवसरमहं लाग्योभीमअर्द्धतलजाय।
सत्यनभाष्योवहिसमयापर तबयहगयोधर्मकहंभाय५५
कहि असबातैं जगतारणने दीन्हो धर्महियेसमुझाय।
अश्वत्थामा रणमारोगो यहगुरुनाथहिदेउसुनाय ५६
सुनिअसबाचानंदनंदनको गुरुसनकह्योयुधिष्ठिरराय।

अश्वत्थामारणमारोगो नरकुंजरकछुजानिनजाय ५७
आधीबाचासुन्योद्रोणगुरु कीन्हेउशंखशब्दनन्दलाल ।
निश्चयजान्योगुरुनायकने जूझो अवधि समरमहंबाल
मीचु आपनी तबजानतभे शिरपर कालरह्योनियराय ।
तबपरबोध्योगुरुनायकको सातौअतिथिगगनमहंआय
बासनपैहौ सुत सुरपुरको कबहुंकतज्योघावलगिप्रान ।
रणपरिहरियेयहिसमयापर करियेहियेजक्तपतिध्यान
सुनिअसबातैद्विजऋषियनकी करतेडारिदीनधनुवान ।
होयशुचिन्यासाकरिअंगनके धारोहियेजक्तपतिध्यान
दशा देखियह गुरुनायककै सन्मुख हांक दीनिबैराट ।
क्षागुरुछांडौगतिक्षत्रिनकै करियेअस्त्रधारिरणठाट ६२
अवणहांकसुनिमहराजाकी दीन्होध्यानत्यागिगुरुराय
प्रबलउलड़ाईरणमाकीन्हों मारोभूपबिराटहिजाय ६३
अस्त्र लागिगो गुरुनायकको जूझोसमरभूप बैराट ।
पुनिशुचिहोइकैअंगअंगनसों धारोध्यानधारणाठाट ६४
भेदनकीन्हो ब्रह्मरन्ध्रको निकसीपवनऊर्द्धगतिश्वास ।
सबकेदेखतवहिंअंतरमा होइगयोगुरूद्रोणकोनाश ६५
क्रोधित धायोधृष्टद्युम्न तब काट्यो द्रोणगुरूकोमाथ ।
जयजयभाष्योसबक्षत्रीगण विधिजयदईधर्मकेहाथ ६६
मारुबंदभई तबसंगरमा निज २ भवनगयेसरदार ।
हालबतावोंअबआगेको जेहिविधिरह्योपुत्रगुरुक्यार ६७
मुर्च्छा जागीजबद्रोणीकी कीन्हो शंभुनाथ को ध्यान ।
भयेअनंदिततबगंगाधर भाष्योपुत्र मांगु बरदान ६८
तबबर मांग्यो गुरुनंदनने यहवर देहु नाथबलिजाउं ।

मनअनुमानौंजैहिआश्रमकोतुरतैंपहुंचिठांवतेहिजाइं६९
यहिनिशि अंतरमा पहुंचौंमैं पांडव कुरुक्षेत्र मैदान ।
एवमस्तुतबशंकरभाष्यो पहुंच्योतुतंसमरसो आन ७०
जहांबिराजोकुरुनायकहै पहुंच्यो आनिद्रोणकोलाल ।
तबसमुझायोदुर्योधनने रणमोभयोआजगुरुकाल७१
शीश विदारोधृष्टद्युम्नने सुनिअसजरोपुत्रगुरुक्यार ।
पांचौभैयाधर्मराजसह मारौं बीनि २ सरदार ७२
समरसंहारौं धृष्टद्युम्न को तब मैं देहुं पितृजलदान ।
तबसमुझायो दुर्योधनने धरियेधीरकुअवसर जान ७३
इहांबतकहीऐसीगुजरी अब पांडव कासुनौ हवाल ।
विनयसुनायोयहगोविंदको सुनियेबचनयशोमतिलाल
मिथ्या भाष्यों मैं संगरमा अबधौं काह करैंकर्तार ।
तबउपदेश्योहरिराजाको हैनृपधर्मसूक्ष्मव्यवहार ७५
मिथ्याभाषीसुरपुर पहुंचैं भाषे सत्य जाहिं यमद्वार ।
झूंठसांचसो कछु बिगरैना कहिये बचनसमयअनुसार
कथा पुरातन इकतुमसोंमैं भाषहु भूप युधिष्ठिरराय ।
काहूधनपति के मंदिरमा चोरोवित्तचोर इक जाय ७७
जानिसोपायोतेहितस्करको बंधनकियोराजजनधाय ।
तोरिसोबंधनतस्करभाग्यो ऋषिआश्रमहिंपहूंच्योजाय
तहंलखिझाड़ीघनिबेलिनकी सोतरवरतर रहोछिपाय
तेहीसमइयाकेअवसरमा पहुंचोराजदूत तहं जाय ७९
हालसोपूछ्योवहिआश्रमपर आयोचोर एकऋषिराय
वाहि विलोक्यो तुमनैननसों होऋषिहमैंदेहु बतलाय ।
तबऋषिभाष्योनृपदूतनसों तस्करलताओट रहोछाय

जायविलोक्यो तहंदूतनने लीन्होचौरबांधि दोउहाथ ।
लैढिगपहुंचेतबराजा के कीन्होबधनतासुनर नाथ ८१
हाल बतायो ऋषिदूतनते ऋषिकेशीश परो अपराध ।
त्यागोचोलाजब मानुषको डारोगयोनरक में बांधि ८२
सत्य बतायोऋषिदूतनसों काहेभयो नरकल्यहिजाय ।
तासोंशोचियनाजियरेमाकरियेसमयजानिसोइभाय ८३
कथा पुरातन यक औरौसुनु त्रेता परशुराम अवतार ।
क्षत्रनिक्षत्रित बसुधाकीन्हो इकइसबारउतारोभार ८४
पिता बैरसों नृपक्षत्रिन कुल कीन्होएक २ हठिनाश ।
अतिबलभारीनृपसुबाहुयकपुरहस्तिनाकरैसुखबास ८५
सैनाजीत्यो महराजाकै तेहि युगबालभगे भयखाय ।
प्राणबचावनहितलरिकातेछिपिरहेविप्रभवनमेंजाय ८६
बदनसुखानेमुनित्रासासों औमुखकमलगयोकुम्हिलाय ।
चरणपखारेतिनब्राह्मणके वालकशरणछिपेतुवआय ८७
पीछेधाये परशुराम तब पहुंचे जाय विप्रकेधाम ।
हांकसुनायोद्विजराजाको कीन्हो महाकोपभृगुराम ८८
काढ़ुबालकनकामंदिरते नहिंतौदहत अग्निकीज्वाल ।
चरणपखारे तबब्राह्मणने पूंछ्योहाथजोरिसबहाल ८९
तबयहभाष्योपरशुरामने द्वैशिशुआनिछिपेतुवधाम ।
तुरतनिकासौतिनबालनकोआयोंतिन्हैंबधनकेकाम ९०
विनयसुनायोतबब्राह्मणने मुनिवरहृदयकरियविश्राम ।
बालब्राह्मणके पढ़िबेहित आयेअवधिनाथममधाम ९१
चलिसोदेखियगृहअंतरमा यहकहिमुनिहिलैगयोधाम ।
आनिदेखायेदोउबालनको तबअवलोकिलीनभृगुराम

क्रोधितबोलेद्विजराजासों हैंयहअवधिक्षत्रियनबाल ।
मिथ्या भाषतद्विजराजातुम करिहैंाइनहिंनाशकोकाल,
लखुदोहइयाद्विजवरकीहैं येहैंअबशिनाथ द्विजवाल
तबसमुझायेोमुनिनायकने करुद्विजबचनमोरप्रतिपाल
करैंरोसइयांये बालकद्वै इन संगकरहुविप्रजेवनार ।
मिटैअंदेशा तबजियरेका नातरुबधौंबालवरियार ६५
करयेोरोसइयां द्वउबालनने कीन्हो विप्रसंगजेवनार ।
क्रोधनिवारोभृगुनायकतब आयेनिजमन्दिरैंपधारि ६६
जातिगवांयोद्विजमिथ्याकहि पायोअंतकाल सुरधाम ।
भयेअनंदित धर्मराजमन सुनिकैबचनकहेजेश्याम ६७
तब समुझायो नंदनंदनने करिये भूप बचनपरमान ।
प्रात होतहोसैनासाजिय करिये युद्धकेरसामान ६८
द्रोणपितामह कोपुरुषारथ पन्द्रहदिवस भयोसंग्राम ।
अब सैनापतिरबिसुतहोइहै करिहैमहायुद्धइतमाम ६६
अर्जुन मारनहित संगरमा शक्ती दई याहि सुरराज ।
कौनबचैहैरणपारथको कबहुंकधरैशक्तिकरसाज १००
बिनय सुनायो तब राजाने सुनिये कृष्नचंद्र करतार ।
पांडवसंकट जबजब परिहै तबतब आपुमोररखवार १
जाके सारथि नारायणहैं पारथ जीतिसमरनाजाय ।
सैन्य पराक्रम दुर्योधनको बलहै मोरआपयदुराय २
पारथ रक्षक हरि सांचेहैं हैंनिज भक्त बश्यभगवान ।
मोहिं भरोसातुवचरणनको तुवबलनाथमोरसामान ३
कियोनिछावरिनारायणपर आरतिबारिस्वर्णके थार ।
लहीयुधिष्ठिर जय संगरमा घर २ होतमंगलाचार ४

जैसधैंधापांडवघरमा   साजत सकलमहोत्सवधाम ।
परिपूरण द्रोण पर्व यह   पारथ द्रोण केर संग्राम ५
नै सुनावै औ गावै जो   चितहित प्रेमनेम लवलाय ।
नोकामना परिपूरण ह्वै   सो बैकुंठ धामकाजाय ६
द्ध मनोहर कुरु पांडवको   जामें रहो बीर रसछाय ।
मरत्नको अनुमतिलैकै   बंदीदीन कह्यो यह गाय ७

तिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि बाजपेयि पं०रामरत्नस्याज्ञामि
गामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीनदीक्षित
विरचितमहाभारतभाषाद्रोणपर्वद्रोणवधवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः८॥

कवित्त ॥

श्रुतियुगनन्दचंद संवतअनन्ददानि भाद्रपदमास पक्षउज्वलसुहायोहै ।
नवमीसुतिथिभृगुवासर सुभगशुचि भारतपुराण अन्त समयबतायोहै ॥
बाजपेयिबंश शुभमानसरहंस तेजअंशअवतंस नाम रामरत्न पायोहै ।
बंदितिन आयसुसंवारिकुरुक्षेत्र रणभारत सुसर्ब द्रोणपर्ब यह गायो है१

सुरसरितीरदिशिउत्तर ललामग्राम नाममसवासोसरिकासकोसुहायोहै ।
दीक्षितसुकुलद्विजभागूलालआतमज बंदीदीननामअसगुरुनेबतायो है ॥
बंशतिरपाठीअवतंशशिवनरायणजो बालसमपालशुभविद्याकोपढायोहै ।
पदरजपूरण प्रभावभयो जातेअब भारत सुसर्बद्रोणपर्ब यह गायो है २

इति द्रोणपर्व समाप्तम् ॥

———※———

अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड कर्णपर्वप्रारम्भः ॥

सुमिरण ॥

दशरथ नंदनपदबंदनकरि धरिउररूप अनूपम ध्यान ।
भारतभाषा युद्धखण्ड शुभ बिरचौंकर्णपर्व सामान १
शाकागावोंमैं धर्मिन कै जाहिर कीरति बेद पुरान ।
कथाभागवत गाई है श्रीवर व्यासदेव भगवान २
हरिचंद राजाभे सतयुगमा सूरजबंश भूप परधान ।
अतिहित बसुधा भोगनकीन्हो पाल्योप्रजापुत्रअनुमान ३
धर्मबखानो है धर्मिनमा दानिन मध्यविदितहै दान ।
सत्मगदोख्योजिननैननसों अतिहितकियोदेवद्विजमान ४
अश्वमेधमखइकशत कीन्हा याचक कीनअयाचककाज ।
तेजविलोकन करिराजा को शंकित भयेहियेसुरराज ५
औअनुमान्यो असजियरेमा लैहै भूपमोर पद आय ।
तबहिंबोलायोगाधिसमुनिका औयहकह्योहालसमुझाय
युक्तिसोकरियेयहिअवसरमा भूपतिधर्मसोंदेहुडिगाय ।
सुनिअसवाचासुरराजाकी पुनिमुनिरहेअवधतटआय ७

कछुदिन बीते यहिअंतरमा आई होनहार की बार ।
तुरगसवारीकरिनृपयकदिन जंगलखेलनगयोशिकार ८
मृगया खेलनके अवसरपर नृप अवलोकयोअग्रबराह ।
धारेउ धन्वातबहाथेमा भज्योसो पायटापकी थाह ९
बाजि बढ़ायो तब राजाने जंगल मध्य पहूंचे जाय ।
कतौंनदीख्योतबशूकरका जियमेंगयोसनाकाखाय १०
तेहि क्षनमुनिवरसंगकन्यालै धरिद्विजवेषपहूंचेआय ।
कियोयाचना तब राजासों दीजे ब्याह हेतधनराय ११
विनयसुनायो तब राजाने सुनियेबचनमोरद्विजराज ।
मैंबनठाढ़ोयहिसमयापर केहिविधिहोयआपकोकाज १२
तब समुझायोमुनि नायकने भूपतिबचनमानुमनलाय ।
बाजिलगामहिंऔकुंजीसों हितकरिपूंजुसुताकेपायं १३
जसकछुभाष्यो मुनिनायकने तसकरिदयोकृत्यभूपाल ।
तबछलबाचामुनिवरबोले सुनियेसत्यबचनप्रतिपाल १४
बेद पुराणनअसभाष्यो है देसांगिता दक्षिणा क्यार ।
स्वानसंकलप राजाकीन्हो करिबेराजिजायनिर्धार १५
तब समुझायो मुनिनायकने सुनियेभूप सत्यके धाम ।
भयोहमारो यहुबाजीअब दीन्होदानजोबाजिलगाम १६
सत्यनछांड़ो नृपहरिचंदने तब लैलीनबाजि मुनिराय ।
कछुदिनबीते मग अंतरमा आयोभवनपियादे पायं १७
बर्जनकीन्हेंमुनिनायकतब जवनृपधरनचह्योगृहपायं ।
तबसमुझायोमुनिनायकने मिथ्याकिह्योदाननृपसायं १८
दियो खजाने की कुंजीमोहिं अबसबमोरभवन भंडार ।
पाउंनधरिये गृहअंतरका देसांगिता स्वर्ग कोभार १९

सुतमहरानी सहगवनतभे तबहुंन तज्योसत्यकोबानि।
बंच्योधर्महिंहितसुततियको अपनाभरोडोमगृहपानि २०
सत्य परीक्षाहिततनुबेंच्यो मुनिकोदियो स्वर्णकोदान।
धनि२भाष्योगुणदेवनने दीन्होंदरशआनिभगवान २१
जियोजगत महं राजाजबलग कीन्ह्योंधर्मसत्यके काम।
अंतकिबेरासुरयाननचढ़ि सहपरिवार गयोसुरधाम २२
हालबखान्यों मैंधर्मिन का जिनपरवारि गये कर्तार।
वेदपुराणन यशगायोहै कीरतिकथत सकलसंसार २३
बिघ्ननिकंदनपदबंदनकरि सर्बबिधिध्याययशोमतिलाल
भारत भाषा अभिलाषासों गावत कर्णपर्वकेहाल २४
उदै दिवाकर भे पूरबदिशि जागे सकल शूरसरदार।
आयबिराजेसबराजागण जहंपरअंधसुवनदरबार २५
बड़ेबड़े मन्त्री दुर्योधनके तेऊ बैठ सभा महं आय।
तेहीसमइयाकेअवसरमा बोल्योमाथनायकुरुराय २६
शूर शिरोमणि रणमाजूझे भीषमद्रोणसरिसबलधाम।
काहि बनैये अबसैनापति जोचढ़िखेतकरैसंग्राम २७
तबसमुझायोमहराजाको अतिबलशालिद्रोणकोलाल।
शोचनकीजैकछुजियरेमा होइहैयुद्धहालबिकराल २८
कितौ बनैयेमोहिंसैनापति नातरु करहुकर्णसरदार।
बड़ोप्रतापो रबिनंदनहै तेहिशिर देहु युद्धको भार २९
हैपुरुषारथजेहिपारथसम करिहै अवशिपांडवननाश।
यह मनभायो सबशूरनको करिहैकर्णयुद्धपरकाश ३०
सुनिकै बातैं सरदारनको बोल्योबचन दिवाकरलाल।
बिनयहमारीइकसुनिलीजें धरिचितज्ञानध्यानभूपाल ३१

मोहिं बनाइय जोसैनापति औमम शीशदेहु दलभार ।
देहुसारथीतौमाधवसम अर्जुनकरौं समर परिहार ३२
औपतिसारथिमनगामीहैं पारथविजयहोवत्यहिकाज ।
हरिसमसारथिजोपावौंमैं पांडवबधौंअवशिरणआज ३३
बोल्योशकुनीत्यहिअवसरमा सुनुकुरुनाथहमारीबात ।
कर्ण सारथी शल्यहिकीजै तौकछुबनैयुद्धकीघात ३४
शल्यसारथीहै माधवसम सारथि कर्म करै मनलाय ।
कर्णपछारैदलपांडवको निश्चयवचनमानुकुरुराय ३५
बिहंसिसुयोधनबोलनलागो सुनिये शल्यशूरसरदार ।
बनौ सारथी रविनंदनके मोरेकाजलागियहिबार ३६
कर्ण सारथी तुमका पावै जीतै सहित धनंजयश्याम ।
अकिले पारथ रणजूझैते सबबनिजाययुद्धकोकाम ३७
भलसमुझायोदुर्योधन ने लायो फेरि कर्णके पास ।
औयह भाष्यो रविनंदनते पूरण भईबीरतुवआस ३८
सुनि अस बाचाकुरुराजाकी हर्षित भयोकर्णसरदार ।
भरिभुजभेंटोलैशल्यहिको औबहुभांतिकीनसत्कार ३९
करौं मंसई अब संगरमा देखैं सकल नयन सोंज्वान ।
इकशर मारौंमैंअर्जुनका घायलकरौंकृष्नभगवान ४०
आयो कुरुपतितबमंदिरको दीन्होंबिजयशंखबजवाय ।
बजे नगारा हहकारा करि मारूरागकेरस्वरछाय ४१
कियो महूरत तबराजाने लागे सजन शूर सरदार ।
सजैंमहावतदलहाथिनके अश्वनसजनलागथनवार ४२
सारथि स्यंदनसाजनलागे बैरख ध्वजालागफहरान ।
ढाढ़ी करखा बोलन लागे पंडित करैं वेदको गान ४३

रानी आरति साजन लागीं धरिदधिदूबस्वर्णकेथार ।
शकुनमनावैंसहगामिनितिय सखियाकरैंमंगलाचार ४४
धेनु पुजावैं द्विजराजनको याचक बोलिदोनबहुदान ।
मुकुटबंधायोरबिनंदनशिर लागेहोनयुद्धसामान ४५
सबरी सैना महराजाकी साज्योअस्त्रशस्त्रबलवान ।
सुमिरिभवानीजगरानीको मनमहंधरोबिनायकध्यान
लैदल बादल कुरुनायकतब कीन्होकुरुक्षेत्रप्रस्थान ।
छार उड़ानी अति बसुधाते लोपे अंधकारसोभान ४७
इत्तकीगाथायहिबिधिभाष्यो अबउतसुनौधर्मकोहाल ।
दलपतिजान्योरबिनंदनको तबयहकह्योयशोमतिलाल
बोलि पठायो सहदेवाको लहुरो जौन धर्मको भाय ।
सबरोकौतुकरणक्रीड़ाको कहियेबंधुमोहिंसमुझाय ४९
हाल बतायो तबसहदेवने सुनिये नाथ कृश्न कर्तार ।
कर्णबनायोकुरुसैनापति ताशिरदियोयुद्धकोभार ५०
तबसमुझायो यदुनंदनने सुनिये धर्मराज महराज ।
भोरबिनंदन कुरुसैनापति होइहैयुद्धजालिमीआज ५१
बेगिपइठये चलिमाता को लावैं मांगि कर्णसों बान ।
जोशरदीन्हे भृगुनायकने अर्जुनबधनकीनअनुमान ५२
नितप्रति पूजतवहबाननको पारथ अंग करैं संधान ।
चलै पराक्रम तहंमोरौना राखौंरोकि धनंजयप्रान ५३
सत्यजानिये महराजा यह जानौ बहुत हमारो हाल ।
दूसरजानो है कुन्तीको की सहदेवपांडु को लाल ५४
जननी जैहै कर्ण तीर जो औ शरकरैयाचना जाय ।
दानी राजा तुर्तैदैहै करि है तनिकबिलंब न भाय ५५

हरिअनुशासन लै कुन्तीतब पहुंचीतुरत कर्ण ढिगजाय ।
आवतदीख्योजबमाताको रविसुतचरणपखारेधाय ५६
करै निहोरा करजोरे द्वउ कीन्हो गमनमातु केहि काम ।
आशिषदीन्हींतबकुन्तीने औयहकहोवचनअभिराम ५७
जायेलरिका तुम मोरे हौ अर्जुन तोर सहोदर भाय ।
होयसहायककुरुनायकके लरिहौबंधुसंगरणजाय ५८
उचित लराई यहनाहीं है मानियसत्यवचन ममलाल ।
सुनिअसबानीतबमाताकी बोल्योकर्णसत्यप्रतिपाल ५९
तबैनशोच्योतुमजियरेमा मोहिं तजिदियोनिरादरमाय ।
देखिनिराशामोहिंबालकको रक्षाकोनिमोरिकुरुराय ६०
सबविधिपाल्योमोहिंकौरवने जननीसत्यमानियेहाल ।
असमय बेराअबआई है तब तुमकह्योहमारेबाल ६१
नाछलकरिहौं यहि अवसरमा बिगरैबनैचहैतसकाज ।
टेकनछांडौं यहिसमयापर चाहै मिलैइन्द्रकी राज ६२
सुनिअसबातें रविनंदन की कुन्ती हिये कीननिर्मान ।
कियो याचना रविनंदनते दीन्हों परशुरामजोबान ६३
दानी राजाजग जाहिर है मानी कर्ण मातु कै बानि ।
शंकाकीन्हीं नाजियरे मा दीन्हीं बेगिबानसो आनि ६४
मांगि बिदाई तबबालकते कुंती भवन पहूंची आय ।
बाण बिलोक्यो यदुनंदनने बिहंसेमंदमंदमुसक्याय ६५
धनि २ राजा करणैं कहिये बे परमान विदितजेहिदान
सत्य न छांड़े केहुसमयामा मांगे देहिधामधनप्रान ६६
इतको कौतुकतौअसबररायो अबसुरपुरकोसुनौहवाल ।
शंकाहोइगइसुरराजाके कौरव सैन्यस्वामिरविलाल ६७

भयोनिदानोअबअर्जुनको ज्यहिक्षनगह्योकर्णधनुबान।
पारथ बचिहैना केहूविधि यह मैं जियेकोनअनुमान ६८
बोलिमातलीकातब लीन्हों औसजवायो देवबिमान।
बेगिपधारे रविनंदनढिग करि हियपुत्रनाशपरमान ६९
रथते उतरे सुर राजा तब आये बेगि कर्ण के द्वार।
हालजनायो दरमानी को पहुंच्योकर्णपासप्रतिहार ७०
दोउकरजोरे द्वारकबोलै सुनिये नाथ वानियहिबार।
चलिअवलोकियदरबाजे पर आयेदेवनाथतब द्वार ७१
सुनिअसवानीदरवानीकी आतुरचल्योहिये अनुराग।
दर्शन कीन्ह्योसुरराजाके हैप्रभुधन्यआजुममभाग ७२
चरण पखारिसुरराजा के बोल्योकरण जोरिद्वउहाथ।
आयसु दीजेसोअनुचरका कारणकौनआगमननाथ ७३
तीनिलोकके तुमस्वामीहौ दीन्हादरश आनिमोहिंद्वार।
जोकछुआयसुमहराजाके करिहौंतुरतशीशपरधारि ७४
तब यह भाष्यो सुरराजाने करिये करणबचनपरमान।
मैंसुनिपायोंअसश्रवणनसों राजाविदितजक्तवदान ७५
करनयाचना कछु आयोहौं दानी भूपतोहिंअभिलाषि।
प्रथमयाचना मैंकरिहौंना लेहौंसत्यबचनतुवभाषि ७६
दानी राजा असबोलतभो करिये नाथबचनपरमान।
याचकबाचा मैं टारौंनामांगै द्वारआनिमम प्रान ७७
प्रानते प्यारो कछु नाहींहै सोऊ तुरत देहुं सुरराय।
बाचाटारयों नाकाहूकी जबतेभयोजन्ममम आय ७८
महाअनंदित हौंजियरेमा मेरो जन्मसुफल भो आज।
सबअभिलाषाअबपरणभै याचकभयेआनिसुरराज ७९

होय तुम्हारीजोइच्छाप्रभु मांगियसत्य टेकअनुमानि ।
सोसबदेहौंयहिअवसरमा पूरणकरौंनाथतवबानि ८०
हंसिसुरराजातब बोलतभे दाता कर्ण करियअनुमान ।
मोरियाचना जोपूरणकरु कुंडलकवच दीजियेदान ८१
जन्मकि बेराजोरविदीन्ह्यो दीजे आनि मोहिंनरराज ।
आनिसोदीन्ह्योरविनंदनने पूरणकियोइन्द्रकोकाज ८२
धन्य प्रशंस्यो तब देवनने धनि २ दानतोररविलाल ।
सत्यप्रतिज्ञाकछुछांड्योना कीन्ह्योंबचनटेकप्रतिपाल ८३
आशिष दैकै तबराजा को आयेनिकसिदेवपति द्वार ।
भये अनंदिततबजियरेमा स्यंदनसाजिभयेअसवार ८४
बाजिबढ़ायो तबमातलिने ऊपर चलै नभुबितेयान ।
हांकिबछेड़ासारथिथाक्यो स्यंदनमनौंभूमिलपटान ८५
चकितपुरन्दर भेजियरेमा यहका चरितकीन कर्तार ।
तब समुझायोकहिसारथि ने हैरथलदोपापकेभार ८६
धन्यलड़ाइतरविनन्दनको धनिज्यहिघरभयोअौतार ।
बेपरमानी भोदानिन मों सुरपतिहाथपसारोद्वार ८७
पुनिसमुझायोकहिमातलिने सुनियेवचननाथमनलाय ।
कियो याचना रविनंदनसों धरणीरहोयानलपटाय ८८
युक्तिसो करियेयहिअवसरमा मांगैकर्णआपसोंदान ।
देहुयाचनाजोपूरणहवैतब चलिजायअकाशविमान ८९
सुनिअसबाचानिजसारथिकै तुरतै लौटिपरे सुरराय ।
कर्णकेमंदिरमा पहुंचतिभे औयहकहोहालसमुझाय ९०
सबबिधिराजी मैं तुमसनहौं धनितुवटेकभूप परमान ।
जोमनभावै तब जियरेमा इच्छितमांगिलेहुवरदान ९१

सुनिअसबाचा सुरराजाको बोल्यो कर्ण जोरिकैहाथ ।
मोहिं पढ़ायो गुरुमांगनना औनादीखग्रन्थकेहुनाथ९२
कियेयाचनानाकाहूसों कबहुंन लीन्हों हाथ उठाय ।
तेहीसमइया के अवसरमा बोलेबचनफेरि सुरराय ९३
असहठराजाजियकरियेना मांगियकछुकदानसविचार।
मैं चलिआयों तव द्वारेपर मिथ्यादर्शनहोयहमार ९४
सत्यपरीक्षा मैं जानी तुव हर्षित मांगु भूप बरदान ।
जोकछुमांगोमन बांछितनृप सोईदेहुंसहितसन्मान९५
पुनि असभाषोरविनंदनने करियेनाथ बचन परमान ।
बचन याचनाकेकरिहैंना जबलगरहहिंदेहमाप्रान९६
करिययाचनाजोमोपर कछु सोदैदेहु सहित सत्कार ।
हाथपसारौंनाकाहूसनजीवत टेकलोनियह धार ९७
तब समुझायो सुर राजाने सुनिये कर्ण हमारी बात ।
तुम्हैंचाहियेद्विजआशिष को लीजैशीशधारिकैतात९८
विद्यादीन्हींभृगुनायकने सोमुदसहितलीनिरविलाल।
जोद्विजआशिषहंसिक्षत्रीलेइ नाहिंनदोषताहिकेहुकाल
जहंपरदेनोतहं लेनो है भाष्यो सत्य मुनीश्वरव्यास।
अस्त्रयाचनाहमपरकरिये देहौंतोहिं भूप सहुलास १००
सुनिअसभाषणसुरराजाको मांग्यो वज्रशक्तिरबिलाल।
युक्तिबनायो तब सुरपतिने सुनियेकर्णदानिभूपाल १
शक्तिन चलिहै तुवहाथेमा है यहविदितमोरहथियार ।
छूटिसोऐहैफिरि मेरे कर जेहिक्षनकरौतासुपरिहार २
असकहिस्यंदन चढ़िगवनतभे हांकोबाजिसारथीधाय ।
पूरियाचना करि राजाको आये जहां युधिष्ठिरराय ३

देखिआगमनसुरनायक को उठिकै धर्मकीन परणाम।
हृदयलगायो तबराजाको लीन्होंकंठलायपुनिश्याम ४
हाल बतायो यदुनंदनते सुनिये कृष्णचंद्र भगवान।
कियो याचनासुतअर्जुनहित कुंडलकवचलीनमैंदान ५
जबलगकुंडलरहैंकानन मा तबलगहोयनरणमहंनास।
कबँचबिभेदैना काहूसों रहैन अस्त्रभेद की सांस ६
शक्तिआपनी मैंदीन्होंतेहि मांग्योबहुतभांतिरविलाल।
पारथकरणौंअतिरिपुताहैसबविधिकर्योनाथप्रतिपाल ७
पारथ रक्षक रणतुमहीं हो पांडव धर्म तुम्हारे हाथ।
बनैसोकीजियप्रभुसंगरमाअसकहिगमनकीनसुरनाथ ८
उदैदिवाकरभे पूरब दिशि लागे सजन शूर सरदार।
बिजयनगारा बाजनलागे कहुं २ शंखभेरिधुधकार ६
मारू २ कहिमोहार बाजै बाजै हाउ २ करनाल।
इतकुरुनंदनदलसाजतभो उतसजिगयेपांडुकेलाल १०
पहिरिसनाहैगजगाहै लै साजत अंगअंग बलवान।
द्रोणदुशासनऔशकुनीसेदुर्मुखद्विरदमहाबलजान ११
सरथसारथी सबसाजतभे फहरनध्वजा लागअसमान।
सहरविनंदनकौरवसजिगो स्यंदनचढ़ेबीरबलवान १२
कर्णबुझायो तब राजासों सुनिये महाराज कुरुराय।
शर पहुंचैहो जो संगरमा तौकछुबनैयुद्धके दायं १३
तरकस अर्जुन को अक्षय है जामेंघटै न कबहूं बान।
ताते तुमको समुझैयत है करिये बाणकेरसामान १४
युक्तिबनायो तबकौरवने अगणित बाणलीनलदवाय।
भरि२चित्रितशरहाथिनमा ऊंटनभारलीनलदवाय १५

कछुलदवाये शरछकड़नमा कछुलैचले कहारन भार।
कर्णविराजैइमिस्यंदनपर दूजोमनहुंभानुअवतार १६
सुमिरिभवानीजगदंबाका दोउदलचलनकीनप्रस्थान।
श्वेत श्याम रंगबैरखडोलैं गर्जतसिंह हांकसोंज्वान १७
धर्मौ चलिभे तब संगरका चढ़िकै श्वेतबरणगजराज।
पारथसाज्योतेहिअवसरमा निजकरलायनाथब्रजराज
नंदिघोषरथ आरुढ़ होइगो सारथि कृष्णचंद्रभगवान।
चंचल बाजीगतिताजीसों राजीकरतचले मैदान १८
जनुसुरराजा को स्यंदनहै शोभा कोटिभांति अनुमान।
चक्रविराजैंमणिह्राटकके गरजतध्वजामध्यहनुमान २०
नकुल वृकोदर धृष्टद्युम्नसे क्षत्री चले युद्धमनलाय।
पुत्रघटोत्कच भीमसेनको औसहदेव धर्म को भाय २१
दोउदल पहुंचे कुरु क्षेत्रमा मारू वंबदीनि बजवाय।
सुमिरिशारदाकेचरणनका खेलनलागयुद्धमनलाय २२

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्याभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन दीक्षितनिर्मित महाभारत भाषाकर्ण पर्वकुरुक्षेत्रसैन्यागमन वर्णनन्नाम प्रथमोध्याय: १॥

बिंध्यबासिनीकोसुमिरणकरि उरपदपद्मधारिअभिराम।
चरितमनोहरकहिगावतहौं अर्जुनकरणकेर संग्राम १
दुनौसैना इक मिलहोइगइँ क्षत्रिनधरे हाथहथियार।
पैदलपैदलसों भिरनीभइ औगजदन्त महौतनमार २
रथीरथीसों सारथि सारथि लागे करन शस्त्रको वार।
अपनपरावाकोउचीन्हैना होइरहिमारुमारुलेलकार ३

श्रीहरिभाष्यो यहभिम्मासों सुनियेबीर वृकोदरबात ।
संगआपने धृष्टद्युम्न लै करियेसमर कर्ण सों घात ४
सुनिअसबाचायदुनंदनको अर्जुनकहोसुनियप्रभुश्याम ।
हांकियस्यंदनमध्यस्थलका करिहौंकर्णसंगसंग्राम ५
पुनिसमुझायो असमाधवने पारथबचन करौपरमान ।
जौलौं शक्ती रविनंदनकर तबलगयुद्ध कर्णसोंहानि ६
यहकहिहांक्योरथसांवलने राख्योसमरमध्य पहुंचाय ।
शल्यसारथी रविनंदनको सन्मुखकीन पार्थ के जाय ७
हांक सुनायो रविनंदनने अर्जुन कहां धारु धनुबान ।
आजुपराक्रमकरुसंगरमा अबलगहने बहुतरणज्वान ८
बीरवृकोदर तब धावतभो पहुंचोकर्ण सामुहें जाय ।
सुमिरिभवानीजगरानीको चहुंदिशिबाणजालदियोछाय
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठै जैसे सिंह बिड़ारै गाय ।
जैसे लड़िका गहबड़िखेलैं गिनि २ धरें अगारीपायँ १०
जौनु शूरिमा सन्मुखपावै भिम्मा मारि मिलावैक्षार ।
कर्णशूरिमाकेसन्मुखमा धरिधनुबानकीनिललकार ११
दानीराजा खबरदार हो मोसन करिय आज संग्राम ।
रह्योनधोखेकेहुक्षत्री के परिहैआजु कालते काम १२
रविसुतबोल्यो तेहिअवसरमा सुनिये शूरपवनकेबाल ।
समरखेलिबे तुमआयेहौ अर्जुनकहांरह्यो बलशाल १३
यहकहिधन्वाधारणकीन्ह्यो मंत्रितकीनअगिनियांबान ।
हनेपचीसकशरभिम्मातन उठिगेमहाघोरघमसान १४
सातबाणते बाजिन मारो घायल धरती गिरे बछ्यार ।
अमितनराचनकीबर्षाहै दुइमा कोउ नमानैहारि १५

खरखर २ स्यंदनदौरैं कह कह करैं अगिनियांबान।
खैंचिकमनियांभुजदण्डनपर धमकैं रताकिबलवान १६
ओळेघायन के सहिजादे उठि २ फेरि करैं संग्राम।
धरिझिकझोरैंनामुखमोरैं अपनेविजय युद्धकेकाम १७
गिरैंभरहरासह्विधरतीपर अतिविकरालघायतनखाय।
जौनशूरिमा सन्मुखजूझै तिनका इन्द्रपरीलै जाय १८
दोउदिशिक्षत्री गाजनलागे ज्वानौ सुनौहमारी बात।
मानुषदेहीयहदुर्लभहै फिरिकैजन्महोय नहिंतात १६
जैसेपाता गिरितरवरते फिरिकै बहुरि न लागै डार।
पानीकेबुल्लासमदेहीहै क्षत्रिउकरौसमर अतिमार २०
उड़ि २ जूझौकुरुखेतनमा कीरति कहै सकलसंसार।
शत्रुआपनोरणमामारौ क्षत्रिउसमर होउहुशियार २१
सहदेव शकुनीसे मुर्चा है खेलत क्रुद्धयुद्ध मन लाय।
मानौफागुन दिनहोरीमा रोरी रंग रहे बरसाय २२
नृपकृतवर्मा औ नकुलीसन भारतघोरमच्योसंग्राम।
करिपुरुषारथसंगरखेलैं अपने युद्ध विजयके काम २३
भूपयुधिष्ठिर दुर्योधनसों बाजत घने घने हथियार।
तबलतमंचा तरवारिनके कहुं २ बानघान बिकरार २४
ह्विरद घटोत्कचसों भिरनी है एकते एकदईके लाल।
अतिबलतजैं धरि २ गजैं मानहुंयुद्धकरतदुइकाल २५
शांगित्रिशूलनकीवर्षाकरि मुद्गर गदाकरतपरिहार।
छुरीकटारी धरि धरिझेलैं खेलैं समरशस्त्रकीमार २६
कर्णवृकोदर ते रण राचो माचो महाघोर घमसान।
दशदिशिशायकसोंबेधतभे बरसतमघाबुंदअनुमान २७

खबरदारकै रविनन्दनतब लीन्ह्योहाथशरासनबान ।
चारिउघोड़ारथभिम्माके घायलकिये मारिमैदान २८
दूसरशायकफिरिघारण करि मारे भीमसेनके गात ।
बिकलरिकाभोमारुतका उतरोधराजानिरथघात २९
गदाफिरायो कर संगरमा इतउतकीनि मुष्टिपरिहार ।
गजमतवारेअमितजूझिगे बाजिनसहितगिरेअसवार ३०
केतनेउँस्यंदन भंजनकीन्हे तेमिलिगये धराकी क्षार ।
गदाकिचोटैंतनमालागे होयहोयचकितगिरैंसरदार ३१
भगदरिपरिगै कौरव दलमा रोंकेरहैं समरना पायं ।
प्रलयकरैयाविधिस्रष्टोमामानौत्रिपुरनिकन्दनआयं ३२
चिघरैंहाथी दलबादलमा जिनके गदादेय धरि गात ।
गदाबछेड़ाके हनिमारै चारिउसुम्म गर्दहोइजात ३३
प्रबललराईलखिभिम्माकी उरकुरुनाथबहुतसकुचान ।
तेहीसमइयाके अवसरमा आगेबढ़ो द्विरदबलवान ३४
हांकसुनायो समर भूमिमा रहुरे बीर वृकोदरठाढ़ ।
बहुतकक्षत्रीतैं मारेहै आयो समयतोर अब गाढ़ ३५
जियत नजैहै अबसंगरते सन्मुख आयहोहुहुशियार ।
इकशतभैयाजेसंगरमा सबहिनलीनसाधिहथियार ३६
कीन्ही बर्षा अति शायककी लोपे अंधकारसों भान ।
जर्जरकीन्होतनभिम्माको करि२बाणघानघमसान ३७
गदासंभारो तबमारुतसुत मुदगरलीनद्विरदबलवान ।
मारु परस्पर माचनलागे एकतेएकलरैयाज्वान ३८
पांउ पछारो कोउ डारैना सन्मुख लेत अंगमहंघाय ।
देयदुचावाइकएकनका सन्मुखहनैंखेलाथखेलाय ३९

युद्ध भयंकर रणशूरनका देखत देव खड़े असमान।
हारिनमानैं कोउ काहूसों बरषत अस्त्रशस्त्रकेघान ४०
मुंडन केरे मुड़ चौराभे औ रुण्डन के लाग पहार।
अधजल मुर्दा धरती छोटैं नदियाबहैं रक्तकीधार ४१
द्विरद प्रहारो करमुद्गरको मारो भीमसेनपरधाय।
बचोदुलरुवातबमारुतका लीन्हीचोटढालपरताय ४२
कोपित भिम्मा अतिरणमाभो मारोगदाद्विरदकेधाय।
भयोघड़ाकाशिरकंदुकसम बसुधागिरोभरहराखाय ४३
योधा जूझ्यो तब कौरवका खालीभयो युद्ध मैदान।
जयजयबानीभयपांडवदल धनि२भीमसेनबलवान ४४
तैं प्रण राखे समर भूमि मा मारे बड़े २ सरदार।
हंसिमुसकानेश्रीशारंगधर अतिगतिकीनिपवनअवतार
द्विरद जूझिगो जब संगरमा धाये द्विरदकेर सौभाय।
शायकबर्षाकरिचहुंदिशिमा भिम्मैंदियोबाणसोंछाय ४६
खड्गकिचोटैंकोउ कोउ धमकै कौनौगदाकरैंपरिहार।
करधनुखैंचोकोउक्षत्रीने बरसेबाण बुन्दजलधार ४७
खांड़ोदुधाराअरङ्वाराकरि कौनौहनै शीशपर धाय।
तनकुलागिजायजोदेहीमा क्षत्रीगिरै खायरणघाय ४८
भुक्योवृकोदरतबसंगरमा लैकरगदाकोप विकराल।
हनि २ मारे सबअंगनमा कीन्ह्योयुद्धहालबेहाल ४९
भुजा उखार्यो केहु क्षत्रीके दूनो पैर कीन संहार।
मानौकदलीके खम्भाहैं धरतीगिरैं बायु हहकार ५०
शीशबिदार्यो बहु शूरनके धरती गिरैं धड़ाकाधाय।
बहुतकक्षत्री रणमाजूझे बीसकहने द्विरदकेभाय ५१

हीसमइयाके अवसरमा रविसुत लख्योसूनमैदान ।
शल्यबढ़ायोतबस्यंदनको धारो कर्णहाथ धनुबान ५२
रथपहुंचायोमध्यस्थलमा कीन्ह्योकर्णघोर ललकार ।
रहुरहुठाढ़ो रणभिम्मातैं मारे बहुत शूर सरदार ५३
तुवपाराक्रमअबदेखौंमैं सन्मुखसाजु हाथ हथियार ।
फिरोवृकोदरवहिसमयापर सुनिरणकर्णघोरललकार
खैंचिकर्मनियांभुजदण्डनपर रविसुतकीनवृष्टिनाराच ।
प्रबलहुताशनसमधायेशर लागीभीमअंगतबआंच ५५
घायलभिम्मैअवलोकनकरि अगणितहनेसैन्यसरदार ।
मत्तगयंदअौरतुरंगम घायलकीन मारिशरझार ५६
बानअगिनियांगज तनलागैं भागैं मारि २ किलकार ।
लगैंतुरंगनकेअंगनमा धरती गिरैंसहित असवार ५७
खलभल परिगै पांडवदलमा रोंपे रहैं समरना पायं ।
कौनौक्षत्री असदेख्योना सन्मुख करैयुद्धके दायं ५८
धर्मसँवारो तव धन्वा का मारे कर्ण अंग दशबान ।
बीसकशायकअरुधारणकरिरथसारथीकीनघमसान ५६
देखिशूरता महराजा कै दानी कर्ण मन्द मुसकान ।
फेरि प्रबोध्योकहिधर्मजसों होहुशियारहनौंनृपबान६०
भूपयुधिष्ठिरको हियरोडटि मारेकर्ण तीव्र दशबान ।
तेशरबेधे नृप अंगनमा कौतुक देखिरहेभगवान ६१
गरुईचोटैं रविनन्दन की सकुचे हिये युधिष्ठिरराय ।
कर्णप्रबोध्योतबराजाको सुनियेभूप बचनमनलाय ६२
कहां पठायो तुम पारथको आयो आपुकरन संग्राम ।
लरिबेलायक तुमनाहींहौ ओमहराज धर्मके धाम ६३

शल्यचेतायो असकर्णेकहि अवसर भलो बीर है आज ।
बांधुयुधिष्ठिरअहिफांसीधरि कीजैबिजयकौरवनकाज६४
मनअनुमान्योभानुपुत्रअस लीन्ह्योनागफांसगहिहाथ ।
सोपरिहारो धर्मराज पर छांड्यो धर्म मोरशरसाथ६५
युद्धपरस्पर दोउ क्षत्रिनको दानी धर्म केर संग्राम ।
हारिनमानैकोउ काहूसों अपने बिजययुद्ध के काम ६६
तेहीसमइया के अवसरमा दौरयोधृष्टद्युम्नअसहाल ।
पीछेघाल्योमहराजाको सन्मुखहांकदीनिबिकराल६७
दानीराजा खबरदार हो अब है मोर तोर संग्राम ।
साधु शरासन करपोढ़ेगहि परिहैआजुरामतेकाम ६८
सारथि हांकयो रथ आगे को धारण कीनहाथधनुबान ।
सन्मुखह्वैकैरबिनंदनके कीन्ह्योबाणवृष्टिघमसान६९
अपन परावा कछु सूझैना जिनके मारुमारु ललकार ।
सन्मुख चोटैं रणमा छूटैं बरसैं घनेघने हथियार ७०
बहैं पनारा तन लोहुनके ह्वैरहे लाल रंग सरदार ।
मानौ फागुनकी चांचरिमा खेलतरंगपिचिक्कनमार ७१
कर्ण शूरिमाके सन्मुख पर धृष्टद्युमन कीन संग्राम ।
द्रोणी अर्जुनते रण बाजै गाजै युद्धबिजयके काम ७२
नामुखफेरैं ना तनचोरैं खेलत युक्ति सहित रणदायं ।
पीठि देखावैं नासंगरमा नामुर्चा ते हटावैं पायं ७३
जझे हाथी दल अंतरमा जनु कज्जलके परे पहार ।
गिरैं बछेड़ा रण चक्रितह्वै ऊपरजूझिगिरैं असवार ७४
अगणित स्यंदनभंजनहोइगे तेमिलिगये धराकीछार ।
अर्जुन द्रोणी के मुर्चापर जहं सतुदेखिरहेकर्तार ७५

कह्योघटोत्कच सोंमाधवतब करिये युद्ध क्रुद्ध मैदान ।
मायासंगरनिशिचरठानो करियेअंधसूनुअवसान ७६
संग निशाचर लैधावतभो बांको पुत्रहिडंबिनि क्यार ।
कौरवदलकेमध्यरुथलमा दोन्हीधायगरूलेलकार ७७
सम्हरोक्षत्रिउनिजरश्रासन करमजबूतगहोहथियार ।
असकहिधायोनभमारगह्वै बरसनलागबाणजलधार७८
वृक्ष अनेकन रणमा पाटे छोंड़त बज्र यथा सुरराज ।
शूर निपाते बहुसंगरमा केतनेउंहनेशिलाकीगाज ७६
शिला प्रहारन सोंशिरफूटैं हाथी गिरैं चकत्ता खाय ।
कल्लाकटिकटिगिरैं बछेड़ा क्षत्रीगिरैंअर्धमुखधाय ८०
युद्ध भयंकर रणमाकीन्हो दशहूदिशा भयोअंधियार ।
प्रलयकाल कोजनु बेराहै चाहत होनसृष्टिसंहार ८१
जान हथेलीपरधरिलीन्हो कायर भगे छांड़ि मैदान ।
हाथसिरोहीभुइंमागिरिगइं केतनेउंछूटि गिरे धनुबान
सैनाभागतकौरवदेख्यो तबसारथिहिकह्योसमुझाय ।
हांकु बछेड़ा रथआगेकरु अबकछुकरौंसमरमधाय ८३
बाग बछेड़न कै ढीलीकरि सारथि स्यंदन दीन बढ़ाय
रणमध्यस्थलकौरवपहुंच्यो कर्णहिहांकसुनाईजाय ८४
कहां दुलारे रबिनंदन के हैकित समर भूमि मैदान ।
तैंअवलोकेनासंगरमा निशिचरहनेसमरबहुज्वान ८५
मारुघटोत्कच अबसंगरमा मोहिं संकटतेलेहुछोड़ाय ।
सैन संहारी सबदानवने हनुयहिसमरशस्त्रकेघाय ८६
सुनिअसबाचाकुरुराजाकी बोल्योबिहँसिभानुकोलाल ।
धीरधारिये नृपजियरेमा हैयह दैत्य बड़ोबिकराल ८७

पलमहं मारौंयहिसंगरमा पैन्नृप एकशोचजियआज।
बज्र शक्तिहै मोरेहाथेमा राख्योंजिश्नुमारिबेकाज ८८
आजु राति जोधीरजकरिजा मारौं कालिहदैत्यसंग्राम।
बज्रशक्तिसों पारथमारौं तौबनिजायबिजयकोकाम ८६
तब समुझायो दुर्योधनने रबिसुत सुनौ हमारी बात।
छोटनजानी हुज बैरीको मारियदावंयुक्तिकोघात ६०
देरनकरिये यहिअवसरमा मारियबीरनिशाचरआज।
पारथजीतनकछुमुश्किलऊना मरिहैंघेरिसबैनरराज ६१
आजुनदानव जोमारोजाय तौ सब सैन करै संहार।
बचैनकोऊयहिसन्मुखह्वै सुनियेसत्यकर्णसरदार ६२
रबिसुतबोल्योतेहिअवसरमा कौरवकरौ बचनपरमान।
बातनजान्यो कछु संगरकै रक्षक पार्थकेरभगवान ६३
युद्ध सुझायो तिन दानवको माया रच्यो नाथब्रजराज।
कालिहसंहारैं मैंअर्जुनको दानवबधौंशक्तिसोंआज ६४
पारथ मारो फिरि जैहैना है धनुधारी बीर बलवान।
तेहिहितशक्तीमैंगहिराखौअब नृपकहौसोकरौंबिधान ६५
फेरि सुझायो महराजाने रबिसुत सुनौ हमारो बात।
देरनलाइयअबसंगरमा करियेआजनिशाचरघात ६६
कालिहसंहारौसबपारथमिलि रक्षा कोटिकरैं यदुनाथ।
कर्ण अंदेशाकछुकरियेना होइहै बिजयपत्रतुवहाथ ६७
शोच्यो भूपति तबजियरमा दानी भूपमौलिरबिलाल।
लिखोबिधाताकैटारैको पहुंच्योआयघटोत्कचकाल ६८
शक्ति उठायो तब हाथेमा सुमिरयो मातुशारदापायं।
सुमिरणकीन्होसुरराजाको निरख्योसमरयुद्धकेदायं ६६

डाट्योचेहरादैत्यराजको दोन्होंछांड़िशक्तिबिकराल ।
भईउजेरियादशहूदिशिमा मानहुंपूर्णचंद्रके जाल१००
फहरत शक्तीरण धावतभै लागीघोर असुर उरजाय ।
हृदय घटोत्कचकोभंज्योहै बसुधागिरोदैत्य भहराय १
शब्द अघातीभो लस्करमा क्षत्री गये सनाकाखाय ।
बज्रबिदारित जसगिरिटूटै औभुविगिरै धड़ाकाधाय २
गिरोनिशाचरतस संगरमा चहुंदिशिछायगयोहहकार।
पांडव सैना सबजानत भै जूझोपुत्र हिडंबिनिक्यार ३
शक्तिपहूंचीकर सुरपतिके मनमहं खुशी भयेभगवान ।
अर्जुनमारन को शंकागै अस्ता चलै पहूंचे भान ४
मारुबन्द भै दूनो दलमा धाये अमितभूत बैताल ।
नचैं योगिनी करखप्परलै प्रेत पिशाच बजावैं ताल ५
बेषभयंकर शंकर नाचैं पहिरे हृदय मुण्ड की माल ।
काकचिल्हारिन मंडफ छायो जंबुककहैं शब्दबिकराल ६
मूंड़न केरे मुड़चौराभे ओलोथिन के लगे पगार ।
अगणित योधारणमा जूझे सरिता बहैं रक्त की धार ७
परेगयंदमरण अवनीपर मानहुंनदी मध्य घरियार ।
परे बछेड़ा चौतर्फाते मानहुं मगर केर अवतार ८
पगिया उरझीं रजपूतनकी जनु नदियनमाबहैसिवार ।
दरशैंनागन समधरतीपर करते गिरैं जौन हथियार ९
कुण्डल झलकैं रणशूरनके मानौ परे जवाहिरलाल ।
कोकबिगावैं छबि संगरकैं दर्शैं असमशान बिकराल १०
मारु बंदभै दूनौ दलमा औ बेप्रभाभये दिननाथ ।
क्षत्री चलिभे निज मंदिरका लैलै अपनशूरिमा साथ ११

हौदाउतरे गज पीठिनते औ तंग छूटबद्धेरन क्यार।
लागि बद्धेरागेथानिनमा क्षत्रिनछोरि धरेहथियार १२
खबरि पहूंची रनिवासेमा जूझ्यो भीमसेन को लाल।
बिकलहिडंबीअतिआरतभैजैसेंगायदुखितबिनबाल १३
अतिदुखव्याप्यो भीमौउरमा जूझो पुत्र समर मैदान।
लखिविह्वलताभीमसेनकी कीन्होंसमाधानभगवान १४
अमरनकोऊ है दुनियांमा सुनिये भीमसेनमम बात।
इकदिनमरनाहैसबहीका करिहैअवशिकालसबघात १५
नहींसमैया विहवलता की करियेहिये शोचि सो बात।
ज्यहिविधिजीतैंरणबसुधामानिश्चयहोयकौरवनघात१६
धर्मबखाने यह क्षत्रिन के राखियसत्य टेक परमान।
पीठिदेखावै नासंगरमा दुश्मनहनै समर मैदान १७
भयोवृकोदर उरधीरज तब कीन्होखानपानसन्मान।
अपने २ रनिवासनमा कीन्हो सैनजायसबज्वान १८

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षितनिर्मित महाभारत भाषा कर्ण पर्व घटोत्कचयुद्धवध
वर्णनोनाम द्वितीयोध्यायः २।

ध्यायगजाननगुरुगिरिजापतिगोकुलनाथचरणलवलाय
युद्ध मनोहर कुरुपांडवका भाषाकर्णपर्वकहौं गाय १
उदय दिवाकरभे पूरबदिशि जागे महारथी सरदार।
पांचौ भैयन सह क्षत्रिन के राजे धर्म राज दरबार २
बड़े २ योधा महराजा के तेऊ बैठ सभा महं जाय।
सखा सांवरे श्रीपारथ के सोहतसभामध्ययदुराय ३

दुःखवियाप्योभिम्मा उरमा जूझ्यो समर पुत्रबलवान ।
दुखितविलोकनकरिभिम्माको बोलेकृष्णचंद्रभगवान ४
अवसरबानी मैं भाषत हौं क्षत्रिउ बचनकरौ परमान ।
जोकछुकरणी रणशूरनकी चहियेकृत्यतासुअनुमान ५
बदलआपनोरिपुसोंलेवै त्यागै नहीं सत्य प्रणघात ।
अवसर चूकैना संगरमा निश्चय करै शत्रुकीघात ६
पीठिदिखावैनादुश्मनको चहै बरुजायसमरमा प्रान ।
शरणागत की रक्षा चाहै कीन्हो चहीधर्मसहदान ७
सत्यबार्ता तुमसनभाषैं पारथसखा सुनहुं मन लाय ।
समुझिवाजिबीसोजियरेमा कहियेमन्त्रशोधिसबभाय ८
वर्षत्रयोदश तुम का बीते होइगो देश पराये हाथ ।
बारह बर्ष बन सेवन करि कीन्होसहनदुःखके गाथ ६
केशद्रौपदीने बांध्योनहिं नातन करै कछुकश्रिंगार ।
करहिसुमंगलकछुतबतकना जबतकरिपुनहोयपरिहार
केशदुशासन गहि एंच्योरहै तासनकियोप्रतिज्ञानारि ।
केशबांधिहैंमैंतबतकना जौलौं शत्रुजायँना मारि ११
सो सबबातैं तुम्हैं भूलिगइँ बैठे पुत्रशोक सब भाय ।
विदितपराक्रममोहिंसबकाभो अबरणकाहहोयमंशाय
रणसाघायल धर्मराजभे जर्जर देहकीनि रबिलाल ।
सोसबबैठेअवलोकतहो असजिन्दगीक्यारधिरकाल १३
बदला लीन्होना कौरवते तौधनुबान गहेकै लाज ।
शत्रु मारिकै समर भूमिमा चाहियलेनआपनोराज १४
सुनिअसबाचाजँदनंदन की कोपितभीमधनंजयराय ।
शोकबिसार्योसुतआदिकको बोलेबीरवाक्यसमुझाय १५

मोरिआरजु नदनंदन यह सुनिये सत्य टेकमनलाय।
आयसुदीजै यहिअवसरमा साजैंसैन युधिष्ठिरराय १६
चलिमंशइया रणमा देखौ मुखतेकाहकहैं यदुनाथ।
लख्योतमासासमरभूमिमा जोरणहोयआजुममहाथ १७

स० धारिशरासन संगरमों शरभारनसों दशहू दिशि तावों।
सारथि शूररथी सरदार पछारि घनो दल छारमिलावों॥
अस्त्रविहीन कै कौरवको सरितारण श्रोणित धारबहावों।
एकहिवाणहनौंजोन कर्ण तोआजतेश्यामसखानकहावों १८

सुनियदुनंदनअसपारथवण बिहंसे मंदमंदमुसक्याय।
पुनिसमुझायोमहराजाको सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय १६
आयसु दीजै सरदारनको साजहिं सैन नलावहिंबार।
करिरणउद्यमज्वाननसाजैं गहिगहिअंगअंगहथियार २०
सुनिअसबाचाजगतारणकी आयसुदियेयुधिष्ठिरराय।
बोलिनगड़चौका बीरादै सोने कड़ा दीनपहिराय २१
बजो नगाड़ा तबलरुकरमा क्षत्री सैन सजावन लाग।
करिकरिहनवनगंगाजलसों बांध्योशीशरेशमीपाग २२
मुकुट सूरमणके माथेपर औअंगअंग सजे हथियार।
सजे महावतगजराजनको घोड़न सजैलागथनवार २३
रथन सारथी साजन लागे बैरख ध्वजालागफहरान।
मारू बाजा बाजन लागे गर्जत शूरसिंहअनुमान २४
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे बांके घोड़न केअसवार।
रथीमहारथिरथपरचढ़िगे जोतेजिनमानवलबक्कयार २५
सुमिरि भवानी जगरानीको सजिकै चलेयुधिष्ठिरराय।
बड़े बड़े योधा हैं संगमा राजत शूर पांचहूभाय २६
नंदिघोष पर अर्जुन बैठो सारथि कृष्ण चंद्र भगवान।

लैकै अज्ञा यदुनंदनकी कीन्हो धर्मभूप प्रस्थान २७
सुभग कामिनी आरतिसाजैं सखिया करैं मंगलाचार ।
वेदकारिका ब्राह्मणबांचैं बुधगणकरैंशकुनव्यवहार २८
ढाढ़ी करखा बोलन लागे क्षत्री वीर रूप होइ जायं ।
इतसजिसैनागैपांडवकै उतदलसजनलागकुरुराय २९
सुबरण झारीलै गंगाजल कीन्हो कर्ण बीर अस्नान ।
याचकवृन्दनकाबुलवायो दीन्होसबैंअयाचकदान ३०
पहिरिजांघियामुसुरूवालो जामापहिरिदुदामीकयार ।
मुकुट सुबरणको माथेपर दूजो मनौंभानुअवतार ३१
शल्य सारथी स्यंदन साज्यो दरशै रेशमतुंगबितान ।
छत्र पताकाजेहिबांकाहै कोकबिकरैतासुछबिगान ३२
नवल बछेड़ा गहिजोरतभो जिनकीपवनबेगकीचाल ।
सुमिरिभवानीजगदंबाको बैठोसाजिमध्यरबिलाल ३३
सिगरे योधा दुर्योधन के चढ़िचढ़ि बाहन भयेतयार ।
हाथी चढ़ैया हाथिनचढ़िगे बांकेघोड़नकेअसवार ३४
रथीमहारथि रथपर चढ़िगे फहरनलागेध्वजानिशान ।
सातसोहागिनिमंगलगावैं बुधजनकरैंवेदकोगान ३५
ढाढ़ी करखा बोलनलागे सुनिरव सिंहभयेबलवान ।
इष्टदेवताकोसुमिरणकरि कुरुपतिसमरकीनप्रस्थान ३६
आगे स्यंदन दुर्योधनका संगै सजो कर्ण सरदार ।
पाछे हलका दलबादलका पैदल शूरबीरअसवार ३७
खरखरखरखरस्यंदनदौरैं चिघरतचलेमत्तगजराज ।
सिंहकिगर्जनि क्षत्रीगरजैं अपनेयुद्धबिजयकेकाज ३८
टाप बछेड़नकै लागैना चमकै अष्ट धात कैनाल ।

दोउदल दाखिल कुरुक्षेत्रमे भोप्रारंभ युद्धकोहाल ३९
पारथ दलपति इतपांडवको उतहै सैनपती रविबाल।
कौनौ काहूसों कमतीना एकते एक दईको लाल ४०
मारुमारु कहि मौहरि बाजै बाजै हाउ हाउ करनाल।
विजयनगारारणमागाजैं क्षत्रीभिरैंठोंकिभुजताल ४१
पैदलपैदलसों भिरनी भै औ असवारनसों असवार।
शूंड़िलपेटा हाथीभिरिगे ऊपरहोय महौतन मार ४२
रथीरथीसों सारथि सारथि लागे परन बानकेघान।
चहुंदिशि बर्षाअस्त्रशस्त्रकै छिपिगेसमरक्षारसोंभान ४३
चलैंकटारी बूंदी वारी औ तरवारिन के घमसान।
चलैंदुधाराअरइंवाराकरि कटिकटिगिरैंछ्बीलेज्वान ४४
कहुं २ नंगी चलैं संगीनैं भाला मनन २ मननाय।
लटुआलागैजेहिखोपरीमा सोगिरिपरैंधरामहराय ४५
बरछीतिरछीकै झरिलागी चहुंदिशिमारुमारुललकार।
मानहुंफागुनकोचांचरिमा होइरहिरंगकुमकुमामार ४६
कुटैंतमंचा धुंधकारैंकरि छूटत प्रलयकार हथियार।
हलुकेघायनके सहिजादे उठिउठि फेरिकरैंतरवारि ४७
स्यालहकैबरी धरि२ धमकैं गमकैं अस्त्रअस्त्र परधाय।
जौनसिपाही सन्मुखजूझैं तिनका इन्द्रपरीलैजाय ४८
नामुखमोरैं कोउ संगरते उठि २ रुगडमचावैं रारि।
लिहेजियरवा कायरभागैं करते अस्त्रशस्त्रकोडारि ४९
जिन्हैंपियारे लरिकाबारे घरमालाये गौनवां चालि।
तजीसिरोहीतिनरव्यातनमा भागेप्रानहाथलैहालि ५०
जिन्हैंपियारो लरिबोसूझै दुइदुइ लीनहाथहथियार।

अपनपरावा कछु ताकैंना सन्मुखमाहरर ललकार ५१
युद्धजालिमी भो पांडवको मुर्छाहटो कौरवन क्यार ।
लखैलड़ाइततबदिनकरका भागेशूरडारिहथियार ५२
गरुईगाजैं भिम्मादिक की रोंके रहैं समर ना पायं ।
शल्यसारथीकाललकारो रथरणमध्यदेहु पहुंचाय ५३
करिपुरुषारथ पारथमारौं एकन भागि समरतेजाय ।
सत्यप्रतिज्ञामैंछांड़ौंना क्षत्रीहनौंखिलाय खिलाय ५४
आजुपांडवा जो जीवतजायं हमरे शूर पनैंधिरकार ।
धिक है माताकीकोषीका औधनुबान धरेधिरकार ५५
सुनिअसबातैंरबिनन्दन की बोल्योशल्यशूरमुसकाय ।
दानीराजा तुमसन भाषौं सुनियेबचनमोरमनलाय ५६
कथापुरातन यकगावतहौं सुनिये दान रूपरविलाल ।
जैसीगति भै हंसकागकी सोई आपुबतावतहाल ५७
आजुपराक्रम सबकादेखिहैं यहिकुरुक्षेत्र युद्धमैदान ।
कर्णकोपकरितात्क्षनबोल्यो यहुकाकहतशल्यबलवान
कागहंसकी गतिकैसीहै सो मोहिंकहौबीर समुझाय ।
हालबतायोतबराजाने सुनिये कर्णबीरमन लाय ५८
मानसरोवरके तटइकदिन बैठो वृंद मरालन क्यार ।
करतबार्ता सब आपुसमा चलियेचरनहेतसरपार ६०
तेहीसमइयाके अवसरमा तहंयककाग पहूंचो जाय ।
बिनयसुनायोतिनहंसनको हमहूंचलबआपुसंगभाय ६१
हंसबुझायोतब कागाको कागा बचन करौ परमान ।
संगहमारेतुम पहुंचौना पैहौ पार न मानसजान ६२
काग बखानो तब हंसनसों सुनियेहंसराज यहबानि ।

पहुंचितुम्हारेसंगजैहौंमैं होइहै नहींकछुहितहानि ६३
उड़ेसो हंसा तटमानसते संगै चल्यो गरूरी काग।
कोशचारिलगउड़िपहुंचतभो तबहियभयोशोचकोजाग
थकितपराक्रम भो अंतरते कागाकरन लागपछितान।
पारमानसरमैंपहुंचैंना जैहैं अवशिआजुममप्रान६५
आरतबोल्यो तबहंसनते भैया देहु जीव को दान।
थकितपराक्रमअबमेरोभयो तुम्हरेकियेहोयकल्यान६६
सुनिअसबानीतबकागाकी हंसनकह्योताहिसमुझाय।
कहोहमारीतुममान्योना उड़िकैचल्यो संगममधाय६७
बिनाबिचारे कारजकीन्हो अबकाहियेमांझपछितात।
दायालागीपुनिहंसनका सबमिलिकियो एकढिगगात
पीठिचढ़ायो तबकागाको कीन्ह्योताहि मानसरपार।
तातेतुमकासमझावतहौं सुनियेकर्ण दानअवतार ६६
पारथतुमते कमनाहीं है जोतेहिबधौ समरमहंआज।
सबबिधिताकोपुरुषारथहैसारथिसखाजासुब्रजराज७०
सागर बांध्यो जेहिंबाणनसों जीतोबायुपुत्र हनुमान।
तुमसबदेखत जेहिरणमारो भीषमद्रोणसरिसबलवान
निर्बलजानियना अर्जुनको करियेमोरबचनपरमान।
बिदितपराक्रमसन्मुखह्वैहै धरिहौहाथशरासनबान७२
भूप शोचिये सुधिवादिनकी बेंड्योपुरबिराट केगाय।
तुमसमयोधा तबतहंऊंरहैं भीषमद्रोणसंगकुरुराय७३
सबदलबादल दुर्योधनका पारथ कीन अकेले नास।
भाजिभवनकासबक्षत्रीगे सबबिधिभयोतहांपरिहास७४
तहं कोउ योधामैं देख्योंना जोदुइघरी खेतअड़िजाय।

तहं पुरुषारथ सबकादेख्यों पारथएककोनिमंशाय ७५
सुनिअसबानी शल्य भूपकी क्रोधितहियेभयेरविलाल ।
शल्यशूरिमा का लेलकारो जानोनहींतोररणहाल ७६
लैचलु स्यंदन मध्यस्थल का जहंपर पांडुपुत्रबलवान ।
सन्मुखकैदेरथअर्जुनके फिरिअवलोकु युद्धघमसान ७७
शल्यसारथी रथ आगेकरि हांक्यो अश्वपवनकोचाल ।
लैपहुंचायो मध्यस्थल का ठाढ़ो जहांपांडुकोलाल ७८
निरख्यो स्यंदन रविनंदन का आगेबढ़ोवृकोदरधाय ।
सिंहकिगर्जनिरणमागरजो सन्मुखहांकसुनाईजाय ७९
कर्ण बिलोकितरथ ऊपरकरि धारणकीनहाथधनुबान ।
रे रविनंदन खबरदार हो रणमामोरतोरघमसान ८०
दानी राजा तब बोलतभो सुनियेभीमवचनमनलाय ।
हमसन लरिबेतुम आयेहौ पठयो कहांधनंजयराय ८१
तेहीसमइया के अवसरमा सन्मुख नंदिघोषघहरान ।
सखा सारथीरथ हांकत हैं बैठेध्वजा बीचहनुमान ८२
कर्ण सामुहेंरथ पहुंचतभो निरख्योशूरसमर मनलाय ।
भीम बुझायो तब अर्जुनने सुनियेधीरधुरंधरभाय ८३
लेहु मूर्चा दुःशासनते हमरो कर्ण केर संग्राम ।
बिजयपाइहै सोसंगरमा जापरकृपाकरहिंश्रीश्याम ८४
भीम दुशासन के सन्मुख भो अर्जुन कर्णकेर मैदान ।
प्रबललड़ाइतदोउक्रुद्धितहवै धारणकीनहाथ धनुबान
अगणित शायक बर्षनलागे कायरखेतछोंड़िकैभागि ।
शरशर २ शायक बर्षैं मानो मघानखतझरिलागि ८६
भई अंधेरिया दशहू दिशिमा लोपेसमर क्ष रसोभान ।

अपनपरावो पहिंचानैना उठिगेअन्धधुन्धघमसान ८७
गर्द उड़ानी चौगिर्दाते मानौ रहे गगन घन छाय।
शस्त्रचमंकै रणखेतनमा जनु प्रज्वलितदामिनीआय ८८
अतिशयवर्षा नाराचन की सावनयथा बुंद जल धार।
धरेकमनियांदोउहाथनसों इतउतछ्यापिरहेशरझार ८९
शल्य सारथीरविनंदन को उतसारथी सखा केश्याम।
चपल चातुरीसों रथहांकैं अपनेयुद्ध विजयकेकाम ९०
जितै जानको अनुमानत हैं तितसारथीदेहिं पहुंचाय।
बाग वछेड़न कै हाथेमा हांकतयुक्तिसहितरथधाय ९१
सुमिरिभवानी जगरानीको पारथ धरोअगिनियांबान।
सोधरिधमक्योरविनंदनपर ज्वालाजगोप्रबलअसमान
खलभलव्यापो कौरवदलमा लागेजरनसैन्यसरदार।
कर्णप्रहारोजलशायकतबअतिबलवानभानुअवतार ९३
सो शरछाये चौगिर्दाते बाढ़ो वेकरार जल धार।
पवनवाणतबअर्जुनमारो कीन्ह्योपवनपानिआहार९४
ध्वजापताका टूटन लागे चहुंदिशिकियोपवन हहकार।
कर्ण भुवंगमशर छांड़ेतब कीन्ह्यो बेगिपवनआहार ९५
अहिबिललानेसबलस्करमा अतिभयग्रसितभयेबलवान
साधिशरासनतबअर्जुनने कीन्ह्योगरुड़बाणसंधान ९६
इतउत धाये सोसंगरमा खाये पकरि २ सब नाग।
अतिबलयोधाउरक्रोधाकै माचनमारुपरस्परलाग ९७
पीठिदेखावैकोउ काहूना कीन्हे हियेबिजयअभिलाष।
स्वर्गनर्कअरुअतलतलातल बेधे मारि २ शरशाख ९८
उड़ै परवेरूना अम्बरमा बेधे अर्ब खर्ब शर जाल।

खटखट २ तेगाबरसै क्षत्री भिरैं ठोंकि भुजताल ९९
शायक ऐंचत कोउदेखैना कीन्ह्यों कबैबान संधान ।
हनैंगयंदमऔतुरगनका धरतीगिरैं सुघरुवाज्वान १००
है पुरुषारथ कर्णपार्थ को देवता कौतुकलखैं विमान ।
तेहिक्षिनचुंचुकअहिबोलतभो करियेकर्ण मोहिंसंधान १
पहुंचत २ दल अंतरमा अर्जुन सहित लीलिहौंश्याम ।
वैर पुरानो आपनलेहौं पूरण करौं आपु को काम २
सुनि असबानी अहिचुंचुकको कीन्ह्योकर्णताहिसंधान ।
हांकसुनायोतब अर्जुनका हो हुशियारबीरबलवान ३
ओचुतुम्हारीनियरानीहै यहकहिकियोबाणको त्याग ।
बाण के छूटत परलय होइगै साथै चलोचुंचुकोनाग ४
रूपभयंकर चुंचुकि धायो जैसे घटामेघ अंधियार ।
बाढ़िकैलागोआसमानमा फणकीछाहंछिपे तमहार ५
भई अंधेरिया समरभूमिमा जहंसूझैना अपनबिरान ।
शंकाव्यापी सबसैनाके अबधौं काहहोय भगवान ६
अर्जुनभाषोजगतारणसों केहिबिधिभयोनाथअंधियार ।
हालहमारो कछुजानोना सो समुझाय कहौ कर्तार ७
तबसमुझायो यदुनंदनने अर्जुनबचन करौ परमान ।
कथापुरातनयकभाषतहौं सुनिये सत्यधारिइतकान ८
जादिनबनतुम दाहनकीन्हो औहमसारथिभयेतुम्हार ।
खांडवदाह्योशतयोजनलग दीन्ह्योबाणजालबनपारि ९
तादिन ऐसोरथहांक्यों मैं कुम्हरा यथा फिरावैचाक ।
खगमृग व्याकुलभेजंगलमा लागे जरनज्वालपरिपाक
जीवजो आवै कोउ बाहेरका सोतुमहनौबाण कीघात ।

दुर्मिनागिनीतबजानतिभै निश्चयजरोअग्निसोंगात ११
व्यथित उड़ानीआसमान का तबतुमकियोबानसंधान ।
पुच्छविदारीतबनागिनिकै बचिगेबाणघातसोंप्रान१२
ताको लरिका यह चुंचुकि है करकोटकोबापको नाम ।
करै बसेरोयहु अहिपुरमा जहंपाताल शेषकोधाम १३
बैरलेनहित भारत आयो औ यहिकर्ण त्रोणहै बास ।
सो संधान्योरविनंदन है जासोंहोयसखातव नास १४
शारंगपानी की बानी सुनि पारथ कीन बानसंधान ।
ताकितनबेधोअहिचुंचुकिकाकीन्होअमितअंगशरघान१५
नातन बेधै कहु चुंचुकि का सन्मुखचल्योबेगसोंधाय ।
जोशर लागैफणचुंचुकि के धरतीगिरतचूरह्वैजाय १६
सिंहसारिखे चुंचुकि फुफुकै पावस यथा मेघघहराय ।
हांक सुनायोतब पारथ को क्षत्रीखबरदारहोइजाय १७
सहितसारथी औस्यंदन के लीलौंआजुतोहिंयहिकाज ।
बैर पाछिलोमैंसुमिरतहौं त्वहिंहतिदेहुंकौरवनराज १८
रूप भयंकर दरशावतभो कीन्हो अंग अंग विस्तार ।
पांडव सैनासब कंपितभै तेहिअवलोकिरूपभयकार१९
आतुर धायो नंदिघोष पर शंकित भये धर्म के नाथ ।
गगनदेवतनअतिहाहाकियो भयसोंग्रसितभयेसुरनाथ
सखा सांवरे तब बोलतभे सुनु बलवीर धीर हनुमान ।
करुरखवारीअब स्यंदनकै जेहिंविधिबचैंधनंजयप्रान २१
अतिबलदाबहु रथ नीचे को जो चलिस्यंदनजाइपताल ।
जानिनपावैकुरुसैनाकोउ यहिबिधिछलौचुंचुकीथाल ।
लैतब आयसजगतारणका अतिबलकीनअंजनीलाल ।

सहितसारथी रथयोइनके अर्जुन पठैदीन पाताल २३
लग्योपताका चुंचुकिमुखमा निरखत सोईसैन्यसरदार ।
निश्चयहोइगोरणशूरनके अर्जुनलीलिगयोफणकार २४
सहितसारथी रथदरशैना कीन्ह्यो भक्षिचुंचुकी नाग ।
आनंदह्वोइगो कौरवदलमा धनि२भये सबनकेभाग २५
लौटिकर्णढिग चुंचुकिआयो धनि २ कह्योकर्णसरदार ।
कार्जसिधारे तैं कौरवका आरेसहित जिश्नुकरतार २६
सुनि असबानी रविनन्दनको रोषितकह्योशल्यभूपाल ।
कातुम मिथ्यानृपभाषतहौ जानतनहीं समरकोहाल२७
तुमअसयोधा केतनेउआवैं पारथ तऊ जीतिनाजाय ।
काहविचारोअहिलीलैतेहिरक्षकजासुश्यामसुखदाय२८
बालनबांको होयपारथका रथासुनो सत्यरविलाल ।
तेहीसमइयाकेअवसरमा स्यंदनउठ्योत्यागिपाताल२९
सहितसारथीरथ दरशतभो सोहत मध्य पांडुकोलाल ।
ध्वजाकेऊपरहनुमतगरजैं औरथहांकिरहेनंदलाल ३०
कर्णबुझायो तब चुंचुकिका तैंका मिथ्या कहेवनाय ।
जानिनपायेगति अर्जुनकै कीन्ह्योयुक्तिभेदयदुराय ३१
नागचुंचुकी तब बोलतभो सुनिये बचन दानिभूपाल ।
यहकुलहोइगासमरभूमिमा मैंकछुजानिनपायोहाल३२
तोहितेतुमका समुझैयत है फिरिकै हमैं करौ संधान ।
अबकीबेरा ये उबरैंना पारथसहित खाउं भगवान३३
तबसमुझायो रविनंदनने चुंचुकिकरौ बचनपरमान ।
धर्मक्षत्रियनको नाहीं है छांडोफेरि चलावहिंबान ३४
सोहिंनिराशा तुमकोन्ह्योहै पैहो अवशिनर्कमोबास ।

सुनिअसबानीरविनंदनकी चुंचुकि हियेकोपपरकास ३५
औयह बाचा पुनिबोलतभो दीन्ह्योमोहिं शापबेहाल।
उबरिनजैहौ तुमभारतते होइहौकालकौरसविलाल ३६
शापदेइकै असराजाको कीन्ह्यो भवनगवन तबनाग।
इतउतसैना फिरितत्परसै अर्जुन कर्ण होनरणलाग ३७
जलथलशायकपूरितकीन्हो भारतमध्यकीनघमसान।
धरो शरासनदोउहाथेमा बरसनलागबानकेघान ३८
भीमदुशासन कोसंगरइत औउतजिष्णुबीर रबिलाल।
धरिधरिधमकैंशरचोटनसों मानहुंलड़तजोड़दुइकाल ३९
खैंचि कमनियांभुजदंडनपर हिकराइटै शूरमन क्यार।
तकितकि मारैं बक्षस्थलमा झारैंगातअस्त्रकीधार ४०
लियोदुशासनकरधन्वाका धारण कीन तीव्र नाराच।
झपटिप्रहारोसोभिम्मापर फहरतचलेज्वालकीआंच ४१
चारिबाणसोंबाजिनमारो सारथिहन्योदूकोदरक्यार।
शतशरमारेभिम्माउरमा औरथकाटिमिलायोक्षार ४२
नोकफोकसों हन्यो वृकोदर ताड़ितकीनबाणकेघाय।
तबकोपानलभिम्माजाग्योलैकरगदाचल्योरणधाय ४३
सिंहकिगर्जनिसोंगरजतभो रहुरे दुशासन हुशियार।
मीचु आइगै तवखेतनमा भेजततोहिंआजयमद्वार ४४
भीम बिलोक्योदुःशासनने आवतचलोकालकोनाय।
संभरिशरासनकरधारतभो कीन्ह्योवेगिघातकेदायं ४५
खाली चोटैगइं शायककी लीन्होगदा दुशासनहाथ।
तौलौभिम्मादाखिलहोइगा दीन्हीचोटगदाकेसाथ ४६
उरझे योधा दोउ खेतनमा लागे गदा करनपरिहार।

गरजैंतरजैंनिजदावंनपर इतउतहनैंहांकिहाथयार ४७
अग्निकिज्वालादोउजागतभे एकतेएक दईके लाल ।
गदाछोंड़िदयोतबहाथनसों अरुझे मल्लयुद्धकेहाल ४८
शिरसोंशिरधरिहाथहाथसों गहिगहिप्रबलशीशकेबार
व्यथित पछारैंनापगटारैं मुष्टिकलातहाथपरिहार ४९
गात गातसों धरिझकझोरैं फोरैं शीश शीशके घात ।
मनः हिमालयऔकज्जलगिरिखेलतयुद्धएकहीसाथ ५०
पकरिजांघिया इकएकनकी धरणीपटकिपछारैंमारि ।
उठिउठि खेलैंपुनिक्रीड़ारण हियतेनेकनमानैंहारि ५१

स० । हाथ लंगोट गहैं रिसकै उरमुष्टिक चोट प्रहारत दोऊ ।
क्रीड़त युद्ध सपेंचनसों चपरास उड़ान उड़ावत सोऊ ॥
मुगुलाकिकला धरिपुस्तकपै हलखूनबिधूनतहैं शिरजोऊ ।
फेंटलपेटदुदस्त पटा करि धोबीपछाड़ पछाड़तकोऊ ५२
स० खखेलनकूलकलाजंगसोंबंधिकालकिफांसमेंफांसतदोऊ ।
कमचोधड़बाहिर एकटंगा करिबैठक भूमिदिखावतसोऊ ॥
बचुकाबंदबांधि भाड़ाकभिकैं करलुंगमहावति साजतसोऊ ।
गहि मेलत खेलतयुद्धघनो परहोयसोंहारिन मानतकोऊ ५३

प्रबल लड़ैता कमनैता दोउ खेलत मल्लयुद्धकरिदायं ।
हारिनमानै कोउकाहूसों मानहुमत्तद्विरदद्वुइआयं ५४
तेहीसमइयाकेअवसरमा अतिबलकियोपवनकेलाल ।
पटकिपछारोदुःशासनको औकरिदयोहालबेहाल ५५
गरजिकै बैठो चढ़ि छातीपर जैसे मृगा पछारै बाघ ।
अतिरिसभाष्योतेहिअवसरमा सुनुरे दुष्ट दुशासनघाघ
चीर द्रौपदी का खैंचतना अबका रह्योहियेचुपसाधि ।
पांसा खेलतअबकाहेना शिरपरराजमुकुटकोबांधि५७

लाउ द्रौपदी कचशिरकेगहि अबसब कहांगईमंशाय ।
करहु बीरता अबसंगरमा जोकछु बनैं युद्धकेदायं ५८
नकुल बोलायो तबअभिमाने बंधव लाउ द्रौपदीधाय ।
कह्यो संदेशा यहरानीते मारो भीम दुशासनराय ५९
पहुंच्योनकुलौतबमंदिरका कहिद्रौपदिहिबुझायोहाल ।
भीम पछारो दुःशासनका रानीचलौसमरउत्ताल ६०
भई द्रौपदी उरआनंद अति पहुंची बेगि खेतमहंजाय ।
सूरति देख्यो दुःशासनकै ऊपर बैठवृकोदरराय ६१
बिहंसिद्रौपदीतबबोलतिभैं धनितवभीमसेनअवतार ।
धनिधनिमाताकीकोषीका जाकेआनिभयेसुकुमार ६२
कारज कीन्हो तुमक्षत्रिनका मार्‌यो शत्रुसमरमैदान ।
मोरिप्रतिज्ञापूरणकीन्ह्योधनिधनिभीमसेनबलवान ६३
पुरबिराटके कीचकमारो तहंतुमराखिलीनिममलाज ।
तनमनवारौं तोरेजियरेपर कीन्होशूरपनेकोकाज ६४
कहंलग बरणौंपुरुषारथका धनितवभीमसेनबलबाहु ।
पांचौ बंधुनमें क्षत्रीपन कीन्हो तुमहिंएक उत्साहु ६५
परो दुशासन रणभूमीपर देखत दोऊ ओर बलवान ।
रूपभयंकर भोअभिम्माको गर्जो सिंहरूपबलवान ६६
औलेलकारोसबयोधनका सुनियोसकलसैन्यसरदार ।
जेतनेयोधा कुरुपांडवके रक्षकहोयदुशासनक्यार ६७
सोसन्मुखह्वै रणखेतनमा मोसनकरै आनिसंग्राम ।
अतिकर्ण औयादववंशी पारथसहितसारथीश्याम ६८
असुरनागनर गंध्रबकिन्नर औसुरलोकसहितसुरराज ।
जलथलबासीगिरिकंदरके जानत जौनयुद्धकोसाज ६९

सूर्य चंद्रमा लौसाखीहैं आंखी लखत सकलसंसार ।
मैंमारतहौं दुःशासनका कोऊ होय आनिरखवार ७०
भुजा उखारतहौं संगरबिच जेहिकरगह्यो द्रौपदीपाट ।
जोजगयोधाबलवंताहोय सन्मुखआनिकरैरणठाट ७१

स० । सैन सबै कुरुपांडव को सुनि बैन बिलोकत नैन लजावै ।
त्रयलोक सुरासुर थोकजहांलगि किन्नर नाग नरादि गनावै ॥
गिरिकन्दर अन्दर बासीतपो रविचन्द सुबन्दित जामनभावै ।
धारिशरासन संगरमो सो दुश्शासन मारत आनि बचावै ॥

बीर वृकोदर कीबानीसुनि अर्जुन जरोकोपकीज्वाल ।
आरतबोल्योतेहिसमयापर सुनियेदीनबंधुनंदलाल ७२
भीम संहारैं मैंसंगरमा करिहौं अवशिबाणकीघात ।
रहोनधीरजमोरेजियरेमास्वामीसहिनजायअसबात ७३
तबसमुझायो कहिश्रीपतिने सुनियेसखा हमारीबात ।
भीमकेधोखेतुमरहियोनायहिक्षिनयहन्रसिंहकोगात ७४
मैंबलदीन्हो नरकेहरिका पैहो नहीं भीमसों पार ।
मानुष देवनकै गिनतीना करिनासकैसमरकर्तार ७५
सबकेदेखत तेहिअवसरमा कीन्हो कोपभीमबिकरार ।
भुजाउखारयोदुःशासनकोदेखतसकलसैन्यसरदार ७६
रुधिर द्रौपदीके शिर डारो रानी हर्षि कीनअस्नान ।
केश शीशकेतबबांधतभै औसुखअंगअंगअधिकान ७७
असुर निपातन हित देवीजनु कीन्हो लालरंगश्रृंगार ।
कोकबिगावैद्रुपदसुताकै शिरसोंबहैरुधिरकीधार ७८
चली द्रौपदी तब मंदिरका जूझो दुश्शासन संग्राम ।
असुरयुद्धमहंजनुदेवीहोय आवतबिजयकरनकेकाम ७९

भयोअंदेशा कौरव पतिके जूझो धीरधुरंधर भाय।
शंका व्यापी सबसैनाके लागे युद्धकरनमनलाय ८०
इतरथहांक्यो यदुनंदनने उत रथशल्य बढ़ायोधाय।
दूनौ क्षत्री धरिधन्वाको लागे युद्धकरनमनलाय ८१

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासी वाजपेयि पं० रामरत्नस्यात्मजगामोस्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन दीक्षित निर्मित महा भारतभाषा कर्णपर्वदुशासन वधवर्णनोनामतृतीयोऽध्याय: ३ ॥

सुमिरि भवानीजगरानीको उरपदपद्मधारिअभिराम।
युद्ध मनोहर फिरिगावतहौं अर्जुन कर्णकेर संग्राम १
धरिधरि धन्वा दोउ हाथैमा बर्षन लगेबाणके जाल।
मानहुं पावसदल मेघनके बर्षत बुंदजालविकराल २
गगन घटासम स्यंदनघहरैं सौदामिनीछटाहथियार।
श्वेत पताकाबकपांतीहैं बोलत शूर शिखीललकार ३
छाईअंधेरिया सबलश्करमा इतउतसूझिपरैनहिंराह।
मारुमारु सुरसबदिशिछावैं पावत नाहिंयुद्धकीथाह ४
अतिरिसव्याप्यो रविनंदनतब धारेधनुष मध्यशरपांच।
शेषनागसमशायक दौरे ज्वालाज्वलितअग्निकीआंच ५
केतनेउं क्षत्री घायल कीन्हो सहरथभंजिदीनसरदार।
पारनपावैं कोउकाहूसों दोउदिशिमारु २ ललकार ६
रुण्डन मुण्डन बसुधातोपी लोपेसमर क्षारसों भान।
तेही समइया के अवसरमा अर्जुन हन्योकर्णउरबान ७
सहसपैगरथ धरिटारतभो मारत ताकि २ बलवान।
तब धनुधारो रविनंदनने मारो नंदिघोष महं बान ८

पैगबढ़ाई रथ टारतभो भाष्यो धन्य २ नंद लाल ।
साधु शूरिमा रविनंदन है पाछे हट्योमोररथहालि ९
दोउकर जोरे अर्जुन बोले सुनिये कृष्णचंद्र भगवान ।
साधु सराह्योरविनंदन का हमसनकहौभेदसोंज्ञान १०
श्रीपतिभाष्यो तब अर्जुनसों करियेसखाबचनपरमान ।
मेरुबराबरि तुवस्यंदन है सोहतध्वजामध्यहनुमान ११
मैं तव सारथिरथ हांकतहौं लीन्हे विश्वभरे को भार ।
सोरथटारो रविनंदनने है यह शूरबीर सरदार १२
समाधानकरिइमिअर्जुनको पुनिरथहांकिबढ़ायोश्याम ।
कर्ण सुधारोफिरि धन्वाका दैशरनोकफोंकअभिराम १३
हन्योधनंजयउर शायक तब औहरिअंगहन्योशतबान ।
अरुणरंगपीतांबरकीन्हो औहनिसहसबाणहनुमान १४
झांझरकीन्हो तनअर्जुनका अतिबलबीरभानुकोलाल
कोपित अर्जुनभोजियरेमा तबसंधानकीन शरजाल १५
अंगअंगसों कर्णहिं बेध्यो औशर सहसशल्य केगात ।
बाणजालसोंस्यंदनलोप्यो घायलशूरबीरअकुलात १६
लालरंग सब क्षत्री कीन्हे अंगनबहै रुधिर की धार ।
मानहुंमाधवऋतुअवसरमा विकसींअरुणकिंशुकीडार
तब ललकारो रविनंदनने पारथ होहु आज हुशियार ।
यमके द्वारे तोहिंभेजतहौं रक्षा करैं कोटि कर्तार १८
नीलेशायक करमालीन्ह्यो धनुगुन बेगि कीन संधान ।
जो शरदीन्हो दुर्बासाने दुस्तरधरी अग्निकीसान १९
पुनि समुझायोयदुनंदनका सुनियेबिनय कृष्णभगवान।
कीजै रक्षाअब पारथ की लैहौंएक बानसों प्रान २०

शल्य प्रबोध्यो रविनंदनको सुनिये कर्णवीर बलवान ।
जाकेरक्षकहैंत्रिभुवनपति सोकिमिहोयसमरबिनप्रान
कियो प्रतिज्ञा तुमऐसी है अर्जुन हनौं एकही बान ।
यहैप्रतिज्ञाउरमारारख्यो अबनाकिह्योबानसंधान २२
सुनिअसबातैंनिजसारथिकी सुमिरोकर्णशारदामाय ।
शायकमारोतबअर्जुनको कोकबिकहैतासुछबिगाय २३
जेहिक्षनशायकधनुतेछूट्यो कीन्होदशौंदिशापरकाश ।
ब्योमकिरस्ताकैधावत भो मानहुंइन्द्रबज्रकोभाश २४
आवत दीख्योशर अर्जुनने कितने हने बाणके घान ।
भयोनिवारणशरतबहूंनासन्मुखआयबेगिनियरान २५
हृदय बिचारो यदुनंदनने पारथप्रान बानसों जात ।
अधतलदाब्योहरिस्यंदनको शायककियोमुकुटकोघात
मुकुटकाटि शरधरणीबेध्यो अर्जुनराखिलीनभगवान ।
धन्यधन्यकहिसुरगणभाषैं धनि२पांडुपुत्रबलवान २७
जिनकेरक्षकहवैंत्रिभुवनपति सारथिभयेभक्तहितआय ।
तिन्हैंमारिबेकोसमरथको कबहुंकबारुनबांकोजाय २८
आरत बाचा सुनिकुंजर को राख्योधायपियादेपायँ ।
लज्जाराख्योजिनद्रुपदोकै कौरवसभामवस्त्रबढ़ाय २९
तेरखवारेहैं पांडव के काहेन बिजय होय संग्राम ।
फेरिबढ़ायोरथराधापति अर्जुनधरोधनुषअभिराम ३०
झुरमुट परिगै दोउ शूरनते एकतेएक दई के लाल ।
कोकबिबरणैं तिनशूरनकै संगरकरत मनहुंदुइकाल ३१
शरके जालनसोंरणतोपेउ श्रावणयथाबुंद घमसान ।
उड़ें पखेरूना अंबरमा छोपे समर क्षारसोंभान ३२

अगणित क्षत्री धरणीगिरिगे इतउतरुंडमुंडबिललाय्ँ ।
जौन शूरमा सन्मुख जूझैं तिनकाइन्द्र परोलैजायँ ३३
पंथनपावतकहुं स्यंदन का हयरथहांकि २ अकुलान ।
शल्यसारथी रविनंदनका सारथिजिष्णुकेरभगवान ३४
गरजत चाके नंदिघोषके ऊपर हिलैं पताका श्याम ।
पवनबेगसों उड़ैंबछेड़ा क्रीड़त युद्ध बिजय केकाम ३५
कर्ण धनंजयकोरणमानहुं रावण राम केर संग्राम ।
अगणितयोधारणमाजूझे कायरभागिगयेनिजधाम ३६
खलभलिपरिगै नभदेवनके भागे त्यागि २ कै यान ।
कठिनलड़ाई महभारतकी जहंसूझैनाअपनबिरान ३७
कर्ण बुझायो तब सारथिको सुनिये शल्यहमारीबात ।
चाकनलागैरथधरतीपर यहिविधिरचौयुक्तिनुमतात ३८
जादिन सैनालैकौरव की बेड्यो पुरविराट के गाय ।
गाय अहीरनकी बैठीतहंसहदेवने असरच्यो उपाय ३९
खुरदैबांध्यो सबगउअनके थाक्यो हांकि २ मैं मारि ।
भूमिनछांड़यो तहंगउअननेसबविधिगयोहियेतेहारि ४०
धेनुमैथुनीयकतहंनारहै करिरिसदियोमोहित्यहिंशाप ।
अविचलदेहीजसमेरीभइ तेहिविधिजायतोररथथाप ४१
कबहुंक चाका धरणी अटकैं फिरिनाबनैं युद्धकीघात ।
तेहितेतुमकासमुझावतहैंहांकियुक्तिसहितरथतात ४२
शल्य सारथीअसगतिकीन्हों धरणीछुवननपावतचाक ।
देव अस्त्रदोउक्षत्री बरसैं मानहुंअग्निज्वालपरिपाक ४३
धरि२ गरजैंरथ ऊपरते इकपल करत नाहिं विश्राम ।
धरे कमनियां शायक बरसैं माच्योघोरघोरसंग्राम ४४

समर पदातीलाखन जूझेकटि २ रुण्डमुण्ड अल्गान ।
कटि असवारन केहलकागे लागेगजनकेरखरिहान ४५
दन्त अनन्तन धरतीपाटे कहुं २ गिरे भुशुण्डा जाय ।
उड़ैंचकत्ताभटपत्ता से जिनके लगैं करेजे घाय ४६
गिरैं बछेड़ा कटिभेंड़ा से रथमिलि जातधराकी क्षार ।
उड़ेपताका आसमानमा जनुतारन कीलगीकतार ४७
नदी भयंकर हहकाराकरि धारा शोणितबहै अपार ।
रुण्डपलोटैं जहंकच्छप से हाथी मनौंमगरघरियार ४८
मज्जादरशै जल फेनामा लहरिन परे चमकैं बान ।
लगे कगाराजहंहाथिन के बख्तरमनौंमच्छउतरान ४९
ढालैं गिरिगइं रजपूतन की मानौं ग्राहरहे उतराय ।
फरी बिराजैं नदिधारामा पुरइनि पत्ररहेजनुछाय ५०
मुंडबिलोकतकससरितामा मानौंकमलफूलविकसान ।
परी जंजीरैंगजपायन की मनुकेवटनजालदियोतान ५१
स्यंदन झलकैं मंझधारामा जससागरमा चलैंजहाज ।
काकपताकामाउड़ि बैठं औ गीधनकीलागिसमाज ५२
लिये चुरैलैं मदमाते ह्वै करिरहे भूत प्रेत अस्नान ।
मालापहिरेनरमुण्डनकी लोहू करतयोगिनी पान ५३
इकइककरमा खप्पर राजैं इककर मास करैंआहार ।
धाये जंबुक चौंगिर्दाते कीन्हे महाघोर ललकार ५४
चढ़े नांदिया शंकर डोलैं कीन्हे महाभयंकर साज ।
मालकपालनकी उरराजैं शृङ्गीनाद केरि आवाज ५५
नचैंकालिका करतालनदै कीन्हेकाल रूप बिकराल ।
उड़ैंकबंधा अंधधुंध ह्वै औ गंधर्व बजावैं ताल ५६

हृदयलपेटे नरआंतनका मानौकिये पखाउज साज ।
अति अरुणारे नैना दरशैं मानौउदै भये दिनराज ५७
यहिबिधिकौतुकभारतरणका शोभाकहंलगकरैंबखान ।
जहंछबिलागीअरुणशानकीह्वैरहेबानघानघमसान ५८

क० । नाचतयोगिनि वृन्दलिये बहुप्रेतपिशाच बजावतबाजे ।
जंबुक काग कथैं करषा बरषा करि शूर रहे शर साजे ॥
शोणितधार अपार नदी उमड़ाय रही हहकारन गाजे ।
देखिदशा रण भारतकी नरकायर प्राण बचायके भाजे ५९

निज२देउतनकोसुमिरणकरि अर्जुनकर्णधरोधनुबान ।
हांकिप्रचारो इकएकन का कीन्ह्यो अस्त्रशस्त्रसंधान६०
अगिनिकि ज्वालासमनैनाभे मुखपर रहोतमतमाछाय ।
बहैंपनारातनशोणितके सन्मुखलगेकरननरनदाय ६१
सजगसारथिनस्यंदनहांके थाकेअतिबलनबलबछ्यार ।
धरिफुफकारैंशरझारैंलखि हारैं बिनालरेसरदार ६२
आनिभरोसाउर दिनकरका लीन्होकर्णहाथ धनुबान।
कोपिततावयोरथ अर्जुनका मारेअमितबान संधान६३
व्यथितबछेड़ा करिस्यदनके घायलकियोकृश्नभगवान।
लख्यो पताकाबिचबांकाभट अंजनिपूतबीरहनुमान६४
तीव्र शायकनसों बेधतभो लोप्योनंदिघोष शर झार ।
अमर तमाशानभदेखत हैं अबधौंकाहकरैं कर्तार ६५
शूरहजारन शरझारनसों कीन्होउदरबिदारन ज्वान ।
कालकलेवाकेतनेउंहोइगे जिनतनलगेबानकेघान६६
आरत सैना सब पांडवकै मारततांकि २ रबिलाल ।
फारतकल्लाशरहल्लाकरि मल्लनकियोहालबेहाल६७
दुखित बिलोक्योनिजसैनाको पारथसखासांबरेक्यार ।

खैंचिशरासनगुनकाननलग दीन्होतीव्रवाणकोमार ६८
तकिवक्षस्थल रविनंदन का दीन्होछांड़िनराचनजाल ।
अम्बपवारेनभतारेसे जिनकी पवन वेगकी चाल ६९
डरो करेजो तब सारथि का घायलभयोशल्यसरदार ।
चकितपुरन्दरइन्द्रासनमा इनकेहियरीलीनअवतार ७०
जसजल धारा पावसबर्षैं सरसैं तथाशस्त्र बलवान ।
नामुखमोरैं कोउ काहूते चहुंदिशि अंधधुंधघमसान ७१
जनु ग्रह तारानभते टूटैं लूटैं दानव यथा बजार ।
तिमिशर झारन योधा जूझैं फूटैंकरपगपेटकपार ७२
शब्द सुनावैं रविमंडलते सुरगण बचन कहैंविकराल ।
पारथ योधा जगयशपैहै मरिहै एकवाणरविलाल ७३
होत अचंभव असवाणी सुनि कौरवसैन्यसनाकाखाय ।
काह विधाताकै मर्जी है रणगतिकछु जानिनाजाय ७४
असरणराचोकहुक्षत्रीना जसरणकियोजिष्णुरविलाल ।
जर्जर देहीभै घायनसों अंगनह्वैगेहाल बिहाल ७५
शल्य सारथीरविनंदनको पारथ सखासारथी श्याम ।
युक्ति उक्तिसों रथहांकतहैं अपनेशूरबिजयकेकाम ७६
जाहिर करणी रणभिम्माको धरणीलोटिरहेबलवान ।
हाथीऊपर हाथी पटकै औअश्वन परअश्वनिदान ७७
रथकेऊपर रथधरि पटकै चारिउचक्र चूरह्वै जायं ।
रुंडधड़ाकाकरि रुंडन पर पटकै मुंड तड़ाका धाय ७८
पकरिपदातिनके पायंनको अतिरिसफेंकिदेतआकाश ।
चरणप्रहारनकेतनेउमारे केतनेउंकियेगदासोंनाश ७९
कौनौं मर्दा भुविगर्दामा पर्दा फटो करेजे क्यार ।

बाजचिरैयनजसधरिझपटैतेहिविधिभीमहनैसरदार ८०
बंधु संहारे दुर्योधनके ते रणपरे जरे शर ज्वाल।
कियो दुर्दशा असभिम्माने कौरव सैन्यभई बेहाल ८१
तबरबिनंदन धनुधारण कै छांड़े तीब्र हजारन बान।
ताड़ितकीन्होउरअर्जुनको रक्षकभयेकृष्णभगवान ८२
बच्योदुलरुवा रे कुन्तीका तबयहकहोवचननंदलाल।
काहबिचारेमनपारथ तैं धरिधनुकरियकर्णबेहाल ८३
सुमिरुआपनो प्रणअर्जुनतैं क्षणमाकरहुकर्णकोनाश।
तेहीसमइयाके अवसरमा कीन्होकर्णयुद्धपरकाश ८४
हाथसंभारोधनुशायकको नायकप्रबलकौरवनक्यार।
तकिवक्षस्थल रथपारथको कीन्होअमितबाण परिहार
चलैंनघोड़ा रबिनंदनके थाक्यो हांकि शल्य सरदार।
अटकोस्यंदनरणसन्मुखमा होनीकौनमिटावनहार८६
औरौ कोप्यो भानुपुत्र तब कीन्हो हियेमंत्र दृढ़ठान।
नंदिघोषरथअवलोकनकरि कीन्होबाणघानघमसान८७
सहसबाणसों अश्वनमारो थाकेनंदिघोष के बाजि।
देखिबीरता दिनकरसुतकी सुरपतिरहेहियेमेंलाजि८८
असोबाणसोंकपिपतिबेध्योकीन्होब्यथितकृष्णभगवान।
तीनिबाणसोंपारथमारो उरजरिरहोकोपकीसान ८६
अवसरनिरख्योनंदनंदनतब दीन्हास्यंदनबाजिबढ़ाय।
चाककुलालीजसघूमतहै तसगतिकियोनाथयदुराय६०
रबिसुतबरसैशरचारिउदिशि पावसयथाबुंदजलधार।
जेहिदिशिधावैरथअर्जुनकोतेहिदिशिकर्णकरैशरझार६१
शरझरिछायो रथअर्जुनको जहं सूझैना अपनबिरान।

तेहीसमइयाके अवसरमा अर्जुनकीनधनुषसंधान ६२
चंचलशायकधनुगुनजोरो कीन्हाप्रबल पाणिपरिहार ।
काट्योधन्वा रविनंदनका कै शतखंडमिलायोक्षार ६३
चलै नस्यंदन रबिनंदनको छूटत नहीं भूमितेचाक ।
हांकिबद्धेड़ासारथिथाक्यो रिससोंभयोकर्णपरिपाक ६४
छांड़ो स्यंदन रबिनंदन तब धरती कूदिपरो बलवान ।
बचनसुनायोतबपारथको सारथिकृष्णचंद्रभगवान ६५
करुअब धन्वा धारण करमा करिये बेगिकर्णकोनाश ।
फिरिअसऔसरतुमपैहौना करियेबीरबचनबिश्वास६६
शारंगपानी कीबानी सुनि पारथ सखाकह्योसमुझाय ।
बलअसभाषोनाक्षत्रिनको सुनियेदीनबंधुयदुराय ६७
कछु मंसैया ना योधाकै जोबिन शस्त्र हनै सरदार ।
उचित लड़ाईयहनाहींहै नाहिनकर्णहाथहथियार ६८
यहिबिधि कर्णैमैंमरिहौंना स्वामी अयश होयसंसार ।
सन्मुखमारौंरबिनंदनका करिरणघोरशोरललकार६९
सुनिअसबानीहरिपारथकी पुनिसमुझायकह्योअसबात
चक्रव्यूहमहं अभिमनु मारो तबइनकियो धर्मनहिंतात
छलकरिघेरो सुतअभिमनुका द्रोणाद्रोण कर्णबलवान ।
धर्मबिचारो कोउ क्षत्रीना मारो बालपुत्र नादान १
धर्मबिचारौतुम का रणमा कीजै समयसरिस सबकाज ।
धर्म बिचारौ जोपारथतुम तौभारथ रण होयअकाज २
जोशर कुन्ती तुमका दीन्हे धारणकरौसखासोइबान ।
शीशबिदारौ रबिनंदनका मानिय तात बात परमान ३
गहरु नलावो यहिअवसरमा पइहौ फेरिनहींअसघात ।

सुनिअसभाषणजगतारणको अर्जुन कीन्होबाणनिपात
धरिलेलकारो रविनंदनको होहुशियार भानुके लाल ।
मृत्युआयगइतवसंगरमा भक्षणकियोचहतअबकाल ५
छूटो शायक तब धन्वाते लाग्यो कर्ण हिये सोबान ।
घायल गिरिगो तबधरतीमा मानौइन्द्रबज्रअनुमान ६
शीशबिदारोदिनकरसुतको कौरवसैन्यखल्योयहहाल ।
परीसनाका सबक्षत्रिनके हाहाकार भयो बिकराल ७
सन्मुख जूझो रणकरणी करि देवतापुष्परहेबरसाय ।
साजिबिमानहिंबिष्णुपार्षद दीन्होंबिष्णुधामपहुंचाय ८

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मखवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षितनिर्मित महाभारत भाषा कर्ण पर्व कर्णवधवर्णनोनाम
चतुर्थोध्याय: ४ ।

गिरिजानंदनको बंदनकरि बहुबिधिध्यायशारदामाय ।
निजमतिभाषितअभिलाषितयहभारतयुद्धकहौंफिरिगाय
नायक जूझो दुर्योधनको अतिबलवान भानुकोलाल ।
बिजयबिराजी करपारथके कीन्होशंखनादनंदलाल २
धन्य प्रशंस्यो सबअर्जुनको पारथ सखासांवरेक्यार ।
धनिधनिकुन्तीकीकुक्षोको धनिजेहिघरोभयोअवतार ३
सुरपतिशासनलहिदेउतागण नभते फूलरहेबरसाय ।
कंठ लगायो मधुसूदनने हर्षित मिले युधिष्ठिरराय ४
सगरी सैना महराजाकै हर्षित भये सकल सरदार ।
बजेनगारा पांडव दलमा लागी होन शंख धुधकार ५
होत निछावरिरे पारथके भुजबल पूजें कृष्णभगवान ।

अथेअयाचकसबयाचकगण विप्रनकियो वेदकोगान ६
तेहीसमइयाके अवसरमा संध्याकाल आइनगिचान ।
माह बन्दमै दूनौं दलमा अस्ता चलै पहूंचे भान ७
सैना लौटी रण भूमीते चढ़ि २ चले छैल सरदार ।
खालीस्यन्दनरविनंदनका हांक्योशल्यखायधिरकार ८
कौरव सैना रथदेखतभै जूझो अवशि भानु कोलाल ।
परो सनाका दुर्योधनके जूझो कर्ण बीर बलशाल ६
आरत बिलखै तबकौरवपति पटकै माथहाथपछिताय ।
अतिबलकर्णरणमाजूझो अबकोकरिहैमोरिसहाय १०
धनिधनियोधा कर्णकहिये सन्मुख समरगंवायोप्रान ।
चलिभेलस्करदोउखेतनते निजनिजभवनपहूंचेज्वान ११
श्रीपति भाष्यो तब अर्जुनते सुनिये सखाहमारीबात ।
अकिलेकर्णतुममारयोना छाजनमिलिकैकियोनिपात १२
सुनिअसबानी नंदनंदनकी बंदन कीनजिश्नुदोउपायं ।
हालहमारोकछुजानोना मोसनकहोनाथसमुझाय १३
बाचाछल करि सुरपतिमारो कुंडल कवंचलीनलैदान ।
शापितकीन्होभृगुनायकने कुन्तीकियोयाचनावान १४
तुमहमबसुधाछहजनहोइगे पारथबचन करौपरमान ।
फेरिनिहोरोबहु पारथने सुनिये दीनबंधु भगवान १५
हालबतावोयहहमसोंकहि भृगुपतिशापदीनकेहिकाज
सुनिअसबाचाकुन्तीसुतकै भाषणकियोफेरिब्रजराज १६
कथा पुरातन मैंभाषतहौं पारथ सुनौबचनमनलाय ।
यकदिनरबिसुतभृगुनायकढिग धरि द्विजवेष पहूंचेजाय
मुंजमेखला कटिमा बांधे मृगमद तिलकरमायेमाथ ।

लसैजनेऊ शुभकांधेमा कीन्हौविनयजोरियुगहाथ १८
बेष ब्राह्मण कर्णै देख्यो पूंछो सर्व हाल भृगुनाथ ।
केहिकुलउतपतिहैराउरकी आयोकौनकाजकहुगाथ १६
तबरबिनंदन असभाषतभो सुनिये बचनमोरभृगुराज ।
बिप्रबंशमा ममउतपतिहै आयों यहां पढ़नकेकाज २०
करौअनुग्रह म्वहिंबालकपर बिद्या दानदेहु मुनिराय ।
सुनिअसबानी रबिनंदनकी तबभृगुनाथ कह्योसमुझाय
जोमनभावै सोबिद्यापढ़ु सबबिधि तोहिंपढ़ावहुंबाल ।
तबधनुबिद्यारबिसुतसीख्योभृगुपतिकियोबहुतप्रतिपाल
एक दिनौनाकी बातैहैं चौदशितिथिहिजानिमुनिराज ।
धनुषबाणलै तबहाथेमा गेअस्नान करनके काज २३
पाछे गमने मुनिनायकके लैकर खरी तेल रबिलाल ।
तहँयककौतुकअवलोकतभो लागेपुष्पकदंबनजाल २४
शारंगसाध्यो परशुरामतहं मारो एक फूल महंबान ।
कटिसोआधोधरतीगिरिगो मुनिचलिगयेकरनअस्नान
आधेफूलहि रबिनंदनलखि अपने मनै कीनअनुमान ।
आधे फूलै मैं हनिमारौं पैअसमंजस एक निदान २६
खरीछुआवों जोधरतीमा होवै अवशि अशुचिभोगात ।
दोषीहोइहौंयहिकारणते केहिबिधिकरौंपुष्पकीघात २७
कनक कटोरा तब उछलायो लैधनुगुनहिंजोरिकैबान ।
पुष्प निपात्यो करबायेंसों दहिनेकरै कटोरातानि २८
पुनिचलिआयोभृगुनायकढिगमुनिलहिखरीकीनअस्नान
करणौंहनवनजलमाकीन्हौपुनिचलिभयेभवनदोउज्वान
कदमके नीचे भृगुपतिआये देख्योफूललागनहिंडार ।

तबयहभाष्योवहिसमयापरमोसमकौनभयोधनुधार ३०
आधे फूलहि मैंकाटोरहे आधो कौन काटिगो ज्वान ।
तबयहभाष्यो रविनंदनने सुनिये दीनबंधुभगवान ३१
आधे फूलहि मैं काटोरहै सुनिअस खुशीभयेमुनिराय ।
भयोदक्षयहधनुविद्यामा यहकहिगयेभवनसुखपाय ३२
कछुदिनबीतेयहिअंतरमा इकदिनभयोनयोअसहाल ।
आलसव्यापितमुनिनायकभे निद्राआयगईतत्काल ३३
शयन सवांरोभृगुनायकतब धरिकै कर्णजंघपरमाथ ।
तहांअनोखोयककौतुकभो पारथसुनौयथारथगाथ ३४
कौरनकेरो यक राजारहै जाको बज्रकीट असनाम ।
रविसुतजंघापर आवतभो मुनिकेजटारहैजेहिधाम ३५
जंघा छेद्यो रविनंदनकै तासों चली रुधिर कीधार ।
सोमुनिअंगनमाव्यापितभो दीन्ह्योचैंकिखोलिचषतार
औअनुमान्यो असजियरेमा लाग्यो बज्रकीटयहिजांघ ।
पैनाचैंकयो यहुहिरदयमा हैयहु बड़ोबीरबलबाघ ३७
तबमुनिपूंछो रविनंदनते कहुरे शिष्य कौनतैं जाति ।
बिप्र बतायो तैंअपनाका हैतूक्षत्रि वंश उतपाति ३८
छलकरि विद्या तैंसीखेहै कामब विद्या कैरौबिनाश ।
पैयकबाचामैंभाषतहैं। निश्चयकियेबचनबिश्वास ३६
हैंबरशापौ द्वौएकै संग दीन्ह्यों पांच बाण तोहिंदान ।
जौलौरहिहैं तवहाथेमा जीतिनसकैंसमरभगवान ४०
जबशर जैहैं रिपु हाथेमा तबहीं होय तुम्हारो काल ।
शापितरबिसुतयहिकारणते पारथसत्यमानियेहाल ४१
सुनिअसबानीजगतारणको भाषणकियोयुधिष्ठिरराय ।

मयोअदेशा मेरेजियरेमा सोयहुरायदेहुसमुझाय ४२
विद्यादीन्हों विप्रजानि कै क्षत्री जानि दियो क्योंशाप।
सुनिअसशंकाधर्मराजकी बोलेकृष्णचन्द्रप्रभुआप ४३
यहूतेपाछिलियक गाथाहै सुनिये भूप युधिष्ठिर राय।
हालबतावों सब आगेका भीषमपरशुरामयशगाय ४४
अस्त्रपरीक्षाभीषमसीख्यो भृगुपतिनिकटजायसबिधान।
क्षत्री कुलमा भीषमजनमें करियेबाततातपरमान ४५
कियोधनुर्द्धरमुनिवरनिजसम कीन्होसबप्रकारसत्कार।
लैधनुविद्या भीष्मपितामह अपनेरहेआयआगार ४६
यकदिनजननीअसभाषतभै सुनुसुतधीरबीर बलवान।
रच्योस्वयंबर है काशीपति करिहैभूपकन्यकादान ४७
बड़े २ राजातहंपर अइहैं सुनिकैनृपति स्वयंबर साज।
तुम धनुधारीमोरेबालकहौ लावोजीतिसुतानरराज ४८
बंधु बिवाहौलै कन्यनका इतना कहा मानिलै स्वार।
सुनिअनुशासनअसमाताको भीषमभयेबेगितय्यार ४९
लियो शरासन शर हाथेमा औमाताके परवारे पायं।
कियोमहूरततबकाशीका लीन्योसंगलायदोउभाय ५०
जहां स्वयंबररे राजा का पहुंचेभीष्मपितामह जाय।
कहै स्वयंबरकी शोभाको विरच्यो राजछटासोंछाय ५१
वृंदविराजे मह राजन के कंचन धाम बने अभिराम।
मर्कतमणिकीलगीझालरैं मानहुंकियोकामइतमाम ५२
रचेकतारन बंदनवारन निमने कंचनमंचविशाल।
ज्योतिजुन्हैयाकीजगमगहूवैखंभनजड़ेजवाहिरलाल ५३
सुयशबखानैं जहंबंदीजन मागध रहेबंश गुणगाय।

कन्यनशोभाकहिबरणौंको सुरअंगनारहींललचाय ५४
अंबेअंबाओ अंबाली निकसीं राज साज के साथ ।
लसैंआभरनतन सोने के औ जयमालबिराजैंहाथ ५५
रूपअनूपमभूपन दीख्यो कीन्होमिलनआशसहुलास ।
जहंपर बैठे राजा भीषम आईं सुतानहीं तिनपास ५६
भयेपितामहअतिक्रोधितमन तबहिरदयमहंलीनबिचारि
पकरिकै बहियांरे कन्यनकै अपनेरथैलीन बैठारि ५७
दूनो मैथन सहगवनतभे तबसबभिरे आनि भूपाल ।
युद्धअरंभ्योतहंनीकीविधि भीषमकियोयुद्धविकराल ५८
जीते योधा सब संगरमा लज्जित भयेबीर बलवान ।
आयपहूंचे गृहभीषमजब औमातासोंकियोबखान ५९
चित्रबाजसों अंबाब्याहो चित्रांगदहि अंबिकासाथ ।
दियोकुमारी द्वैकुवंरनका अंबालिकारहीबिननाथ ६०
सो यहभाषतभै भीषमसों हमसनकरोआपनो ब्याह ।
वाहि अनादरभीषमकीन्हो मोकोनहींत्रियाकीचाह६१
जो तुवइच्छा है स्वामीकी तौचलिजाहुशैलके पास ।
सुनिअसकन्यातहंगवनतभै औसबचरितकीनपरकास
शैल बुझायो तबकन्याका कोउनकरै ब्याहतुवसाथ।
तब चलिआईसोतहंवांका जहंपरबसतरहैंभृगुनाथ ६३
हालबतायो भृगु नायकते सुनिये दीनबंधुमुनिनाह ।
मोहिंपितामहहरिलायेहैं अबनाकरैंआपनोब्याह ६४
तबकन्यालै भृगुपति गमने आये भीष्मपितामहपास ।
दरशनकीन्होंमुनिनायकके भीषमचरणगह्यो सहुलास
तब समुझायो भृगुनायकने भीषम बचनकरौविश्वास ।

ब्याहौकन्या तुमअपनेसंग केवलसुतैतुम्हारो आश ६६
विनय सुनायोतब भीषमने सुनिये वचनमोरमुनिनाथ ।
नारी संगममैं करिहौंना हारोवचन पिताके साथ ६७
सुनिअसक्रोधितभृगुनायकभे औभीषमहिंदीनधिरकार ।
गरबकोअंकुरतबउरजाम्यो भीषमहाथशरासनधार६८
क्रोध आइगातब भीषम के दोऊ बीर गह्यो मैदान ।
युद्ध अरंभ्यो तेहिसमयामा लागे परनबान केघान६६
गुरूशिष्यते सरबरि परिगै चौविसदिवसभयो संग्राम।
नामुख मोरैकोउ काहूते अपने युद्धविजयके काम ७०
असगतिदेखत गुरुचेला कै देवनआयकीन विश्राम।
समाधान भो तब दूनौंका मुनिवरगये आपनेधाम७१
कन्या भाष्यो असभीषमते कीन्हो मोरबचन विश्वास।
चिताबनैहौं मैंगंगातट करिहौंअग्निमध्यतननाश ७२
शापपितामहतुमकादीन्हों इहिविधिजैहैंप्रानतुम्हार ।
जन्मशिखंडी काधरिहौं मैं क्षत्रीबंशलेहौंअवतार ७३
भारतरणमातुमकामरिहौं असकहिकीनसुतातननाश।
सोई शिखंडी भीषम मारो भीषमपर्व कथापरकाश ७४
तेहिक्षनभृगुपतिप्रणकीन्होरहैभासनलरो भीष्मबलवान
क्षत्रिहिविद्याअबदेहौंना निश्चयकियोबचनपरमान७५
तेहिहितशापितकर्णौ कीन्हो सुनिये धर्मराजमहराज।
चरण पखारेतबधर्मजने सांचो कह्योदीनशिरताज ७६
तुव पदपंकज कीदायासों अर्जुन जीति लीनरबिलाल।
भक्तसहायकतुमसांचेहो सबविधिकरौमोरप्रतिपाल ७७
खबरि पहूंची रनिवासेमा अर्जुनविजयकीन मैदान ।

कुंतीमाता आरतिसाजै पूजै भुजासहित भगवान ७८
द्रव्य लुटायो बहुबिप्रन को याचक वृन्दकीनसत्कार।
अनंदबधैया भै महलनमा सखियांकरैं मंगलाचार ७९
धेनु पुजावैं रे बिप्रन को भरि २ कनकथार दैदान
अर्चन कीन्हो नंदनंदन को रक्षकभक्तकेरभगवान ८०
भारत भाषा अभिलाषासों पूरण भयो युद्धइतमाम ।
मति समगायोरणगाथा को पारथकर्णकेरसंग्राम ८१
सुनैं सुनावैं औगावैंजो धरिचितज्ञान ध्यान लवलाय ।
ह्वांहिंमनोरथपरिपूरणसब कलिमलसकलदूरिह्वैजाय
जोकोउसज्जन अवलोकनकै पढ़िहैंयाहिसहितसुखसाध
भूलसुधरिहैं सोगावतमा करिहैंक्षमामोरअपराध ८३
बाजपेयि कुलकमलदिवाकर पंडितरामरत्नसिधिधाम ।
तिनकोशासनलैनिजमतिसम गायोंकर्णपर्वसंग्राम ८४

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन दीक्षित निर्मित महाभारत भाषा कर्णपर्वकर्ण बधशापवर्णनोनामपंचमोऽध्याय: ५ ॥

कवित्त ॥

सुरसरि तीरदिशि उत्तरप्रसिद्ध बहुग्राम मसवासी कासीसरिसस्वहायोहै ।
चारिबर्ण बसत लसत तह धाममम बंदीदीन नाम द्विज बंशवरजायोहै ॥
बाजपेयि बंशहंस सुन्दर प्रशंसयश श्रीराम रत्नको निदेश वेश पायोहै।
श्रुतियुग नंदचंद पौषशुदिपंचमी को भारत सुसर्व कर्णपर्व यहगायोहै ॥

दोहा ॥

श्रीदीक्षित कुलकमलबर रामदीन असनाम । ममप्रपितामह बसतजे मसवासीशुभग्राम ॥ तनययुगलतिनकेभयेगुणगण परमप्रबीन । जेठेभागू-

लालपुनि लघुसुतचंद्रीदीन ॥ बैयाकरणिनमध्य महं भये अग्र गणनीय । वैद्यक ज्योतिष आदिदै बशकरि राख्यो होय ॥ सुकुलबंश अवतंस शुभ पंडित रामप्रसाद । षटकाब्यादिपढ़ायजिन दियो परम अहलाद ॥ बंश प्रशंसकतिनकियो सबबिधसोंउजियार । चालिस बर्षकिआयुमहं लह्यो स्वर्गअधिकार ॥ जेठगनायों प्रथमजे पितु मम भागूलाल । सर्बबिधि सेवक द्विजनके भेतिनके युग बाल ॥ जेठेभ्राता मोर शुभ सुमति भिषारीलाल । नाम मोर है बिदित शुभ पुस्तक मध्यरसाल ॥ तिरपाठी कुलकुमुद शशि शिवनारायणनाम । न्याय ब्याकरण काब्यपटबक्ताअति अभराम॥बुधिरासी बासीतेऊ शुभ मसवासी ग्राम । गुरुमोर ते जानिये सकलसिद्धिकेधाम ॥ अतिमुदसहित पढ़ायतिन कियोमोहिंपरवीन । पदप्रसाद जिनकेरचेहुंछंद प्रबंध नबीन ॥ भारतभाषाकहेहुयह भरतखंड धरिनाम । लोक रिझावन हरिभजनएकपंथ द्वैकाम ॥ सन्त सुजनजनपढ़हिंयहिपूरणकरि सुखसाध । कहुंअशुद्ध लखि शुद्धकरि चमहिं मोरअपराध ॥

इति कर्णपर्ब समाप्तम् ॥

अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड

शल्यपर्वप्रारम्भः ॥

सुमिरण

चरण मनैये गुरुनायकके जिनकी दयाहोतशुभज्ञान ।
भारत भाषा शल्यपर्बकहि गावों युद्धखंड सामान १
सतयुग बंदौं नारायणको जिनसें भये चारिअवतार ।
मच्छकच्छ औश्रीनरहरिभये औबाराह रूपकर्तार २
मच्छ रूपसों वेद उबारे कीन्हो शंख दैत्यको नाश ।
कच्छ रूपसोंमथ्योमानसर चौदहरत्न कीनपरकाश ३
अबगुण बरणौं मैंशूकरके ज्यहिहितधरोरूपभगवान ।
हिरणयाक्ष सोदानवमारो राख्यो थापिधरापरमान ४
कहौंहकीकतिअबनरहरिकै जेहिबिधिरूपधरोकर्तार ।
हरणाकुशसों इकदानवरहै जाकेबलको नाहिंसंभार ५
तेहिघर बालक इकपैदाभयो ताकोनामधरोप्रहलाद ।
पांचवर्षको जबबालक भयो पठयो पूतपढ़नकोसाथ ६
जहंचटशालारहै लरिकनको कुलगुरुरहैभूपतिहिक्यार ।
बालकसौंप्योगुरुनायकका करियेयाहिपढ़नअधिकार७

लिख्योककहरा गुरुपाटीपर औप्रहलादै दीनगहाय ।
देखिसोअक्षर रेपाटीमा दीन्हो बालक तुर्त मिटाय ८
भक्ति भावसों करपाटीलै अपना लिख्योरामकोनाम ।
लिखिलिखिपाटीबांचनलागेमुखसोंकहनलागश्रीराम ६
देखितमाशा गुरुनायकने औलरिकासन कहोबुझाय ।
छोंड़िपुत्रदे राम नामको यहना तेरो करै सहाय १०
सबसुखदायनि सुतबिद्यापढु जोसबंत्र होय रखवार ।
चोर चोरावै नान्टपमूसै औनाभाय होय सझियार ११
बिद्या पढ़िकै नर आनंदलहै दिनदिन बढ़ैहियेमाज्ञान ।
राजकाजसबहोयंबिद्यासों यहिफलहोयभूपपरधान १२
बहुत बुझायो गुरुनायकने पैप्रहलाद न कीन बिचार ।
मोहिंसहायकसबभांतिनसों हैमोहिंरामनामआधार १३
काजनकछुहैमोहिंबिद्यासों सुनियहगुरूउठोरिसिआय।
पकरिकै बहियां रेबालककै औराजातेंगयो लिवाय १४
कहीहकीकति सब राजासों तबबहुकोप कीन भूपाल ।
भलसमुझायोतबलरिकाको करुसुतमोरबचनप्रतिपाल
इष्ट तुम्हारे महादेव हैं नाकछु हमैं रामसों काम ।
हठयह छांड़ो तुमजियरते नासुतलेहु रामको नाम १६
तब यहभाष्यो हैबालकने नाकछु पितापढ़नसोंकाम ।
हमरे मनमा तौ यहभावै हैआधार रामको नाम १७
यहसुनिहरणाकुशनाखुशभयो औजल्लादलीनबुलवाय ।
शूल चढ़ायो ऐबालकको तबप्रभभयेभक्तसुखदाय १८
दुःखनव्यापो कछु बालकको हिरदै जपैं रामको नाम ।
तब गिरवायो रे पर्बतते राख्योपालिभक्तसुखधाम १६

बारुनबांकोभयोबालकको तबनृपअग्निदीनझोंकवाय।
तहां सहायकमधुसूदनभे औप्रह्लादैलीनबचाय २०
तबगहिबांध्यो ऐखंभामा औ हरणाकुश कहोबुझाय।
बांधिकैमरिहैंतोहिंखंभामा अबतोहिंरामबचावैंआय २१
सुनियहबातैंहरणाकुशकी तबप्रह्लादकह्योयहआनि।
हममा तुममा खड्गखंभमा सबमाराजिरहेभगवान २२
वोई रक्षक हैं भक्तनके होइहैं भक्तनाथ रखवार।
देखि दुर्दशा रे निजजनकै नरहरि रूपधरो कर्तार २३
फारिखंभसों नरसिंह प्रकटे दानव उदरबिदारोधाय।
रक्षा कीन्ही नारायणने औप्रह्लादै लीन बचाय २४
भक्त सहायक हरि सांचेहैं जिनको वेदरहे यशगाय।
तिनपदपंकज धरिहिरदयमा भाषाशल्यपर्व कहैंगाय
सांवत जूझो जब कौरवका दलपतिबीरकर्णमहराज।
रहोनसैनापतिकोउरणमा तबबिललापकरैकुरुराज २६
बिलखै कौरव बहिसमयापर हाबलवीर कर्णमहराज।
तुमअसयोधा रणमा जूझे अबकोकरै युद्धकोसाज २७
तुमबिन सैना सब सूनीभइ जैसे बिपिनबिनावनराज।
तुमगतिपायो शुभक्षत्रिनकै जूझेसमर हमारे काज २८
मारिनपायो तुम अर्जुनका छलकरि तुम्हैंबध्योकर्तार।
तुमबिनलस्करमोरोसूनोभयो कोबनिदलपतिचलैअगार
काहि बनावों अबसैनापति ज्यहिबल युद्धकरौंमैदान।
कोअबजीतै रण अर्जुनका केहिबलबाजैंबनिशान ३०
परैभरोसा नाजियरेमा पारथ समर जीतिना जाय।
बड़े बड़ेयोधा भारत जूझे अबको युद्धकरनकाजाय ३१

सुनिसुनि बातैं दुर्योधनकी तब कृतवर्मा करैबिचार।
औसमुझायोदुर्योधनका सुनुअब राजाबचनहमार ३२
प्रथमनशोच्योतुमजियरेमा गरुहरिगाजपांडवनकेरि।
हठकरिठान्यो महभारतका युद्धयुद्ध सुनायो टेरि ३३
मंत्र नमान्यो तुम काहूका कीन्होयुद्ध करनके साज।
द्रोण पितामह कर्णौजूझे अबकासरैशोचसोंकाज ३४
जादिनपांडवपुरआयेरहैं तुमढिगमिलनगयेभगवान।
तबउनमांगे पांच गावरहै तुमनाकछूकीनसनमान ३५
कीन्हअनादर तुमगोबिंदका बिन रणलरे नदेहैंराज।
परीआपदाजो ऊपरमा तौअबशोचकरतकेहिकाज ३६
धर्म नहीं हैं येक्षत्रिनके जोकछुठटा चही वहिठाट।
जेहिमगताक्योऊंचनीचकावहिमगचलीबांधिकैघाट ३७
माहिंनअवसरअबकरुणाकाकरुअबशोचछांड़िरणसाज।
बलकरिलरियेसमरभूमिमाजीतैंसहितपार्थयदुराज ३८
यह परिपाटी है भूपनकी सुनुदुर्योधन चित्त लगाय।
सत्यटेकनाचितते त्यागै मिथ्या बचन नकहैबनाय ३९
गुरू ब्राह्मण कीरक्षाकरै सुतसम प्रजाकरै प्रतिपाल।
ताकैपरधनपरतिरियाना मलसों डरैयथाभयकाल ४०
जननीपालै जसबालकको तसपरितोषकरै परिवार।
दानमान सतशीलनछांड़ै निशिदिनभजनकरैकर्तार ४१
शरणागत की रक्षा चाहै बरुधन देशप्राणलग जाय।
मातपिता की सेवाकरिये आज्ञा धरैशीशपरधाय ४२
सुनि यह बातैं कृतवर्माकी शकुनी कह्यो भूपसनबात।
शंका करियेना जियरेमा लाइयभूपशोचनहिंगात ४३

करु महभारत नृपअर्जुनते शंकासमय नहींकुरुराज।
कृपाचार्य औकृतवर्मा से द्रोणीशल्यसरिसहैंराज ४४
हैं धनुधारी महावीरये कीजै मुकुट बांधि सरदार।
शल्यनरेशहि करुसेनापति दीजै शीशयुद्धकोभार ४५
यहसुनिकुरुपतिमनआनंदभयोऔशकुनीसनकहोबुझाय।
मंत्रसाधि कै सबशूरन्न को शल्यशीशदेमुकुटबंधाय ४६
जोविधिकरिहैंसोअबहोइहै विधिगतिकछूजानिनाजाय।
होइबुलौआअबविप्रनका मंगलशकुनदेहिंकरवाय ४७
भयोबुलौआतब विप्रनका लागो होन मंगलाचार।
कलशमंगायोभरिगंगाजल धरिदधिदूबस्वर्णकेथार ४८
पूजा कीन्हो गणनायक कै ब्राह्मण रहेबेदगुनगाय।
सखीसहेलरी मंगल गावैं भूपतिदानदेत हरषाय ४९
धेनुपुजावैंरे ब्राह्मण का मढ़ि २ अष्टधातसों पायं।
कुलगुरुपूजाहितसोंकीन्हो अतिहितआशिष रहेसुनाय
डंका बाज्यो तबलस्करमा क्षत्रिन कियोशंखको नाद।
सजैं शूरिमा सब लरिबेको कौरवहियेभयोअह्लाद ५१
हनवनकरिकै गंगाजल के क्षत्रिन पजाकियो बनाय।
दुइ २ जिरहैं इक २ बख्तर ज्वाननलई अंगमालाय ५२
कसैं जांघियारे मुसुरूके औऊपरते कसे लंगोट।
लोहेटोपी धरिमाथेमा जिहिनालगैशस्त्रकी चोट ५३
बारह करदैं कम्मर बांधैं क्षत्री दुइ बांधैं तरवारि।
अगलबगलमादुइपिस्तौलैं बायेंअंगढाललइडारि ५४
जोड़ीतमंचा कै कम्मर मा भाला नागदौनिका हाथ।
दुइचकमाकैऔ संगीनै छूरी छुरालयं नरनाथ ५५

धीकटारी बूंदीवारी जिनमा धरी जहर की सान ।
उलागिजाइ ओछौतनमा सोगिरिपरैधरणिमाज्वान
जि २ क्षत्री सबठाढ़े भये जिनकेरूपवरणिनाजायं ।
थीमहारथिसारथिसजिगे जिनकीहांकमेघघहरायं ५७
मुकुट बंधायोशल्य शीशपर औसजिकियोसैनसरदार ।
दूसर डंकाभयोलस्करमा क्षत्री सबै भये हुशियार ५८
बजे नगाराजहंघन गरजनि कहुं २ शंखनादकीताल ।
मारुमारु कहि मौहरिवाजै बाजै हावहाव करनाल ५९
बोलि दरोगाहाथिन वालो कंचनकड़ादयो पहिराय ।
जितने हाथी पीलखानमा सबसंगरकोलेउसजाय ६०
सुनिकै आज्ञा दुर्योधनकै हाथी सजन महावत लाग ।
धरि २ गद्दामखमल वाले रेशमदामजंजीरालाग ६१
चुम्बक पत्थरके हौदाहैं जिनमा सेल बलैंचाखाय ।
सजिअनगिनतीहाथिनहल्कादलमाझूमि२रहिजायं ६२
बड़े २ हाथी इकदंता हैं औदुइदंतलिये सजवाय ।
अंगदगजसे औपंगदगज जेदबिचलैं युद्ध समुहाय ६३
हाथी अंगिनियां औ दलगंजन भैरवँ बज्रदंत गजराज ।
बड़े २ हाथी महराजन के सब सजिगये युद्धकेकाज ६४
बोलिदरोगा घोड़न वालो कंचनकड़ादीन पहिराय ।
जितनेघोड़ामोरेलस्करमा सबियां तुर्तलाउसजवाय ६५
कच्छीमच्छी घोड़ासाजें ताजी तीनि पायं ठहराय ।
लक्खागर्रा को सजवायो औकुम्मैदलीनसजवाय ६६
अबलखनकुला हंसासाजे जिनकी शोभावरणिनाजाय ।
धरिकठिनालीतबघोड़नपर ऊपरसालदीनडरवाय ६७

जीनजरावनको बहु सुन्दर मस्तककलंगीदई बंधाय।
रेशम धागाउनबंधवाये घोड़ननजरिलागिनाजाय ६८
लागबकसुश्रा हैं सोने के औतंगरेशम केअभिराम।
परीरकावें हैं चांदी की गंगा यमुनी दईलगाम ६९
लीलकेधागाकरठनबांधे औकल्लनबिचसोहैहम्याल।
बड़ि २ हैकलगलेमसोहैं जिनमाजड़ेजवाहिरलाल ७०
पूंछरंगाई हैं केसरिसों आलिनसुम्मदीन रंगवाय।
जिनकीशोभाअवलोकनकरि दिनकरवाजिरहैंसरमाय
सबदलसजिगोमहराजाका घूमनलागेलालनिशान।
सुन्दरस्यंदनरेसाजतभये औमखमलकेलगेबितान ७२
चंचल बाजीरथमा जोतें जिनकी पवनबेगकीचाल
सजि२स्यंदनसारथिलायेतिनपरचढ़ेकौलक्षितिपाल ७३
पहिले नगारामाजिनबंदी दुसरेबांधिलीन हथियार
तिसरेनगाराके बाजतखन सजि२चलेशूरसरदार ७४
हाथी चढ़ैया हाथिनचढ़िगे बांकेघोड़नके असवार
रथीमहारथिरथपरचढ़िगे बाजनलागघंटघरियार ७५
शल्यसैनपतिदलआगेभयो स्यंदनसाजिभयोअसवार
हांकसुनायो दुर्योधनका सुनुमहराजाबचन हमार ७६
आजु पराक्रम रणमा दीख्यो बिनि२हनौंपांडुकेज्वान।
आजुपारथहिरणमामारिहौं रक्षाकरेंकृष्ण भगवान ७७
करौनशंकाकछुजियरेमा करिहौंआजुविजय मैदान
शंखबजायोतबलस्करमासजिसजिचलेसुघरुवाज्वान ७८
कृपाचार्य औ अश्वत्थामा औकृतबर्माभयोसवार
हांकिबछेड़ासारथिचलिभे योधाचलेबांधिहथियार ७९

रथसजिआयोदुर्योधनका जससोहै सुरराजबिमान ।
चंचल बाजी रथमा जोते बैरख ध्वजालागफहरान ८०
सुमिरि भवानी जगदंबाका रथपर जाय बैठकुरुराज ।
चलिभोलस्कररेकुरुपतिका डगमगहोनलागअहिराज
आगे रथहैं महारथिनके घोड़ा चलै पवनकी चाल ।
हाथिनहलकातेहिपाछेचले झूमतजातमत्तबिकराल ८२
परी अंध्यारी हैं नयननमा अहदू परी बज्र कीपायं ।
बहैं पनारा मद धाराके औगजघंट शब्द घहनायं ८३
बाजिन हलका तेहि पाछेहै तिनपर चढ़ेछैलअसवार ।
छमछमछमछमबजैंपैंजनी उड़िरहिटापथापसोंक्षार ८४
पैदल फौजनकी झुरमुटचलै बांधेअस्त्रशस्त्रसबज्वान ।
छायअंधेरियागैलस्करमा लोपे अंधकार सोंभान ८५
घरी पहारुकके अर्सा मा पहुंचे कुरुक्षेत्र मैदान ।
यहिबिधिलस्करसज्योपांडवका रक्षककृष्णचंद्रभगवान
बड़ेबड़ेयोधा जे लस्करमा सबकोउ सजे युद्धकेकाज ।
भूपयुधिष्ठिरसजिठाढ़ेभये सहदेवभीमनकुलमहराज ८७
निजकर पारथमाधवसाजैं जेहिकीशोभाबरणिनाजाय ।
कसी सनाहैं अंगअंगनमा बख्तरलयेअंगमालाय ८८
अक्षयत्रोणगांडीव शरासन सजिकैअर्जुनभयोतयार ।
भीमभयंकररथसजिबैठो जैसेप्रलयकाल त्रिपुरारि ८९
चल्यो बछेड़ा पर नकुलौचढ़ि लैकैकृष्णचंद्र को नाम ।
कंचनरथसजि सहदेव बैठे अपनेयुद्ध बिजयकेकाम ९०
धृष्टद्युम्न से क्षत्री सजिगे औ बहुसजे शूर सरदार ।
अगणितस्यंदनऔहाथिनदल औबहुचलेतुरंगअसवार

सुमिरि भवानीजगदंबाका करिकै महादेवको ध्यान।
सबदलचलिभोरेपांडवका आगेभये कृष्णभगवान ९२
ढाढ़ीकरखा बोलति आवैं ब्राह्मण करैं मंगलाचार।
कीरतिगावैंरे बंदीजन गर्जतिचले सुघर सरदार ९३
घरी पहारुक के असामा पहुंचे कुरुक्षेत्र मा जाय।
दूनौ दल केरे अंतरमा मारू बंबदीनि बजवाय ९४
मारु २ कहिमोहरि बाजैं बाजैं हाव हावकरनाल।
बीर जुझाऊ डंका बाजैं क्षत्री ठोंकिरहे भुजताल ९५
चिघरैं हाथी दल के भीतर चंचलबाजिरहेहिहनायँ।
सिंहकिगर्जनिक्षत्रीगरजैं कायरलियेजीवभगिजायं९६
पैदल पैदलसों मुर्चाभो औ असवारनसों असवार।
शूंड़िलपेटाहाथी भिरिगे ऊपर होयमहौतन मार ९७
रथीरथीसों सारथि सारथि मुर्चन भिरे शूरसरदार।
सुमिरिभवानीजगदंबाका औगहि हाथलीनहथियार९८
शल्य बढ़ायो रथ आगे का लैकै रामचन्द्र को नाम।
स्यंदनहांक्योयदुनंदनने अर्जुनचल्योयुद्धके काम ९९
दूनौ योधा तब ललकारैं औबीरनते कहैं सुनाय।
भागिनजैयोकोउ मुहराते यारौयुद्धकरौमनलाय १००
मानुष देहीफिरिपैहौना ज्वानौ सुनौमोरसतिभाव।
उड़ि २ जूझौ कुरुक्षेत्रमा सन्मुखचले स्वर्गकाजाव १
जहं पर स्यंदन रहै पारथका तहंरथशल्यदीनबढ़वाय।
धरिललकारो तबसारथिका सन्मुहैहांकसुनाईजाय २
शल्यधनंजय को मुर्चापरो सारथि कृष्णचन्द्रभगवान।
झोंकोभिस्मातेमुर्चा भयो बरसन लाग बुंदझरिबान ३

नकुलबीरऔ कृतबर्मासों लागो होन घोर संग्राम ।
सहदेवशकुनीते झुरमुट भइ अपने युद्धविजयकेकाम ४
कृपाचार्यऔ धृष्टद्युम्नसों लागी होन भयंकरमार ।
भूप युधिष्ठिर दुर्योधनते बाजनलागघने हथियार ५
मारु मारु कहिमोहरि बाजै बाजैहाव २ करनाल ।
मारूनगारा रणमा बाजै क्षत्री भिरैंठोंकि भुजताल ६
लियेशरासन सजिहाथेंमा क्षत्रिनदई बाणझरिलाय ।
अपनपरावाकछु चीन्हैंना जनुघनबुन्दरहेबरसाय ७
कहूंकटारी कहुं तरवारी कहुं २ कड़ाबीनकै मारु ।
चलै दुधाराधुरदक्षिण के धरुधरुमारुमारुललकारु ८
कहुंपिस्तौलै धरि २ धमकैं क्षत्री गिरैंभरहराखाय ।
जोकोउ योधा सन्मुखजूझै लागतशस्त्रस्वर्गकाजाय ६
धर्मराजऔ दुर्योधनसों सन्मुखचलनलाग हथियार ।
बाण शरासनसों वर्षनलगे पावसयथा बुंदकीधार १०
शल्य धनंजय को मुर्चा भयो लाग्योहोनघोरसंग्राम ।
बानहजारन मारन लागे कीन्हे विजय युद्धकेकाम ११
शल्य संभारो कर धन्वाको लैकै नाम दूर्गा क्यार ।
कसिशरमारेरे अर्जुनपर तकिकै अंगबछेड़न क्यार १२
घायल घोड़ाभे अर्जुन के आयो अंगघाव विकरार ।
सहसबानफिरिधनुगुनजोरेस्यंदनतक्योधनंजयक्यार१३
असीबाण हनुमानहिं मारे मारे साठिबाण भगवान ।
साजिशरासनशरसाधतभयो लैकरवेगिसुतीक्षण बान
जांजरकीन्ह्योतनअर्जुनका अगणितबाणदीछबरसाय ।
तबरणकोप्योरेपाण्डवसुत शल्यहिहांकदीनिहहराय१५

करिले चोटैंरे संगरमा अब बचिहैं ना तोर परान ।
यहकहि कोपिततनपारथभयो लीन्होहाथशरासनबान
माथ नवायो कमलापति का तुरतै धनुषकीनर धान ।
अतिरिसशायकबरसनलाग्यो मारेशल्यअंगबहुबान १७
आठबाणसों स्यंदनतोरो घायलकीन्हे नवलवक्यार ।
दूसरशायक धनुसोंछोड्यो काटोशीशसारथीक्यार १८
गिरो सारथी तब धरतीमा शल्योगयो सनाकाखाय ।
रथसों कूद्यो तबधरणीमा औ रथदूसरलीनसजाय १६
कूदिकै बैठ्योतब रथ ऊपर दीन्होबाण बुंदझरिलाय ।
मघाके बूंदन शायक बरसैं जसटीड़ीकावृंदउड़ाय २०
बहुदलमारोरे पाण्डव का कटि २ गिरैंछबीलेज्वान ।
ओसरिनखेलैं समर भूमिमा भारतकुरुक्षेत्र मैदान २१
झुरमुट परिगे दूनों दलमा सबकरिरहे युद्धकी घात ।
भिम्माद्रोणीतेसंगरपरो कितनेउंक्षत्री कियेनिपात २२
गर्मकिशरासनलियोद्रोणीने भिम्मैगारूदीनिललकार ।
हमरेबाणनअबबचिहैना पाण्डवशूरहोहुहुशियार २३
यहकहिशायकबरसनलाग्यो सत्तरिहन्योभीमउरबान ।
तबरणकोप्योभिम्मानाहर कीन्होधनुषबानसंधान २४
धायकैमारो तब गुरुसुतका दोऊ ओरउठे घमसान ।
जर्जरतनभे दोउशूरनके एकते एक समरबलवान २५
उदरबिदारैं शर हनि मारैं डारैं वेधिअंग दैघाय ।
मुंहनाफेरैं कोउ सन्मुखते नाकोउभागैपीठिदेखाय २६
बाणअसंख्यन दोउदल छूटैं छायोअंधकार असमान ।
अपनपरायो कछु सूझैना लोपे समरक्षारसोभान २७

कटेगयंदम धरतीगिरिगे मानौ अवनीपरे पहार।
कटिकटि कल्लागिरैं बछेड़ा अरुआंधीकेउठैं लुड़यार २८
गिरेसांड़िया भारत रणमा शोणित नदीबहैबिकरार।
हलुके घायन केसहिजादे उठि २ फेरि करैंतरवार २९
अर्द्धचन्द्र शरतबद्रोणीलयो सन्मुखसमरसुनाईहांक।
सुनौहुलरुवारे कुन्ती के भिम्मामोरितोरिरणशाक३०
छोंड़ि शरासनसों शायकदयो काट्योभीमसेनकोबान।
धनुशरकरते भिम्माडारो उतरोभुम्मिगदालैज्वान ३१
को कविबरणौवहिसमयाकै शोभा कछू कहीना जाय।
कालहुसरिहारणमा आयो गर्जनिसुनैशत्रुथहराय३२
हांक सुनायो तब द्रोणीका ओ रणबाघहोहु हुशियार।
तुम्हेंसँहारिहौंमैंसंगरमाभेजिहौंआजअवशियमद्वार ३३
हमरी बारनते बचिजायो नयकै जन्मग्रनायो जाय।
अस्त्रसंभारो तब द्रोणीने इत उतचलेबाणबहुधाय ३४
सिंह दपेटै जसहाथी का जेहिबिधि गिरैलवापरबाज।
झुकैभेड़ियाजसअजयादल औहनिमारैअसनकेकाज३५
झुके शूरमा दोउ ओरनते एकते एक दई के लाल।
घायकैभिम्मागयोकौरवदलदीन्हेगदाघावविकराल३६
गदाप्रहारनसों शिरतोड़ैं खोपड़ो गिरै तड़ाकाखाय।
गदालागिजायजेहिक्षत्रीकेसोगिरिपरैधरणिभहराय३७
गदा प्रहारै जेहिहाथी के दलमांचिघरि २ रहिजायँ।
गदाप्रहारैं जेहिघोड़े के चारिउ सुम्मगर्दहोइजायँ ३८
गदा सांड़िया केतनलागे धरती गिरैं चकत्ताखाय।
गदाप्रहारैं जेहिरथ ऊपर लागत चूर चूरह्वैजाय ३९

गदासारथी के हनिमारै धरती गिरै मुखभर जाय।
बिचल्योलस्करसे कौरव का आड़ेरहेंसमरनापाथं ४०
भाग्योदुलरुवागुरुनायकका स्यंदनछोड़िहाथहथियार।
तबललकारोहै भिस्माने रे शठवेगिहोसिहुशियार ४१
इतैलड़ाई भीमद्रोणि की उत जुटिरहे धर्म कुरुनाथ।
रूपउजागर दोउ क्षत्री हैं कंचनछत्रबिराजैमाथ ४२
भाला लीन्हो धर्मराजने लटुआनागु अैस मननाय।
सोधरि मारोदुर्योधनका लागतचोटबच्योकुरुराय४३
रिसिहाहोइकै तब दुर्योधन धारणकीन हाथधनुबान।
चेहरा डाटोधर्मराजका सन्मुखहन्योबाणतनतान४४
बच्योदुलरुवारे कुन्ती का रक्षकभये कृष्णभगवान।
भिरिगे क्षत्री दोउओरनते भारत कुरुक्षेत्र मैदान ४५
पैदल पैदलसों मुर्चापरो औअसवारनसों असवार।
शुण्ड लपेटाहाथी भिरिगे ऊपर होयमहौतनमार ४६
मघाके बूंदनशायकबरसें चहुंदिशिछायरहोअंधियार।
अपनपरावाकोउचीन्हेंनाचहुंदिशिबाजिरहोहथियार४७
जिन्हें पियारे लरिकावारे आपन लैलै भगे परान।
जिन्हेंपियारोरणखेलबरहैतिनधरिलीनहाथपरजान४८
नकुलौभिरिगे कृतवर्मासन बाजनलाग शस्त्रयकधार।
शल्य धनंजयको रणराचो सारिथकृष्णचन्द्रकर्तार ४९
नवल बछेड़ा रथमाजोते अवनी शब्द जात घहरात।
हांकमारिरथ माधव हांकत औफहरातपितंबरजात५०
कोछविबरणै जगतारणकै सोहै काम रूपतन श्याम।
जगतमोहनीमूरतिसुन्दर ज्योंघनघटाछटाअभिराम५१

झलककपोलन कुण्डलसोहैं माथमुकुट मोरपरकधार ।
बुंद पसीना केश्राननपर हियमालसैंमणिनकेहार ५२
नैन रसीले हैं अंबुजसम माधुरबैन मंद मुसक्यानि ।
तेप्रभु सारथि हैंश्रर्जुनके जोती गहे श्रश्वकीपानि ५३
तबसमुझायो हरिपारथको सुनियेसखा हमारी बात ।
सावधानहो अबसंगरमा श्रौकुरुशल्यबीर कीघात ५४
धनुष संभारो तबपारथने सारथि स्यंदन दीनबढ़ाय ।
शल्य शूरिमा केसन्मुखपर राखोपार्थ केररथजाय ५५
तबयदुनंदन कासुमिरणकरि अर्जुनलीन हाथधनुबान ।
शूर हजारन मारन लागे भारतयुद्धधरागरुश्रान ५६
शल्यो घूमो तब मुर्चन पर जगदंबाके चरण मनाय ।
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे जैसे सिंह बिडारै गाय ५७
जैसे लरिका गबड़ो खेलैं गिनिगिनि धरैं श्रगारीपायँ ।
जौनगलीह्वैशल्यनिसरिजाय सोदलधरतीदेयगिराय
मारिशायकनसोंदलछांट्यो जसबन श्रग्नि करैसंहार ।
गिरैंसुघरुश्रा भटधरतीमा नदिया बहैरक्तकी धार ५८
बाणश्रगिनियांजिनकेलागैं बख्तरकाटिश्रंगभिदिजाय ।
प्रबल लड़ाईरणशूरनकै मेदिनिरुण्डमुण्डरहिछाय ६०
महा मत्त गज लाखन धावैं क्षत्री दांतन डारैं चबाय ।
जौन शूरिमा पाछे देखैं सोधरतीमा देइं मिलाय ६१
झपटि शुंडसों धरिधरि मारैं बिन रणशूर कीनमैदान ।
चापिचरणतरचूरणकरिदैं भागेभभरिखायभयज्वान६२
शीश तोरिकै धरती फेकैं जस फल गिरैं बेलके जाय ।
बिचलेयोधासबपांडवके जियतेहारिहारिभयखाय ६३

भागत लस्करभिम्मादेख्यो धायो बेगि गदालै हाथ।
सन्मुख पैठो कौरवदलमा शंकितभयेदेखिकुरुनाथ ६४
बिचल्यो लरिकापांडववालो क्षत्रिन हनै गदाकोघाव।
तकितकि चोटैं भिम्मा मारैं शूरनचलैन एकौदाव ६५
केतनेउं स्यंदन भंजनकीन्ह्यो गंजन कीनसारथीमारि।
पकरिभुशुंडा गजराजनके धरतीहनैंपछारिपछारि ६६
केतनेउं क्षत्री धरिधरिफेंकैं तेआकाश रहे मड़राय।
झुंड शूरिमनके नभ छाये जस टीड़ी केवृंदउड़ाय ६७
बाजिबाजिपरधरिधरिपटकैं औगजराजउपरगजराज।
मींजिमींजि भट धरती मेलैं जसखगवृन्दपछारैंबाज ६८
भाग शूरिमा कौरव वाले कौनौ खेत न आड़ैंपाय।
गरुई गाजैं भीमसेनकी लागत अंगभंग होइजाय ६९
परो सनाका दुर्योधनके भाजत देखिदेखि सरदार।
तब ललकारै गुरुनंदनका द्रोणीबीरहोहुहुशियार ७०
सबदल गंजो भीमसेनने यहि धरि मारु समरमैदान।
जायनपावै यहु मुर्चनते करिदे आजुयाहिबिनप्रान ७१
बाग बद्धेड़न कै फटकार्यो सारथिरथै बढ़ायो धाय।
खबरदारह्वै द्रोणीबैठो तौलौं भीमगयो नगिचाय ७२
तब ललकारो गुरुनंदनने भारत भूमि जानि कै हार।
केहिकी मातानाहरजायो केहिरणबाघधरेअवतार ७३
कौनदुसरिहाभा कौरवका सोसन्मुख ह्वै देइ जवाब।
सुनिअसबातैंगुरुनंदनकी बोल्योभीमसेन रिसदाब ७४
अरेदुलरुआ गुरुनायकके द्रोणी बीर बुद्धिके धाम।
सँभारिकैबैठौतुमस्यंदनपर अबपरिगयोकालतेकाम ७५

पहिली वारै करु संगरमा नाहित स्वर्ग बैठिपछिताव ।
तेहिते तुमको समुझैयतहै अबदुइघरीखेलिलेदाँव ७६
कोपअग्नि सोंद्रोणी कोप्यो औगहिलीनहाथधनुवान ।
चेहराडाटै भीमसेनका औतनहने तीनिशर तान ७७
बच्यो दुलरुवा रेकुन्तीका रक्षकजिन्हैंकृष्णभगवान ।
गदाछोंड़िदौ तबभिम्माने औधनुवान लीन संधान ७८
दशशर मारे गुरुनंदन के वाके अंग न आयोघाव ।
बच्यो शूरिमा कौरव वालो जानतनीकयुद्धको दांव ७९
झुरमुट परिगे दोउ क्षत्रिनते एकतेएक शूर बलवान ।
भरिअरङ्वाराशायकछोंड़ै क्षत्रीकरैसमर बिनप्रान ८०
गिरैं सुघरुआ भट धरतीमा औमिलिगर्दसर्दहोइजायं ।
रुगडमुंड सोंमेदिनि तोपी शोणित नदीभरेउतरायं ८१
गिद्धचिल्हारिनकेदलटूटैं लरिलरिलोथिनखायंसियार ।
मासनोंचिलै कागा भागैं जागैं अस्मशान धरुमार ८२
बस्त्रलालभेसबक्षत्रिनके जसफागुनमा खिलैं पलाश ।
हल्केघायनकेसाहिजादे उठिफिरिलरैंजीतिकोआश ८३
नचैं योगिनी खप्पर लीन्हे कीन्हे अशुभबेषबिकराल ।
केशजटोले गहिगहिधावैं नाचतफिरैं भूतबैताल ८४
जगैं कबंधा रण शूरन के अंधा धुंध करैं तरवार ।
गरुहरमुर्चा भीमद्रोणिका मानैंकोउ हिये नाहारि ८५
वादिनशकुनी बोलनलागो कुरुपतिसुनौ हमारीबात ।
जोमोहिंअज्ञादेउलरिबेका तौकछुरनैं युद्धको घात८६
भीमनजीतो जाय द्रोणी सों गरुहरि गाजपांडवकेरि ।
घुसौंसमरमामैं बेड़हां ह्वै मारौं भीमसेनको टेरि ८७

अज्ञा दीन्ह्यो दुर्योधनने शकुनी तुर्त भयो तय्यार।
जितनीसेनासजिलाथीरहै अतिभटदशहजारसरदार ८८
तीनिसहसरथमहारथीहैं औसंगसाठि सहसअसवार।
डेढ़लाखसँगयोधा पैदल गरजतिचले मेघ हहकार ८९
सारथि हांको रथ शकुनी का लैकै नाम दूर्गा क्यार।
सँभरोशकुनीतबस्यंदनपर अपनेगहे हाथहथियार ९०
धायकै पहुंच्यो पांडवदलमा जैसे नदियासिंधुसमाय।
तबललकारो रणशूरनका कौनौशूर भागिनाजाय ९१
निमककौरवन का खायो है सो हाड़नमा रहोसमाय।
सन्मुखजूझौकुरुक्षेत्रमा तौ संसाररहै यशछाय ९२
शस्त्र सँभारो रणबाधनने दूनौ फौज गये समिआय।
प्राणगदोरियापरधरिलीन्हो औमुँहचटकगयेनगिचाय
पैदल पैदल सों भिरनी भे औअसवारनसोंअसवार।
रथीरथीसोंसारथि सारथि औगजदंत महौतनमार ९४
खट २ खट २ तेगा बरसै बोलै छपक छपक तरवार।
चलैंदुधारादक्षिणवाले ऊनाचलै ग्वालियरक्यार ९५
भाला छूटैं नागदौनिकैं कहकह करैं अगिनियां बान।
नंगीजंगीचलैं संगीनैं कटि २ गिरैं सुघरुआज्वान ९६
झुकीअंधेरिया चौगिर्दा ते बरसै शस्त्र शस्त्र मा आगि।
अपनपरावापहिंचानै ना क्षत्रिनमारुमारुरटलागि ९७
शूरहजारन शकुनी मारे पांडव सैन गई बिललाय।
पांउअगारी कोउ डारैना सबभटरहेहिये भयखाय ९८
तेहीसमइयाके अवसरमा मुर्चा फिरति दीखभगवान।
तबसमुझायोरेअर्जुनका करुममपारथबचनप्रमान ९९

शूर हजारन धरती गिरिगे काचुप साधिरहे बलवान ।
कलश्रबधन्वा धारनकरमा शकुनीसाहएकहीबान १००
सुनिश्रसबातैं कमलापतिकी रिसहाभयोपांडुकोलाल ।
नंदिघोषरथमाधवहांक्यो सन्मुखचल्योपेलिदलजाल१
लियोशरासनश्रर्जुनकरमा छोड़नलागश्रगिनियांबान ।
प्रलयकालजसबादरबरसैं उठिगे महाघोर घमसान २
कितनेउँस्यंदनभंजन कीन्हो गंजेउ बड़े २ गजराज ।
शूर सारथीहनि २ मारैं कटि २ गिरैंधरणिमाबाजि ३
गिरेगयंदम कटि धरती मा जस कज्जलकेपरेपहार ।
घाउश्राइजाइ जैहिक्षत्रीके सोमिलिजायधरणिक्षीक्षार४
सैनसंहारी बहुकौरव कै पारथ सखा सांवरे क्यार ।
तबललकारो है शकुनीका रेशठहोसिबेगि हुशियार ५
कालके मुखमा परिश्रायेहैं अबना भाजि समरतेजाय ।
एकबानसौं बिनप्राननकरि मरिहौंतोहिंखेलायखेलाय६
सुनिश्रसबातैं तब श्रर्जुनकी शकुनी लीनहाथ धनुबान।
तकिवक्षस्थल रेपारथका इकशत हनेबान संधानि ७
बहुतक शायक कृष्णहिंमारे मारे बीसबाण तकिबाजि ।
तेशरकाटे सब पारथने फिरि धनुबान लीनकरगाजि८
एकबानसों धनुगुन काट्यो घोड़न धरती दीन गिराय।
शीशकाटिकै सारथि मार्यो चूरणकीन स्यंदनैधाय ६
शकुनीभाग्योतब घोड़ाचढ़ि सबिधांफौजगई बिललाय।
जहं दुर्योधनको रथठाढ़ो शकुनी तहां पहूंचोश्राय १०
गईं चोटैं रे पारथ की हमपै कहूकही नाजाय ।
बानाबारी श्रर्जुन जानै वाकेलगै श्रंगना घाव ११

हनिश्मार्योसबक्षत्रिनका औदलमीजिमिलीधोक्षार।
पार न पैहो तुम अर्जुनते रक्षक कृष्णचंद्र कतार १२
शूरसंहार्योसबसंगरमा स्यंदनबाजि औरगजराज।
कोअबलरिहै तेहिसन्मुखह्वै पारथगाजगरूमहराज१३
जबलौं सारथि माधवरैहैं रैहैं ध्वजाबीच हनुमान।
नंदिघोष रथ आरुढ़ रैहै रैहै हाथ गहे धनुबान १४
तौलौं लरिबो रणपारथते है कुरुनाथ नजीतबआस।
पारन पैहै कोउ अर्जुनते ह्वैहै समर बीच परिहास १५

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
न्नाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षितनिर्मित महाभारत भाषा शल्य पर्वअर्जुन शल्यसमर
वर्णनोनामप्रथमोध्याय: १॥

पत कुंतिमाके जस अर्जुन औ कौशल्याके भगवान।
बिश्वामित्रकैयज्ञ संवार्यो लीन्ह्योपरशुरामके बान १
सुमिरि भवानी जगदंबाका गुरुनायककेचरणमनाय।
आदिशारदाको सुमिरणकरि भाषाशल्यपर्वकहौंगाय२
औरि बयरिया डोलनलागीं औरैहोनलाग व्यौहार।
तब समुझायो दुर्योधनका शकुनी शूरबीर सरदार ३
यहिबिधिजीतबनापारथका सुनुकुलनायकबातहमारि।
लरिबोछांड़ैं धनुषबाणका औमुहं चटकचलै तरवारि४
तब समुझायो दुर्योधनने शकुनी बचनकरौ परमान।
मन्त्रबिचारौअपनेमनमा जेहिबिधि बिजयहोयमैदान ५
शल्य नरेशहुते मतिलीजै तौ कुछुसीझै काम हमार।
शकुनीधायो तब संगरका जहं पररहैशल्य सरदार ६

मन्त्र बिचार्यो तवशकुनीने सुनियेशल्य हमारीबात ।
मारुबन्दकरि धनुष बानकी अबकरु वेगतेगकीघात ७
सुनिअसबातैं तवशकुनोकी स्यंदनशल्य बढ़ायोधाय ।
जहां युधिष्ठिरको रथठाढ़ो तहंपर वेगि पहूंचोजाय ८
तवखेलकारो धर्मराजको सुनियेभूप युधिष्ठिर राय ।
धर्मयुद्धअवदलमा करिये जासोंरहै समरयश छाय ९
युद्ध छांड़िदेव धनुषवानको सबै बंदकरौ हथियार ।
अपने अपने सब मुर्चनपर क्षत्रीकरैं तेगकी मार १०
सत्रहदिनते मह भारतभयो भीषम द्रोणकर्ण सरदार ।
तेसबजूझेपुरुषारथकरि अबहै युद्ध शीश ममभार ११
उतरिकै रथते धरणी आइय करिये वेगतेगकी मार ।
जोजियबानाहै क्षत्रिनका सन्मुखआयगहौ हथियार १२
सुनि असबातैं शल्यभूपकी रथतजिदीन युधिष्ठिरराय ।
देखिपियादे महराजाका सबभट उतरिपरे हरुगाय १३
मारुबंदभइ धनुषबानकी दोउदल चले पियादेधाय ।
पकनंदनन्दनहैं स्यंदनपर अर्जुनरह्यो भूमिपरआय १४
लैसंग धायो धृष्टद्युम्नका लैलै तेगखड्ग भटहाथ ।
नकुल सहदेव भिम्मौ उतरे जहंपररहैं धर्मकेनाथ १५
भूप युधिष्ठिर तबबोलतभे शकुनीमानुकहाअबम्वार ।
जेहिंबिधिचाहैलरुसंगरमा जैहैआजु अवशियमद्दार १६
अभिरेक्षत्री दोउ ओरनते अपने गदा खड्ग करधारि ।
खट २ खट २ तेगाबसैं बोलै छपक २ तरवारि १७
मारु २ कहि सौहर्रि बाजै बाजै हाव २ करनाल ।
मारूगनारा रणमाबाजैं क्षत्रीभिरेठौंकि भुजताल १८

चटकैं मुद्गर दोउ ओरनते चूरनहोयं अंगके हाड़।
शीशगिरावैंभुविकंदुकसम तिरछेकाटिदुधाराखांड़ १६
फरीचमंकै चहुंओरनते चहुंदिशिचमकि रहेहथियार।
झुकोअंधेरियादलबादलमा सविताभूंदिगयेरणक्षार २०
शकुनी सहदेवसोंमुर्चापरो औसतु देखिरहे नंदलाल।
सहदेवडाट्योतबशकुनीका आयोदुष्टतोर अबकाल २१
बंश बिगारो कुरुपाण्डवका तेरोहि मंत्र भयोसबनाश।
द्यूतकर्मकरिछलि सबलीन्हे दीन्हेपांडुसुवनबनबास २२
बंश नशैबेका लागेरहै रेशठ बंश छली हत्यार।
मारिपछरिहौंतोहिंसंगरमा भेजिहौंअवशिआजुयमद्वार
यहकहिसहदेवसुमिरणाकीन्हो रक्षकभक्तयशोमतिलाल।
खड्गसंभाऱ्योतबहाथेमाशकुनिहिंघेरिलीनतत्काल २४
बढ़ो दुलरुवारे कुन्तीका शकुनिहि हांकसुनायोडाटि।
खड्गप्रहाऱ्योमनकोपितह्वै लीन्ह्यो मुंडरुंडसोंकाटि २५
गिऱ्योघड़ाकातबधरणीपरकुंडलसहितगिऱ्योशिरजाय
शकुनिहिंजूझतपरलयहोइगै कौरवगयोसनाकाखाय २६
शकुनिहुं जूझासमर भूमिमा कोउन रहोसैन सरदार।
हाय गोसइयांका मर्जीभै पंजा खैंचिलीन कर्तार २७
सन्मुख क्षत्री भिम्मा पावै सोहनिगदागिरावै घाय।
खायदोइहयाजोपांडव कै तेहिकाछोड़िदेयबिनघाय २८
परोसनाका कौरव दलमा भिम्मा करनाबचैं परान।
तब दुर्योधनरन आगेभयो लैकै हाथ धनुषऔबान २९
औलेलकारोरण शूरनका क्षत्रिउखबरदार होयजाव।
तुम्हैं दोहइया है माताकै कोउनभागिसमरतेजाव ३०

अमरन कोऊजगहवै आयो यकदिनजायकाल केहाथ ।
सन्मुख जूझौ कुरुक्षेत्रमा क्षत्री धर्मजाइ है साथ ३१
झुकै शूरिमादोउओरनके सबदल कांटिकीनखरिहान ।
चलैं कटारी बूंदीवारी धरि २ केश पछारैं ज्वान ३२
जुरेशिखंडीऔ द्रोणीरण कीन्हो महाभयानक रारि ।
खड्ग प्रहारैं धरिशीशनपर देवैं वारढालसोंटारि ३३
तब ललकारो गुरुनंदनने रेबलबीर शिखंडी ज्वान ।
खबरदारहो समर भूमिमातेरोकाल आयनगिचान ३४
बज्रकेबांधे अब बचिहैना यह कहिलीनहाथतरवारि ।
धर्मकिशिखंडीकेशिरमारो डारोरुण्डमुण्ड निर्धारि ३५
गिरो शिखंडी धरणीतलमा तब परिगयो रामतेकास ।
हल्लाहोइगा चौतर्फाते कायर भजे छोड़ि संग्राम ३६
घूम्यो द्रोणी समर भूमिमा मारे बीनि २ सरदार ।
उठी अंधरियाआसमानलग लोपेभानुसमरकोक्षार ३७
हैं मुंडचौराकहुं मुण्डन के औरुण्डन के लगे पहार ।
घाउखायमहिक्षत्री लोटैं करते छूटिजायंहथियार ३८
कहुं २ गजधर शुंडागिरिगे कल्ला कटे बछेड़न केर ।
बहैं पनारामदधारा के औ गजराज चिघारैं टेर ३९
बल २ बल २ करैंसांड़िया दलमागिरैं पछारैं खाय ।
अधजलमुर्दा धरती लोटैं जिनकेलाग करेजैघाय ४०
शूरपछारत अर्जुनदेख्यो तबरथहांकि दीन ब्रजराज ।
जहंगुरुनंदन कोरथठाढ़ो तहंहरिजायलगायेबाजि ४१
सन्मुखदेख्योजब पारथका द्रोणीभयोसंभरिहुशियार ।
पावसवर्षा कियो बाणनकैं सावनयथा बुंदजलधार ४२

कहूं पनारालन लोहुन के फागुन यथारंग की मारु ।
छुटैं पिचक्का रे केशरिके धरु धरु मारुश्लेलकार ४३

क० । शूर पुकारत आरत ह्वै तनमारत अस्त्रगहेधनुवानन ।
जोरजुरैंन मुरैं रणसों भुजथाप प्रलाप किये बलवानन ॥
बंदिदशाक सुनावत हांक बिजय अभिलाषहियेअतिज्वानन ।
युद्ध सशुद्ध करैं न डरैं छविदेखतहैं सुरसाजिविमानन ४४

खेलत क्षत्री रणचांचरिसी बाजत शंख घंटघरियार ।
मोहछांड़ि भट रणमाअभिरे अंधाधुंधचलैं हथियार ४५
दुइदुइखंडा होइ हाथी गिरैं डंडा टूटि अमारिनक्यार ।
केतनेउं हौदाधरती गिरिगे औगरुआतयुद्धकेभार ४६
जोकोउ अभिरै भीमसेनसों तुरतै खायजायतेहिकाल ।
सहित सारथी स्यंदनभंजे रणमाकीनहालबेहाल ४७
जोकोउ योधा सन्मुख जूझै सोसुरपुरमाकरैबिलास ।
भोगसोरांचैं सुरकन्यनसों रणमाबचैंहोतपरिहास ४८
चढ़े बिमानन देवता देखैं नभते फूल रहे बरसाय ।
धनिधनिकहियेइनक्षत्रिनका यशहितरणमागयेबिलाय
शूरअसंख्यन रणमाजूझे लस्कर कोउन शूर लखात ।
भोर भुरहरे के पहफाटत जस नक्षत्ररहैं परभात ५०
धर्मराज तब मनमा शोचे जूझे बड़े बड़े सरदार ।
क्षत्रीलाखन धरतीगिरिगे कमहवैगयो धराकोभार ५१
बेदकारिकाब्राह्मण बांचैं भूपति युद्धबिजयके काज ।
ढाढ़ीकरखाबोलति आवैं सुनि २ शूरहोयंनरराज ५२
धृष्टद्युम्न तबभिरोसमरमा यहुसरदार पांडवनक्यार ।
हैकृतबर्मा दुर्योधनका जिनरणहेत धरे अवतार ५३
मारि संहारोबहुक्षत्रिन का कितनेउँ धरनीदयेगिराय ।

खोपड़ीतोड़ैं हनि मुद्गरसों लोहेटोपगिरैंहहराय ५४
शल्य नरेशैतब ललकारो राजा सुनौ हमारी बात ।
तेरीहमारीअब बरनीहै खेलौ समर युद्धकी घात ५५
खांड़ा बाजो भीमसेनसों अब करुधनुष बानकीमार ।
चढुअबस्यंदनसुरबंदनकरि दुइमाएकजीतिओहारि ५६
सुनिअसबातैंधर्मराजको स्यंदन शल्यभयो असवार ।
सुमिरिभगवतीजगदंबाका कीन्होधनुषबाण टंकार ५७
भूपयुधिष्ठिरका ललकारो अब हुशियार होहुमहराज ।
बहुतकचोटैंतुम्हरीसाधीं अबतुमसहौ आजममगाज ५८
यहकहिछांड़े दश तीक्षण शर डारे धर्मराज सोकाटि ।
सातबाण तब धर्महुछांड़े शल्यहिहांकसुनाईडाटि ५९
शल्य नरेशौ सोशर काटे काहु अंगन आयेघाय ।
बाण प्रहारे टरैंन टारे मारैं अस्त्र शस्त्र दोउधाय ६०
बानावारी दोउ जानत हैं एकते एक दईके लाल ।
अस्त्रन धमकैं खड्गन गमकैं देवैंशीशवार परढाल ६१
कोपिशल्य यमअस्त्रहिलीन्हो पढ़िकैमंत्र फोंकदइबान ।
चेहरा डाटो धर्मराजको तबनृप इन्द्रबाण संधान ६२
सोहनिमारो शरसन्मुखपर डारो काटिबाण यमराज ।
तजिकरधन्वा शल्यशूललै सोहनिदीन धर्मकेगाज ६३
खंडो नृपसोसात बाणते इकशत खंडमंडि दयेडारि ।
क्रोधानलसों दूनो भभके कोऊ हिये नमानै हारि ६४
अशकुन धायेतब लश्करमा अबधौं काहकरै कर्तार ।
अंधकारभो दशहूदिशिमा लोपेभानु समरकोक्षार ६५
हावहावकरि जंबुकबोलैं रथपर काग झुंड मड़रायँ ।

रक्तकि धारा बादरबरसै कौवाकावंकावंचिचिहायं ६६
डगमग डगमग धरती डोलै हाले शेश नाग महराज।
घोरबयरियाडोलनलागी गिद्धनआयकोनरथसाज६७
बिनजलबादलघहरनलागे उगिलैंखड्गझड़ाकाम्यान
रथकेखंभा डोलन लागे लागे होन घोर घमसान ६८
क० छायरह्यो अंधियार दशौंदिशि सूर्दिवाकरमैद्युतिहानी।
जंबुककाग अभागबकैं डभकैं अहिराज धरा थहरानी॥
गिद्धलड़ैं बिफड़ैं रथमें बिनमेघ घटा नभमें घहरानी।
घोरबयारि हहारि बहै बरसैं नभबादर शोणितपानी ६९
डोलतस्यंदन खंभ तहां अरुबोलत भूत भयंकर बानी।
प्रेत पिशाच फिरैं लुलुआत औरोवत श्वान अमंगलखानी॥
म्यानते शस्त्रकढ़ै अनयास औ छूटिगिरै धरती धनुपानी।
देतबतायसो धायमनौयह शल्यनरेश कि आयुखुटानी ७०
प्रबल भयंकर संगर छाये उल्कापात होनतबलाग।
ध्वजथहरानेतब स्यंदनके कुरुपतिहियेशोचबहुजाग७१
अचरज आयो सबकाहूके का अब होनहार कर्तार।
शल्य शूरिमा थरथरकांप्यो होइहैअवशि मोरसंहार ७२
भूपयुधिष्ठिर तबललकारो रेभट शल्यहोसिहुशियार।
अब्बलगबाचे समरभूमिमा अबतैंजान चहतयमद्वार७३
निष्फल मेरो श्रमजैहैना यहमनजानुसांचबिश्वास।
तेज हमारोतैंजानैना अबशठ छांडु जियनको आश७४
शक्ति संभारयोतबराजाने मनमासुमिरियशोमतिलाल।
छायउजेरियागैदशदिशिमाशकुनीशिरैआयगयोकाल७५
छूटि शक्तिगै राजा करसों हाहाकार गयो रणछाय।
दिग्गजडोलेदशहूदिशिमा औफनशेशउठेअकुलाय ७६

बज्रकेमाफिक शक्तिउड़ानी कुरुपतिदेखिभयोभयमान ।
जहंरथठाढ़ो शल्यभूपको ऊपरजायशक्तिमनमानि ७७
ढालसों आड़ो तबशक्तीका छेदि सो हृदयभेदिगैपार ।
खलभलपरिगैतबलस्करमा रथतेगिरोशल्यबिकरार७८
हायहाय कहि कुरुपति टेरो क्षत्रीछोंड़िभागहथियार ।
फूलन बर्षा करि देवनने कीन्हो धर्मकेरिजयकार ७९
देखि शूरता महराजाकै मनमा हंसे यशोमति लाल ।
रणप्रणपूरो धर्मराजने कीन्होअर्वाशिशल्यकोकाल ८०
बचे जे क्षत्री औरौ रणमा तिनका भीम कीनसंहार ।
जितने क्षत्री कुरुनायकके भाजेडारिडारिहथियार ८१
कृपाचार्य औ कृतबर्माहूँ द्रोणिहु भाजिगयो भयखाय ।
बजे नगारा तब पांडवके ब्राह्मण रहेवेदगुनगाय ८२
ढाढ़ी करषा बोलन लागे औयश भाट सुनावन लाग ।
जीतिमनावैं सब राजाकी पूरण भये आपकेभाग ८३
मारुभयंकर भै भारतमा अगणित जूझि गिरेसरदार ।
रुण्डमुण्ड सों बसुधा तोपी नदिया बहैंरक्तकीधार ८४
परे हजारन बारन रणमा जसनदिनमहोयंघरियार ।
परेबछेड़ा हैंमगरा सम औहथियार नागहैं कार ८५
रुण्ड रुण्डसों संगर राचैं नाचैं वृन्द भूत बैताल ।
लिहे योगिनी खप्परनाचैं प्रेतपिशाचबजावैंताल ८६
महामगन मन शंकरघूमैं पहिरे हृदय मुण्डकी माल ।
देखिमसानी जहंपर घूमैं बानो कहैं बड़ी बिकराल ८७
वृन्दचिल्हारिनकेजहंतापे लरिलरिलोथिनखायंसियार ।
काग अभागी नयनाकाढ़ैं मिलिगेरुण्डधराकीक्षार ८८

अस्मशान तबरणमा जागे औहुंकार शब्द रहोछाय।
देखिदुर्दशा समरभूमिकै शंका खाय गये कुरुराय ८६
पांचौ पंडव यदुनंदनलै औसब संग सुभट बलवान।
सुमिरिशारदाशंकरमनमा मंदिरकियोतुरतप्रस्थान ६०
शंख बजायो तब अर्जुनने भारतकुरु क्षेत्र मैदान।
ध्वजा पताका घूमन लागे डोलनलागेबंबनिशान ६१
जीति दुलरुवा रेपांडवके कीन्हो जाय धाममें बास।
माताकुन्ती आरतिसाजै औसबखुशीभयोरनिवास ६२
बजैबधइया नृपमंदिरमा सखिया करैं मंगलाचार।
धेनु पुजावैं रे बिप्रनका बंदनवार बंधाये द्वार ६३
हारउतारैं सब लरिकनपर मातादेय निछावरि धाय।
बिजय पत्रलै महभारतका आये भूपयुधिष्ठिरराय ६४
घरघरउत्सवसबहिनकीन्हो चहुंदिशिहोतनाचऔ गान।
पूजनकीन्ह्योयदुनंदनका दीन्हो बिबिधभांतिसन्मान६५
कुन्तीमाता अस्तुतिगावै हे महराज कृष्ण सुखदाय।
तुम्हरीदायाते महराजा पायो बिजय युधिष्ठिरराय ६६
तुमप्रण राख्योरे पांडवका हेब्रजराज यशोमतिलाल।
भक्त सहायक हरिसांचेहौ औहौ दुष्टदलनके काल ६७
मोर मनोरथपूरणकीन्ह्यों हे हरिभक्तनाथ ब्रजराज।
अकिलेतुम्हरे पदपंकजसों पायो भूप युधिष्ठिरराज ६८
भक्त सहायक जनसुखदायक तुवयश गावत वेदपुरान।
लज्जाराख्यो तुमपांडवकै हेप्रभु दीनबंधुभगवान६६
जहंजहंसंकट होयदासनका तहंहरितुतैंहोत सहाय।
तुमप्रहलादउबारनकीन्ह्योनरहरिभयोखंभमेंजाय १००

असुरसंहारी जनरखवारी तारीशिला रूप मुनिनारि ।
पाय पियादे तुमहरिधायो दीन्ह्योदुखगयंदको टारि १
कहं लगगावें तुम्हरे यशका धनि २ नंदयशोमतिमाय ।
धन्यगोकुलाकेबासिनका जहं अवतारलीनप्रभुआय २
धन्यभागउन ब्रजनारिनकेजिनसंगकीन्होभोगविलास ।
औरनदूजोकोऊपांडवके हैतुवचरणकमलकी आश ३
औरबियरिया डोलनलागी औरैहोनलाग ब्योहार ।
कहैंहकीकति दुर्योधनकै जिनकेशोचहियेबिकरार ४
जब सब क्षत्रीरणमा जूझे औसबभागिगयेनिजधाम ।
तबदुर्योधनमनमाशोच्यो दीन्होंमोहिंविपतिबहुराम ५
जितने योधामोरे लस्करमा भीषम द्रोणकरणसरदार ।
शल्यसुधन्वासेक्षत्री भट सबमिलिभये धराकीक्षार ६
इकशत भैयामेरे सब जूझे अगणित जूझिगयेबलवान ।
को अबलरिहै समरभूमिमा करिकै युद्धखेतसामान ७
रह्योनसाथीकोउ संगरमा अब मैं कौनदिशाकोजावं ।
शोणितनदियाचहुंदिशिउमड़ी अनजाचलैघोरकछुदावं ८
सातताळते ऊंचो नदिया शोणितधारबहै बिकरार ।
लोथिन ऊपरलोथीतोपीं औहाथिनके लाग पहार ९
बाजि हजारन के दलपाटे केहुदिशिसूझि परैनाराह ।
तबबिलखान्योवहिसमयापरकुरुपतिहियेशोचबेथाह १०
अद्भुतगति है नारायणकी ताको कोऊन पावै पार ।
क्षिनमापर्वतकातिनुका करैं औतिनुका का करैंपहार ११
पृथ्वीपति दुर्योधन राजा जाके लक्षछत्रधर साथ ।
रमाबिलासैंजाकेकरमाक्षिनमातिहिविधिकीनअनाथ १२

तब कुरुनायकमनमाशोच्यो शोणित पैरिजाइयेपार ।
तुरतैंकाढ्योतनबख्तरका लीन्होसबियांअंगउघारि १३
गदा संभारो दक्षिण करमा धरिअतिधीरहियेकुरुराय ।
शोणितनदियापैरतचलिभे औकररुण्ड हटावतजाय १४
अभिरैंलोथी अगणिततनमा औनामिलैरक्त की थाह ।
केशअरू झैंरे चरणनमा इत उत हेरिमिलैनाराह १५
पारन पावैं कहुंपैरतमा अति विललाप करैंकुरुराय ।
जहंजयखंभागुरुनायक का तेहिढिगभूपपहूंचोजाय १६
पकरिसो खंभा धीरज धारो इतउतपरे जोवलुलुआयं ।
बाढ़ी शंका दुर्योधन के केहिविधि धामपहूंचौंजाय १७
विधिबशपकरो यकलोथीका सोसहिलीनभूपकोभार ।
जहंतहंलोथीतनआअभिरैं सोगहिदेतगदासोंटारि १८
बड़े कष्टसोंपारहिपायो तब फिरि गयो आपने धाम ।
भारतभाषा शल्य पर्व यह पूरण भयोक्षेत्रसंग्राम १९
सुनैसुनावै जो मनलावै गावै याहि चित्तसों लाय ।
बड़े २ शूरनंकोकीरतियह जामें धर्मयुद्ध रह्योछाय २०
धर्म अर्थसुत संपति पावै पावै अंत काल सुर धाम ।
जोकछु मन्शामनमाठानै पूरण होयवेगिही काम २१
संबतवनइससैचौवालिस श्रावणमासशुक्लसुखदाय ।
गुरुदिन पूरणशल्यपर्वभै श्रीनंदनंदन कीनिसहाय २२
गंगाजी के उत्तर तटमा बंथर ग्राम एक अभिराम ।
बाजपेयिकुलकमलदिवाकरतहंश्रीरामरत्नगुणधाम २३
तिनकीअज्ञाउरधारणकरि बिरच्यों शल्यपर्व संग्राम ।
भूलचूककरिसोरक्षमापन पढ़िहैंयाहिबुद्धिबलधाम २४

गंगाजीके उत्तरतटमा है मसवासी ग्राम अभिराम ।
है गुणवानन की बस्ती जहं औतेहिहैप्रदेश उन्नाम २५
ब्राह्मणकुलमामोर जन्म है बंदीदीन शर्म यह नाम ।
मतिसमगायों यहिभारतको भाषाशल्यपर्वसंग्राम २६
हितचिततेकोउ पढ़ैपढ़ावै औ यहिग्रन्थ सुनावै गाय ।
धर्मअर्थसुत संपति पावै होवै मोक्ष मुक्तिफल पाय २७

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामोस्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्रामं निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षित निर्मित महाभारत भाषा शल्यपर्वशल्य
बधबर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

कबित्त ॥

संबत सुवेदयुगनंदचंदको प्रमानसावन सुभगपक्ष सुन्दरसोहायो है ।
द्वीजगुरु बारकरि पूरणहुलासयहगुरु शिवनारायण चरणमनायोहै ॥
पूरीअभिलाषायुतशल्यपर्वभाषायहछन्द मनमोहनीसुसर्वमनभायोहै ।
बन्दीदीनकबियहशूरनप्रचंडयशभारतखण्डयुद्धखण्डशुभगायोहै ॥

इति शल्यपर्व सम्पूर्णम् ॥

—※—
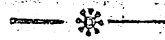
अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड

गदापर्वप्रारम्भः ॥

सुमिरण

मैंपदबंदौं शिवशंकरके नंदीपृष्ठि सुभग असवार ।
मौर बिराजै अहिमाथेमा सोहैं तीनि नयन रतनार १
बालचंद्रमा मस्तक राजै सोहै जटा सुरसरी धार ।
भस्म रमाये सब अंगनमा प्रिय अर्द्धंग भंग आधार २
कंठ हलाहल धारणकीन्हे भैरव नाथ भूतगण साथ ।
मंशामेरी तुम पूरणकरौ हे बरदानि गौरिकेनाथ ३
तुवबल भाषौं कछुभारतरण औपदपद्म हृदय में धारि ।
गदापर्व अबकहि गावतहौं सुंदर पांडु कौरवनरारि ४
प्रबललड़ाई भइसंगरमा जूझे तहां असंख्यनज्वान ।
मुंडनकेरे मुड़चौराभे औ रुंडनके लाग खरिहान १
बड़ २ योधा धरती गिरिगे दूनौ कटक गये अधियाय ।
महारथी सब संगरजूझे अब कौरवका करैं उपाय २
अंधकारभयो समरभूमिमा लोपे अधिक क्षारसों भान ।
अपन परावोकछुचीन्हैना कौरव तहांकरैं अनुमान ३

महारथिनकौलौथोगिरिगई पावैचीन्हिन कौनौख्वान।
जबसुतचीन्ह्योरेलक्षणको कौरवबहुतभांति बिलखान४
काह बिधाताने यह कीन्ह्यो जझ्झे पुत्र हमारेकाज।
काहबतैहौं जाय मन्दिरमा लागैहिये मोहिं बड़िलाज ५
असऽसपूतसुतफिरि मिलिहैना मरतौमोहिंउतारयोपार।
कीरतिहोइहै सबदुनियामा सोहरागाई सकलसंसार६
छोड़िजोजैहौं असलोथीका तौ यहि खैहैं कागसियार।
अवसर नाहीं अग्निदेनका मूंदौखोदि जमीकी क्षार ७
गदाचोटसों धरती खोद्यो तामें लोथिदीन गड़वाय।
डारिकै माटीतब ऊपरते चलिभे शोचकरत कुरुराय ८
जहंपर मंदिर महरानिनके राजातुर्त पहूंचो जाय।
देखिकै सूरति दुर्योधनकै रानीगई सनाकाखाय ९
लालरंग सब अंगबिराजै बूड़े बसन रक्तसों लाल।
मुकुटशीशऔगदा हाथहै अकिलोआवतआजभुवाल१०
रोइ रोइ रानी पूंछनलागी स्वामीहाल देउबतलाय।
रंगबिरंगे तेरे बस्तरहैं जियरे शोच रह्योका छाय ११
काननकुंडलअंबरपरिगे मुखमाबीरा गयोकुम्हिलाय।
कौन अंदेशापति जियरेमा चेहरे गई उदासी छाय१२
पकरिकै बहियां तबस्वामीकै आसन तुर्तलीन बैठाय।
तब दुर्योधन बोलनलाग्यो औसबयुद्ध सुनायोगाय१३
जोरि गदोरिया रानीबोलै स्वामी प्रथम न मान्योबात।
बहुबिधितुमकामैंसमुझावाहोइहैअबविजानकोघात१४
युद्धनठानौ तुम पांडवते नाहिन कुशल तुम्हैं कुरुराय।
कहीहमारी कछुमानीना औयुद्धैका रच्यो उपाय १५

कर्ण पितामहसे धनुधारी औ बलवन्त गुरू महराज ।
ईसबजूझेसमरभूमिमा तुमभगि आयोघरकेहिकाज १६
बांधव सगरे रणमा जूझे औ सुत मित्रनात औभाय ।
खड़ेतमाशातुमदेखत रह्यो आयोआपन जीवबचाय १७
धर्म क्षत्रियनके नाहींहैं जोरण त्यागि भजैं जिय आश ।
तेहितेतुमकासमुझावतिहैं । अबचलिजाहुपिताकेपास १८
भोजनकीन्हे तबराजैने रानी बिदाकीन दै पान ।
घरी महूरतमा चलिआयो जहँपर पिताकेरअस्थान १९
चरण पखारयो दुर्योधनने बोल्यो हाथजोरि शिरनाय ।
जितनीगाथारहै भारतकै सोसबियांकहिगाईसुनाय २०
बड़े २ योधा खेतन जूझे भीषम द्रोण कर्ण महराज ।
यतन बताओ कछुनीकोबिधि जासोंबनै अगारीकाज २१
तेहिक्षण कौरव बोलन लाग्यो जोकछुलिखाकर्मकर्तार ।
सोदुर्योधन अब टरिहैना सांचोमानहु बचनहमार २२
युगन युगनते यह चलिआई बिधिपरपंचमेटिनाजाय ।
पार न पैहौ तुमपाण्डवते रक्षकजिनकेयदुराय २३
यतननचलिहैकछुलरिबेको जा कछुबनिहै औरउपाय ।
व्यासस्रोवरका चलिजैयो औ तहँकछुदिनरहौछिपाय २४
तब गन्धारी बोलनलागी लरिका वचनकरौपरमान ।
जबते अपनेपतिमैं दीख्यों तबतेनैनपटीलियोतान २५
तजिदे बस्तर निजदेहीके देखौं नैनखोलि तोहिआज ।
बज्र अंग सब तेरे ह्वैहैं औसबपूर्णहोयतवकाज २६
घावनलगिहै तेरिदेहीमा निश्चय मानु हमारी बात ।
सुनिके बातैं गन्धारीकी कीन्ह्योसाईयतनकुरुतात २७

अंगउघार्यो सबदेहीके औमर्म्मस्थल लियोछिपाय ।
नयनबिलोक्यो गन्धारीने औयहबात कहीसमुझाय२८
सत्य बार्त्ता मेरि मानेना औ मर्म्मस्थल लियेछिपाय ।
सबियांदेही भइप्रस्थरकी बचिगयोएकजंघकेठांय २६
असससमुझायो दुर्योधनका नैनन पट्टी लियो चढ़ाय ।
बिदासुयोधनकातबकीन्ह्यो चलिभयोहर्षसहितकुरुराय
तजिदयोआशासबमन्दिरकी जैसे परमहंस अलगाय ।
मातपितासुतबनितात्याग्यो चलिभोब्याससरोवरधाय
गदा बिराजै रे हाथे मा शिरपरमुकुटचमकिरहिजाय ।
घरीपहारुकके अर्सा मा पहुंच्योब्याससरोवरजाय ३२
शोभा बरणौ को सरवर कै निर्मल नीर रह्यो छहराय ।
कमलप्रकाशे बररंगनके तिनपरमधुकररहेलोभाय ३३
चक्रवाक औ सारस नाचैं उज्ज्वल हंस बंस रहेछाय ।
करतकिल्लोलैंजहँहरिणागण कौरवदेखिमोहिरहिजांय३४
धंसिजलथम्भनमातबपहुंच्यो मानौबैठ भवनमाआय ।
लियोसहादरतबकमलाने आसनविमललीनबैठाय३५
कनकपलंगरा सुन्दर साज्यो तापरनृपतिकीनबिश्राम ।
सुनौहकीकतिअबपागडवकै रणतजिगयेआपनेधाम३६
सबदलहर्षितभोपागडवका लीन्होविजययुधिष्ठिरराय।
चौमुखदियनाकुन्तीसाजै औफिरआरतिकरैबनाय ३७
अनंदबधैया महलन बाजैं घर घर होयँ मंगलाचार ।
बंटैंदक्षिणारे बिप्रनका होवैं शंख नाद हहकार ३८
कीरति गावैं रे वंदीजन औ द्विज बांचैं बेद पुरान ।
जीतिपागडवामन्दिरआये कौतुकलखैंदेवअसमान३६

लागिकचेहरी महराजाकै पांचौ बंधु बैठ हरषाय।
विमलवरासनपरशोभितहैं श्रीपतिदीनबंधुयदुराय४०
तेहीसमइया के अवसरमा बोले भीमसेन शिरनाय।
महीं संहारे हैं संगरमा कौरवनाथ केरसब भाय ४१
मैंना मारो दुर्योधन का ना संगर मों परो लखाय।
सुनिकै बातैं भीमसेन की बोले भूप युधिष्ठिर राय४२
शल्य संहारचों मैं संगरमा माता बचन करौ परमान।
पारथ बोल्यो वहिअवसरमा सुनियेदीनबंधुभगवान४३
मैं दुर्योधन का दीख्योंना की बधिगयोकि बच्योपरान।
यहिदलबादल के अंतरमा कौरवबधबनपायोंजान४४
नकुलौ बोले वहिसमयापर मातातोहिंकहैं शिरनाय।
हालनमेरोकछु जानोहै जियतकिमरोसमरकुरुराय४५
तब कुंतीसहदेवै पूछयो तुमसबजानत हाल हवाल।
की दुर्योधनसंगर जूझ्यो की बचिगयोनआयोकाल४६
तादिन सहदेव बोलन लागे माता सुनौ हमारी बात।
मैंकछु दीख्योंनानैननसोंकौरवबच्योकिह्वैगयोघात४७
तेहि क्षण कुंतीने समुझायो पारथ बचनकरौपरमान।
तुम पुरुषारथ कियो अकारथ जो दुर्योधन बचेपरान४८
काह बनायो तुमदलबधिकै कौरवकुशलगयोनिजधाम।
कछून कीन्होतुम क्षत्रीपन नाकछु भयोतुम्हारोकाम४९
यक पखवारा संगर ठान्यो पांचौबंधुलरयोमनलाय।
शत्रुनमारो गयो खेतनमा तौ तुमकियोकाहमन्शाय५०
नालति ऐसे क्षत्रीपनका औधिरकार जिंदगी क्यार।
शत्रुन मारोरणखेतनमा तौ कर गहे काहहथियार ५१

सुनिकै बातैं तब कुंती की बोले कृष्णचन्द्र यदुराय ।
जो कछु भाष्योहै कुन्तीने सोसबसत्ययुधिष्ठिरराय ५२
ज्यहिहितसंगरभारतठान्यो ज्यहिहितइतनेभयेउपाय ।
शूरन मारोरण खेतनमा क्षत्री धर्म बादिहवै जाय ५३
इतना सुनिकै पांचौ भैया तुरतै उठे पाण्डु के लाल ।
बरतअग्निमाजैसेघृतपरै औबढ़िचलैअनलकीज्वाल५४
लै संगलीन्हो मधुसूदन का आये कुरुक्षेत्र मैदान ।
बारिमसालै देखनलागे जितने परे भूमिमा ज्वान ५५
रुण्डन केरे जहँ दल बादल औमुण्डनके लगपहार ।
चीन्हि न चेहरा परै क्षत्रिनका नदियाबहैं रक्तकीधार५६
बड़े २ राजा खेतन जूझे शिरके मुकुट चमकिरहिजायं ।
जगमगकुण्डलहोयंकाननकेपगड़ीबहीनदिनमाजायं ५७
कहुं २ हाथिन के दलतोपे जैसे चैत परैं खरिहान ।
कहूं बछेड़नके कल्लापरे हवैरहोविषधरभूतमशान ५८
रुधिरपानकरियोगिनिनाचैं लरि२लोथिनखायंसियार ।
खोजनपायो दुर्योधन का बहुकौरव का राजकुमार५६
पांचौ योधा शोचन लागे संगै कृष्णचन्द्र भगवान ।
आवतदीख्योइकब्याधाका ताक्षणमनैलीनअनुमान६०
हालजो पूछैं यहिब्याधाते शायद दीखहोसिकुरुनाथ ।
कुशलप्रश्नकहिपूछनलागे सुनियेपथिकहमारोबात६१
तुम कहुं दीख्यो दुर्योधनका निश्चय हमैं देहुबतलाय ।
खोजिकैथाके चहुंओरनमा पायोहेरिनहींकुरुराय ६२
हाथजोरिकै ब्याधा बोल्यो सुनिये पांडु सुवनयहबात ।
मैं मगदीख्योंयकयोधाको अबहींव्यासससरोवरजात६३

गदा विराजै त्यहिहाथेमा औशिर मुकुट रह्योदरशाय ।
यहसुनिपांडवमनमाहरण्यो निश्चयजानिलीनकुरुराय
आगे लीन्हो तब व्याधाका लैसंग चलेकृष्णभगवान ।
संगै पांडव सबसोहत हैं पारथभीम आदिबलवान६५
इतउत देखतरेरस्तामा आये व्यास सरोवर पास ।
चिह्ननिहारेउतहँचरणनके जान्योहृदयमिलनकीआश
चक्र बिलोक्यो रे धरतीमा हैं सो चक्र कौरवा पांय ।
भयोकुलक्षणदुर्योधनका विधिगतिकछूजानिनाजाय६७
आयकिनारे तब सरवरके पांचौ बंधु कृष्ण भगवान ।
देख्यो शोभा रे सरवरकै तेहिछबिकोकविकरैबखान६८
तब मधुसूदन बोलन लागे पांडव सुनौ हमारी बात ।
नृपजलथंभननीको जानै मानोबचन धर्मनृपतात ६९
भयो अंदेशा तब राजाका बोले धर्म सुवन यहबात ।
यतननचलिहैकछुसरवरमा सोजियसमुझिकहौकछुतात
तुम जगकर्ता औ भर्ताहौ सबके हृदय नाथ को बास ।
मन्शाजानतप्रभुसबकीहौ कहौकुरुनाथमिलनकीआश
तबकमलापतियह बोलतभये सुनिये भूपयुधिष्ठिरराय ।
है क्षत्रीपन दुर्योधनमा सोमैं तुमते कहौं उपाय ७२
तीर पठावो रे भिम्मा का सरपर हांक सुनावै जाय ।
सुनिकै गर्जनिरे भिम्माकै कौरव आवैवेगिहोधाय ७३
सुनियहबातैं कमलापतिकी सरवरतीर भीमगयोधाय ।
सिंहकिगर्जनिभिम्मागरज्यो औयहहांकसुनायोजाय७४
सुनुरे योधा अब कौरवपति आवै तोहिं हियेनालाज ।
तेरे कारण खेत जूझिगे भीषम द्रोण कर्णमहराज ७५

बड़ेबड़े योधा समरजूझिगे सिगरेंनातग्वांत सुतभाय ।
खेत छोंड़िकै कायरभाजे दीन्हेबंशनाशिकरवाय ७६
नालति ऐसे क्षत्रीपनका औधिरकार जिंदगोक्यार ।
धिकहै ऐसेपाराक्रमका नालतिहाथगहेहथियार ७७

(क०) स० ।। मीतकुमीत जोप्रीतितजै धिकब्राह्मणजोकुल धर्महित्यागै ।
सोधिकहै तपसोजो तपै तजि कर्म बिहाय बिषय पथ लागै ॥
बंदि सो है धिक नारिसती गहिकै सत फेरि जिये भ्रम जागै ।
धिक शूर सो कूर जोसंगरते तजि सान गुमानपरान लैभागै ७८

सुनिकै बातैं तब भिम्माकी कौरव उठ्योभरहराखाय ।
गदा हाथलै चलिबेताक्यो गहिकररमालीनबैठाय ७६
तबसमुझायो दुर्योधनका औ कुरुनायक बात बनाउ ।
कहाहमारोकछुजियमानौ पीछे युद्ध करनकाजाउ ८०
कुशल तुम्हारी कछुनाहींहै मतिकरु भूपजानप्रस्थान ।
तबदुर्योधन धीरजधार्यो बैठउफेरि पलंगराआन ८१
तबललकारोफिरिभिम्माने ओकुलघाती बातवनाव ।
जोकछुबानातोहिंक्षत्रीको जलतेनिकसिसामुहेंआव ८२
जानगदोरियापर लैभागे ओकुलकायरतोहिंनलाज ।
यहिमन्शइया पर भारतरचि कीन्हे कूरशूरकेसाज ८३
जल्दी बाहरआ सरवरते संगर लेहि हाथ हथियार ।
देखैं। बनैतीतोरि समुहेंपर ऐसेजियबक्यारधिरकार ८४
सुनिअस बातैं भीमसेनकी तबदुर्योधनउठ्यो रिसाय ।
जैसे दावा बनमा लागै औ पलमांझखाकह्वैजाय ८५
कोपिगदा गहि कौरव धायो लक्ष्मी गह्योदौरिकैहाथ ।
आजुठहरिजाजोसरवरमाकालिहकदेहौंसैनधनसाथ ८६

युद्धअठारहदिन भारतभयो तीनोंलोकमें आइउंमंझाय।
त्वहिंअसराजाकहुंपायोंना लक्षणवंतहेरिकुरुराय ८७
आजु दिनौंना जोधीरजकरु सांचे बचन मानुकुरुनाथ।
काल्हिकतेरेसँग लरिहैंना पांडवसमरशस्त्रलैहाथ ८८
काल्हिसामना जोसंगरकरैं पांडव जयनलहैं संग्राम।
बातमानिलेओकुरुनायक साधौसमुझिआपनोकाम ८६
सुनिकैबातैं तब लक्ष्मीकी पलंगा पौढ़िरह्यो कुरुराय।
सिंहकिगरजनिभिम्मागरज्यो तीसरिहांकसुनायो घाय
तजुदुर्योधनरे सरवरका बाहर निकसि करैसंग्राम।
धर्म्मक्षत्रियनके छांड़तहै रणमाकाहधरावतनाम ६१
तेरेबनाये कछु बनिहैना ह्वैहैवही जो लिखालिलार।
छांड़त बाना रजपूतीका हैधिरकार जिंदगीक्यार ६२
प्राण आसरा तोहिंभायोहै समुहे शूर रह्यो ललकारि।
जलतेबाहर तोयँ निकसेना मानै कूरहियेमाहारि ६३
गनैशूरिमा कोउसमुहेना अबका छांड़िदीनअभिमान।
जलौंछिपायेतोयँबांचहैना मरिहौहेरिजिमीअसमान६४
गदाचोटसों सरवरफारिहौं औसबबारिदेहौंउलचाय।
केशघसीटततोहिंलैअइहौं मरिहौंखेदिसमरकुरुराय६५
सुनिकैबातैं तबभिम्माकी कौरवजरयोअग्निकीज्वाल।
छायलालरी गैननमा आयोरोषहियेबिकराल ६६
गदासम्हार्यो तबहाथेमा रोषित चल्योबेगकुरुनाथ।
झपटिलक्ष्मीतबपकरतभइ औसमुझायोजोरियुगहाथ
सोककुमान्योनाभावीबश लक्ष्मीबचनकोननहिंकान।
तुर्तसरोवरते कढ़िआयो भभकै हियोकोपकोसान ६८

सूरति दीख्यो दुर्योधनकै दौरिकै मिलेयुधिष्ठिरराय ।
कंठलगायोतबकौरवका औयहबचनकह्योसमुझाय ९९
चलिकै बैठौ सिंहासन पर कीजैन्यायसहितअबराज ।
पांचौ भैया सेवाकरिहैं आज्ञामानिकरैंसबकाज १००
पांच गांव तुमहमकादैदेव हमको यहीबहुतहैभाय ।
छत्रसिंहासनतुमचलिलीजै करियेराजपाटसुखपाय १
तब दुर्योधन ने यह भाष्यो सुनिये धर्मराज महराज ।
पंथ तुम्हारो है धर्म को ताते कहौ धर्म के काज २
पैयह बातैंना क्षत्रिनकी करि रणफेरिभगैं जियआश ।
टेक आपनी मैं छड़िहौंना नाहिंत होयसोर परिहास ३
तिलभरि बसुधा अबदेहौंना जेहिलैश्वासनरहैंपरान ।
संभरिकैलरिहौंरणखेतनमाहोइहैलिखाजौनभगवान ४
पांउ पछारी काडरिहौं ना लावोंजिये न कादरिबात ।
कोमरिजैहौं लरि संगरमा कीतौकरौं पांडुनघात ५
सुनिअसमन्शादुर्योधन की बोले भूप युधिष्ठिर राय ।
जोमतिआई असिजियरेमा करिये युद्धसमरमाभाय ६
लैहुहमारे द्वैभैयन का दोऊ औरहोयसम ज्वान ।
करौलड़ाई रणखेतनमा यह ममबचन करौ परमान ७
हंसि दुर्योधन बोलन लाग्यो सुनिये धर्मराजमहराज ।
यहतौशिक्षा कछु नीकी ना औनाबनै समरकोकाज ८
भीमधनंजयका जोमैं लेउं तुमका हनौं तुरत मैदान ।
फिरिकोउयोधा असनाहींहै सन्मुख करै युद्धसामान९
युद्ध बाजिबीएक एक को यहममबचन करौ परमान ।
राजाराजहिको रानीको चहिये बैरप्रीति सामान१०

सुनि असबातैं दुर्योधन को मधुसूदनने कह्योबुझाय ।
सन्मुखलरिये भीमसेनके करिये युद्धसाज कुरुराय ११
तब दुर्योधनने समुझायो ओयदुनंदन दीन दयाल ।
छत्रराज का नहिंभिम्माशिर राजा धर्मराज भूपाल १२
उचितलराईतिनसन हमको निश्चयबचनकरौयदुराय ।
फिरिकैगोबिंदनेसमुझायो असनाउचितअहैकुरुराय १३
भुजबल बसुधा राजा भोगै यामें तनिक अंदेशा नाहिं ।
अतिभटभारीभीमसेनहै है बलबिदितजासुजगमाहिं १४
तेहिबलराजा धर्मराज हैं सांचो भीमसेन भूपाल ।
सबियांभारतभीमैजीत्योभुजबलकियोराजप्रतिपाल १५
तब तुमराजाभीमहि जानौ नावैं धर्मराज जो माथ ।
सुनि असबातैं मधुसूदन की शंकाकियो धर्मकेनाथ १६
चौ भैयनके शंका भइ अबधौं काहकरैं करतार ।
शाशनवा ने जो कहुंराजा तौजरि भीमसेनहोयक्षार १७
तबयहमाधव रचनाकीन्ह्यो दियोहरिबंशभीमकेहाथ ।
सो यह रचना यदुनंदनकी जान्योनेकनहीं कुरुनाथ १८
तबसमुझायो कमलापतिने राजा तुर्त नवायो माथ ।
भीमपाणिहरिबंश बिलोकयो बोल्योधर्मजोरिकै हाथ १९
माथ नवायोजब पांडवने तबहरि दीन्ह्यो शंखबजाय ।
सोकछुजान्योनाकौरवपति औयहकहोभीमसोंधाय २०
सँभरिकैआइय रणखेतनमा खेलियसमरशस्त्रकीमार ।
सोईपराजय औ जयपैहै जेहिजसभालल्लिख्यो कर्तार २१
लखैं तमाशा सबनैननमा हमतुमलरैं समरमैदान ।
सुनिअसबातैंदुर्योधनकी भभक्योभीम कोपकोसान २२

हाथगदा लै दोउ ठाढ़े भे जैसे समर भयंकर काल ।
छाय लालरी गइनैननमा एकते एकदई के लाल २३
सुमिरि भवानी जगदंबाका दूनौंशूर भये हुशियार ।
गदाकिचोटै मारनलागे होवनलागि परस्परमार २४
गदा२सों घाव निवारैं औ फिरिहनैं चोटतन तान ।
पार न पावैकोउ काहूते दोऊ शूरभरे अभिमान २५
सिंहकि गर्जनि दूनौ गरजैं सावनसघनयथा घहराय़ँ ।
इन्द्रबज्र जस धरती टूटै तरवर पात२ झरिजायँ २६
कँपैमेदिनी दोउ भुज बलसों परलयकाल रहोनाजाय ।
तबसमुझायोहै भिम्माने सुनियेबचनमोर कुरुराय२७
ओसरिन चोटैकरु संगरमा नाहिंतस्वर्ग बैठिपछिताव ।
कालझोटइया परनाचतहै यासोंसमरखेलिलेदांव २८
तब ललकारो दुर्योधनने भिम्मा खबरदार होइजाय ।
धोखेनरहिये कोहुक्षत्रीके देहैंसंगर आजुसोवाय २९
पांवपछारी का परिहैना चहै तन टूक२ होइजाय ।
कायर क्षत्रीहम नाहींहैं जोरणछोंड़िघरै भगिजांय ३०
नाअमरौती फलखायेकेहुं नाअमरावति आयोमँझाय ।
स्वर्गबसेरा सबकाहूको इकदिन सबै स्वर्गकोजाय ३१
पहिली चोटै करुसंगरमा नाहिंत होइहिये पछिताव ।
हमरी वारनतेबचिहैना भिम्मा कहौंतोहिंसतिभाव ३२
आजुमन्शई लखुसंगर मा पांचौभाय मारिहौं धाय ।
सुनिकैबातैंदुर्योधनकी भिम्मागयोरोषतनछाय ३३
तबललकारो है कौरवका बढ़िकै कहौबहुत ना बात ।
गदासँभारो रे हाथे मा करिहौंआज तोर शठघात ३४

यहकहिधायो दुर्योधनपर कीन्ह्योविषधरगदाप्रहार।
चोटबचायोदुर्योधन ने दाहिन भयो ताहि कर्तार ३५
गदागदा पर चोटैं बरसैं लागतउड़ै अग्निकी ज्वाल।
सिंहदहारनि दोऊ गरजैं मानोखड़े समरमाकाल ३६
कौनौ मुर्चन ते मुरकै ना जानत नीको अस्त्र बिधान।
झुरमुटपरिगेदोउक्षत्रिनके देवतादेखत खड़ेबिमान ३७
गोरे रँग का दुर्योधन है औ है भीमसेन तन श्याम।
मनोहिमाचलऔकज्जलगिरि आयेसमरयुद्धकेकाम ३८
गदाप्रहारैं रे छलबलकरि मानैं कोऊ हिये ना हार।
दशशतहाथिनकापाराक्रम हैंदोउयोधावीरअपार ३६
शीश बिदारैं मस्तक फारैं जैसे चलैं इन्द्रकी गाज।
इतउतघूमैं रे दावँनपर अपने युद्ध बिजयके काज ४०
तेहीसमइयाके अवसरमा बोलेबिहँसि बचनबलराम।
भीमपराक्रममाज्यादाहैं कुरुपतिअधिकदावँकेकाम ४१
करौ लड़ाई ना आपुस मा छोड़ौ बैर भाव को नात।
करौसनेहुवा रे आपुसमा मानौकही हमारी बात ४२
दूनौंयोधा संगरअरुझे हलधर बचन न कीन्ह्योकान।
जाहिबिधाता अब दाहिनहै सोई फते करै मैदान ४३
कोहै रक्षक कुरुक्षेत्रका यहकहि गमन कीन्ह बलराम।
सैनजनायोतबभिम्माको कीन्ह्योजंघइशाराश्याम ४४
घातलगाई तब भिम्माने कौरव जंघ करौं उठि घात।
गदाप्रहारन मारनलागे औतनचोट बचावतजात ४५
गदाप्रहार्यो तब भिम्माने औदुर्योधन जंघसम्हारि।
चोटगदाकोजंघनदीन्ह्यो कौरवगिर्योभूमिहियहारि४६

जरकेकाटे जसबिरवागिरै तैसेधरणिगिर्यो कुरुराय ।
बैरपाछिलोतबसवंरनकरि भिम्मादौर्योलातउठाय४७
तबैयुधिष्ठिर हाहाकीन्ह्यो भिम्माकरत काह अन्याय ।
लखिअनरीतीभीमसेनकी बरजनकियोकृष्णयदुराय४८
तुम्हैंवाजिबीअसचहियेना चरणप्रहारकरतकयहिकाज।
धीरजधरिकैतबजियरेमा औउठिबैठतबहिंकुरुराज ४६
तब यह भाष्यो भीमसेनसों सुनियेबीर बृकोदर बात ।
धर्मबिचार्योनाक्षत्रिनका कीन्ह्योबृथाजंघकोघात ५०
तादिनभिम्मा बोलनलाग्यो कौरवबचन करौपरमान ।
चीरद्रौपदीकाजादिनहरो औतुमकोनबड़ोअपमान ५१
तादिनमनमामैंप्रणकीन्ह्यों औसबबीरनकह्यों सुनाय ।
जंघ न तोरौं जोकौरवकै तौ मम क्षत्रीधर्मनशाय ५२
सो प्रणपूरो मैं कीन्ह्यों है मानो सत्य बचन कुरुराय ।
ताक्षणबोले दुर्योधनते श्रीपतिकृष्णचन्द्र यदुराय ५३
गयोंबसीठीत्वहिंसमुझावन त्वहिंदुर्योधनकह्योंबुझाय ।
बंशलड़ाई कछुनीकोना दीजै पांचगांव अलगाय ५४
कहोहमारोकछुमान्योना औमोहिंकह्योअनादरिबात ।
मोहिंकचेहरीतेहठिटार्यो सोइअबआनिभयेउत्पात ५५
हठकरिभारतरणठान्योतुम बड़े २योधा दियो जुझाय ।
धनजनसंपतिसबनाशितभइ औअबपरीजानपरआय५६
सुनिकै बातैं मधुसूदनकी बोल्यो हाथजोरि कुरुराय ।
दोषहमारो-कछुनाहींहै निश्चयबचनकरो यदुराय ५७
तुम सबके उर अंतरयामी तुम्हरोकरो होय सबनाथ ।
लिखाबिधाताकाकोमेटै अवशिसोफुरैकर्मके साथ ५८

जोकछु मन्शा नारायणकी सोई अवशिहोय भगवान ।
सुनिकैबातैं दुर्योधनकी श्रीपतिभये बहुत सुखमान ५९
पांचौ भैया संग मा लैकै औ चलिभये भवन यदुराय ।
बिजयपत्रलै महभारत में आयेगेह युधिष्ठिरराय ६०
बजै बधइया रे मंदिर मा सखियां करैं मंगलाचार ।
आरतिसाजै माताकुन्ती औसब खुशीभये घरबार ६१
कृष्ण शीश आरती उतारै माता दान देत हरषाय ।
जोरिगदोरियाबोलनलागीऔमहराजकृष्णसुखदाय ६२
तुमप्रणराख्योमहभारतमा लीन्होबिजयपत्ररणमांझ ।
धन्यधन्यहौ तुमयदुनन्दन राखौसदाभक्तकीलाज ६३
औरि बयरिया डोलनलागी औरै होनलाग ब्यवहार ।
तबकछुमनमामंत्रबिचार्योत्रिभुवननाथकृष्णकर्तार ६४
औसमुझायो धर्मराज का सुनिये भूपयुधिष्ठिरराय ।
मेरेमनमा ऐसी आवै आजु नबसौभवनकोउजाय ६५
करौतयारी यहिसमयापर पांचौभाय चलौमम साथ ।
यह कहिसाज्यो नंदिघोषका रक्षकभये भक्तके नाथ ६६
पांचौ भैया संगमालैकै चलिभे कृष्णचन्द्र हरषाय ।
पवनचालते चलेबछेड़ा योजनएकगयोबहिराय ६७
तेहिक्षणपारथमनमाशोचै रचना काहकीनि भगवान ।
वहिक्षण ध्यायोहरिशंकरका शम्भूदर्श दीन तहँआन ६८
अस्तुति कीन्ह्यो कमलापति कै बोलेबचनगौरिकेनाथ ।
काहै आज्ञा यदुनंदनकै पूंछो हाल जोरिकै हाथ ६९
हालबतायो तब माधवने सुनिये बचनबरदअसवार ।
भौनछोड़िकैहमचलिआये नाकोउपांडुभवनरखवार ७०

बिनयहमारीयहतुमसनहै पाण्डवद्वाररहौनिशि आज ।
जाननपावै कोउभीतर का पूरणकरौआजयहकाज ७१
सुनिअसबातें मधुसूदन की बोले गौरिनाथ हरषाय ।
आज्ञातुम्हरीहरिशिरपरहै रहिहैंपाण्डुद्वारहमजाय७२
जाननपैहै कोउ भीतर का यामें कछू अँदेशा नाहिं ।
लिखीबिधाताकैकोमेटिहै समुझियनाथसत्यमनमाहिं७३
यह सुनि बातैं शिवशंकर की माधव बिदाभयेहरषाय ।
चलेमहादेव वहिअवसरमा रक्षकभये द्वारके आय७४
अश्वत्थामा यह मनशोच्यो घायलभयेसमर कुरुराय ।
आधिरातिकेरे अवसरमा कौरवनिकटपहूंच्योजाय ७५
जहँ दुर्योधन समरभूमिमा घायलभयोपरेबिलखाय ।
गदाफिरावै रे हाथेते जंबुक गीधनिकटनहिं जाय ७६
देखि दशा यह दुर्योधन कै बोल्यो द्रोणपुत्रहरषाय ।
अम्मरलरिकागुरुनायकका जाकोतेजवर्णिनाजाय७७
अमर इन्द्र हैं इन्द्रासनमा औशिव अमरअहैंकैलास ।
मृत्युलोकमा द्रोणी अम्मर हैबल अंगअंगपरकास७८
देखिसामुहेतब द्रोणीका औ दुर्योधन कीन प्रणाम ।
जोरिगदोरिया बोलनलागो भारतभयोकछूनाकाम७६
बड़े २ योधा खेत जूझिगे भीषम द्रोण कर्ण महराज ।
एकसौ भैयामेरेरण जूझे जूझे बहुतबीर ममकाज ८०
मारिपाण्डवन मैं पायोंना घायल भयों समरमाआय ।
मनकीशोची सबमनमारहीं नाकछुमेरोचलोउपाय ८१
तेहितेतुमका समुझावतिहौं गुरुसुतसुनौ हमारी बात ।
यत्न सोकीजैयहिअवसरमा जातेहोयपांडवनघात ८२

पांचौ भैया जो रणजूझैं तौ जियरेका डाहु बुझाय।
युक्तिसोकरिकैयहिअवसरमा पांडवहनौअवशितुमजाय
तादिन द्रोणी बोलन लाग्यो ओमहराजा बातवनाउ।
रणमास्वामी का देखेबिन नाहियबढ़ैयुद्ध को चाउ ८४
जंगल सूनो रे केहरिबिन सूनो बिना सुपारी पान।
बिनामर्दकैतिरिया सूनी आगे बिनाशस्त्रकाज्वान ८५
बिनामँजीरा ढोलक सूनी ठाकुर बिनासूनि चौपारि।
रैनिचन्द्रमा बिनसूनोहै मन्त्री बिना सून दरबार ८६
सून बछेड़ा बिनकाठीका हौदाबिना सून गजराज।
बिना सैनपति सैनासूनी आगे बिननरेशकैराज ८७
बिना तुम्हारे समरभूमिमा कैसे करैं युद्ध हमजाय।
उचितलराई कछु ऐसोना सुनियेमहाराजकुरुराय ८८
सुनिकै बातैं तब द्रोणीकी यह दुर्योधन कह्योबुझाय।
सुनौदुलारेआचारजके भाषतकछुकतोहिंसमुझाय ८९
तोहिं बनायों मैं सैनापति गुरुसुत बचनकरौ परमान।
रक्तभरी रजदुर्योधनलै कीन्ह्योतिलकवहीबड़जान ९०
मारि पांडवनका नीकीविधि बसुधाभोगकरौतुमजाय।
आनँदहोइहैतबजियरेमा पांडव हनौसमरमाजाय ९१
सुनिकै बातैं दुर्योधनकी द्रोणीतबहिं कह्यो हरषाय।
मारिपांडवनका यहिक्षणमा लैकैशोशदेखैहौंआय ९२
यहिकैशंकातुम कीन्हयोना हमकाअमर कीनभगवान।
कौनिउँविधितेअबबचिहैंना पांडवकरैंआजबिनप्रान९३
आज्ञा लैकै दुर्योधनकै अश्वत्थाम चल्यो शिरनाय।
जहँ कृतबर्मा कृपाचार्यरहैं तुरतैतहां पहूंचोजाय ९४

जोरिगदोरिया बोलनलाग्यो सुनियेकृपाचार्यमहराज।
कौरवभेंटनमैंअवहींगयों तिनमोहिंदियोतिलककैराज ९५
मोहिं बनायोहै सैनापति औयहकह्यो मोहिंसमुझाय।
हतौपांडवा जो संगरमा तौजियरेका डाहु बुझाय ९६
राजअकण्टकतबतुमकरियो यहसमुझायकह्योकुरुराय।
तेहितेतुमतेअसभाषतहौं अवतुमकरियोमोरिसहाय९७
शीशकाटिकै रे पँचहुंनके कौरव तुरत देखैहौं जाय।
यहमनशोचयोतबतीनोंने निश्चयमनैं लीनसमुझाय ९८
संगै चलिभे तबतीनोंजन आयेतुरत पांडवन द्वार।
नैननदेख्यो तबशंकरका द्वारेखड़े बने प्रतिहार ९९
रक्षक मंदिरको त्रिशूलहै औहैंद्वार शंभु रखवार।
तीनोंयोधातबचलिआये औनिजमनमाकरैंबिचार२००
यतनसोशोचैंयहिअवसरमा जेहिसोंकामसिद्धिहोइजाय।
पांडवमारनका कहिआयों औकुरुनाथ अयोंसमुझाय१
बुद्धि न चलिहैया समयापर नाबल चलैशम्भुकेसाथ।
हैं बरदानी भोलाबाबा यहिक्षण नाचिरिझावोंनाथ २
यह कहिआयो बढ़ि आगेको ठाढ़े महादेव जहँद्वार।
गाल बजायो तबद्रोणीने हरषेदेखि बरद असवार ३
हैं बरदानी तीनों युगमा सांचेभक्त प्रणत प्रतिपाल।
वेद पुराणन कीरति गाई शम्भू तुरते होत निहाल ४
कीरतिगावों इक समयाकै सोहैकथा पुराणन माहिं।
रहैनिशाचर इक भस्मासुर जाबलकेरठिकानोनाहिं ५
करैतपस्या सो गिरिवरपर करिव्रत संयमनेमअचार।
ध्यानलगायोशिव शंकरमा जीवन बारिपवनआहार ६

उग्र तपस्यालखि दानवकै भोला तुरतैभये निहाल।
जो बर चाहैसोबरमांगै करिहौंतोर बचन प्रतिपाल ७
तबकछुशोच्यो भस्मासुरने औनिजमनमाकियोबिचार।
असबर मांगौं शिवशंकरते जेहिकर धरौं होयसोक्षार ८
फेरि जरैहौं मैं शंभूका लेहौं पारबती अगियाय।
यहबरशोच्योरेजियरेमा औफिरिकह्यो शम्भुसनधाय९
जोशिवशंकर मोहिंपर खुशहौ तौयहदेहुहरषि बरदान।
जेहिशिरधरिदेउंमैंआपनकरसोजरिहोयभस्मपरमान १०
एवमस्तुकहि शंकर दीन्ह्यो मन्शापूरण कियोबनाय।
दानव दौरयो तब शंकरतन भागे भूतनाथ भयखाय ११
आगे धावत शिवशंकरचले पाछे भगो निशाचरजाय।
तीनिलोकमा शंकरभरमे तबनारायण कीनिसहाय १२
रूप धारिकै पारबतीका सन्मुख भये दैत्यके जाय।
औसमुझायोयहदानबका निश्चरबचनसुनौमनलाय १३
तुम शिवपाछे नाहंकधावो मैंहौंखुशी निशाचर राज।
करौतमाशा तुमशिवकाअस तौसबबनैतुम्हारोकाज १४
यककरधरियो तुममाथेपर यककरधरु नितम्बपरजाय।
थिरकिकैनाचौमोरेसमुहें परबाजनगलबलकैरबजाय १५
तुरतै चलिहौं मैं तुम्हरेसंग नाकछुशोचौ और उपाय।
सुनिकैबातैं नारायणकी भ्रमवशगयो दुष्टअंधखाय १६
साथहाथधरि जा क्षणनाच्यो तुरतैमूढ़ भयो जरिक्षार।
लखियहकौतुकनारायणकातबथिरभयेबरदअसवार १७
हरषित होइकै तब द्रोणीते बोले भूतनाथ हरषाय।
जोकछुमनभातेरेजियरेमा मांगौसत्यशोक बिसराय १८

सुनिअसअज्ञाशिवशंकरको द्रौणीकह्योबहुरि शिरनाय।
यहबरमांगौंमैं स्वामी ते दीजै पांडु भवनमोहिंजाय १६

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्राम निवासि बाजपेयि पं० रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन
दीक्षितनिर्मित महाभारत भाषा शल्यपर्वद्रौणीबरदानयांचा
वर्णनोनामप्रथमोध्याय: १ ॥

तब समुझायो महादेव ने द्रौणी बचन करौ परमान।
मैं हौं रक्षक रे द्वारेका रक्षक कीन्ह कृष्ण भगवान १
जान न पैहौ तुमद्वारे सों दूसरि राह खोजिकै जाव।
तादिनद्रौणी बोलनलाग्यो है यकनाथ हियेपछिताव २
चहुंदिशि घेरेहै मंदिर को आपहिको त्रिशूलरखवार।
जानसोदेहै कसभीतरको सोकहुनाथ बरदअसवार ३
शूलनिरखि जो हमका पैहै डरिहैतुरत जानसों मारि।
युक्तिबतैयेयहि समयापर जासोंकाजहोय त्रिपुरारि ४
सुनि अस बातैं तबद्रौणी की भोलानाथ भक्तके नाथ।
भस्मकाढ़िकैरे झोरियासों सोधरिदीन द्रौणिकेहाथ ५
औसमुझायो यह द्रौणीका लेसबअंगन भस्म लगाय।
जा बेखटके तब मंदिरका होइहै शूल नहीं भयदाय ६
हर्षिसोलीन्ह्योतबद्रौणी ने सबियां अंगम लईलगाय।
गयोनिशंकितचलि मंदिरका भीतरतुर्त पहूंच्योजाय ७
प्रथम सो पहुंच्योरे तहंवांपर जहंद्रौपदीकेर रनिवास।
सोवतदीख्यो रे द्रुपदीको तबयह मनैकीनअभिलाष ८
औ चढ़िबैठ्यो रे द्रुपदी पर जैसे घरै हरिणको व्याध।
दृष्टिपसार्‌यो तबआगेका सोवतलख्यो पांचसुतसाध ९

पांचौ पांडव के बालक हैं हैं बलरूपम एक समान।
तिन्हैंदेखिकै तब द्रोणीने निश्चयहियेकीनअनुमान १०
पांचौ लरिका रे कुन्तीके येनिश्शंक सोय रहे आज।
शीशकाटिकै अबपांचौके साधौंबेगि कौरवन काज ११
खड्गनिकार्योतब हाथेमा मार्योबेगि बालकनधाय।
शीश काटिकैरेलरिकनके औगहिहाथेलीनउठाय १२
दासी जागीतेहिअवसरमा हाहाकारपर्यो रनिवास।
रोवैरानी तब पांडवकै हाकेहिकीन्ह्यो बालबिनाश १३
सुनिकै रोदन रे मंदिरमा सैना शूरपरे सब धाय।
खड्ग काढ़िकै तब द्रोणीने केतनेइंहनेबीर धरिधाय १४
अस्त्रशस्त्र बहुबाजनलागे मन्दिर उठिगे घोरमशान।
मारुमारुकहिक्षत्रीधाये चहुंदिशिचलनलागहथियार।
हनैंकटारी साननभारी भाला निकसिजायंवहिपार १५
बड़ीलड़ाईभै मन्दिरमा केतनेउं जूझिगये सरदार।
जोकोउयोधा बाहर भागै तेहिकृतबर्मा हनैदुवार १६
अपनपराबाकहु सूझैना सबियां शूरगये अधियाय।
जे बचिआये रहभारतते जूझे तौन भवनमा आय १७
खलभलपरिगैनृपमन्दिरमा सुन्दरिबिलखिरहिजायं।
बालक जूझेरे धोखेमा नाहिंन भवन धर्मके माय १८
खेदिकै मरतीं रे द्रोणीका कायहशूलयकीनिभगवान।
जुझेदुलरुवामोरेधोखेमा नाघरभयोदुकोदरज्वान १९
देतिचुनौती रे द्रोणीका मारति खेदिसमरमा धाय।
यहअनहोनीभइधोखेमा हा बिधनागतिजानिनजाय २०
युगन युगनते कलुहोइआवा कलमा हरीरामकैनारि।

छलैमबालक मोरेमारेगे होइगे मन्दिरमोरिउजारि २१
बिलखैंरानी रे पांडव की आरत दशा कही ना जाय ।
मणिबिनजैसेफणितलफतहै औजसबिनाबच्छकैगाय २२
तलफैमछरी जसपानीबिन जलचरसरवर गयेसुखाय ।
दावालागे रे जंगलमा हरिणीयथाबिलखिरहिजाय २३
तैसेइ संकठ महरानिनका मनमा शोचि २ पछिताय ।
हायगोहारीकोउलागैनानाकोउयहिक्षणहोयसहाय २४
पुत्रशोचअसदुखनाहीं है औजसदण्ड बिनाअपराध ।
नितउठिचलिबो रे मंजिलका हैइनमेंदुखबड़ोअगाध २५
तेहिक्षणबाहर भयो मन्दिरते श्रीमहराजद्रोणकोलाल ।
जहंकृतबर्माकृपाचार्यरहैं तिनसनआयकह्योसबहाल २६

स० । मीच अकालमिलै ज्योंव्यथा अरुदण्ड बिनाअपराध कियेको ।
वृद्ध शरीर में पीरयथा अरुबाल बिना अवलंब जिये को ॥
बंदिखलै खलको जसप्रीति औनीच कुपात्रहि दानदिये को ।
तादुखसों दुखहै बढ़िकै यह दाहतपुत्र वियोग हियेको २७

मन्शामेरी पूरण होइगइ औ बनिगयो सहजमें काज ।
शीशपांडवनके लैआयों चलिकैं खुशीकरैं कुरुराज २८
राजअकण्टकमैंअब करिहौं म्वहिंकाअसरकौनभगवान ।
यहकहिचलिभेदुर्योधनढिग पहुंचेआयतीनिहूंज्वान २९
हर्षवंत होइद्रोणी बोल्यो औ भूपतिहि कीन परणाम ।
मन्शामेरीपूरण होइगइ औबनिगयो आपकोकाम ३०
मारि गिरायों मैं पांडव को पांचौ शीशलयायों काटि ।
तबहर्षान्यो दुर्योधनमन लीन्होआजुबीरदुखबांटि ३१
तोइंप्रणामेरो पूरण कीन्हे अब कुरुराजकुशलसोंजाय ।

लैशिरपांचौ तब द्रोणीने दुर्योधनै देखायोआय ३२
मुकुट ज्योतिसों राजादेख्यो देखतैंगयो सनाकाखाय।
पांचौ भैयनके लरिका ये हैं बलरूपरंगसमभाय ३३
शोच आइगो दुर्योधनके औयह कह्यो बहुतबिलखाय।
बालक मारेतैंनाहककका द्रोणीकिहेबहुत अन्याय ३४
काह बिधात्ता यहगतिहोइगै हाबिनकाजभयेबधबाल।
बंशनाशिभै दोउ ओरनते रेहत्यार कौनका हाल ३५
बिना काजतैं बालक मारे त्वहिंना सूझिपरीकछुबात।
छलबलहोइगारेमहलनमा धोखेमभईबालकनघात ३६
समय समइया सबपर परिगै असमयपरै न बारंबार।
असमयपरिगै राजानलका खूंटीलिलोनौलखाहार ३७
समया परिगै महादेव का भस्मासुरै दीन बरदान।
समयापरिगैराजाबलिका जादिनदीनबामनहिंदान ३८
समयापरिगैनृप हरिचंदका जादिनसेयोघाटमशान।
समया परिगै रामचन्द्रका बनमाहरीजानकीजान ३९
समयापरिगै रे दशरथ का जादिनराम भयोबनबास।
समयापरिगै रे द्रुपदीका कौरवसभाभयोपरिहास ४०
समयापरिगै दुर्योधन का औतुरतै तजिदयो परान।
लाजलागिगइतबद्रोणीका तबतौनोंजनकियोपयान ४१
पुत्रद्रौपदी के मारेगे यह कृत बर्मा कियो बिचार।
कुशल नहींहै अबजियरेका अबधौं काहकरैंकर्तार ४२
शंका खायो तब जियरेमा तुरतै गयो द्वारका धाय।
उत्तरदिशिमानारायणजहं द्रोणीभागिगयोभयखाय ४३
उदय प्रभाकरभे भोरै को पांडव भवनपहूंच्योआय।

पांचौभैया धर्मराजरहैं औसंग कृष्णचन्द्र यदुराय ४४
दशा सो दीख्यो रे महलनकै कुलमा बधे गये सबबाल।
सैनसंहारी गइ मंदिरमा रानीहोइरहिंहालबिहाल ४५
बिलखिद्रौपदीरे रोदनकरै बरसै नैनपनारन आंश।
कुलमाबालकमेरेमारेगये द्रोणीकियोपांडुकुलनाश ४६
धीरन धारी रहै जियरे मा कैसेक घटमा रहैंपरान।
पांचौबालकमेरेमारेगये अनुचरसहितबधेसबज्वान ४७
बांधि न लैहौ जो द्रोणी का पारथ बचनकरौपरमान।
डाहुबुतैहै ना जियरे का नाजियधारे रहैं परान ४८
क्रोध आइगयेतब पारथ के लीन्होनंदिघोषरथसाजि।
चढ़ो दुलारा रे कुन्ती का सारथिभयेकृष्णयदुराज ४६
यह प्रणकीन्ह्योवहिसमयापर पारथ बीरपांडुकोलाल।
बांधिनलावोंजोद्रोणीका तौ करगहैंअस्त्रधिरकाल ५०
स्यंदन हांक्यो यदुनंदनने पारथ गह्यो हाथधनुबान।
जेहिमगद्रोणीगयोउत्तरदिशि तेहिमगरथहांक्योभगवान
पवन चालते चले बछेड़ा द्रोणी शब्दसुन्योरथक्यार।
खायसनाकागयो हियरेमा अबधौंकाहकरैं कर्तार ५२
महारथी यहुपारथ आयो औमममनिकट पहूंच्योआय।
सारथिरथके कृष्णचन्द्र हैं घोड़ारहेपवनगतिआय ५३
दृष्टिपसार्यो तब अर्जुनने आगे गुरुसुत परोलखाय।
तब ललकारो है पारथने औबढ़ि हांक सुनाईधाय ५४
रेहत्यारे बालक मारे अबकहं जातप्राणकी आश।
लोकतीनिलग अबबचिहैना करिहौंअवशि तोरअबनाश
भागिनबचिहैरे कौनिउंविधि तैंहनिमारेबालअजान।

तैंछलकीन्हेमोरेमहलनमा करिहौंआजु तोहिंबिनप्रान
ठिठुक्योद्रोणविहिअवसरमा सुनिकैगरूपार्थललकार।
लियो शरासनरेहाथेमा अम्मरपुत्रद्रोणगुरुक्यार ५७
ज्यहिशर पारथभेदनजानै द्रोणकियोसजगसोइबान।
करिअभिमंत्रितधनुगुनजोरेउ सुरगणदेखिभयेभयमान
प्रलयकिबेरा अबनजिकानी अबधौं काह करैंकर्तार।
तब ललकारोरेद्रोणने पारथसंभरिहोहुहुशियार ५८
जियतनछंड़िहौंपांडवकुलकापारथसहितहनौंसबज्वान।
यहकहिछांड्योतीब्रबाणकाकौतुकदेखिरहेभगवान ६०
अगणितशायकबरषनलाग्योजैसेमघा नखतझरिलागि।
धरतीतेऔआसमानलग बरषनलागबज्रकीआगि ६१
शंका कीन्हो तब पारथने औश्रीपतिसों कह्योबुझाय।
नामनजानौंयहिशायकका यहहैकौनबाणयदुराय ६२
हाल हमारो कछु जानोना द्रोण तज्यो कौनयहबान।
सुनिकै बातैं तब अर्जुनकी बोले कृष्णचंद्रभगवान ६३
हाल तुम्हारो ना जानोहै पारथ बचन करौ परमान।
यहछलकीन्ह्योगुरुनायकनेऔसुतजानिदीनयहबान ६४
जोशर छांड़्यो है द्रोणीने शृंगी बाण नामयहिक्यार।
तीनिलोकमहंसबकम्पतहैं सुरनरनागनिशाचरझारि६५
तबहिंसुदर्शनकासमुझायो औयहकह्योकृष्णभगवान।
यहिशरजीवत कोउबचिहैना निश्चयकरौ बचनयहकान
गनिगनिमरिहैपांडवकुलका करिहैआजसबहिबिनप्रान
जाइबचावोतुमपांडवकुलनाहिंनयतनऔरकछुआन ६७
चल्यो सुदर्शनतबबेगिहिते अर्जुन लियो शरासनबान।

सातकशायकहनिहनिमारे मध्यमपड़ैनशरकीसान ६८
देवडराने सब भयमाने होइहै आजु कहा कर्तार ।
पारथसन्मुखआवतदीख्योस्यंदनतज्योभक्तरखवार ६६
सोशरलीन्होगहिआननसों शायकसोहरिउदरसमान ।
रक्षाकीन्होकमलापतिने राख्योपांडुसुवनभगवान ७०
सहितयुधिष्ठिरसबरक्षाकियोराख्योगर्भपरीक्षितक्यार ।
मध्य गर्भमा रक्षाकीन्हो त्रिभुवननाथकृष्णाकर्तार ७१
नागपाश कर पारथलीन्हो बंधनकियोद्रोणिकोधाय ।
बांधिसोडारयोरेरथऊपर मंदिरचलेकृष्णासुखदाय ७२
पवनचालते चले बछेड़ा हांकत चले भक्तप्रतिपाल ।
छमछमछमछमबजैंपैंजनी धमकैंअष्टधातुकीनाल ७३
पहुंचिसो मंदिरपरतुरतैंगे जहंद्रौपदी करै बिललाप ।
बंधन कीन्हे रे द्रोणीको अर्जुन कृष्णाचंद्रप्रभुआप ७४
आंगन ठाढ़ो कियोद्रोणीका छूटे केश कुबंधन गाढ़ ।
अंगअंगमा चलै पसीना औमनभई लाजकी बाढ़ ७५
नैननवाये रे नीचेका औजिय भयो अधिक भयमान ।
खड्गनिकारयोरेभिम्माने देही जरै कोपकी सान ७६
रिसहाबोल्योतेहिसमया पर रेहत्यार किहेबधबाल ।
लाज न आई तेरेजियरेमा तेरे शूरपनै धिरकाल ७७
शूर कि बातैं ई नाहींहैं बालक त्रिया पै छोड़ैंहाथ ।
शीशगिरैंहौं रे धरतीमा मिंजिहौं देहक्षारकेसाथ ७८
जोमनशइया रहै जियरेमा काहेन किहे समरमैदान ।
चरणाकरतेउँ मैं संगरमा जातीं गदाएकसों प्रान ७६
बैरनिकसिहैंामैंबालनको छँड़िहौंतोहिंजियतनहिंआज ।

निरपराधतैंबालकमारे हत्याकिहे कौरवन काज ८०
सुनिकै बातैं भीमसेनकी द्रोणी भयो बहुत भयमान ।
जियतनबचिहौंमैंभिम्माकर जैहैंअवशिआजममशान ॥
देखिअवस्था तब द्रोणीकै द्रुपदी मनमा करै विचार।
जियतनछाँड़िहैंअबद्रोणी का डरिहैं भीमजानतेमार८२
तब यहबोली यदुनन्दनते सुनिये कृष्णचन्द्र कर्त्तार ।
दागुलागिहै पांडवकुलमा ब्राह्मणमारे पापअपार ८३
ब्रह्म फांसते द्रोणिहि छांड़ौ पारथ आपदेहुसमुझाय ।
जुझेदुलरुवामोरेधोखेमा अबना लौटिमिलैंम्वहिंआय८४
ब्राह्मण मारेते हत्याहोइ यहनिज मानिलेहु भगवान ।
वंशकलंकितयहिजगहोइहै पुरबुलहोयसबैनुकसान८५
सुनिकै बातैं असद्रुपदीकी मनमा खुशीभये यदुराय।
धन्यसराह्योतबद्रुपदीका जोकछुकह्योसत्यसबआय८६
मन्त्र शोचिकै तब श्रीपतिने द्रोणी शीशदयो चिरवाय ।
मणिलै लीन्हो रे मस्तककै बंधनछोरिदीन हरषाय८७
जितने योधारहैंभारतमा सबकै सुगतिकीनि महराज ।
औरिबयरिया डोलन लागी लागे होनऔरहू काज८८
पांचौ पांडव हरि सँगलीन्ह्यो आये बुद्धिचक्षुके पास ।
चरणपखार्योसबकुरुपतिके सबकछुकह्योयुद्धकीआश ॥
बुद्धिचक्षु तब बोलन लागे सुनिये कृष्णचन्द्रसुखदाय ।
बड़ी सरहनाभै भारतमा कीन्ह्योभीमयुद्धमनलाय ९०
अंक लगैहौं मैं भिम्माका सुनि यहबचनभक्तसुखदाय ।
जोकछुरचनारेकीन्ह्योरहै सोकछुरचनादईदेखाय ९१
लोहकेभिम्माधरिआगेदियोकुरुपतिमिल्योकंठसोलाय ।

रिभुजबलसों चरणकीन्ह्यो राख्योभीमभक्तसुखदाय॥
ब छलजान्यो रे कुरुपतिने रानीगई जानिसब हाल ।
बसमुझायोबुद्धिचक्षुका यहछलकीनयशोमतिलाल ६३
हंजहं संकठ भये पांडवका तहंतहं माधवभयेसहाय ।
क्षाकीन्ह्योरे पांडवकै हमरे पूतदिये जुझवाय ६४
देवस अठारहमहभारतभयो हमरो बंश कियोसंहार
छलबलकरिजयपारथदीन्ह्यो हरिभेपांडुवंशरखवार ६५
जैसेजूझ्योहै कौरवकुल औ छलुकीन कृष्णतुम आप ।
सोफलपैहौ तुम आगेअब हेहरिलेहु हमारो शाप ६६
बंशयादवनको जितनेहै हलधरसहितसकल परिवार ।
एकै दिनके हरिअंतरमा होइहै सर्व भांति संहार ६७
हँसि मधुसूदनसोंशिरपरलियो अंगीकारकीनकुरुशाप ।
पांचों भैया धर्मराजलै आये पुरी हस्तिनाआप ६८
बजीं बधइया सबघरघरमा सखियाकरैं मंगलाचार ।
गड़ेपताका रे द्वारनमा बंदनवार मणिनके झार ६९
कंचन कलशा सबघरवाये कदली खंभदीनगड़वाय ।
नचैंपतुरियारे मंदिरमा औद्विजरहे बेदगुणगाय ३००
कीरति गावैंरे बंदी जन बिप्रन होत धेनु धनदान ।
भरितीरथजलकलशनमा कीन्ह्योसकलराज्यसामान॥
बजैं नगारा औ घंटाध्वनि कहुं२ शंख नाद हहराय ।
बजैंनफीरी औ सहनइया औनरसिंह शब्दरहेछाय २
भूपयुधिष्ठिरऔ द्रुपदीने कीन्ह्योगांठिजोरि सबसाज ।
सजे पटंबर शुभ अंगनमा कीन्ह्योराजबेष महराज३
अष्टधातु को सिंहासन है जामें जड़े जवाहिर लाल ।

भयेयुधिष्ठिर तापरबैठे कीन्ह्योराजतिलक नँदलाल ४
निजकरमाधवमुकुटबांधिदयो मानौउदयभयोशुभभान।
कौतुक छायो रे हस्तिनपुर देवता देखतचढ़े बिमान ५
बेदकारिका ब्राह्मण बांचैं कीरतिरहे भाट नट गाय।
जयजय भाषैं सबयाचकगण लैलैदानभवनकाजायँ ६
भीमसेन कर चँवरढुरावैं पारथ लीन छत्र शिरधारि।
अबमहराजा धर्मराजभये रक्षासबबिधि कियोमुरारि ७
अस्तुतिकीन्ह्यो धर्मराजने हेहरि दीनबन्धुभगवान।
तुम प्रणराख्योमहभारतमा कीन्ह्योदासकेरकल्यान ८
जगतउधारण जनसुखकारण तुमप्रभुतीनिलोककेनाथ।
अन्तर्यामी सब घटघटके है उत्पत्ति नाश तव हाथ ९
दूरिसुदामाको दारिद कियो बूड़तराखिलीन गजराज।
भक्तसहायकहरिसांचेहौ राख्योद्रुपदसुताकैलाज १०
कंस संहारन केशी मारन हे द्विजधेनु भक्त रखवार।
मोरि बड़ाई कछुनाहीं है तुमसबकियो आपकर्तार ११
सुनियहअस्तुतिधर्मराजकी आशिषदयोकृष्णभगवान।
तबपुरबासीसबआवतभये दीन्ह्योभेंट भूपसन्मान १२
प्रजा अनन्दित भे जियरेमा राजा भये धर्म महराज।
मन्त्रीराजा द्रुपद पुत्र भयो लागे होनराजकेकाज १३
सुनै सुनावै औ जो गावै भारत कथा बिमलमनलाय।
तेहिसुखसंपतिमनमानोमिलैताकेनिकटपापनहिंजाय ॥
जो फलपावै तीर्थाटनते जो फल होय सुता के दान।
जोफलपावै अश्वमेधसों जोफलगंग किहे अस्नान १५
जोफल पावै सत्यके भाषे जो फलकिहेअन्य उपकार।

गयापिंडसोंजोफल पावै सोफलकिहेयुद्ध बिस्तार १६
श्री जगदम्बाको दायासों औ गुरु चरण कृपाकेसार ।
बन्दिदीनयह भारत गायो होइगइगदापर्वतय्यार १७
जेठशुक्लऔतिथिपरिवाशुभऔदिनबिमलरह्योशशिवार ।
भयो संपूरण युद्धखण्डयह भारतगदापर्वबिस्तार १८
जोकोउ गावैयुद्ध खण्ड यह औ मनलाय सुनावैगाय ।
तेहियदुनायकहोहिंसहायक कलियुगकलुषदूरिह्वैजांय

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि वाजपेयि पं० रामरत्नस्याज्ञाभि
गामीस्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं० बन्दीदीन दीक्षित
निर्मित महाभारत भाषा युद्धखण्ड गदापर्व सम्पूर्णम्

इति गदापर्व समाप्तम् ॥

अथ महाभारत भारत खण्ड भाषा

सौप्तिक पर्व प्रारम्भः ॥

—※—

सुमिरण ॥

होहुसहायकगणनायकतुम दायकऋद्धिसिद्धिकेनाथ ।
तुवबलगावतगुणशूरनको पायँनिहोरिजोरिदोउहाथ १
सुरनबखाने श्रीगणनायक देविनमध्य शारदामात ।
नदिन बखानीश्रीगंगाजी कलिमलहरनधारफहरात २
धाम बखान्यो जगन्नाथको क्षेत्रन कुरुक्षेत्र हरद्वार ।
पुरनबखान्यो श्रीकाशीपुर जहँपर बिश्वनाथदरबार ३
अन्नपूरणा के दरशन हैं भैरवनाथ केर अस्थान ।
लोल तरंगा तट गंगाकी भंगा करत पापके घान ४
लसतमंदिरनकीशोभाशुभ लोभारहतचित्तलखिहाट ।
बाटमनोहरसोंबिलसतबर मणिकर्णिकाआदिजहँघाट५
करैंभवानी भवरक्षाजहँ रातिउ दिना बरद असवार ।

पापपरावत जन तनमनके दरशन किये एकहीबार ६

क० आश अवश्यपुरै मनकी अघवोघबचैनकियेबिनघातना ।
योगिनकीगतिदेतबनायऔचारिपदारथकीकछुबातना ॥
बंदिनआवतफोरइतैशिवलोकदैराखैव्यथाकछुगातना ।
गानपुराननहूंमेंकियोयह काशीगयेनमिलैयमयातना ०

करिनंदनंदन पदबंदनको धरिउर व्यासदेवकोध्यान ।
भारतभाषाअभिलाषासों सौप्तिकपर्वकरतफिरिगान १
वैशंपायनफिरि भाषतभे सुनियेकथा परीक्षितलाल ।
कौतुकक्रीड़ा जसशूरनको सोतसबरणि बतावहुंहाल २
पूंछ्यो कुरुपति यहसंजयते सुनियेमुनिबरदीनदयाल ।
जब सबक्षत्री रणमाजूझे फिरिकाभयो अगारीहाल ३
तबबतलायो यह संजयने सुनिये अंधभूप कुरुराय ।
जबसब क्षत्री रणमा जूझे तुम्हरे पुत्र बली सौभाय ४
औरौ सैनामा योधाजे सो सब भये क्षेत्रमें नाश ।
चल्योद्रोणसुततबहुबंनाते हियतेछांड़िबिजयकीआश ५
कृप कृतबर्मासाथै चलिभे रणतेबचे जौन सरदार ।
जायकैपहुंचे यकजंगलमा तीनिउंरथी शूरबिकरार ६
तहँयकबिरवालखिबरगदको सुंदरघनीछाहँरहिछाय ।
तीनिउंयोधातहंबैठतभे शोचतहियेअधिक पछिताय ७
जूझे क्षत्रिनको संवरनकरि दूजेबिकल अंगके घाय ।
कृपकृतवर्मादोउमुर्छितभे धरणीगिरे बिवशमुरझाय ८
नींद आयगै दोउ शूरनको जागतरह्योद्रोणकोलाल ।
अतिरिस व्यापीहैहियरेमा पीसतदांतनैनकियेलाल ९
तेहिक्षनकौतुक यकनिरखतभो कौवाबसेवृक्षमहंआय ।

थोरक अरसाके अन्तरमहं गेसब सोयरातिकोपाय १०
तेहीसमइयाकेअवसरमा पहुंच्योयक उलूकतहँहाल ।
ब्रह्म भावनाको मेटैको कौवनकेर आयगोकाल ११
सोवतदेख्योजबकौअनको खूसटलग्योमारितिनखान ।
पखनाकाटेतबकितनेउंके केतनेउंमारिकोनखरिहान १२
पेटविदारेधरि चोंचनसों इहिविधि हनेहजारनकाग ।
उड्योअनंदितफिरितहंनातेपहुंच्योधाममनावतभाग १३
इहिबिधिशत्रुनकोमारतलखि शोचनलग्योपुत्रगुरुक्यार
मनहुं सिखायोतेहिखूसटयह बैरीहनबकेरउपचार १४
अश्वत्थामामनठान्योअस पांडवसैन सहितबलधाम ।
इनकेजोरनहमजीतबना सन्मुखकरिनसकबसंग्राम १५
यतन मारिबेको नीकोयह सोवत हनौ पांचहू भाय ।
बिना बयारी जूना टटै बिन औषधिकै बहैबलाय १६
धर्म बिचारब जो ऐसेमा तौ ना होय शत्रु संहार ।
पितापितामहउनमार्योछलि दैदैअंगघायबिकरार १७
ताते यहबिधिकरिमरिहौंमें सोवतआजपांडवनजाय ।
सोचितहवैहै।पितुऋणतेतबनाहितवृथाबुद्धिबलकाय१८
लरैन्यायसों रिपुसन्मुख महं हारेअवशि सर्वसौजात ।
अधरमकीन्ह्योंपरजीतियजो तौवहसर्वसजीतिकहात१९
युगनयुगन ते छलुहोइआवा छलमाहरोरामकैनारि ।
छलमहं राजाबलिबांधेगये छलतेजितेपांडवारारि २०
तौ छलकरिबेको डरिबेकह हरिबे आजु सबनकेप्रान।
छलबलकरबलजोआवैबनिमारैअवशिशत्रुनिजज्वान२१
कामकरंते औभागतखन अकिले समरनिरायुधपाय ।

सोवतजागतऔघरयागत मारवशत्रुअवशियहन्यायर२
मंत्रठानिकै यहमनमाहिज पांडव बधनआशठहराय ।
भयोजगावतदोउक्षत्रिनको तबसबकह्योहाल समुझाय
आजु पांडवनका मरिहौंमैं सोवत बीचधाममें जाय ।
बाप हमारेको मार्योइन दैदै अंगबानके घाय २४
दुर्योधन के शिर धारीहै भिम्मैं दुष्ट आपनी लात ।
बैरकरेजेसो शालतहै क्षनप्रति बढ़तक्रोधअतिजात २५
ग्यारहक्षोहिणि दलराजाको भीषमकर्णआदिसरदार ।
शत्रु पांडवन सो मारेसब बाढ़ योहियेगर्वबिकरार २६
तेहिहितआयेहमइतकोचलि औयहकोनहृदयअनुमान ।
सोवत पांचौको मरिहौंमैं लेहौं आजदावँमनमान २७
शोचिबतावहुसो दूनौंभट हैयहक्रियाउचितकीनाहिं ।
कृपकृतबर्माअसबातैंसुनि शोचनलगेहृदयतेहिठाहिं २८
अश्वत्थामासों बोलेफिरि सुनिये बचन द्रोणकेलाल ।
जोकोउजन्मतयहिदुनियामा निश्चयहोततासुकोकाल
दैवकर्म दुइबल मानुषके इनसों सधत सबनकेकाज ।
सधतन एकैकेसाधे कछु है परसिद्ध बात महराज ३०
जामतबिरवाज्योंपर्वतपर सींचत दैवताहिजलडारि ।
होत केतन्योबिनसींचेते सींचतजात सैकरनमारि ३१
दैवकर्म बलदोउ साधेते ह्वैहै अवशि सिद्धसोकाज ।
ताते तुमका समुझैयतहै सुनिये द्रोणपुत्रबलराज ३२
लोभमआयो दुर्योधन नृप दीन्ह्यो दैवकर्मकोत्यागि ।
मंत्रमानिकै निर्बुद्धिनको कीन्ह्योयुद्धराजहितलागि३३
बिदुरपितामहसमुझायोबहु तिनकीबातकीन्निनाकान।

दुर्योधननृपतेहिकारणते दीन्ह्योसैनसहितरणप्रान ३४
छलकरि मारब रणशूरनको है ना धर्मक्षत्रियनक्यार ।
मंत्रजोपूछयोतुमहमतेभट तौयहकहतबुद्धिअनुसार ३५
नाहित चलियेगंधारीढिग पूंछिय बिदुरअंधनृपराय ।
इहिविधिअज्ञादेंमारनको तौयहकरियपुक्तिहरषाय ३६
कृप कृतवर्माकी बानीसुनि क्रोधित भयोद्रोणकोलाल ।
फिरिअसभाष्योदोउशूरनतेहमरे बचनकरौप्रतिपाल ३७
कौनौ कारणपरिआयेते नरमति पलटिजाततत्काल ।
अतिचितचंचलहैमानुषकोबिचरतकरतसैकरनख्याल ३८
लहैन कबहूंअस्थिरताचित ताते बदलि गयोतुवज्ञान ।
याते बातें असभाषत हौ जैसे कहै बाल नादान ३९
रोगिहि औषधि देत बैद्यजो ताको रोगकरनको नाश ।
कबहुंक रोगीभयोमृत्युबश तौसबकरतवैद्यकोहास ४०
पुरुष सिंहहै दुर्योधन नृप कीन्ह्यो धर्म क्षत्रियनक्यार ।
कालबश्यह्वैवहजूझ्योजो तौसबकहतताहिबदकार ४१
धर्मछांड़िकैहमब्राह्मणको कीन्ह्योक्षत्रिधर्म प्रतिपाल ।
कर्मक्षत्रियनके बाजिबजो हमहूंकरबतौनबलशालि ४२
झूठीबातें कहिधर्म्मै तजि डार्यो मोर बापउनमारि ।
तेहिहितमारबहमउनहुनका सबबिधिधर्मनीतिपरिहारि
मारि कौरवन सहसेनाके डंका बिजयकेर बजवाय ।
परेअनंदितसुखसोवतअबसबबिधिराजकाजकोपाय ४४
जायमंदिरनमहंसबकेनिशियहिसिसिसबनकेरशिरकाटि ।
उघरणह्वैहौंदुर्योधनते बदलालेहौं बापकोडाटि ४५
अश्वत्थामाकीबानीइमि सुनिफिरिकृपाचार्यरिसिआय ।

धरिकैडास्योगुरुबालककोलाग्योकहनबचनसुरझाय ४६
बातैयेना बलवंतनकी जोहठिकरैं कर्म अन्याय ।
समरछांड़िकैरिपु सन्मुखते सोवतहनैंशस्त्र केघाय ४७
भलोनकहिहैकोउजगमातेहि आखिरहोययमपुरीवास ।
लोकवेदमहँसोनाहिरहै धिकयहिकपटकृत्यकोत्रास ४८

क० नारिपरारि कुमारिनसों हठिचाहत जोशठ नैनलगाना ।
पंडितमीत गुरू द्विजगाय सतायजोदेतइन्हैं दुखनाना ॥
बापहिताप अदोषहिशाप सुबंधुसों बंदित संगरठाना ।
सोवत शत्रु संहारतजो तेहिहोतअवश्य यमैपुरजाना ४६

तातेतुमकासमुझैयत है सुनिये द्रोण पुत्र बलधाम ।
चहौपांडवनको मारनजो तौकरिआजुरैनिबिश्राम ५०
होतसबेरे रण भूमी महँ चलिकै देहुशत्रु ललकारि ।
जीवनआशातजिहमहूंसहलरिये बीर धनुषटंकारि ५१
धारणकरिहौ जो धन्बारण लरिहौबानघानझरिलाय ।
तौअसक्षत्रीकोपांडवदल तुमतेसकै बिजयजो पाय ५२
तैसै हमहूंकृतवर्माहन मारबवीनि २ सरदार ।
समर सँहारबतबशत्रुनको दैदैशस्त्र घायबिकरार ५३
सुनिअसवानी आचारजकी बोल्योक्रोधयुक्त गुरुलाल ।
तुमसुखसोवोयहिसमयामा जिनको शोचनाहिंकेहुकाल
हमरेनैननहैनिद्रा कहँ जिन उर लगे शत्रुके तीर ।
पैरव्यंवाई जेहि जावैना सोकहलखै पराईपीर ५५

क० योगलस्यो मनभोग फंस्योतनरोगबियोग सतावतहै ।
क्रोधभरोअरिबैरपरो जेहिभूपघरो बिनशावत है ॥
चेमकतौंन करैनितगौन सुदारिद भौनजगावतहै ।
ऐसे नरैंद्विजबंदिकबैं आंखियान में नींदन आवतहै ५६

ऐसो बाधामोहिं घेरोहै आवै नींद कौनविधि भाय ।
पितुबिनाशतेदुखज्यादहनहिंचिन्ताज्वालरहीउरछाय५०
धृष्टद्युमनऔपांचौ पांडव जबलगमैंन मारिहौं धाय ।
तबलगकलनामोरेजियरेकासुनियेकृपाचार्य्यबलराय५८
तबआचारज फिरिबोलतभो सुनिकै अश्वथामकीबात ।
तुम्हैंनसोहतहैऐसीमति कुकरमबस्योहृदयमहँतात ५६
कर्म कुकर्महिंके जाननहित नरचलिजातपंडितनपास ।
तुमतौ आपैखुदपंडितहौ काहियकरोकपटकी आस ६०
निर्धननिर्जन जोकितनौहोय कैसिउपरै आपदाआय ।
धर्मनछांड़त पैसज्जनजन जिनकेरह्यो ज्ञानउरछाय ६१
तुमसब जानतहौशास्त्रनबिधि बुधिवर धर्मकर्मकरतार ।
सोकसलाबतमन ऐसोहठ निंदितकर्मकेर उपचार ६२
बिनासवारीबिनबख्तरतन सोवतभगतबिनाहथियार ।
शरणागतकहँजोमारतहैसोचलिजातअवशियमद्वार ६३
लरेबहुतदिनवैसंगरमहं सोवतश्रमितशस्त्रकोत्यागि ।
तिन्हैंमारिहौजोअनुचितकरि जैहौअवशिनर्कमगलागि
कुमति त्यागियेयह जियरेते करियेआजुरातिबिश्राम ।
भोरैधन्वाधरितीनिउंजनरणलेलकारिलरबलधाम६५
अश्वत्थामाफिरिबोलतभो सुनिइमिकृपाचार्य्यकीबात ।
अवशिकरंतो जो कारजहै तामहं धर्मबिचारनतात ६६
कर्ण पितामह द्रोणादिकलै दुर्योधनै मारि संग्राम ।
उनतौ धर्मैं कछुजान्योना ताते हमहुंकरबयहकाम६७
यहकहिक्रोधितह्वैरथपरचढ़ि कीन्ह्योगमनहुआंतेज्वान ।
पुनितेहिपाछेद्वउक्षत्रीवउ उठिकैकरतभयेप्रस्थान ६८

क्षण इक असों भो रस्तामा पहुंचे जायसैनकेद्वार ।
जसकछुभावीनारायणकी टारिको सकैबिनाकर्तार ६९
पर्वअठारहमहं सौप्तिक यह पूरणभयोप्रथमअध्याय ।
रामरतनकी अनुमतिलैकै बंदीदीन कह्यो शुभगाय ७०

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि बाजपेयिपं०रामरत्नस्या
ज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्राम निवासि पं बंदीदीन
दीक्षित निर्मितमहाभारतभाषा भारतखंडान्तर्गतसौप्तिक
पर्वअश्वत्थामाकृत पांडवबधोपाय वर्णनन्नाम
प्रथमोध्यायः १ ॥

करिउरसाधा भजिराधापति बाधासकलचित्ततेटारि ।
फिरिगुण गावोंरणशूरनको शारदयाबुद्धिअनुसारि१
सुनि असबानी मुनि संजयकी बोल्योफेरिअंधकुरुराय ।
सैनद्वारपरचलितोनिडंभट फिरिकाकरतभयेतहंजाय२
बरणन लागेमुनि संजय पुनि सुनिये अंधभूपसोहाल ।
सैन दुआरे तेक्षत्रीजब पहुंचे तहां जाय बलशालि ३
लख्यो दुआरेयक पूरुषतहं अति उद्दण्ड चंड बिकरार ।
तेजप्रकाश्योवरदिनकर सम दीरघ भुजाभरेबलभार४
भस्म लगाये सबअंगनमहं भूषणबसनभुवंगनक्यार ।
बाल चंद्रमाहै मस्तकपर राजतशीश गंगकीधार ५
नैन कराले अति लालेहैं सोहत हिये कपालन माल ।
ज्वालानिकसत बिकटाननसों ओढ़ेपरमबाघकीखाल६
चखमुखनासाअरुकाननतेनिकसतअग्निज्वालबिकराल
तेहि ज्वालासों नारायणके प्रगटतअमितरूपभूपाल७
शंखचक्र औ गदा पद्मलिये धारेअतिप्रलम्बभुजचारि ।

लखिअसकौतुक तेहिद्वारेपर तौनिउ शूररहे मनमारि ८
फिरिकछुचिन्तनकरिनिज २ उरधारोहाथशरासनबान ।
झारि असिशायक बर्षनलागे उठिगे महाघोरघमसान ९
क्षणइकदेखततेहिअवसर महँ वसुधागगनबाणदयेछाय ।
घिरिगोपूरुषइमिवाणनसों जिमिनदियानसिंधुघिरिजाय
क्रोधितह्वैकैतब पूरुषसो तज्यो अमोघशक्तिबिकराल ।
क्षणमहँकाट्योसबबाणनकोजसरबिउदैनशैतमजाल ११
खड्ग चलायोतब द्रोणीने काट्योपुरुषशस्त्रसों ताहि ।
गदाधमंक्योपुनिद्रोणीनेकरिउरबिजयकेरि उत्साहि १२
सोगहिलीन्ह्यो तेहिपूरुषने कीन्ह्यो कोपसहितहुंकार ।
कृपाचार्य औकृतवर्मासह कंपितभयोपुत्रगुरुक्यार १३
मनमहँ जान्योशिवशंकरये तबकरतज्यो शरासनबान ।
अस्तुतिठान्योतबतौनिउजनलागेकरनगुणनकोगान १४

क० जैसुरईश अनीश अहीश धरेशशिशीश खबीशन संगी ।
जै करतार कलाउजियार पुरारि सुरारिनके मदभंगी ॥
जै तमरंग अनंगअसो शिर गंग तरंगित भंग उमंगी ।
बंदि बिशालिक भाल कपालिक होहुनिहालशिवा अर्द्धंगी १५

हेगिरिजापति जन संकठहर सद्गतिदेनहार कर्तार ।
प्रभुप्रतापकोमैंजान्योना ताते गह्योंनाथहथियार १६
सोफलपायो प्रभुशठताकै क्षमिये स्वामिमोरअपराध ।
मैंअतिआरतयहिअवसरमहँ पूरणकरौदासकोसाध १७
इहिविधिअस्तुतिअतिकीन्होंद्विजसुनियेअंधभूपकुलराय
तबइककौतुकतहँ औरौभोतुम सनकहौंकथासमुझाय १८
तहंपरवेदीइक प्रगटतभै सुवरण बरण अनूपमठान ।

तापरराजैं चित्रभानु प्रभु सुन्दरतेजभानु अनुमान १६
तिनकेअगणितशिरआननपगअँखियाबिमलऔरबहुबाहु
चहुंदिशिठाढ़ेसुरसेवतहैं कीन्हेबिविधभांतिउत्साहु २०
बहु प्रकारके मुखतिनकेहैं शोभाधामकाम अभिराम ।
वेष बनाये सुन्दरतासों कहंलगकहौं भाषिइतग्राम २१
हैं भुजभारे बलवारे सब धारे भांति २ हथियार ।
नाचैंगावैं करिकौतुकबहु खिलिरहंसैंयथा मतवार २२
खड्ग मियानेते काढ़ेकर कितनेउंखड़े नैनकियेलाल ।
कितनेउंठाढ़ेधनुषवानलिये गरजतयथाभयानककाल २३
किते प्रचारत हैं द्रोणी को करिबे हेतु समर मैदान ।
कोउकोउगावैंगुणशंभुके अगणितदेखिपरैंबलवान २४
अद्भुतकौतुकलखि तौनिउंभट जकिसेरहेशोचउरलाय ।
हाथजोरिकैतबद्विमिशिवसों द्रोणी लग्यो कहनसमुझाय
जो अभिलाषाकरिआयेहम प्रभुसोभईआशमनाहिं ।
तातेस्वामी तुवआगेतन देहौं होमिअग्निकेमाहिं २६
करिअभिमंत्रिततबआगीको जबबाढ़िचलीज्वालविकराल
धरिउरधीरजतेहिज्वालामहं प्रविशतभयोद्रोणकोलाल
जरतदेखिकैशिवद्रोणीको हँसिसमुझायकह्योयहबात ।
मैं आनंदित द्विजतोपरहौं जोकछुरुचै मांगुबरतात २८
तबकढ़िआयोद्विजआगीसों शिवसोंकह्योजोरिद्वउहाथ।
मैंचलिजैहौं गृहभीतरका तुमचलिजाहुद्वारतेनाथ २६
लोपितह्वैगेशिवशंकरतब दीन्ह्योद्विजै अस्त्रनिजदान ।
अस्त्रसोलैकैगुरुनंदनतब करिगोभौनमध्य प्रस्थान ३०
पुनिकुरुनायक असपूछतभे हेमुनिसंजयकरौ बखान ।

पहुंच्योद्रोणीजबमंदिरमधि तबतहँकियोकाहबलवान
उत्तरदीन्ह्योपुनिसंजयमुनि सुनियेअंधभूपफिरिहाल ।
कृपकृतवर्माद्वउद्वाररहे पहुंचोभौनमध्य गुरुलाल ३२
इतउतताकत तब द्रोणीभट पहुंच्यो धृष्टद्युम्नअस्थान।
परापलंगराजहँ चंदनका मंचवनकोनमनोहरठान ३३
बिछे गलीचा शुभ रेशमके गिर्दा धरो उसीसे माहिं ।
सोवतबिह्वलधृष्टद्युम्ननृप सुधिबुधिकछू देहकोनाहिं
लात मारिकै तब द्रोणीने तेहि सोवतते दीन जगाय ।
ब्रह्मभावना को मेटैको धृष्टद्युम्न कालगयो आय ३५
जाग्योराजाधृष्टद्युम्नजब द्रोणिहिंचीन्हिउठ्योअकुलाय।
तबचढ़िबैठ्योद्विजछातीपर गहिशिरकेशदीनफैलाय३६
आलसमातो धृष्टद्युम्ननृप करिनासको पराक्रमदावँ ।
अश्वत्थामा तब बोलतभो रेशठ द्रोणपुत्रमैं आवं ३७
तैंरण मारे मोरे बापका कीन्हे कपट युद्धको मार ।
बदलालेबेसो आवाहौं रेशठ गहतक्योंनहथियार ३८
वहमंशइया अबकहंनागै ओकहंगयो भुजाबलतौन ।
जेहि संहारे कुरुसैना का मारे बड़े २ बलभौन ३९
कालकलेवाको आवाचलि क्षणमहं जात पधारेप्रान।
होयपराक्रमजो करिबेका सोकरुधारिशरासनबान४०
सुनिअसबानी गुरु नंदनकी बोल्यो धृष्टद्युम्नबलवान ।
बातैंयेनाकछुक्षत्रिनकी सोवतगह्योआयमोहिंज्वान ४१
काह पराक्रम दिखरावोंअब पैयकबातकहौं गुरुलाल ।
मारनचाहौजोछलबलकरितौयहबचनकरोप्रतिपाल४२
शस्त्रहाथलै शिरभंजोमम पूरण होय तुम्हारो दाउ ।

मुक्तिहमारिउहोइजैहैतौ औचलिस्वर्गलोककोजाउं ४३
अश्वत्थामाफिरि बोलतभो सुनिअसधृष्टद्युम्नकीबात ।
सुरपुर जैबेकी मंशाशठ यहिहितकीन मोरपितुघात ४४
जियतहमारे सुरपुरजैहै यहकहिकीन लात परिहार ।
पेटदबायोक्ष्टटहुनंनसों डार्योधृष्टद्युम्नको मारि ४५
रहीं जे रानी धृष्टद्युम्नकी तहंते भगीं सर्व भयखाय ।
औअनुमान्योमनअपनेमा यहकोउभूतप्रेतगणआय ४६
अश्वत्थामा तब तहंतेचलि आयो बेगि सैन्यके द्वार ।
रथचढ़िगर्ज्योकरआयुघलै रानिनकियोशोरबिकरार ४७
तबचलिआयेबहु मानुषतहं निरख्योधृष्टद्युम्नको हाल ।
पूंछनलागेमहरानिनसों केहिबिधिभयोभूपकोकाल ४८
तबबतलायोमहरानिनयह हैकोउमनुज दनुजकीआय ।
सोहनिमार्योमहराजाका रथचढ़िखड़ोद्वारपरजाय ४९
सुनिअसबानी महरानिनकी पहुंचेसैन्यद्वार सबज्वान ।
अश्वत्थामाको घेर्योसब लागोहोन युद्धघमसान ५०
पैने बाणनकी बर्षाकरि द्रोणी हने सकल ते ज्वान ।
रुद्रअस्त्रसों संहारतभो उबर्यो एक नहीं बलवान ५१
पुनिचलिआयोउतमौजागृह अतिबलशालिद्रोणकोलाल
जोगतिकीन्ह्योधृष्टद्युम्नकीतेहिगतिताहिकीनबेहाल ५२
तेहिक्षणजाग्योयुधामन्युनृप द्रोणिहिंदेखिक्रोधमेंआय ।
गदाप्रहार्योबक्षस्थलमाद्रोणगह्योखड्गरिसिआय ५३
सोधरिभ्रमकयोयुधामन्युपर काट्योमुंडरुण्डअलगाय ।
सोवतदीख्योतहंसेनाबहु मारनलग्योद्रोणसुतधाय ५४
हाथी घोड़ाबहु मारतभो सोवत हनेघने सरदार ।

मूड़नकेरे मुड़चौरा कियो कटि २ लोथिनकियेपहार ५५
जागै क्षत्री जोडरभुतहवै नैना मूंदिरहै चुपसाधि ।
सोसबमारेगुरु नंदनने कीन्ही बड़ीभयानक व्याधि ५६
इहिविधिसेनाघर खालीकै द्रोणीभयो गर्व विकराल ।
फिरिचलिआयोतेहिमंदिरकासोवतजहांद्रौपदीलाल ५७
योधातहंके सब जागतभे लरिकाजगे द्रौपदी केर ।
अश्वत्थामाको निरखतखनकीन्ह्योसकलशूरिमनटेर ५८
घिरि चौगिर्दागे द्रोणीके लैलै हाथ तीव्र हथियार ।
करषिशरासनशरआसनदै बरसनलगेबाणजलधार ५६
सुनिखलभल्लाऔहल्लाअति झट्ट उठ्यो शिखंडीज्वान ।
सन्मुखभिरिगाद्विजद्रोणीके लाग्योकरनबानघमसान
शस्त्र संभारोकर द्रोणिउंने लैकैनाम भगवतीक्षार ।
इतउततेगाबाजनलागे गाजनलगे शूर सरदार ६१
सिंहदहारनि क्षत्री गरजैं दैदै हांक करैं रणशाक ।
कौनौकौन्योते कमतीना हैंसब युद्धमध्य इकताक ६२
भर भर परिगातब सिबिरनमा सरसरचलैंबानकेघान।
मरमरमरमर उठैं धनुहिआं रोदा ठन्न ठन्न ठन्नान ६३
तड़तड़तड़तड़ गदा प्रहारैं मारैं ताकि २ बलवान ।
कठिनलड़ाईकरिद्रोणीने कितनेउतहांसंहारेज्वान६४
पांचौ लरिका द्रुपदी वाले जूझे खायद्रोणिके घाय ।
सोमदत्तऔप्रतिविंध्यादिक क्षत्री धरतीदयेखवाय ६५
शतानीक औश्रुतकर्मा से योधा जूझिगिरे संग्राम ।
तबश्रुतकीरतिआगेबढ़िगो जहंपरद्रोणपुत्रबलधाम ६६
हन्योसिरोही द्विजमाथेपर हाथेलई ढालद्विज तानि ।

ह्वैठिवारगे श्रुतकीरतिकै तब धनुबानलीन संधानि ६७
क्रोध बढ़ायोउर अंतरमा दीन्ह्यो द्रोणसुतैललकार ।
खबरदारहोरथऊपरद्विज पठवततोहिंआजयमद्वार ६८
यहकहिशायक बर्षनलाग्यो जैसेप्रलयकालजलधार ।
छाई अंधेरियादशहूदिशिमा द्विजपरदीनिमारुबिकरार
अश्वत्थामातबरिसहाह्वै दीन्ह्यो खड्गजौनत्रिपुरारि ।
सोधरिधमक्यो श्रुतकीरतिपर डारो एकवारमेंमारि ७०
फिरि रथदाब्योधरिआगेको सारथिकृपाचार्यमहराज ।
भयोशिखंडीद्विजसन्मुखतबकरिकैसमरशस्त्रकोसाज ७१
हांक सुनायो गुरुनंदनका रेशठ किये कपटसंग्राम ।
उबरिनजैहैम्बरिबारनते पठवतअबहिंतोहिंयमधाम ७२
यह कहिधन्वाधरि हाथेमा द्रोणिहिंदियोबाणसौंताय ।
सरसरसरसर शायकछूटे रथपरअन्धकारदयोछाय ७३
झुरमुटपरिगैदोउ शूरनते पूरण क्रिया युद्धदोउ ज्वान ।
चूरणह्वैगे तन घायनसों पूरेदशौदिशा महंबान ७४
तबफिरिक्रोधितगुरुनंदनभो लीन्ह्योहाथधारितरवारि ।
शीशशिखंडीकेधमक्योधरिधरतीगिरोरुंडहहकारि ७५
बध्यो शिखंडी जब द्रोणीने हाहाकार गयो तहंछाय ।
जितने क्षत्रीरहैं शिबिरनमहं लैलैशस्त्रचलेसबधाय ७६
आयगरेरोतब द्रोणीको लागी होन परस्पर मार ।
अपनपरावापहिंचानैना उठिगै मारु मारु ललकार ७७
जैसे भेड़हा भेंड़िन पैठै जैसे सिंह बिड़ारै गाय ।
जैसे लरिकागहबड़िखेलैं गिनि २ धरैं अगारीपायं ७८
इहिबिधिघूम्योभटद्रोणीतहं कितनेउंहनेहांकिबलवान ।

सैन मंदिरनखलभलि परिगैकटि२ गिरे सुघरुआज्वान
जितने क्षत्रीमत्स्यदेशके और प्रभद्रबीर पंचाल।
तेसब मारे गुरुनंदनने नाकोउ बचे वृद्धऔबाल ८०
बच्यो अगारो फिरिद्रोणीभट जौने शिविरसंजयीज्वान।
सोवतदीख्योतहंक्षत्रिनकोकीन्ह्योबानघानघमसान ८१
भूप युधिष्ठिरकी सैनाजहं तहंपरपहुंचिगयोगुरुलाल।
हाथीघोड़ासबमारतभो फारतभटनशीशअसिफाल ८२
जागै योधाजो सोवतते सन्मुखभिरै द्रोणिके जाय।
तेहिधरिधमकैद्विजधरतीपर दैतनअस्त्रशस्त्रकेघाय ८३
भिरैं सुघरुआजे द्रोणीते कटि २ गिरैं भूमिकी पारि।
जियतनछांड़ैकोहुक्षत्रीका हनि२खड्गदेतशिरफारि८४
भुजा बिघाटै पगकाटै धरि पाटै रुंड मुंड अलगाय।
कटैभुशुंडादलहाथिनके चहुंदिशिचिघरि२रहिजायँ८५
कल्लाकाटे बहु घोड़नके इतउत रुंड मुंड दरशाय।
भयोभयानकरिसमातोद्विज मानहुंकालरूपगोआय८६
सोवतजागतजेहि पायोतहं द्रोणीहन्योखड्गकीधार।
दयाछोड़िदइतेहिअवसरमा कीन्ह्योशिविरबिनासरदार
इतउत क्षत्री जे बचिगेते भागे लिये आपने प्रान।
अतिखलभल्लासोंहल्लाभोमचिगोशिविरमध्यघमसान८८
जोरशोरभो दिशिचारिउते बाहन चौंकिपरेतेहिकाल।
तोरिजंजीरै गजभागतभे करि२ प्रलयकारचिग्घार८९
तुरि अगारी और पछारी कूदन लगे अरब्बी ध्वाड़।
तिनकी लातनकीघातनते कितनेउंशूरभयेगड़ग्वाड़९०
धूरिउड़ानीनभमंडलका चहुंदिशिछायगयोअंधियार।

अपनपरावाबिनचीन्हेते रनघनघोरचल्योहथियार ६१
कोऊ पुकारै बाप बापकै रोवत टेरि टेरि सुकुमार ।
भायसुघरुवाकोउ२खोजै अगणितशूरगयेजहंमारि ६२
घोड़ाहाथिनको खोजतकोउ कोनौ हेरिरह्योधनुबान ।
खड्गहुधाराकोउ ढूंढ़तहै इहिबिधिमचोघोरघमसान ६३
जोकोउ भगिकै जायद्वारेपर तेहिकृतवर्माहनैप्रचारि ।
खड्गधर्मकैकृपाचार्यभट कितनेउंशूरगिरायेमारि ६४
तेहीसमइयाके अवसरमा द्रोणीआगिबारि बिकराल ।
सैनामंदिरसबपांडव को दीन्ह्योफूंकिहुताशनज्वाल६५
तीनिओरसों आगिलगायो चहुंदिशिगईउजेरियाछाय ।
असिफरकायो तबरथपरचढ़ि इतउतहनेअमितभटघाय
कितनेउं क्षत्रीजरि२ मरिगे कितनेउंमरे परस्परमारि ।
सुभटअसंख्यनभुबिपाटेद्विज बहुबिधिअस्त्रशस्त्रपरिहारि
हनैपशुनको पशुपतिजैसे द्रोणी हनैतथाविधिज्वान ।
मूडनकेरे मुड़चौराकरे रुंडन केर लाग खरिहान ६८
बरसे शोणित भटदेहिनते उमड़ी नदीधार बिकरार ।
परेपगारन से हाथीतहं घोड़ामनहुं मच्छघरियार ६६
परे भुशुंडाहैं अजगर सम पगड़ो रहीफेन उतराय ।
शस्त्रचर्मकै गिरिधरवीमामानो नागरहे मननाय १००
ठट्ठलागिगे बैतालनके नाचत ताल सहितगतिधारि ।
भूतपिशाचनकेदलवरये योगिनिरहींकिलकिलामारि१
खप्पर साजे दोउ हाथनमा हंसि२ करतरक्तकोपान ।
मालकपालनकी पहिरेउर लरि२ करतमांसकोखान २
गूदनिकासैं धरि शीशनको भोजन करत हियेहर्षाय ।

करतकुलाहलगण चील्हन के कागाकरतमेदआहार ।
खुशीखबीसिनि मंगलगावैं दरशैंअस्मशान विकरार ४
यहिविधिमारोसबसैनाको अतिबलशालिद्रोणकोलाल ।
खालीपरिगेसबसैनागृह बच्योनबृद्धज्वानऔबाल ५
प्रणपरिपूरणभोद्रोणी को आयो सैन्यभवनके द्वार ।
जहंकृतवर्माकृपाचार्यहुउ क्रोधितखड़े गहेहथियार ६
आयसुनायोतबदोउनते जोकछु कियोक्रियातहंजाय ।
भयोअनंदितद्विजजियरेमा पांडवसैननाशको पाय ७
कथामनोहर रणसोहर यह दूसर अंत भयोअध्याय ।
रामरत्नकी अनुमतिलैकै बंदीदीन कह्यो यहगाय ८

इति श्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि बाजपेयि पं० रामरत्न स्याज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गतमसवासी ग्रामनिवासि पं० बन्दीदीन दीक्षित निर्मित महाभारत भारत खण्ड भाषा सौप्तिक पर्व्व अश्वत्थामा कृत सुप्तसैन्य विध्वंसनोनाम द्वितीयोध्यायः ॥

चरित अपूरबसुनि द्रोणी को बोल्यो फेरिअंधभूपाल ।
हे मुनिज्ञानीमनमानो तुव बानी भरो अमीरसजाल १
मोहिंसमुझाइययहभाषनकरि द्रोणी जायसैनके द्वार ।
फिरिकाकौतुकतहं विरचतभो काकर्त्तव्यकोनिसरदार २
प्रथमनकीन्ह्योअसकारजद्विज जबनाजूझरहैंममबाल ।
काहेककीन्ह्योछलपाछेयह सोसमुझायकहौसबहाल ३
धृतराष्ट्रककी असशंकासुनि संजयफेरि कहैसमुझाय ।
हालयथारथमैं भाषतहौं सुनिये अंध भूपमनलाय ४
प्रथमैंपारथहियदाखिलरहै औपांडवनसहायक श्याम ।
तिनकी शंकारहै द्रोणीके ताते नहीं कीन असकाम ५

नायहिसमयाम्राअर्जुनघर नहिंसात्वकीसहितयदुनाथ।
ताहितकीन्ह्योयह द्रोणीने सुनिये अंधभूप कुरुनाथ ६
अथपूरणकै गुरुनंदनइमि कृप कृतवर्म साथ लैज्वान ।
तबचलिआयोदुर्योधनढिगअतिहिउमंगअंगअधिकान७
परोधरातल दुर्योधननृप श्वासा बढ़ी जासुविकराल ।
बहैं पनारातन लोहूके दुखते रहे नैन ह्वै लाल ८
निकसैशोणितबहुआननते कढ़तन शापबश्यतन प्रान ।
देखिव्यवस्था असराजाकी रोवन लगे तीनिहूंज्वान ९
बरणतगुणगन अरुबिक्रमतननृपऐश्वर्यकहतसब गाय।
हायबिधातागतिजानीनाअसनृपपरोभूमिबिलखाय १०
शिरगहिटेक्यो निजहाथेसों द्रोणीकह्यो भाषिबहुबार ।
पै कछुउत्तरनृपदीन्ह्योना इतउतदेखतदृष्टिपसार ११
फिरियहभाष्योकहिद्रोणीने जोतुमभूपजातसुरधाम ।
तौसुनिलीजै सुखबातैं मम जातेहोय चित्तविश्राम १२
धृष्टद्युम्नऔश्रुतकीरतिलै राजा युधामन्यु बलवान ।
बीरशिखंडीआदिकलैकै क्षत्री कोनआजुबिन प्रान १३
सैनामारीसब पांडवकै बहुविधि खोजि २ नृपधाम ।
बालकपांचौहनिद्रुपदीके दीन्ह्यों आगिबारिसबठाम१४
सातशूरिमाबाकी रहिगे अरुसबमारिमिलायों क्षार ।
पांचपांडवाऔसात्वकिसह बचिगेकृष्णचन्द्रकर्तार १५
शान्तचित्तभा अबहमरोकछु उतबचिगये सातबलवान।
इतकृतवर्माकृपाचार्यसह हमहूंबचेतीनि रणज्वान १६
अश्वत्थामाकी बातैं इमि सुनिआनंदभये कुरुराय ।
पुनिअसबोलतभो द्रोणीते सुनियेधीरबीरमनलाय १७

धन्यतुम्हारे पुरुषारथको धनितव भुजापराक्रम भार ।
जसक्षत्रीपनतुमकोन्ह्योद्विजअसनाकीनअन्यसरदार १८
भीषमगुरु औकर्णादिकलै कोहुनकीनबीर असकाज ।
ममअभिलाषातुमपूरणकियो हैधनिधन्यतोहिंद्विजराज
यहकहिक्षणइकचुपधारतभो फिरिलैसियारामकोनाम।
तनतजिइहिविधि दुर्योधननृप पहुंच्योजायइन्द्रकेधाम
रामकृष्णकी शुभदायाते पायो राज्य युधिष्ठिर राय।
ऋधिसिधिसंपतिसोंपूरणह्वै हर्षितभयेपांचहूभाय २१
जापरदाया राम कृष्ण की काहेनलहै पदारथ चारि।
ताकोसंकटनहिंस्वपन्योमहं बिलसतमोदगोदसिधिधारि
रामकृपाते सुरपति सुरपुर निर्भय करत राजकोकाज।
रामकृपालहिमुनिगाधिसने पूरणकियोयज्ञकोसाज २३
रामकृपाते मुनिगौतमतिय शुचितनभई पापपरिहारि ।
रामकृपातेगृहनिषादपति सुरपुरगयेसहितपरिवार २४
पूरणकीन्होंप्रण मिथिलापति सुन्दररामकृपाकोपाय ।
बाल्मीकिमुनिआचारजभे उलटेरामनामकोध्याय २५
शठविराधसेतरि स्वर्गैगे सुन्दर रामकृपाको पाय ।
गीधकबंधाअरुशवरीतियतजितनबसेअमरपुरजाय २६
रामकृपाते कपिसुग्रीवहु बानर राजभये सबभांति ।
रामकृपातेभटअंजनिसुत भेबलबुद्धिमध्यविख्याति २७
रामकृपाभे धनिकोशलपति कीरतिबिदित भईसंसार ।
रामकृपातेशठलंकापति सुरपुरगयोसहितपरिवार २८
भयोविभीषण नृपलंकाको सबबिधि रामकृपाकोपाय ।
रामकृपाते महाभारत यह बंदीदीन सुनायोगाय २९

जोकोउपढ़िहैं यहिसज्जनजन हितकरिशूरवीरसंग्राम ।
लोकसुधारिहैंदोउनीकोबिधि होइहैंएकपंथदुइकाम ३०

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासि बाजपेयि पं० रामरत्न स्याज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासी ग्राम निवासि पं० बंदी दीनदीक्षितनिर्मित महाभारत भारतखण्ड भाषा सौप्तिकपर्व दुर्योधन देहत्यागवर्णनोनाम तृतीयोऽध्यायः ३

छन्द ॥

उत्तरदिशिसुरसरितट शुभघट बिलसत बंथर ग्राम ।
है प्रदेश छबिबेशलहत जेहिनाम कहतउन्नाम ॥
बाजपेयिकुल कमलबसत तहं रामरत्न सिधिधाम ।
शीलडीलबरपरमदयाकर गुण गण तसजसनाम १

तिनानिदेश उपदेश बेशलहि महभारत कोगान ॥
कियोजगतजनमनरंजनहितजसकछुगतिमतिज्ञान ॥
सुनहिं गुनहिंनितचितधारजोजनसज्जनसुमतिमहान ॥
ऋद्धिसिद्धिनवनिद्धि देयतेहि सुखीकरहिं भगवान २
द्विजदीक्षित कुल अवतंसित मैं बंदीदीन सुनाम ॥
सुखरासी बिलसत कासीसम मसवासी मम ग्राम ॥
प्रपिता श्रीद्विज रामदीन पितु भागूलाल बखानि ॥
बंशत्रिपाठी अवतन्सित गुरुशिवनारायण जानि ३
काब्यकोषव्याकरण आदि दै ज्योतिष बैद्यकसार ॥
नीतिरीति संगीत स्वरन गति करतसकल निर्द्धार ॥
तिनपद पदम परागरागलहि मेटि दुसह दुखसर्ब ॥
छन्दबन्ध करिमहभारत यह गायहुं सौप्तिक पर्व ४
शरश्रुति अंकशशांक सहितशुभ सम्बत श्रावणमास ॥
पक्षवलक्षत्रयोदशि तिथि महं भई सुपरण आस
कौरव पांडव चरितमनोहर कह्यो सहित सुखसाध
लेहिं सुधारि अशुद्धिसुजनजन क्षमहिंमोर अपराध ५

इति सौप्तिकपर्वसमाप्तम् ॥

अथ महाभारत भारतखण्ड भाषा ऐषिक पर्व्व प्रारम्भः ॥

—-—※—-—

सुमिरण ॥

ध्यावों लालतामें नैमिषकै पंचप्रयागद्वार दरशाय ।
चक्रमनोहरके दरशनहें बुड़कीलिहे पापबिनशाय १
क्षेत्रसमीपैजहं मिश्रिषका नाचतभक्ति जासुकेद्वार ।
सौनकादिऋषिकियोतपस्या तीरैंबहतगोमती धार २
ध्यावोंलोधौराकेलोधेश्वर गोलाशंभु गोकरणनाथ ।
जाहिरमेलाअलबेलादोउ कौतुकहोत उमगकेसाथ ३
ध्यावोंकुसेहरीमैंकुसुंभीकै औं पछिआउ दूर्गामाय ।
मेलाचैतवरिकाभारीहै आवतपुरुष असंख्यनधाय ४
ध्यावोंचंदिकामैंबक्सरकै साथै सोहैं अम्बिकामाय ।
तरेसुरसरी लहरत आवैं ऊपरधर्म्मध्वजा फहराय ५
गोकुलबाबामसवासीके अद्भुतकला बरणिनाजाय ।
सुदीसत्तिमीशुभ कातिककी मेलारहतमनोहरछाय ६

मंडफ उत्तमअरुऊंचोअति अनुपमकटारही छहराय ।
जोकोउमंशाकरिआवैतहं पूरणहोतआशमनभाय ७
तिनपदपंकजधरिहिरदयमा औसबभांतिपराक्रमपाय ।
भारतभाषाअभिलाषासों ऐषिकपर्ब बखानतगाय ८
कंठबिराजौ नीलकंठसुत जिह्वा बैठु शारदा माय ।
जोजो अक्षरहमका भूलैं सोसो वर्णबतावति जाय १
वैशंपायन फिरिभाषतभे कौतुकसुनौ परीक्षितलाल ।
जोकछुकरणीरणशूरनकी सोसबवरणिबतावहुँहाल २
छलकरिमार्योजवद्रोणोने पाण्डवसैनसिबिरमहंजाय ।
रह्योनयोधाकोउबाकीतहं भेसबमृत्युनाशकोपाय ३
धृष्टद्युम्नकोरथसारथियक सोबचिगयोभागिअनयास ।
भोरभोरहरेपहफाटतसो पहुंचोभूपयुधिष्ठिर पास ४
रोइ २ भाषैतब राजासों हेमहराज युधिष्ठिर राय ।
अनरथहोइगातुवसिबिरनमहं नाकछुकथावरणिसोजाय
आजुअंधेरियानिशिअंतरमहं द्रोणी सैनभवनमहंआय।
सिगरीसैना तुवमारतभो जोकोउरहैं शूरउमराय ६
मार्योद्रुपदोके पांचौसुत राजा द्रुपद केर दुइलाल ।
युधामन्युउतमौजा आदिक मारेबड़ेबड़े क्षितिपाल ७
हाथी घोड़ा इक छोंड़ाना मारे हेरि हेरिसब ज्वान ।
सोवतजागतजेहिपायोलखि कीन्ह्योधाय२बिनप्रान ८
बनसमकाट्योरजपूतनको बच्योनयुवावृद्धऔबाल ।
भवनजलायो सबआगीसे सुनियेधर्मराज भूपाल ९
सोवतजागैजो योधाकोउ औभगिजायद्वारलैप्रान ।
कृपकृतवर्मातेहिमारैंहनि फारैंगात भेदितनबान १०

सिबिरतुम्हारे सब सूनेभे हमइकबचे भागि लैप्रान।
क्रियाउचितजोयहिसमयापरकहियेधर्मभूपमतिमान ११
सुनिअसबातैंतेहिसारथिकी शंकाखाययुधिष्ठिरराय।
परेघड़ाकागिरिधरतीपर अंगअंगगईबिकलताछाय १२
दुःख दरारागे छातीमा लागेचलन शोकके श्वास।
शोचसमान्योउरअंतरमा का दुखदईदीनअनयास १३
राजासात्यकितहँआवतभो दीख्योधर्मभूपबिलखात।
लोटतपेटतहैं धरतीपर नैननश्रवतअश्रुजलजात १४
झपटि उठायोइउ हाथनसों औगोदीमलीन बैठाय।
अश्वत्थामाकीकरणीकहँ लाग्योकहनभूपसमुझाय १५
धर्मकिमूरतितबबोलतभे कागतिकीन हायभगवान।
अर्थकिखातिरअनरथकीन्ह्यो निश्चयकालकर्मबलवान।
प्रथमनशोच्यों मैं हिरदयमहँ जबभो युद्धकेरसामान।
राजलालसासेसंगरमहँ पूरिखनसंगगह्योंधनुबान १७
गुरूपितामहसंबंधीसब बंधवसखा स्वामिपरिवार।
हनिश्मारयोकुरुखेतनमहँ कोउनरह्योवंशसरदार १८
उबरे क्षत्रीजे भारतते मार्यो तिन्हैंद्रोणिबिन काज।
काहमआगेसुखदेखबअब करिबेकाहहायलैराज १९
भीष्मपितामह द्रोणाचारज जीत्योंकर्णआदि सरदार।
पापप्रगटभेते पाछिलअब द्रोणीसबैकीन संहार २०
यहितेभारीदुखऔरोइक सोकेहि भांतिहोयधौं पार।
सुनिहै द्रुपदी जोकरणीयह मारेगयेमोरसुकुमार २१
केहिबिधिधीरजहियधरिहैसो मरिहैअवशिशोकसुतलागि
आगिप्रज्वलितहैपहिलेइकी जूझेबापभायरणपागि २२

तेहिते भारीदुख पुत्रनका होइहै कौनहाल कर्तार ।
बनीबिगरिगैसबक्षत्रगहीमा केहिबिधिहोयदुःखनिस्तार
शोचिसोचिकैयहधर्मजतब सबबिधिजानिकालबलवान।
हालबतायोकहिनकुलोते जोकछुपाछेकियोबयान २४
जल्दी जैयो तुम मंदिरको जहँपर अहैद्रौपदी बाम ।
भाषिसुनावोसबकरणोयह जोकछुदीनदैवपरिणाम २५
फिरिलैआवोइतसैनागृह देखैं दशासुतनकी आय ।
सुनिअसआज्ञामहराजाकी रथचढ़िगयेनकुलगृहधाय२६
इतयुधिष्ठिरगेसैनागृह सात्वकिभीम आदिभटसाथ ।
देखिदुर्दशातहँक्षत्रिनकी रोवनलागधर्मनरनाथ २७
सूनेमंदिरबिनक्षत्रिनके जरिबरिगये भौनह्वै खाक ।
रुंडनमुंडनभुवितोपीहै उमड़ीरक्त नदीयकताक २८
जटितजरायनकी कलंगीसह पाटेशीश शूरिमनकेर ।
बंधीवजुल्लनसहबाहूबहु इतउतलागअनेकनढेर २६
कदली खंभासी जंघेबहु कहूंअधखंड देहके लाग ।
कोउकोउजरिमरिगेआगीमहं नोचतखातमासतनकाग
फिरिशिरदीख्योनिजपुत्रनके लागेकरनघोरबिललाप ।
हायदुलारेचखतारेमम मारेगये कालकोचाप ३१
जियत हमारे सुखपायोयह वारोबैस भयेतननाश ।
छलकरिमारोगुरुनंदनने परणकोनिआपनीआश ३२
इहिबिधिशंकितनृपआगेगे दीख्योवाजिगजनकोहाल
कटि २ कढ़ाअधखंडेहवै इतउतपरे हालबेहाल ३३
कटे भुशुंडाहैं हाथिनके गिरिसे परे शुंडबिनधाम ।
परेसांड़ियाबिनघींचनके रथबिन चक्र भयेबेकाम ३४

गईंपोशाकै मिलि गर्दामा चूरण भये परे हथियार ।
विघ्नअनेकनलखिसैनागृहविलपतअतिवधर्मतरदार ३५
सुहितकुटुंबी मोरेजूझेसब केवलराज मिलनके काज ।
यहगतिहोइगैरणशूरनकै ममहितलागिमरेसबआज ३६
कागतिहोइहै इनकर्मनसों कैसेकहोय पाप उद्धार ।
अनरथकरिगागुरुनंदनअतिहासबनाशकीनपरिवार ३७
इहिबिधिशोचतधर्मनृपतितहँसात्वकिभीमरहेसमुझाय ।
तेहीअवसरके अंतरमहं पहुंची तहांद्रौपदी आय ३८
उतरितड़ाका रथऊपरते दोरूधे मरेपरे महिबाल ।
पड़ीधड़ाकागिरिधरतीपर मानहुंबज्जतज्योसुरपाल ३९
करुणाकरिकरिरोवनलागी जागीपुत्रशोककीआगि ।
हायबिधातायहदुखदीन्ह्यो राख्योतनिकनजीवनलागि
हायगोसइयां यहमर्जीमै स्वारथकियोअकारथआज ।
बंशदिवाकरमोरअथयेअब करिहौंकाहलेयकैराज ४१
हायअनाथिनिकेबालनकहं घालनकीनदुष्टद्विजराज ।
लालनपालनकछुकीन्ह्योंनाकहंतेपरीअचानकगाज ४२
शीशउठावै हियलावैपुनि धरि २ शवनलेयलपटाय ।
बहैंपनारा जलनैननते करुणा बैनकहै बिलखाय ४३
तबसमुझायोतेहिभिम्मानें धीरजधरौकुअवसरपाय ।
जोकछुमंशानारायणकी प्रगटतसोईसमयपरआय ४४
फेरिद्रौपदीयहबोलतिभै सुनिसबलेहुमोरभर्तार ।
मनसाबाचातेभाषतिहौं करियेसत्यशीशसो धार ४५
जायकैमारहुतुमद्रोणीका बदलालेहुसुतनकाजाय ।
नाहितजीहौंनाकौनिउबिधिरह्योअपारदुःखउरछाय ४६

जोतेहिमारनकोउकरिहैनादैहैंअवहिंत्यागिनिजप्रान ।
सहैानजैहै दुखहियरेमा मारेसिमोरबालनादान ४७
भूपयुधिष्ठिर समुझायोतब धीरजधरहु धर्मपतिवाम ।
अंकबिधाताके झूंठेना तेहिअनुसार होतसबकाम ४८
दूरिनिसरिगाअबद्रोणीद्विज मिलिहैनहींहेरियहिकाल ।
व्यथाबिसारौतियजियरेते कार्कोपितामातुकोबाल ४९
यहीदिनौनातकदीन्ह्योंबिधि आजुइ लगेरहैतुवनात ।
दोषनयामें कछुद्रोणीका होनीहोनहारके साथ ५०
भूपयुधिष्ठिरकी बातैं अस सुनिकैफेरि द्रौपदीनारि ।
आरतबोलीतबभिम्माते चहुंदिशिचितैकोपिललकारि ५१
हेबलवन्ताचुपसाधे का तुव बाहुनबलगयोहिराय ।
पुरबिराटकेकीचकमारो केवलमोरिलाजहितपाय ५२
वेगिबिदारौ तुमद्रोणीका मारौ हेरिजहां मिलिजाय ।
अकरमकीन्ह्योंअतिभारीयहिं लाइप्रशोधकाटिबलराय
दुख यहुमिटिहैतबहियरेते सुनुपतिभीमसेनबलधाम ।
खोजिकैमारौतुमद्रोणीका तौजनिजाथभलोबिधिकाम ५४
उज्ज्वलमणिहैद्रोणीशिरमा सोशिरकाटिलाउबलवान ।
शोभितकरियेसोधर्मजशिरतौबचिजायंजातममप्रान ५५
त्रियाअनाथिनिकीबानीसुनि जोबलवन्तरहैचुपधारि ।
तौधिकतुम्हरेभुजदंडनका जानबगयोद्रोणितेहारि ५६
सुनिअसबातैंमहरानीकी सहिनासकोवृकोदर ज्वान ।
उठ्योझड़ाकातबतहंनाते नैना गयेलालरीसानि ५७
द्वउभुजदंडैफरकनलागीं जागी प्रबलरोषकैआगि ।
रथसजवायोआतुरताते बाजीचपलचालकेलागि ५८

नकुलै लीन्हों तबसारथिकै अपनारथबैठ अतुराय।
उड़ेबछेड़ाअतिचंचलगति जिनकी टापभुईनाजाय ५९
धनुगुनभुजसों टंकारतभो जोरो तीव्रसान को बान।
उत्तरदिशिकोधरिदाबतभो रथकेचक्रघोरघहरान ६०
इतकीगाथा असबीततिभै सुनियै उतैधर्मको हाल।
सुनीहकीकतियहगोबिंदने आयेभूप पासउत्ताल ६१
कह्योयुधिष्ठिरतेबानीयह सुनियेबंधु बचनमनलाय।
कारजनीकोतुमकीन्ह्योंना ओमहराजयुधिष्ठिरराय ६२
चिंतित भिम्मासुतशोकनते अकिलेताहिदीनपठवाय।
बलकछुजान्योनाद्रोणीका हैभुजदंडचराडअधिकाय ६३
ब्रह्मअस्त्रहैअतिउत्तम शिर वाके दीनजौन गुरुराय।
पैसमुझायोतिननीकोबिधि हेसुतबचनमानुमनलायद६४
अतिहितकीन्ह्योंतुवऊपरसुत दीन्ह्यों ब्रह्मअस्त्रकोदान।
पैयहिछांड़ योनामानुषपर इतनाबचनकिह्योपरमान६५
यहसमुझायो आचारजने पीछे औरसुनौन्नृप हाल।
कछुरूदिनौनाकोअंतरकरि ममपरगयोद्रोणीकोलाल६६
मैं अतिआदरतेलीन्ह्योंतेहि कीन्ह्योंसबप्रकारसत्कार।
हमसनभाष्योतबद्रोणीने सुनुममबचनजक्तभतार ६७
ब्रह्मअस्त्रहैशिरमोरेमहं उत्तम जानि दीन मोहिंबाप।
कबहुंनखालीरणमाजैहै यहिलैलेहुहर्षसों आप ६८
यहिकेबदलेमैं मांगतहौं आपन चक्रदेहुमोहिंनाथ।
तबसमुझायोहमद्रोणीको लीन्ह्योंबचनतोरधरिमाथ६९
अस्त्रतुम्हारो हम लेबेना आपन चक्रदेतहर्षाय।
असकहिदीन्ह्योंधरिबसुधामा लाग्योताहिउठावनजाय

अतिबलकरिकैकरवांयेंसों बहुबिधिगयोउठावतहारि ।
दूनौहाथनतवखैंचतभो चक्रनतज्योधराकीपारि ७१
तबखिसियानोमनद्रोणीअति रहिगयोनीचेमाथनवाय ।
फिरिहमभाष्योअसद्रोणीते सुनिसद्रोणपुत्रबलराय ७२
चक्रहमारोप्रियप्राणहुंते मांगतरहेजिधनु बल राम ।
सांबगदनऔप्रद्युमनमांगोकहंलगविप्रगनावहुंनाम ७३
चक्रआपनोमैंदीन्ह्योनाभ्रातासुतलगकीननिराशऔयसो
मांग्योतुमशठतावशकेहिविधिमिलैतुम्हैंबधिराशि ७४
तबजिधरोषितगुरुनंदनभो मैंसमुझायदीनतेहिज्ञान ।
सुबरणमणिदैतबटारोमैं करिये भूपबचन परमान ७५
बिप्रनजान्योतुमद्रोणीका है यह महाकपटकोखानि ।
मैंअबजेहैं।ढिगअभिमन्याके नाहितहोयकाजकीहानि ७६
असकहिस्यन्दननंदनंदन चढ़ि उत्तरदिशाकीनप्रस्थान ।
लैधनुधारीसंगअर्जुनका गमनेजहांभीमबलवान ७७
भीमपहूंच्योतबगंगातट सोहतजहांमुनिनसहव्यास ।
शुभ्रमंडलीबहुराजतहै भाजतजहांमोहमतिगांस ७८
समयलागिगोकछुमारगमहं कृष्णौतहांपहूंचेजाय ।
हैअसवारीनंदिघोषकी अतिबलबाजिरहेहिहनाय ७९
घहरैं चाका सुर बांकासों शाकासुनेशत्रु थहराय ।
मेघगरज्जैंजनुसावनमा घंटाशब्दहोतसुखदाय ८०
ध्वजाबिराजोहै अंजनिसुत पायकअबलरामजीक्यार ।
सिंहकिबैठनिअर्जुनबैठो गांडिवधनुषहाथमहंधारि ८१
घहरसुनाईदइअभिमन्याको तबइतलख्यो दृष्टिहगलाय ।
आवतजान्योहरिअर्जुनका अपनौबाजिबढ़ायोधाय ८२

तबचलिदीन्ह्योगुरुनंदनका बैठ्योमुनिनमध्यशठजाय ।
अतिबलभिम्मालेलकारतभो रेद्विजखबरदारहोइजाय
आयतुलान्यों ढिगतोरेमैं यहनिजबचनकिहेपरमान ।
गयेपतालौमाबचिहैना जैहैंअवशि आजुतुवप्रान ८४
बीरवृकोदरकी बानीसुनि आनी शंकहियेगुरुलाल ।
कृष्णौअर्जुनकानिरखतखनतनथरहरोद्रोणिबलशाल ८५
काढ़िनिषंगीतेजंगीशर जाहिर ब्रह्म अस्त्रजेहिनाम ।
धनुगुनजोरयोपलअंतरमहं दैशरनोकफोंकअभिराम ८६
नामअमोघीतेहिशायक का कबहूं वारनखालीजाय ।
लालीआंखैंबलशालीकरि व्यालीसरिसतज्योतेहिधाय
भाषिसुनायोयहशायककहं करिदेनाशपांडुपरिवार ।
वृद्धबालकनकोहुराखेना सबकहंहेरिघेरिधरिमार ८८
चल्योउतालीद्युतिजालीसों घालीदशौंदिशामहंज्वाल ।
डगमगडोलैंथिरकालीके हालीधराजानिलयकाल ८९
मानहुंकालीको आयुधहै असुरनजात मारिबेकाज ।
खालीकरिबेहितपाण्डवकुलगालीदेयतज्योद्विजराज९०
घालीज्वालासोदसहूदिशि चालीचपलचालफहरान ।
कहरउकालीत्रैलोकीमा मानहुंकीनउजालीभान ९१
प्रगटनलाग्यो शरझालीअति टालीइन्द्रबज्रकीसान ।
हृदयबिठालीभयदेवनकेडालीप्रलयकालगतिआनि ९२
परीउतालीविधिहरिहरके थालीछोड़िभागमुनिआदि ।
जगदलदालीकोप्रगट्योयह वसुधालीनचहतलखबादि
दुःखकीनाली गइंसबकेउर खलभलपरीइन्द्रपुरजाय ।
तबप्रतिपालीकुलपांडवके शोचनलागहियेयदुराय ९४

ेयहभाष्यो कहिअर्जुनते रेबरबीर देहि डरडारि ।
रुप्रस्फालीशरद्रोणीको रेमटब्रह्म अस्त्रधनुधारि ९५
ातरुजीततबलबालीद्विज सुनिअसप्रभालीनभोउवान ।
पदबंदनबनमालीके धरिउर दीनदयाली ध्यान ९६
ास्त्रकराली तबछोड़तभो अर्जुनमहारथिनशिरताज ।
ालीज्वालाप्रज्वालितकै धायोयथाबिहंगपरबाज ९७
ुरपतिबालीजनुशक्रोहै फहरतगिरिनसंहारनजात ।
कमामिलिगेबलशालीदोउतक्षकशेषकरतजनुघात ९८
अस्त्रविधाताके दूनौंमिलि मगमहघोरमचायोरारि ।
ाली ह्वैगे पुरदेवनके तजिकैलाशभागत्रिपुरारि ९९
प्रतिधुनिसाली त्रैलोकीमा हालीधराशेषथहरान ।
रलयसमैथासीप्रगटतभै आयोउलटपलटसामान २००
तगप्रक्षाली तबआयेतहं नारदजिन्हैं बखानतनाम ।
रध्यमहवैकै दोउअस्त्रनके ठाढ़ेभये निवारण काम १
औयहभाष्यो दोउशूरनते साहसवृथाकरतबलधाम ।
अस्त्रत्यागिबे असचाहियना देखनचहीअंतपरिणाम २
बहुधनुधारीभेहुनियामा अनुचितकरयोनकौन्योकाल ।
जगसंहरिहैयहिवातनमा करियेबीरचित्तनिजख्याल ३
नारदमुनिकीअसबानीसुनि गुनिमनसखासांवरेक्यार ।
शरआकर्षणकरिलीन्ह्योकर मुनिसनकह्योसुनोबचम्वार
बचनतुम्हारो मैंमान्योमन आन्योतुरतअस्त्रगहिहाथ ।
पैशरद्रोणीने खैंच्योना याको शमनकराइय नाथ ५
तबसमुझायो मुनिद्रोणीको नाकरिसको अस्त्रसंहार ।
दुखियामनसों यहबोलतभो सुनिये व्यासदेवकर्त्तार ६

मैंभयजान्यो मनभिम्माको अपनेप्राणउबारनकाज ।
अस्त्रचलायो मैंआतुरह्वै नाकछुचेतकीन जियआज ७
भिम्मैंमार्यो दुर्य्योधनका कीन्ह्योंनहींधर्म्मकोख्याल ।
ताहितमारनकोभिम्मैंमें छांडयोब्रह्मअस्त्र बिकराल ८
वंशपांडवनका नाशनहित मैंप्रणकीनहियेमहंस्वामि ।
तातेऐंचतबनिआवैना कहियेउचितजानिअनुगामि ९
व्यासबुझायो तबद्रोणीको सुनियेबचनद्रोणकेलाल ।
पारनपैहौतुमपारथते वाको अस्त्रपरमबिकराल १०
अस्त्रतुम्हारो सोकटिहैधरि यहममबचन करौपरमान ।
दूसरअनुचितअरुयामहंयहसोऊकहतसुनौधरिध्यान ११
तज्योअर्जुनौ ब्रह्मायुधको तुमहूंतज्यो बिधाताबान ।
अस्त्रअस्त्रसोजहंनाशोजाय तहंपरहोतविघ्नकोथान १२
तहां न बरसैजल काहूविधि बारहबर्षपरतहैकाल ।
यातेकरियेनिरवारनशर सुनियेसत्यद्रोणकेलाल १३
तुम्हैं पांडवा अबमारिहैं ना शंकादेहु चित्ततेडारि ।
कहोहमारोयकमानहुंपै तौसबकारज जायसवांरि १४
कियोद्रौपदीप्रणमारोंयह औभिम्मातेकह्योबुझाय ।
उत्तममणिहैशिरद्रोणीके भटतेहिमारिलयावहुजाय १५
तेहितेतुमका समुझैयतहै सुनियेद्रोणपुत्र बलवान ।
देहुआपनीमणिभिम्माकोकरिकैक्षमासमयअनुमान १६
रोषितह्वैकै तबबोलतभो अश्वत्थाम नाम बलधाम ।
हेमुनिनायकयहअनुचितअति यहिक्षननहींक्षमाकोकाम
काहहमारो मणिचाहतवै मनमहंबीरपनेकोलाय ।
अगणितमणिहैंघरकुरुपतिकेअबहुंनकीनतोषतिनपाय ॥

हमतौआपनि मनिदेबेना लेबेबरुकशस्त्र संग्राम ।
होयपांडवनके मनमाजो सोकरिलेहिंआपनो काम १९

स० विप्रबिचारिह्मैंमनमातनमावलकोदलआनिचढ्योहै ।
कायरजानतजोहमकोउनकोकबशायरनामकढ्योहै ॥
शायकसे चबनामुनिनायक पांडवनाशबिरंचिगढ्योहै ।
आपरहैंचुपचापघरीकजियेहमरयोअतिगर्बबढ्योहै ॥

अस्त्रनिवारणअबह्वैहैना सुनियेबचनमोरमुनिठयास ।
गर्भउत्तराके पेटमजो करिहौं अवशि ताहिमैंनास २०
असप्रणलखिकै मनद्रोणीके बिहंसेकृष्णचंद्रभगवान ।
अन्तर्यामीसबजानतभे औद्रोणी सन लागबतान २१
नामउत्तरा जेहि भाषततुम सो बैराटभूपकी बाल ।
पारथसुतकीमहरानीहै सुनियेबचन द्रोणके लाल २२
उदरगर्भहैतेहिरानीके तेहि तुमकीन चहतहौ नास ।
बिधिहरिशंकर कहंदेखौंना जोतुवआनिपुरावैं आस २३
आखिरह्वैहै जबकौरवकुल तेहिकेकछुकदिननकेबादि ।
बालक ह्वैहैतेहिरानीके भुजबलहोयजक्तबिख्यादि २४
वंशशिरोमणिकुरुपांडवका ह्वैहै भूप परीक्षित नाम ।
प्रजापालिहैसोआनंदसों भुजबलअचलहोयसंग्राम २५
दानदयाकर सबबिधि ह्वैहै करिहै एक छत्रसोंराज ।
शत्रुनरैहैकोउसन्मुखमा सुनियेबचनमोरद्विजराज २६
सुनिअसबातैं यदुनंदनकी बोल्यो द्रोणकेर सुकुमार ।
मिथ्या बातैंतुवह्वैहैंना औनावृथाहोय शरम्वार २७
यहिबिधि अस्त्रहिपरिहारेते ह्वैहै पुष्टगर्भ नरिनाथ ।
फिरिसमुझायोयहकेशवने होयनव्यर्थअस्त्रतुवहाथ २८

उदर उत्तराके मरिहौजो जैहैतहां मृतकसमप्रापि ।
रक्षाकरिहैसोबालककै ह्वैहैअधिकऔरबल व्यापि २९
हानिनह्वैहैकछुकाहूविधि अरुवैतव्यथगर्भहोइजाय ।
जगप्रतिपालकबालकप्रगटो सुन्दरअभयसमयकोपाय
सहसाकर्मी तुमजाहिरहो तुम्हरोभरो आत्मापाप ।
बालकघातीअघहोइहैत्वहिंपैहोअधिकअधिकसंताप ३१
फलयहि अधरमकोपैहो यह रैहौइत त्रयबर्षहजार ।
आकुलफिरिहौगरिखोहनमाबनबनकरौभर्मनाथार ३२

स० अस्त्रकरैनहिंबिघनकछुतवभाषिवृथाकहुऔरतिह्वैहै ।
बंशविशालक्यालकबीर सुपालक वालकउत्तराजैहै ॥
बंदिअरामप्रजैअतिदै वलधामसुनाम परीक्षितह्वैहै ।
दूषण दुष्टद्रुजैकुलपूषण भूषण भूमिको भूपकह्वैहै ॥

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिबाजपेयिबंशावतंसश्रीपं० रामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासिपं०बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषा भारतखण्डान्तर्गत ऐषिकपर्व द्रोणिकृतयुधिष्ठिरसैन्यबिनाशबर्णनोनामप्रथमोध्याय: १ ॥

बिघनबिदारणउरधारणकरिसबबिधिध्यायशारदामाय ।
शाकाबांकारणशूरनका मतिअनुसारकहौंफिरिगाय १
बैशंपायनफिरिभाषतभे कौतुकसुनो परीक्षितलाल ।
भयोअगारीजोकौतुकफिरि सोसबबरणिबतावहुंहाल २
कौरवपूछ्योअससंजयते हेमुनिपरमज्ञान आगार ।
फिरितहंकौतुककाबीततभो मोसनकहोसमयअनुसार ३
अंधभूपकी असबानीसुनि पुनिमुनि संजय लागबताय ।
सुनुमहराजाशुभगाथायह कौतुक अकहकहोनाजाय ४

केशवबोलेफिरिद्रोणीते द्विजतुवबढ्यो अधिकअभिमान ।
तातेत्वहिंकासमुझावतहौं कोन्हेसत्यबचनपरमान ५
अस्त्रअमोघीतैं छांड्योजो तेहिं करिदीनगर्भकोदाह ।
अवशिजियेहौंमैंतेहिकापै देखिहैंतोरिपराक्रमथाह ६
सुःखपांडवनका देहौं मैं करु जो मनमाहचै उपाय ।
ममतपविक्रमकछुजानैना आंखिनरह्योअंधेराछाय ७
काहबिचारेमनअपनेतैं अकरमकर्मकीन जेहिलागि ।
अनरथठानेतजिसुधरमका तुवउररहेपापपथपागि ८
सबबिधिरक्षकमैंजिनकोहौं मारनतिन्हैंचहैअज्ञान ।
कबतेबाढ्यो बलदेहीमा कबते बनेघनेबलवान ९
मोरपराक्रम तैंजानेना रेशठबिदित सकलसंसार ।
वेदपुराणन महंगायोहै सुनुसोकहौं समै अनुसार १०

भीरपरीप्रहलादसखैतबह्वैकैहरीहरणाकुशमारो
डुबतस्वच्छश्रुतीनबिचारिकैमच्छस्वरूपह्वियारिउबारो
कच्छभयोतबशंखहरयोंअरुशूकररूपधराधुरधारो
बंदिसोपाण्डवराखनहारातिन्हैंकहमारिसकैतबिचारो ११
सर्वसुपर्वपर्दोखदुखीतबबामनह्वैबलिगर्वप्रहारो
बानिधरापरभारअपारकुठारलैचत्रिनबंशसंहारो
भक्तनदेखिअसक्तब्यथैबसरामकैरामह्वैरावणमारो
बंदिसोपांडवराखनहारातिन्हैंकहमारिसकैतूविचारो १२
नंदअनंदककृष्णभयोब्रजचंदकह्योसबनामहमारो
चारिदिनाकोहत्योतबपूतनामारिबकीबकव्योमबिदारो
बोरनइन्द्रचढ़योब्रजकोतबमैंकरबामगोवर्द्धनधारो
बंदिसोपांडवराखनहारातिन्हैंकहमारिसकैतूबिचारो १३
शकटानिहनाहनिमारयोतृनासुरखेलतहौंअंगनामह्वंबारो
मुष्टिकचाणुरतोशलऔशलसेखलकोदलदालिदरारो

कंसबिध्वंसक्रियोछनमेंसुरशंसकोअंशसवैबिधिटारो
बांदसोपांडवरीखनहारत्तिन्हैंकहमारिसकैतूंबिचारो १४

इहिबिधिभाष्योयदुनंदनजब द्रोणीगयोसनाकाखाय।
कमलसरीखोमुखधूमिलभोकोमलगातगयोमुरझाय १५
देखिव्यवस्थातेहिऔसरअस तबहींव्यासकह्योयेबानि।
सुनौदुलारेआचारजके करियेसत्यवचनममभानि १६
अधरमकीन्ह्योंअतिभारीतुम छऊकरिहत्योबालनादान।
पापतुम्हारोअतिअनुचितलखि तुमपररोषकीनभगवान
वातेतुमका समुझाइतहै नार्थाहबात तातकल्यान।
देहुपांडवनमनिआपनितुमहर्षितकरहुकृष्णभगवान१८
करौबसेरोबनयाहीमा सबबिधिमुनिनकेरव्रतधारि।
करौतपस्यामलनाशनहिततजिजियशोगयोगनिर्धारि१९
सुनिअसबानीव्यासदेवकी शोचतभयोद्रोणकोलाल।
हितपहिंचान्योनिजयाहीमाकीन्ह्योंव्यासबचनप्रतिपाल
तबचलिआयेढिगभिम्माके मणिदैदीनिकाढ़िकैहाथ।
मांगिक्षमापननंदनंदनतेपुनिसबमुनिननवायोमाथ २१
रस्तालीन्ह्योंतबजंगलकै जपतपसधनसाधनाकाज।
कृष्णौचलिभेतबरथपरचढ़िचंचलचपलजोतिनवबाजि२२
अर्जुनभिम्मादोउसाथैहैं रथतबचल्योपवनकीचाल।
घहरैंचाकास्वरबांकासो सुनिसुनिहोयबैरिउरशाल २३
कछुकअबेरामगमालाग्यो पहुंचे बीरनगरमहं आय।
तुरतपधारोतबद्दुपदीढिग जेहिकाकहीभीमबलराय २४
तहैंबिराजेनृपधर्मजहैं अर्जुन सहित गये तबश्याम।
मिलेयुधिष्ठिरहरिअङ्कमभरि करिह्वउचरणकमलपरणाम

हालबतायेसबद्रोणीका यदुपतिद्रुपदसुताभाखि ।
मणिलैत्र्यायेजोद्रोणीते सोदइद्रुपदसुताकरराखि २६
पुनिसनुझायोकहिभिरूमाने रानीधरौधीरहियमाहिं ।
त्रियाकहावेतुमक्षत्रिनकी समयोशोचकरनकोनाहिं २७
पांचै लरिकातुवमारेगे तेहिमा बढ़ोशोच बिकरार ।
हमहनिमारोदुःशासनका कीन्ह्योंतासुरक्तत्र्याहार २८
भीष्मपितामहत्र्याचारजहनि मारोसमरकर्णसरदार ।
शकुनिजयद्रथदुर्योधनसह कौरवबंशकीनसंहार २६
त्र्यसगुनिमनमामहरानीत्र्यब उरतेदेहुबिकुलतात्यागि ।
लिखीबिधाताकैमिटिहैना करियेशोचप्रियाकेहिलागि ३०
मणिलैत्र्यायेहमद्रोणीते गुरुसुतजानि बचायेप्रान ।
दूसरजान्योंमैंब्राह्मणत्यहि यहिहितदीनजीबकोदान ३१
सुनित्र्यसभिम्माकीबातैंपुनि बोलीबचनद्रौपदीनारि ।
मणिलैत्र्यायोजोद्रोणीकै सोनृपमुकुटदेहुतुमधारि ३२
नृपतिसंवारैंमणिअपनेशिर तौममशोचदूरिह्वैजाय ।
लखित्र्यसमंशानृपद्रुपदीकैलीन्ह्योंशीशमुकुटमणिलाय ३३
तबफिरिभाष्योनृपकेशवते करियेप्रभुशोचममनाश ।
बड़ोत्र्यंदेशायहजियरेमा हनिभटद्रोणिकोनममहास ३४
बीरशिखंडीधृष्टद्युम्ननृप जाहिरमहारथीबलवान ।
तिनसहत्र्यगणितबलवंताभम कीन्ह्योमारिबिप्रबिनप्रान
होतत्र्यंदेशायहमनमागुनि भेबलहीनमोरसरदार ।
भूपयुधिष्ठिरकीबानीसुनि भाषणकियोकृष्णकर्तार ३६
वृथात्र्यंदेशानृपतुम्हरेजिय यहकछुबिप्रपराक्रमनाहिं ।
त्र्यस्तुतिकीन्ह्योशिवशंकरकी लहिबरदानलीनशिवपाहिं ।

क्रिया सिद्धियह ताहिततेमैं सुनियेभूप युधिष्ठिरराय।
भयेनयोधाकछुनिर्बलतुव छलकरिहन्योविप्रनिशिपाय।
करिअनुकंपाशिवशंकरतेहि दीन्ह्योमहाअमरबरदान।
बड़ेदयालुहैंगिरिजापति जिनयशबिदितजक्तअप्रमान।
सबभूतनकेवै मालिकहैं पालकसृजक नाशकर्तार।
देवअनादीसबगावतहै अतिशयभक्तलाजरखवार ४०
एकसमैयाकी बातैं हैं ब्रह्मासृष्टिरचन मनठानि।
आदिबिलोक्योशिवशंकरका तबयहकह्योप्रजापतिबानि
रचना करिये शिवसृष्टोकै जासोंवृद्धि होय संसार।
सुनिअसब्रह्माकीबानीशिव लागेमनमाकरनबिचार ४२
ध्यानलगायेजलअंतरह्वैअतितपकियोभूतपतिस्वामि।
ब्रह्मापहुंचेतबशंकरढिग कीन्ह्योंहाथजोरिपरणाम ४३
बिनय सुनायोतबशंभूकहं कहिप्रभुमानिदासकीबानि।
रचनाकरियेअबसृष्टोकी ह्वैगोबहुतकालअवसान ४४
तबशिवब्रह्मातें भाष्योयह करियेमोरबचन परमान।
होयअगारीकोउहमतेना तौमैं करौंसृष्टि निर्मान ४५
एवमस्तुतबबिधिदीन्ह्योंकहि तबशिवकीनसृष्टिनिर्धार।
प्रथमैसबतें प्रगटायोतहं सत्रहप्रजापतिनइकबार ४६
तेसबबिरचेजबचारिकविधि सिधिसहभूतग्रामसमुदाय।
भयेक्षुधातुरतेउपजतखन दौरेप्रजापतिन कहंखाय ४७
डरेप्रजापतितबतिनकहंलखि पहुंचेभागिविधातापास।
हालबतायोकहिब्रह्मातें चाहतहोनहमारोनास ४८
जल्दीभोजन इनकादैदेउ नाहिंतहमैं लेहिंसब खाय।
प्रजापतिनकीयहबानीसुनिभोजनब्रह्मदीनप्रगटाय ४९

भोजन पायोजब भूतनने बचिगे प्रजापतिनकेप्रान ।
कछुदिनबीतेपरजलतेकढ़िदीख्योशंभुनाथधरिध्यान ५०
सृष्टिबढ़ाईअतिब्रह्माने तबशिवहियेअधिकरिसिआन ।
लिंगबढ़ायोअतिचारिउदिशि जासोंहोतसिद्धिसबठान ।
मुश्किलपरिगैसबलोकनमा तबविधिकह्योशंभुसनबात।
यहकाकीन्ह्योअबगिरिजापति बहुदिनराखिवारिमेंगात
लिंगबढ़ायोकेहिकारणप्रभु हमसनहालदेहुबतलाय ।
तबशिवशंकरयहभाषतभे सुनियेब्रह्मबचनमनलाय ५३
जगप्रगटावनतुमहमतेकहि पीछेकियोऔर व्यापार ।
सृष्टिकरैयाजो दूजेभे तौपुनिकारजकहा हमार ५४
सृष्टिनशैहैं यहबनिगैजो दूजीसृष्टिबनैहैं फेरि ।
लिंगबढ़ायोंयहिकारणते उतपतिहोयप्रजापतिकेरि ५५
असकहिशंकरचलितहंवांगे जहंपरऊर्जवंत पाहार ।
करनतपस्याफिरिलागेतहं सुंदरध्यानधारणाधार ५६
कछुदिनबीतेमनचिंतनकरि फिरिनिर्मानकरनमनलाय ।
युक्तिउक्तिसोंसिधिशोधनकरि पुनिपीछेयहरच्यो उपाय
न्यारेकीन्हेसबसृष्टीके मखआदिक शुनिवेद प्रमान ।
भागकेलायकजेदेउतारहैं अरुहविषादिकसर्बविधान ५८
मखफलदायकगुणिशंभूकहं दीन्ह्योसुरनभागअलगाय।
कल्पितकीन्ह्योशिवधन्वातब हियमहंपूरिआशजयलाय
क्रियायज्ञअरुग्रहआदिकमखअरुनृपलोकयज्ञकोआनि ।
लोकयज्ञअरुनृपयज्ञासोंबिरच्यो धनुषधरनकोपानि ६०
अतिशयगरुओधनुबिरच्यो शिवजामहंवषट्कारगुनलाग
सोटंकारयो धरिहाथेमा साथैभयोकोपअनुराग ६१

जायपहूंचेतेहि आश्रमपर जहं सुरयज्ञकरतमनलाय ।
रिसपरिपूरितसोशिवकोलखि सबसुरगयेहदयभयखाय
डगमगबसुधाडोलनलागी हरिउरपौनभूलिगे गौन ।
मखसहपावकमनडरपेअति अनरथहोयरामधौंकौन ६३
भाग्योपावक मृगतहंतेह्वै अबहूंबसोरहतसुरधाम ।
रूपबनायेवहिहरणाको कीन्हेप्रगटअग्निगयहनाम ६४
फेरिउपद्रवअसकीन्ह्योंशिव लीन्ह्योधनुषमध्यसुरडारि
वषट्कार मयज्याजाकोहै बाणीकीनतासुपरिहार ।
सुरमखराख्योतबआनंदसों औशिवशरणभयेसबआय
हर्षितह्वैकैशिवशंकरतब जलमहंक्रोधदीनबिसराय ६६
क्रोधसर्वसो भोपावकतन शोषोकरत तहांबसिवारि ।
तातेतुमको समुझाइतहै सुनिये बचनभूपउरधारि ६७
ईश्वरअर्पणमखकरियेजो कबहुंनबिघ्नहोतत्यहिमाहिं ।
कबहुंककोपंप्रभुसमरथजो नरतेकरतबनतकछुनाहिं ६८
ताहितजोत्योंद्विजसैनातुव अतिअरपायशंभुपरसाद ।
शोचत्यागियेअबजियरेते लहियेसर्वभांतिअहलाद ६९
जसकछुमंशानारायणकै होतसोअबशिकालगतिपाय ।
हर्षहमारे अतियाहीहै पायोबिजय युधिष्ठिरराय ७०
फेरि भूपभे राजाधर्मज सुंदरराम कृपाकोपाय ।
रामकिदायाजापरहोइहै रोहहैसदाहर्षतेहिछाय ७१
रामकृपाते घरपांडवके बाजनलागे मोदबधाय ।
रामकृपाते महभारत यह ऐषिकपर्बअंतभैआय ७२
सुनैसुनावै औगावैजो करिनर महामोदउतसाह ।
होहिंमनोरथपरिपूरणसब होयनतासुसुयशकोथाह ७३

धेनुपुजाये फलपावै जो भूखे बिप्रदिये ते दान ।
सुरआराधनफल पावैजो गंगामध्यकिये असनान ७४
सोफलपावैयहिभारतते गायेसुयश शूरिमनक्यार ।
कलिमलभागैतेहिआगेते सबसुखदेहिंकृष्णाकर्तार ७५
गंगीजीके तटउत्तरदिशि बंथरग्रामएक अभिराम ।
तहांनिवासोबाजपेयिद्विज श्रीबरनेकरामअसनाम ७६
बंशप्रशंसकसुततिनकेशुभ श्रीशिवचरणलालबुधिधाम ।
द्विजप्रतिपालक तिनबालकबर श्रीयुतरामरत्नअसनाम
तिनकोआयसु लहिभारतयह भाषाछंदकीन निर्मान ।
गुरुपदपंकजकी दायाते ऐषिक पर्वभई अवसान ७८
जसकछुगतिमतितसगायोयह हरिगुनगुननकेरकरिसाध
भूलसुधारिहैंबुधगावतखनकरिहैंक्षमामोरअपराध ७९

इतिश्री उन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासि बाजपेयिपण्डितरामरत्नस्याज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गत मसवासीग्रामनिवासि पं०बंदीदीनुदीक्षितनिर्मितमहाभारतभारतखण्डभाषा ऐषिकपर्ववर्णनोनामद्वितीयोध्यायः २॥

शरश्रुतिअंकऔमयंकआदिसंबतलैआश्विनप्रथमपक्षस्वक्षमनभायोहै ।
तीजतिथिपूजकपरमर बिदिनमानि भारतपुराणअन्तसमयबतायोहै ॥
पायकैनिदेशसिद्धिधामरामरत्नजीकोजसकछुमतिगतिसमबनिआयोहै।
सहअभिलाषायहव्यासकृत भाषामहभारतसुऐषिकपरबकोहगायोहै ॥

सुरसरितीरदिशिउत्तरप्रसिद्ध शुभग्राममसवासीसरिकाशीकोसुहायोहै ।
पितापिताकहर्ताद्विजरामदीनदीक्षितसुभागूलालनामअसपिताकोबतायोहै ॥
गुरुशिवनारायणपायंनप्रसाद शुभगायनोकियोसुजसज्ञानध्यानआयोहै ।
क्षमिअपराधबुधपाढ़हैंसहितसाध बंदीदीनपूरणमनोरथबतायोहै ॥

इतिऐषिकपर्व समाप्तम् ॥

अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड

विशोकपर्व्व प्रारम्भः

सुमिरण

दो० एकरदनपदपद्मवर करिनिजउर पुरश्रोक
महभारत भाषा बिशद भाषत पर्वबिशोक ॥

मैंपदबन्दौं भारतखण्डके जनदुखखण्ड निखण्डनहार ।
चण्डप्रचण्डनसुमतिउमण्डनप्रभुब्रह्मण्डकरनउजियार ॥
झुण्डघमरिटनके खंडनकर मंडलबिघ्नबिनाशनहार ।
सुरबरबंदन व्याधिनिकन्दन बन्दिअनन्दकरनकर्तार २

सो० ध्यावतपावतचारिफलैतनराखतनादुखदारिदथब्बै ।
वेद बखानत जानतबंदिउधारिदियोजनकोटिअरब्बै ॥
भाषिसुनावतयातेप्रभूजिय जोकछुआशहुलाशसरब्बै ।
दै मतिथोक हरौउरशोक करौपरिपूरविशोकपरब्बै ॥

वैशंपायनते पूंछ्योपुनि श्रीबरबीर परीक्षितलाल ।
भयोअगारीमुनिकोतुकजस सोसबबरणिबताइयहाल १
प्रथमबताइयकहिमुनिबरयह जबमरिगयोसुयोधनराय ।

अंधधरापतिकाकीन्ह्योतब सबविधिपुत्रनाशकोपाय २
कृपकृतबर्मा अरुद्रोणीसह काइनकीनतीनिबलवान ।
भूपयुधिष्ठिरसबभाइनसह काकर्तब्यकीनअनुमान ३
दशादेखिकै धृतराष्ट्रककी संजयकहादीनउपदेश ।
सोसबबरणौमुनिमनलागुनि सुनिहौंबंशचरितबरवेश ४
सुनि असबानीजनमेजयकी बैशंपायनलागबतान ।
तुवकुलकीरतिमैंभाषतहौं सुनियेपुत्रधारिइतकान ५
सुनितनःयागनदुर्य्योधनका धरणीगिर्योअंधभूपाल ।
शोककेसागरमहं डूबतभो अतिशयदशाभईबेहाल ६
बदनसूखिगो तरुपातासम धरिमनमौनबैठशिरनाय ।
शोचतकरणीनिजपुत्रनकी तनमनगईबिकलताछाय ७
तबसमुझायोमुनिसंजयने सुनियेबचनअंधभूपाल ।
काअबशोचतशिरनायेमहि अबनामिलैंलौटिफिरिबाल ८
धीरधारिये यहिसमयापर करियेप्रेतकर्मबिधिराज ।
क्रियावाजिबीजेहिकरिबेका आयसुदेहुकरैस्वइकाज ९
सुनियहबानीसंजयमुनिकी भूपरगिर्योतड़ाकाखाय ।
शूललागिगोजनुछातीमा जिमितरुमूलउखरिगिरिजाय॥
पुनिकछुभाष्योकहिसंजयते सुनियेमहाराजमुनिराय ।
खिगरेलरिकामोरेमारगे भेसबनाशदाससमुदाय ११
नातेगोतेकोउ उबर्योना एकैसाथ पर्योदुखआय ।
जैसेपक्षीबिन पंखनको ह्वैतनलुंडगिरैभुंविजाय १२
सोअपगतिभैममलरिकनबिनअकिलेभयेबिनापरिवार ।
कृष्णदेवऋषिब्यासादिकके कीन्ह्योंनहींबचनप्रतिपार
द्रोणपितामहबिदुरादिकसब पहिलेरहेमोहिंसमुझाय।

सीखनमान्योंमैं कहूकी काहे न देयदईदुखआय १४
शकुनि दुशासनकर्णादिकलै मानोहिये सुयोधनबानि ।
नीतिभुलायोंसबभांतिनसैं काहेनहोयबिभवकोहानि १५
सुनिअसबानीनृपअंधऊको संजयफेरिकह्योसमुझाय ।
हेनृप प्रभुताकेपायेतें तनमनजात गर्वमदछाय १६
सत्य जानियेनृपभाषणयह जोनृपतजैनीतिकीराह ।
ताहिठिकानोकहुंलागैना सोयमशहरजायनरनाह १७

स० नारि पतिब्रतधर्मतजै अरु कर्मतजै द्विजदेवबिसारी ।
युद्धजुटे रणशूरतजै प्रणपूरतजै करिजो अधिकारी ॥
वदिअकारण प्रीतितजै नृपनीतितजैजोअनीतिबिचारी ।
सत्यनयामहंबातछिपी कछुहोतइन्हैंअतिपातकभारी १८

वृद्धतपस्वीबुधसज्जनजन औनिजमित्रआदिकीबात ।
जोमनमानैनामानुषसो निश्चयतासुदुःखअधिकात १९
लोभीलम्पटठगकामखअरु मूरुखतरुणपुरुषकीबानि ।
जोजनमानैमनअपनेमहं काहेनकरैबिभवकीहानि २०
सोसबबातैतुमकीन्ह्योंथे काहेनलहौदुःखपरिणाम ।
वाजिबराजाकोचाहियमह बुधमतमानिअरंभैकाम २१
नीकनकागे लखिप्रथमैजन पीछेकाजकरैआरम्भ ।
जोहठठानैबिनजांचेकोउ काहेनबंधैबिपतिकेखंभ २२
बिपतिजोआवेचलिमानुषपर तौफिरिधीरधरैमनमाहिं ।
सोईसुकृतीकहवावतहै यामहंतनिकअंदेशानाहिं २३
गुरुजनसायीयहभाषतहैं धीरजधरियबिपतिकेकाल ।
तातेतुमको समुझाइतहैं करिये प्रेतकृत्यभूपाल २४
अबकेशोचेनृपहोइहैका प्रथमन कीन्ह्योंचित्तबिचार ।

आगिलगावैनिजकरघरमा दौरैफेरिलेनकोबारि २५
वायुसहायकलखिपावकजन परसैयथाहोमघृतलाय ।
पांखीदौरैइकदीपकपर लखितेहिगिरैहजारनआय २६
तेहिबिधिभ्रपतितुवलरिकासब जरिबरिगयेलोभमहंआय
तौअबशोचे बनिऐहैका करियेप्रेतकृत्य मनलाय २७
सुनिअसबानी मुनिसंजयकी नाधृतराष्ट्रकहीकछुबात ।
साथनवायेचुपधारेमन हियमहंशोचि२पछितात २८
ज्ञानकिमूरतितबबोलतभे जिनकोबिदुरकहीअसनाम ।
हे नृपअंधकसुनुबानीमम आनीकाहंचित्तबिश्राम २९
हैनाअचरज यहिजगतीमा मरिबोलगो देहकेसाथ ।
आयुखुटानीजेहिमानुषकी तनतजिअवशिस्वर्गचलिजात
युक्तिउक्तिकछुबनिआवैना जबधनुबाणसुधारैकाल ।
तकि२ बेधैशर जालनको बचैन युवावृद्धओबाल ३१

स० देवअराधनकेतोलहैचहैसाधनसिद्धिअगाधनठानै ।
चोटकतन्त्रवशीकरयंत्रइकंतहूवैमंत्रजपैसबिधानै ।
धंदिपढ़ैकिनवेदपुरान प्रभूगुनगानकरैचहैदानै।
जोड़तकालकमानमेंबानतौछोड़तबालकवृद्धनज्वानै३२

अयर्थयुक्तिहै यहमानुषकी कोउन बचैमृत्युकेहाथ ।
युद्धचढ़ेतेबचिआवैघर घरकेअनायास मरिजात ३३
सबअन्दाजाभरि जीवतहै इकपलबेप्रमाणनहिंजाय ।
कालहुसरिहाकोउनाहींहैनाकोउकालहितूदिखराय ३४
रजतृणादिकोज्योंसमयोलखि होतबियोगयोगअनुमानि
पवनदैववशतिमिजीवनको यहिजगभोगऔरअलगानि।
पहिलेजिनके तुमबालकभे तुम्हरेऔरआनिभेबाल ।

ते तुमवैअरुये कोऊना गहँकोसबनकेरहैकाल ३६
तुम्हैंचाहियेखुशहोवेका मिथ्यामानि जक्तकोनात ।
जियेतौपावैयशदुनियामा औमरिस्वर्गलोककोजात ३७
सुरपुर पायो तुव पुत्रनने ताते शोच देहु बिसराय ।
कर्मपुरुषबाजसठानतहै आखिरमिलैसोईफलजाय ३८
शुभकर्मनते सुख पावतहै पावत बुरेकर्मसों पाप ।
आपहिबैरीनरअपनाको अपनेइंकर्मलेततनताप ३९
इहिबिधिभाष्योजबज्ञानीने आनीकछुकधीरभूपाल ।
बानीबोल्योअतिआरतकी सुनियेबिदुरज्ञानप्रतिपाल४०
बचनतुम्हारेयेअमृतसम सुनिममशोचगयोसबभागि ।
पैकछुसुनिबोअरुचाहतहौंकहियेसमयकालअनुरागि४१
जाकर्मनकी नहिं इच्छामन सोतौप्राप्तहोतअनयास ।
जाकीइच्छाहै जियरेमा सोहवैजातक्षणकर्मनास ४२
याकोकारणमैंपूछतहौं कहियेबिदुरमोहिंसमुझाय ।
बिदुरबखान्योतबताहीक्षण सुनियेअंधभूपमनलाय ४३
जातदूरिह्वैमनइच्छितजब नरपरबसतआपदा आय ।
तबधरिधीरजाहियसज्जनजन सहिदुखआपतिदेतदुराय
शान्तिचाहियेदुखसुखहूमा चहीनकरनपुरुषकोदंभ ।
सारअसारौयहनरपुरहै भूपतियथाकदलिकोखंभ ४५
धनीनिर्धनीकोउकैसोहोइ आवतअवशिकालकीफांस ।
यातेजगमाकोउउबच्योना निश्चयहोतदेहकोनास ४६
स्वर्गनर्कऔसुखदुखनरका मिलिहैयथाकर्मउपचार ।
इतरहिजैहैंयशअपयशदुइ जसकछुकीननीकबेकार ४७
जैसे मट्टीका बरतनहै कुम्हरा रचिपचि करैतयार ।

चाकघुमावैफिरिसुखवावै पकवैआगिअवांकीवारि ४८
याहिविधिबहुदिनपरमानिकहवै जबघटहोयसर्वतय्यार।
सहजै फूटै सो अवनीपति तैसे जक्त सारआसार ४९
तैसियगतिहैनरदेहीकी कोउमरिजातगर्भहीमाहिं।
जन्मिबालह्वैकोउनाशितहोययामहंतनिकअंदेशानाहिं।
युवाअवस्थाकोउत्यागैतन कितनेउँहोतवृद्धपननाश।
नरदेहीकी गतिएहीहै गेहीचहैहोय संन्यास ५१
कर्म मूलहैंयहि देहीके यासोंहोत लोकसंचार।
समुझिसर्वदागतियाहीनृप हियतेतजौशोककोभार ५२
सुनिअसबानीउनज्ञानीकी बोल्योफेरिअंधभूपाल।
एकअँदेशामोरेजियरेमा करियेबिदुरबचनप्रतिपाल ५३
केहिबिधिगर्भैनरआवतहै जगमहँप्रगटहोतकिमिआय।
कौनसोकारणनिर्द्धारणहै बारणकरौमोहिंसमुझाय ५४
सुनिअसबानीकुरुनायककी बोलेबिदुरज्ञानआगार।
रजरेतामिलिहैअवनीपति प्रथमैहोतबुदबुदाकार ५५
पिण्डा होवै तबआमिषका तेहिते अंगहोत निर्मान।
पांचमहीनाके बीतेपर ह्वैसबजातअंगबलवान ५६
जीवनिवासैतब अंगनमा लीन्हेकर्मफलनको साथ।
दुखसहिकछुदिनरहिगर्भैमाखहिजलआनिलयोगअरुबात
पायँउपरह्वैशिरनीचेह्वै निकसतयोनिराहसोआय।
सहितइन्द्रियनफिरिक्रमक्रमसों होतसपुष्टअन्नजलपाय॥
होतअसक्तीफिरिबिषयनमहँ भोगतभोगहोयबशिकाम।
जातकुकर्मीनरकितन्योह्वै दैउरलोभआदिबिश्राम ५९
होतसुधर्मीशुभकर्मीकोउ तेचलिजातस्वर्ग निष्काम।

कुत्सितकर्मीजगशासतदुख नाशतदेहजातयमधाम ६०

स० बालवये बटुरूपभये जे दये मनघोपत वेद पुराणन ।
ज्वानबिधानगृहस्थनको लहिपूजतदेवअतिथ्यमहानन ॥
वन्दिक्रियोबुधसंगमहां फिरिआयदियोतिसरोपनकानन ।
कैभगवानकोध्याननमेतन स्वर्गगयेशुभसाजिबिमानन ६१

यहगतिजाहिरहैधर्मिनको जिनकोउभयलोककल्यान ।
कुगतिकुकर्मिनकीसुनियेनृपजिनपरिहस्योसर्बबिधिज्ञान

स० जबतेतनमानुषआयलह्योदिनरैनिगह्योसुखभोगकिबातन ।
तातात्रियाधनधामआराम बिषैइतमामसुकाम किघातन ॥
रंचन जानत देवकिसेव बसेमन पंच फसे उतपातन ।
अंतपरेयमतततहां यमदूत घसीटत पोटतलातन ६३ ॥

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिबाजपेयिपं०रामरत्न
स्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासिपंडितब
न्दीदीनदीक्षितनिर्म्मितमहाभारतभाषाभारतखण्डान्तर्ग
तबिशोकपर्वबिदुरोपदेशकथनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

कंठबिराजौ नीलकंठ सुत जिह्वाबैठु शारदा माय ।
भारतभाषाअभिलाषासों गावतफेरितोरबलपाय १
बिदुरबखानीसुनिबानीनृप बोल्योफेरिबिदुरसोंबात ।
हैकछुशंका अरुजियरेमा करिये समाधानतेहितात २
धर्मप्रचारनहितमानुषजिमि साधतगहिबहुबुद्धिबिधान ।
न्यारेन्यारेसोकहियेसब हौतुमजक्तबिदितमतिमान ३
प्रश्नअपूरबसुनिअंधाको उत्तरदियोबिदुरसमुझाय ।
सुनुकुरुनायकममबानीको भाषतकछुकशास्त्रमतगाय ४
नमस्कारकैस्वायंभुवको सबबिधिचरणकमलधरिध्यान

जेहिबिधिगतिहैसंसारिककी सोसबकहतज्ञानअनुमान ५
सुनियेभूपतियहिजगतीमा अतिशयदुर्गघोरबनमाहं ।
कोऊब्राह्मणइकप्रबिशतभो जहंपरबसतघनेमृगनाह ६
चीताहाथीअरुऋच्छनगत शूकरआदिजन्तुबिकराल ।
तिन्हैंदेखिकैद्विजशंकितह्वै अतिशयहृदयभयेबेहाल ७
आगेपीछेकोउनाहींतहं झिकुरतपवनझूकहहकारि ।
निबिड़भयानकगिरिकंदरतहंनिरखतजातचित्तभयपारि ८
इतउतचहुंदिशिताकनलागोतहँइकलख्योअनोखोख्याल
तरुमहंबांधोहैरसरीसों अतिबलपंचशीरषाव्याल ६
पकरेठाढ़ीतेहितिरियाइक पांचौफननरह्योफुफकारि ।
इकदिशिदेखोइकहाथीतहँ छोटेपर्बतकीअनुहारि १०
छःमुखजाकेगिरिकंदरसम बारहपैरखंभअनुमान ।
चलैलताननमधिझूमतसो चिघरतमंदमंदगहिठान ११
डरयोब्राह्मणतेहिदेखतअति शंकितगिरयोकूपमहंजाय ।
लताघनेरीतेहिकुअँनामहँ बीचैलपटिरह्योद्विजराय १२
द्वउपगह्वै गेतबऊपरका नीचेभयोशीशतेहिक्यार ।
बिनुहरिकाढ़ैकोकुअँनाते द्विजउरबढ्योशोकबिकरार १३
बिपतिअगारीफिरिसुनियेकछुतहंइकरह्योभयानकव्याल
फुफकरिधायोसोबिप्रैलखि काटनहेतसुनौक्षितिपाल१४
द्वितियआपदाइकऔरौतहं माखीरहींछत्ततहंलाय ।
सोमन्नानीउड़िकुअंनामाबिधिगतिककूजानिनाजाय१५
कारोउजरो दुइमूषकचल सोउरहे कूपकरिथान ।
लताकिजड़कासोकाटतहैं जामहंबिप्ररह्योलपटान १६
इहिबिधिकितन्योंदुखघेरेतहं राजनबचनसुनौमनलाय ।

शहदटपक्कैतेहिछतनसों द्विजमुखपरैधारसोजाय १६
भयोकृतारथद्विजताहीक्षण कोन्ह्योशहदधारजबपान।
दुखसबभूलेवहिऔसरमा छूटैनजियनआशमतिमान१७
सुनिअसबानी उनज्ञानीको पूंछतभयो फेरिकुरुराय।
बिदुरबताइयकहिहमसोंयहद्विजवहकौनदेशकोआय१८
बिदुरबुझायोतबराजाको सुनियेसत्यबचनक्षितिपाल।
अतिनिर्जनबनजो भाष्योंमैं सोयहमहाघोरसंसार १६
जराअवस्थासोतिरियाहै व्याघ्रारूप आयवहव्याल।
जीवब्राह्मणतनकुअंनाहै जानहुंआयुलतनकोजाल २०
कुआंकेभीतरअहिभाष्योंजो सोगुनिलेहुकालबिकराल।
संबतसरसोवहहाथोहै छःमुखछऋतुजानुक्षितिपाल२१
बारहमहिनापगबारहते मूषक दुऔदिवसनिशिजानु।
कामादिकतेमधुमाखीहैं कामकिआशमूपमधुमानु २२
इतनेदुखहैंयहिजगतीमा तिहिपर करतनहींजनत्याग।
जीतीआशाजेहिमानुषजग जानियतासुसुःखअनुराग२३
सुनिअसबातैंबिदुरानन्की फिरिधृतराष्ट्रकहीयहबात।
यहिभवसागरके कर्मनको औरौकहहुहालकछुतात२४
ताक्षनज्ञानी अनुमानीमन बानीकही समयअनुसार।
उत्तरदीन्ह्योअवनीपतिका सुनियेराजकानइतधार २५
जीवचराचरजे प्रगटतजग आछेबुरेरूप बहुभांति।
होतगंधमयसबपैदाते शब्द स्पर्शरूपरसख्याति २६
पंचतत्त्वते सब प्रगटतहैं निश्चयय बचनमानु भूपाल।
व्याधिव्द्धतावशहोवैंसब सबको नाशकरैयाकाल २७
यहनरदेहो रथजानियमन औ सारथी शीलपरमानु।

कर्मबुद्धिये सबडोरीहैं इन्द्रीसकल तुरंगमजानु २८
जितजितइन्द्रीयेगमनतिहैं तिततित चलैशरीरौसाथ ।
करैभर्मनायहिजगतीमा पावैथाहनहीं कुरुनाथ २९
जोकोउरोकतइनइन्द्रिनका अरुकछुधरतहृदयमहंज्ञान ।
मोहनव्यापैतेहिदुनियांका भूपतिसदासुखीतेहिजान ३०
तातेचहिये यह मानुषका सब तजियहै यत्नकरिलेय ।
हठकरिजीतैमनइन्द्रिनका हरिहरभजनमध्यचितदेय३१
इत उत ताहीको आनंदहै कबहुंन परै मोहकेजाल ।
कैसिउआपतितेहिपरिहैजो टरिहैघोरधारिभूपाल ३२
दुःखव्याधिहितयकऔषधयहकरिउरज्ञानदैयअलगाय ।
व्याधिबढ़ावनकेदावनये कुत्सितकर्मभर्मकुरुराय ३३
नवौसाधनाजिनसाधनकरि मनरथचलनकीनवशआप ।
शान्तिरसरियाकरिराखीजिन तेचलिजातस्वर्गनिष्पाप
अतिभय नरकोयकयाहीहै होवैअवशि देहको नाश ।
तातेचहिये यहिमानुषको धर्मसुकर्म करैसहुलास ३५
जोगतिकीन्हीतुवपुत्रनने सो फललह्योसमरमहंजाय ।
तुम्हरेरोयेअबहोइहैका अबचलिकरहुकृत्यमनलाय ३६
भारतभाषा अभिलाषा सह पर्वबिशोक परिभै आय ।
रामरत्नकी अनुमतिलैकै बंदीदीन कह्योयहगाय ३७
सुनैं सुनावैंऔगावैंजो हित चितसकल साधनासाध ।
भूलसुधरिहैं सोसज्जनजन करिहैंक्षमामोरअपराध ३८

इतिश्रीबिशोकपर्व द्वितीयोध्यायः २ ॥

इतिबिशोकपर्बसंपूर्णम् ॥

——०——

अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड स्त्रीपर्व्व प्रारम्भः ॥

दोहा ॥

गणप गिरा गुरु गोप पति गोपति गोपी नाथ ।
बन्दत सबके पदजलज जोरि जोरि युगहाथ १
पुनि मुनि व्यासमनायकै ध्यायहृदय सुरसर्व ।
भारतभाषा रचत शुभ भरतखण्ड तियपर्व २ ॥

सोरठा ॥

त्रेताबन्दौंनारायणको अतिशुभभयेतीनिअवतार ।
भक्तहुलासकखलदलत्राशक नाशकधराकेरदुभार १
तिनमापहिलेभृगुनन्दनभे जिनकोपरशुरामअसनाम ।
बारइकीसकभुँविभारैंहरि राख्योपालिभक्तजनधाम २
धामअयोध्यामहंदूसरफिरि दशरथ सुवनरामभेआय ।
अतिमर्यादापुरुषोत्तमप्रभु कीरतिरहीजासुजगछाय ३
मुनिमखराख्योजिनरक्षकह्वै नाश्योमारिचादिकेप्रान ।
खलसुकेतकीसुताताडुका क्षनमहंहत्योएकहीबान ४

गौतमऋषिकीनारिअहल्या तेहिउद्धारिदीननिजधाम ।
जनकस्वयंवरप्रणपूरणकै भंज्योशम्भुधनुषअभिराम ५
धनुषचढ़ायोपरशुरामको कीन्ह्योंजनकसुताकोब्याह ।
मातुकेकयीकोअज्ञालहि फिरिबनबासकीनसुरनाह ६
हरीजानकीतहंरावणने सहपरिवारकीनतेहिनाश ।
भक्तविभीषणकोराजाकरिसबविधिहत्योतासुदुखफांस ७
राजअयोध्यामाकछुदिनकरि आखिरगयेआपनेधाम ।
रूपतीसरे तबबामनभे बलिछलिकियोइन्द्रकोकाम ८
तबबरमांग्यो बलिराजाने सुनियेबचनजक्तकरतार ९
जोहितनकीन्ह्योंछलमोसनप्रभुसोइतनदरशदेहुनितद्वार ।
बाचाहारेबलिराजाते अतिसुखकरन हरन जनगाढ़ ।
धरेलकुटियाकरबामनतन बलिकेद्वारप्रभातैठाढ़ १०
इतिसुमिरण ॥
अथ कथाप्रारंभ ॥
बैशम्पायनमुनिभाषतभेसुनियेकथापरीक्षितलाल ।
जोकछुकौतुककुरुपाण्डवकोसोसबबरणिबतावहुंहाल १
जितनेयोधाकौरवपतिके औसौभायसहित कुरुराज ।
जबसबजूझे कुरुक्षेत्रमें पांडवलह्यो बिजयसोंराज २
तबचलिआयेमुनिसंजयफिरि जहंधृतराष्ट्रकेरदरबार ।
हालसुनायोसबराजाको सुनिये कौरवनाथभुआर ३
जितनेयोधा दुर्योधनके औसौभाय सहितकुरुराय ।
येसबजूझेसमरभूमिमा अगणितखायबानकेघाय ४
बिजयबिराजी करपांडवके भेआनन्द पांचहूभाय ।
बजेबधइआ रनिवासनमा बिप्रनदानदेत हरषाय ५

सुनिअसबातैंतबसंजयकी भोधृतराष्ट्र हियेअतिताप ।
नामउच्चारणकरिशूरनके लाग्योकरनघोरबिललाप ६
शीशपटकै धरिधरतीपर मानोपरी बज्रकीघात ।
छातीपीटैदोउहाथनसों अतिशयरोयरोय बिललात ७
हापृथ्वीपतिसुतदुर्य्योधन हासुतदुशासेनबलधाम ।
तुमरणखोयोबिनकारणतन मिटिगोआजुधरातेनाम ८
बड़ेबड़ेयोधाहनिहनिमार्यो कीन्ह्यों बड़ेबड़ेसंग्राम ।
कतौपराजयतुमपायोना आयोबिजयसहितनिजधाम ९
भुजबलदेखतसुरडरपैंजिन भीषमद्रोणआदिबलवान ।
तेऊजूझे कुरुक्षेत्रमा लागतभीम आदिकेबान १०
अघगनायेगेदानिनमा अतिबलकरणआदिसरदार ।
तेऊ जूझे कुरुक्षेत्रमा कीन्ह्योचरित काहकरतार ११
कागुणसुमिरौंमैंलरिकनके एकतएक बुद्धिबलधाम ।
जेमुखमोरैंना कालौते धरिकर अस्त्रकरैं संग्राम १२
तेसुतइकसों मोरेमारेगे केवलराज पाटकेकाज ।
सोवनहारेसुखसेजनके मिलिगेपुत्रधरारजआज १३
राजपाटओगाउं देशसब एकौगयोन तिनकेसाथ ।
बामबिधाताभालरिकनका जूझहवैअनाथबिननाथ १४
अवशिबिचार्योमैंअपनेजियअक्षरलिखेजौनबिधिभाल
मेटनहाराकोउनाहींत्यहि होतसोसत्यकर्मदुखकाल१५

क० भोरदिनेशउअैं नितपूरब शंकनहींबरुपश्चिम आये ।
अग्निरहैं बहुगर्मसदा बरु होहितेशीतसंयोगकेपाये ॥
अंबुजफूलैसदाजलमें तेउगैंगिरितौनकछू भ्रमगाये ।
भालहवालालिख्योबिधिने सोकुअंकमिटैनकहूकोमिटाये १६

यथापखेरूबिनपंखनको जसपक्तिताथबिनामणिसांप
तैसियगतिभैबिनपुत्रनमम घोरवेमहन्योकालनेचाप १७
काहियशोचौंकाहबिचारौं परिकैमांझघारबिकरार ।
पुत्रनाशसमदुखमानुषको नाहिंनअधिकऔरसंसार १८
सुतबिनजीवनधिकदुनियामा औधिकसकलसुःखकेसाज
क्षनमहंछाड्योतनदशरथने जबबनगयेराममहराज १९
जैसे तनहैबिन आंखिनको जैसेबिनादीपको धाम ।
बिनादिवाकरदिनजैसेधिक जिह्वाबिनारामकेनाम २०
रैनिचंद्रमाबिनजैसेधिक औबिनकमलकेरज्योंताल ।
बिनासहनकादरवज्राज्यों चंदनखौरिबिनाज्योंभाल २१
यथावाटिकाबिनफूलनकी सुंदररूपबिनाजिमिबाल ।
बागचिरैयाबिनसूनोजस आगेबिनामंजीराढ़वाल २२
कुलअंधियारोतसबालकबिन अथयोकुरुसुबंशकोभानु ।
बहुसमुझायोसबकाहूने सुतनाकियोबचनपरमानु २३
हादुर्योधनचलिकहंनागयो तजिकैअंधबृद्धपितुमात ।
आगागवांयोअभिमानीह्वै मान्योहठिनकाहुकीबात २४
तुमबिन जीवन ममनाहींहै हासुतदुष्प्रधर्षदुर्मान ।
हादुश्शासनदुःजयन्तहा कहंचलिगयोछांड़िकैप्रान २५
हायपितामहआचारजहा कहंपरिगयोकालमुखजाय ।
हाबलवंताभगदंतादिक केहिरणतुमकोदयोस्ववाय २६
शीलशिरोमणिअतिदानीजे हाबलवानकर्णसरदार ।
जक्त तुम्हारोयशगावतहै सुरपतिहाथपसार्योद्वार २७
काल कलेवा तौनौ होइगे जुझे राज हेत रण जाय ।
हायबिधातागतिजानीना कादेखतकादियोदिखाय २८

इमिक्षत्रिनकेगुनसवरनकरि रोवत अंध भूप बेहाल ।
तबसमुझावतभेसंजयमुनि सुनुधृतराष्ट्राजयकहाल २९
सृष्टिबिधाताकीजहंलगहै जन्ममरतबारहीबार ।
साथैदेहीके लागेये जन्मवमरब सारआसार ३०
जादिनदेहीयहउपजतहै आवैमृत्यु साथही साथ ।
आजुतेलैकैसौवर्षनलग जैहैअवशिकालकेहाथ ३१
हिरण्याक्षओहरणाकुशभे सतयुगविदित बड़ेबलवान ।
काल कलेवातौनौंहोइगे करियेअंधभूपपरमान ३२
मधुकैटभसे बलयोधाभे बर्षहजार लरे भगवान ।
कालकलेवातौनौंहोइगे करियेअंध भूपपरमान ३३
रावणराजाभोत्रेतामें योधानहीं जासुसमआन ।
कलपिचढ़ायोशिरशंभूपर करकैलाशलीनजैतानि ३४
संगरहारे सुर आसुरसब जीतेबड़े २ मैदान ।
वेदबृहस्पतिजहंबांचैंनित राजैंसभाचंदबुधभान ३५
जलभरिलावैजेहिमेघपति षटमुखकरैंपाकनिर्मान ।
मीचुपखारैजेहिपायंनको ब्रह्माकरैंद्वारयशगान ३६
मेघनादअस बेटाजाके भाईकुंभकरण बलवान ।
कालकलेवातौनौंहोइगे करियेअंधभूप परमान ३७
बलिबाणासुरअंबरीषनृप रघुकुलअजदलीप बलवान ।
कालकलेवातौनौंहोइगे करुकुरुनाथबचनपरमान ३८

क० हैनकछूयहबातछिपीकरतारकरीकोनकोमनिहै ।
जन्हलौबिधिसृष्टिरचौबिरचौमरणादिकहांलगको गनिहै ॥
द्विजबन्दिनशोचकछूयाहकोजोबनोबनिगैसोअबौबनिहै ।
किनकोटिनधायउपायकरैयहदेहधरैमरबोनिहै ॥

मायारूपी यहिदेहीको सबदिन जन्ममृत्युसों नात ।
यहिसंसारीकेजीवनको दुइदुखजन्ममरणाहैं तात ३९
यहगतिकेवलहैकर्मनकी निश्चयअन्तकर्म परिणाम ।
जोबनिआवैं यहिदेहीते आछेबुरेकाम निष्काम ४०
वईसंघातोहैं सबदिनके फलभीमिलैकर्मअनुसार ।
तातेशोचियनानरपतिकछु है यहसबअसारसंसार ४१
अपनेकर्मनदुर्योधनसुत यहगतिलह्योसमरमाजाय ।
शिक्षामान्योनाकाहूकी सबकोउहारिगयेसमुझाय ४२
वैद्यमंतिरी आचारजये जोप्रियबचनकहैं भयआश ।
राजधर्म औतनतीनौंये नृपकेहोयं बेगिहीनाश ४३
इनमतमान्योदुश्शासनका शकुनीआदिभयेपरधान ।
इनहिंसुझायो दुर्योधनका करियेभूपयुद्धकोठान ४४
सोसबमान्यो दुर्योधनने युद्धैकेर कीनसामान ।
नीतिसुझायोभिष्मादिकनेऔशिषदीनिकृष्णभगवान४५
बातनमान्यो गंधारीकै कियोनव्यासबचनपरमान ।
पापप्रकाश्योधर्मबिनाश्यो तिहिअपराधतजेइनप्रान४६
मोहबश्यह्वै निजलरिकनके तुमहुंनमनेकीनकुरुराय ।
सुन्योदीनतानापांडवकी मांगेपांचगावं उनआय ४७
इज्जतलीन्ह्यों उनद्रुपदी कै खैंच्योबस्त्र बीचदरबार ।
ऐसे २ कुलपापनते सहपरिवार भयेलरिछार ४८
तातेशोचियना भूपतिकछु यहसब करनहारकर्तार ।
धीरजधारौअबजियरेमा करियेक्रियासमयअनुसार ४९
तेहीसमइयाके अवसरमा आयेबिदुरज्ञान आगार ।
लख्योव्यवस्थाअतिकुरुपतिकै है हियपुत्रशोकबिकरार

शोशबिदारैकरमारैभुवि बहुबिधि बिकलपछारैखाय ।
गुणबलसंवरण करिपुत्रनको मुखसोंभमरिउचारतहाय ॥
बिदुर बुझायो कहिबातैंकछु सुनिये अंधभूप यहबात ।
शोचसमान्योकाजियरेमा मानतवृथाजक्कोनात ५२
सारबतायो संसारै कैं जाको जनम मरण व्यवहार ।
जोकोउआयोयहिदुनियांमा राजाप्रजावृद्धऔबार ५३
कालकलेवा सबका करिहै कोउनबचैं कालकेहाथ ।
वृथाशोचिबोतुवराजाहै काकोपितापुत्रतियनाथ ५४
संगीसाथीसबतबहीं लग जबलगदेहजीवपरकास ।
सुवाउड़ान्योजबपिंजरातेआवतनाहिंफेरिकोउपास ५५
देहसनेहीफिरि कोऊना आखिरधराक्षारमिलिजात ।
साथजातिहैधर्मकर्म शुभ जैजनकोनिरामसोंनात ५६

क० कोऊबनावतऊंचेअटाघनघोरघटालगेतंबूकनातै ।
तातातियासुतमीतकेख्यालफंसेजगजालघनेबहुधातै ॥
तामसके इतमामरचे बहुआखिर साथककोउनजातै ।
एकरकारमकारबिनाधिरकारसबैदुनिआयंकिबातै५७॥

यातेभूपति कछुशोचौना मानिय यहअसत्यसंसार ।
ध्यानधारिये हरिचरण महं वोई तुम्हैं लगैहैंपार ५८
बिदुर सुझायोअस अंधैबहु मूर्छितभयो शोकसोंगात ।
व्यासमुनीश्वरचलिआयेतब निरख्योअंधदुःखउतपात
बिदुरलयायेतब शीतलजल धोयो अंधकेरमुखआनि ।
भईचेतनाजबहिरदयमा तबयहकहीव्यासमुनिबानि ६०
धीरधारियेअब जियरेमा केहि हितरोदनकरौभुवार ।
यहपरिपंचकसबमायाको देखन हेतकोनउपचार ६१

एकसमैयाके अवसरमैं कीन्ह्यौं इंद्रपुरी प्रस्थान ।
नारदआदिकमुनिसाथैरहैं करुकुरुनाथबचनपरमान ६२
तेहिछन बसुधातहंपहुंचतिभै हूनौंहाथबांधिमैठाढ़ि ।
बिनयसुनायोकहिसुरपतिकोहमपरपरीआपदागाढ़ि ६३
सहिबेलायक अबनाहींहै मोपरभार आयगरुआन ।
तेहिउद्धारियप्रभुकाहूबिधि राखनचहौमोरजोप्रान ६४
सुनिकैबानीअसधरतीकै सुरपतिपठैदीनबिधिपास ।
पहुंचीधरतीतबब्रह्मापुर कीन्ह्यौंसकलहालपरकास ६५
तबसमुझायोबिधिपृथ्वीको सुनियेमृत्युलोककीथानि ।
कियेहमारेकछुह्वै हैना यहसबकृत्यबिष्णुकीजानि ६६
पहिलेमारयोजदानवप्रभु कितनेदैत्यकीन संहार ।
तेचलिआयेनरलोकैसब लीन्ह्योंजायक्षत्रिअवतार ६७
बिष्णुसमीपैंतुमजाओचलि तौबनिजायतुम्हारोकाम ।
गईसेदिनोबिष्णुलोकतब पहुंचीतुरतबिष्णुकेधाम ६८
दोउकरजोरेतवबोलतिभै हेप्रभुतीनिलोककेस्वामि ।
दीनदयालीबनमालीहे तुवपदपद्मनाथप्रणामामि ६९
दुष्टनिकंदनदुखद्वंदनहन हेप्रभुभक्त अनंदनदानि ।
परशुरामहेरामश्यामप्रभु शारंगपानिभक्तसुखखानि ७०
हेकमलापतिसंतनशुभगति अतिमदमत्तदानवनकाल ।
भक्तसहायकहेजगनायक दायकचारिपदारथहाल ७१
मच्छकच्छहेनरसिंहबामन हेबाराहरूप भगवान ।
सियारुकमिणीहेराधापति शिवबिधिचंदभौमबुधभान ७२
हेकमलाननछबिकाननप्रभु शोभाधामकामअभिराम ।
खलदलगंजनजनरंजनमन भंजनबिपतिबरूथनदाम ७३

शरणतुम्हारीमैंआइउंप्रभु सुनिममबिनयकरियउद्धार।
मैंगरुआनिबंद्धुभारनते होइहैकेहिप्रकारनिस्तार ७४
बिष्णुबुझायोतबधरतीको धरियेधीरथोरहीकाल।
घरैआपनेचलिजाओतुम हैमोहिंसकलभांतियहिख्याल।
जितनेदेउतासुरनगरीमा जन्मेजगतमाहिंसबजाय।
कछुकदिनौनाकोअन्तरहै आयुहोयरहीनिगिचाय ७६
कुरुक्षेत्रमैंरचिराख्योंतहं भारतसमरहोयसबनाश।
सुनिअसबातैंनारायणकी बसुधागईभवनलहिआश ७७
तेहिहितभारतरणराच्योयह आखिरभयेसकलसंहार।
तुम्हरोछरिकादुर्योधनजो सोकलिअंशकेरअवतार ७८
धर्म युधिष्ठिरकी उतपतिहै देवी रूप द्रौपदीआयं।
द्रोणकर्णलैसुरक्षत्रीसबयहिहितजन्मलीनकुरुसायं ७९
कृष्णचन्द्रकोयहकौतुकसब जो कछुभयोयुद्धव्यवहार।
यहिमिसुसंगरमहभारतकरि पृथ्वीकेरउतार्योभार ८०
शोकत्यागियेकुरुनायक अबमानौपांडुपुत्रनिजबाल।
भीमयुधिष्ठिरअर्जुनआदिक करिहैंसकलतोरप्रतिपाल
सेवाकरिहैंतुवनीकीबिधि आयसुपालिकरैंसबकाम।
क्रोधपांडवनतेकरिहौजो तौ सबधरौतुम्हारोनाम ८२
मंत्रयुधिष्ठिरकोदीजैसोइ जातेचलै अग्रव्यवहार।
वृथाव्यवरुथायहदीजैतजि काकोपितापुत्रपरिवार ८३
इमिसमुझायोनृपअंधकको बहुबिधिव्याससुवामिदैज्ञान।
शांतचित्तभोजबकुरुपतिको तबमुनिकियोअन्तप्रस्थान
भारतभाषाअभिलाषासों पूर्णभयो प्रथमअध्याय।
रामरत्नकीअनुमतिलैकै बंदीदीनकह्योयहगाय ८५

सुनैसुनावै औगावैजो हितसों नित्तचित्त लवलाय ।
चारिपदारथतेहिकरतलमाकलिमलसकलदूरिह्वैजाय॥

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासि श्रीबाजपेयिवंशावतंसपं०राम
रत्नस्याज्ञाभिगामीश्वप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासिपं०बंदीदीन
दीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषाभारतखण्डान्तर्गतस्त्रीपर्वव्यास
कृतअंधशोकनिवारणोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

करिसुखसाधाभजिराधापतिबाधासकलचित्ततेटारि।
कथामनोहरमहभारतको रमनीपर्वकहौंबिस्तारि १
बैशंपायनफिरिभाष्योअस सुनियेकथापरीक्षितलाल ।
जोकछुआगेफिरिकौतुकभोसोसब बरणिबतावहु हाल२
बचनसुनायोपुनिसंजयकहि सुनियेअंधभूपयहबानि ।
आयसुदीजैजोअनुचरको तौसुनिलेयंहालसबरानि ३
खबरिपठावो गंधारीतै तौ कछुहोय अगारीकाम ।
सुनिअसबानीमुनिसंजयकी बोल्योअंधशोचिपरिणाम ४
कहिसमुझायोतबबिदुरैसबतुमचलिजाहुवेगिरनिवास ।
हालबताओगंधारीको बधुअनबोलिलाउममपास ५
बिदुरबुझायो तबराजाको तुमहूं चलौहमारेसाथ ।
तबचलिऐहैंसबरानीइत मानियसत्यबचनकुरुनाथ ६
कियोतयारीतमचलिबेको नृपधृतराष्ट्रभयोतय्यार ।
साजिसारथीरथलायोझट भेतबअंधभूपअसवार ७
क्षणइकअसीमगमालाग्यो पहुंच्योजहां राजरनिवास ।
हालबतायोसबक्षत्रिनको औशतपुत्रआदिकोनाश ८
अपने २ पतिजूझेसुनि रोवनलगींबिकलनृपबाल ।
अतिशयबिलखतगंधारीभै महलनभयोहालबेहाल ९

घर घर रोवैं नरनारी सब मानो परी बज्रकीघात ।
जेगजगमनीनृपरमनीसबधरनीलोटिलोटिबिलखात १०
हाथप्रहारैं दोउछातिनपर पटकैं धराकोरधरिमाथ ।
भुजबलसवंरनकरिस्वामिनको बिलपैंनाथनाथहानाथ
भीजिचुनरियागईआंसुनसों मिलिगे धूरिरेशमीपाट ।
केशबिथरिगेछुटिधरतीपर लगिगइहियेदुःखकीहाट १२
अंगअभूषणसबध्वंसितभे सबतनमलिनभयेशृंगार ।
बहैंपनाराजलनैननते मानहुंगंगयमुनकीधार १३
हायसमानीसबतनमनमा मुखअरबिंदगयेकुंभिलाय ।
वायुझकोरनतेमानोंभुवि कदलीखंभगिरेहहराय १४
तजि २ कन्यासुतगोदनते मुर्च्छितगिरैंभूमितलधाय ।
मनहुंचमेलिनकोलतिकाहैं सहितनघामगईमुरझाय १५
धरि २ रोवैंइकएकनको निज २ पतिनकेरगुणगाय ।
मनहुंअप्सराहैंसुरपतिकीमलब्रशगिरींभूमितलआय १६
बदनसूखिगेव्याकुलतावश नशिगोहृदयकेर उत्साहु ।
धूरिधूसरितमुखमैलेभये मानहुं ग्रस्योचन्द्रमनराहु १७
सुनतऽपवस्थाअसबहुअनको बिलखनलगीमातुगंधारि ।
कंचनपुतरीसीउतरीछबि रोवतगिरीभूमिहहकारि १८
अंधबालकनकीइकसौतियतनमनबिकलरहींबिलखाय ।
सहगंधारीमहरानिनको तबककुबिदुरकह्योसमुझाय १९
अबकछुरोयेतेह्वैहैना धीरजधरौ चित्तलवलाय ।
रह्योसनेहीसबदेहीलग अबनामिलैफेरिकोउआय २०
तातेचित्तहिसंतोषितकरि चलिये कुरुक्षेत्रअस्थान ।
कर्मकीजियेचलिमृतकनको जोकछुलोकवेदकीआन २१

बिदुरमहात्माकीबानीसुनि रानीआनिधीर निजगात ।
सहगंधारीके गमनींतब साथैचलो अंधनृपजात २२
समयबितायो कछुमारगमों आईकुरुक्षेत्र अस्थान ।
लख्योऽयवस्थानिजस्वामिनकैलगींसकलफेरिबिलखान
शीघ्रउठावैंकोउस्वामीका औछातीमा लेयंलगाय ।
कोउचुचकारैकमलाननका पोंछतधूरिअंगपटलाय २४
कोऊबरणैं गुणपतियनके देखत रूपभूप छबिधाम ।
पायंपलोटैंतनचोटैंलखि कौतुककियोकाहयहराम २५
वोईमुखहैंयेस्वामिनके जिनकोदेखि चन्द्रसरमात ।
तिनपरबैठेखलकागादिक मारतचोंचमासलैखात २६
येपतिशिरहैंजिनपररुचिसमधारत मुकुटसुबरणाक्यार ।
फोरततिनकोधरिदाढ़नसों निर्दयगिद्धश्वानऔस्यार २७
अंजनआंजेयेखंजनचष जिनलखदेखिहोतबशकाम ।
तिन्हैंचिल्हारीखंदिचोंचनसोराख्योनहिंनिशानऔनाम
कमलनालसेभुजडारेये जेप्रियगरे होत जयमाल ।
जिनभुजधाखोशरधन्वनको जीत्योबड़े२ महिपाल २६
जेभुजदेखेअरिकंपैंहिय दीन्ह्योंअमित याचकनदान ।
तेभुजमेलेबसुधारजमा दांतनदाबिचिचोरतश्वान ३०
आमकोपलीसमजीभैंये जिनसोंलहे अमीरसस्वाद ।
खायचिल्हारिनअधियायातेह्वैगेआजअंगसबबादि ३१
कनकमुंदरियाजिनमापहिरी जगमगजड़ेजवाहिरलाल
काटिअंगुरियातेहाथनते कागन कियेपेटप्रतिपाल ३२
कुंडल पहिरे जिनकाननमा बालापरेमोतियन दार ।
तेअलगानेसबदेहिनते मिलिगे मींजिधराकी क्षार ३३

तेलफुलेलन सों सींचयो जिन रेशमतारसरिसजेबार।
गर्दित ह्वैंगे तेगर्दामा का यहचरित कौनकरतार ३४
सिंहनकोसीकरिहैंयांये वरकरधनोसजैंजिनमाहिं।
दईनिर्दईकागादिकखल तिनकोनोचिनोचिकैखाहिं ३५
रसकीरातीप्रियछातीये जिहिलगिकरैंसेजसोउनार।
बाणकेघायनतेफटिफटिगइं फाटतहायनहृदयहमार ३६
बानीबोलैं मनमानीजे सुन्दरि काम मोहनी डारि।
बातनभाषैंतेयाकोअब कबतेयकटकरहींनिहारि ३७
छोड़िअकेलीअलबेलिनका कहंचलिगयेकंततजिप्रान।
इहिबिधिबिलखतमहरानीलखिलाग्योअंधभूपबिलखान
तेही समइयाकेअवसरमा कृप कृतबर्मा द्रोण कुमार।
तेचलिआयेधृतराष्ट्रकेढिग लागेकहनयुद्धकोहाल ३८
हेकुरुराजातुव लरिकनने कीन्ह्यों महाकठिनसंग्राम।
औरौक्षत्रीतुवसहमाजे तिनबहुकर्योयुद्धइतमाम ४०
पैकोउ उबरेना भारतते सबियांजूझि गयेसरदार।
सैनासबरीसोमारीगइ पदचरमहारथीअसवार ४१
तीनिजने हमबाकीरहिगये राजन सत्यमानियेबात।
शोचछांड़ियेअबहियरेते जानियवृथाजक्तकोनात ४२
पुत्रजानिये अब पांडवको उरते क्रोध दीजिये छांड़ि।
केवल पांडवके पापनते यहसब भईसमरमेंमांड़ि ४३
बहुदुखदीन्ह्यों दुर्य्योधनने मांगेदियेपांचनहिंगावं।
तुमहु बिचार्योनाराजा कछुअबसबभांतिधरायोनावं ४४
बारहबरसैंबन भोग्योउन करि फल फूलमूलआहार।
जायजोहार्योनृपबिराटको तबबहिंकछुकदीनदुखटारि।

फेरिकैठान्योमहभारत रण कीन्ह्योंसैनसाजितचार ।
बिदुरपितामहब्यासादिकमुनिसबसमुझायगयेहियहारि
एकनमानी दुर्योधनने मनकोरुचो कीन्हस्वइकाम ।
आखिरअपनेहींपापनसों सबलरिमरेखेतसंग्राम ४७
तेहिपरआफतिअरुदूजीयह मारनकहतभीमतुमराज ।
धर्मबिचारयोभलउत्तम नृप ऐसोइचहीकरनकोकाज४८
डरनाहींहैकछुअधरमको कीमोहिंकहीकाहसंसार ।
सुनिअसबातैंउनक्षत्रिनकी शोचनलाग्योअंधभुवार ४६
तेहीसमइयाकेअवसरमा पांडवसहितआइगयेश्याम ।
सहितयुधिष्ठिरअरुअर्जुनके परस्योचरणभाषिनिजनाम
क्रोधबिसारयोतबअंधकने पांचौभायलीनहियलाय ।
हाथफिरायोतबपीठीपर दीन्ह्योंपुत्रशोकबिसराय ५१
अज्ञालैकैतबकुरुपतिको गेगंधारिपास सबभाय ।
चरणपखारयोगंधारीके सुनिकैनामउठोरिसिआय ५२
हाथउठायोकछुऊपरको चाह्योदेन पांडवनशाप ।
तेहिक्षणपहुंचेगंधारीतट मुनिवरव्यासदेवतहंआप ५३
पट्टीबांधे दोउआंखिन में ठाढ़ीक्रोधभरी गंधारि ।
व्यासदेवतबसमुझायोकहि अमृतसमशुभ बचनउचारि
वेदप्रमाणिक मेरिबातैंये सुनियेअंधनृपतिकीरानि ।
शोचअकारथ क्योंकरतीयह मिथ्याजक्तनातकोमानि५५
कोकेहिकोसुतमातपिताको काकोत्रियास्वामिऔभाय ।
कहंतेआये कोउदेख्योना औकहंअंतकालचलिजाय५६
लाखनक्षत्री यहिजगहोइगे जिनकेबलै थाहनहिंलागि ।
मीचुबनायोजिनदासीकरि तेउनबचेकालतेभागि ५७

क० कैटभसे नरकासुरसे मुरसेपुरसे ध्रुवसे यशखेवा ।
बालिबलीबलिबाणदधीच ययातिदलीपहुसेबलनेवा ॥
रावन बावनबेनु सुधेनुसे औ सुरलोक अदेवसुदेवा ।
अन्तसमैउबरेनकोऊ यह्किालकरीसबकेरिकलेवा ५८

व्यासदेवकी असबानी सुनि तबगंधारी लागि बताय ।
मैं रिसकीन्ह्योंनापांडवपरसुतकोशोकरह्योउरछाय ५९
उनकीमाता जसकुन्ती है तैसे हमैं जानियेनाथ ।
अनुचितपांडवइककीन्ह्योंहै कीन्होंजानुभंगकुरुनाथ ६०
पापीभिम्मैंक्रियकीन्हीं यह ममसुतजंघकीनिपरिहार ।
क्रोधहमारोहै भिम्मापर सुनिये सत्य व्यासकर्तार ६१
पांचौ भैया तहँ ठाढ़ेहैं सुनिथरहरे सबनके गात ।
भिम्माबोल्योतेहिअवसरपर सुनियेबिनयसत्यममपात
दोष हमारो तुम कहतीहौ माता बचनकरौ परमान ।
जोकछुकरणीरणशूरनकी चहियेकृत्यतासुअनुमान ६३
युद्ध हमारो दुर्योधनको संगर चढ़े शस्त्रधरि हाथ ।
जो बरबरिहाहममारैंना निर्फल युद्ध जानियेमात ६४
सबरीसैना संहारी हम सन्मुख बच्यो एक कुरुराय ।
जीतिनपायोजबकाहूबिधि तबहमहन्योजंघकेघाय ६५
उनते अधिकीछलकीन्ह्योंना माताबचनकरौपरमान ।
गह्योद्रौपदीदुःशासनजब ऐंच्योबस्त्रसभामहँआन ६६
जंघदेखायो दुर्योधनने तापर चह्योबिठावननारि ।
हमहुंप्रतिज्ञातबकीन्हीयह डारबभूपजंघपरिहारि ६७
सोई प्रतिज्ञा मैं पूरणकरि कीन्हों भूप जंघको नाश ।
रणचढ़िमारनजोराजैना तौसबकरैंशूरपरिहास ६८

राजखजानाअरु बसुधासुख संगर हनेबिनाकुरुराय ।
केहिबिधिपाइतसमुझाइतमन सोसबसत्यजानिकहुमाय
कहि २ हारे जनसारे बहु मांगतरहे पांचहूभाय ।
गाउँनदीन्हेउनपांचौलग कीन्हयोयुद्धभूपबरिआय ७०
दोष हमारो तौजननीका होनी कौनुटारिलैजाय ।
सबबिधिधर्मैंउनत्यागयोजस हमहूंदीनधर्मबिसराय ७१
आरतसानी असबानीजब भाषो भीमसेन समुझाय ।
तबगंधारीजियशोचीकछु पुनिपांडवते लागिबताय ७२
दोषतुम्हारोकछुनाहींसुत यह दुखदीनमोहिं करतार ।
अपनेइँपापनतेलरिकाममजरिबरिभयेअग्निमहँक्षार ७३
दुइदुखमहिंकाअतिभारीहैं बिसरतसोनएकपलतात ।
लरेदुशासनअरुनकुलीसंग जबकरिसमरपरस्परघात ७४
भुजाउखार्योदुःशासनकी तुम यहुकीनबड़ोअपमान ।
अरुदुर्योधनकी जंघाहति छलसोंबिजयकीनमैदान ७५
तबसमुझायो फिरि भिम्माने माता बचनकरौपरमान ।
गहयोद्रौपदीदुःशासनने राख्योसभामध्यतेहिआन ७६
रजोधर्ममहं तब रानीरहै बरबस बस्त्र उघारततासु ।
तबप्रणमाताहमकीन्हयोयह करिहौंदुशासेनिभुजनासु
भुजाउखारीतेहिकारणहम क्षत्री धर्मकीन प्रतिपाल ।
दोषहमारोकायामहंहै सोतुमकहौजानिनिजबाल ७८
मातु हमारी जसकुंतीहै जानत तुम्हैं तथासबभाय ।
क्रोधबिसारौ अबजियरेते करिकैक्षमालेहु अपनाय ७९
जिहिबिधि सेवाउनकीन्हीहै तैसेइहमहुं करबसबभाय ।
आज्ञाधारब तुवमाथेपर असकहिगहे भीमपदधाय ८०

क्रोधनिवार्यो गंधारीतब फेर्यो भीमपीठि परहाथ।
कौतुकनिरखततेहिअवसरकोविहंसतमंदमंदयदुनाथ ८१
कथामनोहर सुख सोहरवर दूसरअंत भयोअध्याय।
रामरत्नकी अनुमतिलैकै बंदीदीन कह्यो यहगाय ८२

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासिबाजपेयिवंशावतंसश्री
पण्डितरामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनि
वासिपं०बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतस्त्रीपर्वभाषा
गंधारीकोपनिवारणवर्णनन्नामद्वितीयोऽध्यायः २॥

करिउरसाधा भजिराधापति बाधासकल चित्ततेटारि।
भारतभाषा अभिलाषासों गावतत्रियापर्व अनुसारि १
पुनिगंधारी यहभाषतभै हैकहंपुत्र युधिष्ठिर राय।
काहेनआये ममसन्मुखसो केहिकारणते रहेछिपाय २
सुनिअसबानी महरानीकी त्रासित भयेधर्म अवतार।
निश्चयजान्यो मनअपनेयह चाहतदेन शापगंधारि ३
आरतबानीसों बोलेतब सन्मुखखड़े जोरि दोउहाथ।
थरथर थरथरतन कंपितभो झंपितभयो शोकसोंगात ४
अतिअपराधी मैंजननीहौं कीन्ह्योंअपन वंशसंहार।
सखासुबंधव सुतसेवकसब भेकुरुक्षेत्र भूमिपरिहार ५
चित्तबिचारौजो मातातुम तौकछुमोर दोषहैनाहिं।
लिखोबिधाताकै रेटैको नाभवितव्य मेटिकछुजाहिं ६
शरणतुम्हारी चलिआयोंअब करियेक्षमामोर अपराध।
बालकजानौ निजकोपीको छोड़हुशाप देनकीसाध ७
जक्तपौरुषी असदेखौना जोतुमशाप दापसहिलेय।
क्रोधबिसारौ अबजियरेते करियेदया मयाचितदेय ८

धर्मराजकी असबानी सुनि रानीरहीमौनमनआनि ।
तबप्रतिउत्तरकछुदीन्ह्योनाधीरजधर्‌योसमयअनुमानि ६
फिरिकछुचिन्तनकरिअंतरउर कीन्ह्योधर्मभूपसोंप्रश्न।
नकुलधनंजयसहदेवाकहंकहंतुवसमरसहायककृष्ण १०
येममसन्मुख किमिआयेना सोकहुभाषि युधिष्ठिरराय ।
सुनिअसबानी कुरुरानीको आनीहिये शंकयदुराय ११
अर्जुननकुली सहदेवाये भययुतभये तीनिहूंभाय ।
सन्मुखहटिकै गंधारीके पाछेछिपे कृष्णाकेजाय १२
गह्योमौनता तबसबहुनने जान्योचहत देनअबशाप ।
तापसमानो सबतनमनमा आपैआप रहेचुपचाप १३
मनगंधारी फिरिशोचीकछु जान्योंनहीं दीनकेहुंज्वाब ।
त्रासमानीहै सबहिनके हैनाज्वाब देनकोताब १४
अतिमननम्रितह्वैबोलीतब पारथपुत्रआउममपास ।
त्रासछांड़िदेउरअन्तरते मैंपरिहरेउंक्रोधकी फांस १५
होहु अनंदितअब जियरेमा निर्भयकरौराजको काज ।
जोकछुहानीरहैह्वैबेका सोपरिगईअचानकगाज १६
दोषतुम्हारोकछु नाहींहै याहोलिखेबिधाता आंक ।
अपनेइँपापनतेजरिबरिसब भारतभूमिकेरभेखाक १७
शोचबिहावोचलिजावो अब कुन्ती मातुतीरअतुराय ।
बोलिलयावोसबबन्धवमिलिदेखैंसमरभूमिगतिआय १८
सुनि असबानी कुरुरानीको आनीहर्ष पांचहू भाय ।
आतुरगमनेतबतहंवांते पहुंचेधाममातुढिगआय १९
कह्योसंदेशागन्धारीको भारीव्यथा कथा सबगाय ।
चलीकुन्तिकातबपुत्रनलै पहुंचीअंधनारिढिगआय २०

मिलींकारुणिकमहरानीदोउ करिउरघोरशोरबिललाप ।
आकुलकोचकयहकौरव कुलजरिसबगयेआपहीआप २१
अवपक्षितानेतेहवैहैका असजियजानिधीररहिधारि ।
पुनिगन्धारीओकुन्तीलै पांचौबंधुसहितवनवारि २२
रणवसुन्धरामहंआयेचलि देखतधराधिपनकोहाल ।
बीरजुझारेभुविपारेसब डारेभिन्नभिन्नतन जाल २३
बहैभयंकरवैतरणीसम शोणितसरितभरितवेथाहि ।
परेकगारनसेबारनगन तनबिनशुण्डमुंडपगआहि २४
परेबछेड़ापगमस्तकबिन मानहुं कच्छमच्छ उतराय ।
परे पहाड़ीसे सांड़ीहैं आड़ो जहां दृष्टिनाजाय २५
बिनाबिताननके बगरेरथ खंडितभये दंडजिनकेर ।
खोजिबतावैतिनउपमाकबि मानहुं नदीनवैयनढेर २६
सुभटअसंख्यन जे जूझे तहं बूझेनहींजातको कौन ।
अंगबिघाटेभुविपाटेसब काटेशस्त्र अस्त्रके जौन २७
रुंड कहूं के बिनमुण्डन के कोऊपरे भग्न करिहावं ।
भुजाभिन्नतेअहिसमलोटैं खंडितपरेअनेकनपावं २८
कोउअलगानेदोउकंधनते कोउकटिभयेखंडतनचारि ।
कोउमुखध्वंसितभेघायनते जायनकथातथाबिस्तारि २९
अधजलमुर्दा भेलोटैंकोउ जिनतन लगेशूलकेघाय ।
पानीदेवैयाकोउनाहींहै इतउतताकिरहेचिल्लाय ३०
क्षत्रअनेकन महिपालनके घालनभये परेभुविमाहिं ।
बस्त्ररेशमीरजमामिलिगे हीरालालजड़ेजिनआहिं ३१
कहंलगगावैंरणकरणीयह धरणीरहीशवनसोंपूरि ।
तहंमहरानीअवनीपनकीबिलपतकरतरुदनअतिभूरि ३२

कीरतिकहि२ निजकन्तनकी दन्तनदाबिजीभकरिहाय ।
पीटतछातीअपघातीकरि कोकबिकहैदशासोगाय ३३
बिलखैंहरणीजसशावकबिनबनवनधायधायबिलखाय ।
तिमिनृपरमनीअवनीपन लखिरोदनकरैंगुननकोगाय ३४
उड़ैंचिल्हारीशतयूथनतहं कागाकरैंमांस आहार ।
मंडफछायोरनगीधनको फेकरतसहसनवृन्दसियार ३५
मांसखवैया जेपक्षीगन तेसब झुकेआय रणथानि ।
करैंअनंदितशवभोजनते शोणितपियैंयथानदपानि ३६
नचैंयोगिनीकरखप्परलै औबैतालदेत गतिताल ।
खुशीखबीसिनिमंगलगावैं कलबलभूतबजावतगाल ३७
नचैंकबंधा करतारीदै डाकिनिरहीं धमारीगाय ।
दंगलभारीभोप्रेतनको खेतमरहेकिलोलैछाय ३८
कहंलगगावोंगतितहंवांकै पूरयोअस्मशानकोठान ।
मनहुंभिखारिनकोभोजनहित कीन्योंब्रह्मभोजजजमान
तहंशतवहुवैं गंधारीकी रोदनकरैं पतिनकेपास ।
औरैयोधाजेजूझे तहं तिनतिय भरैंदुःखकीसांस ४०
कोउ२ टेरतपतिकीरतिकहि कोउलैपितापुत्रकोनाम ।
कोउबिलखावेंप्रियभैयाकहि देयापरोरामतेकाम ४१
जे अनुगामीकोउस्वामीके बिलखैंलखैंतासुशवगात ।
मीतपियारेजेहिमारेगे सोशिरपटकिपछारैंखात ४२
अतिपतिशोचनबिलखानीतहं रानीभूपसुयोधनकेरि ।
सुयशबखानैंरोदनठानैं कहिबलधामनामकोटेरि ४३
हाशशिआननप्रियप्राननके बाननबियोगयोतुवगात ।
मैनलजावैंजेहिनैननलखि सोरजधरापराबिनशात ४४

जैहियशबेलीअलबेलीअति बेलीदशौंदिशाहरिआय
सोअबमेलीरजहेलीमहं खेलीकागसियारनखाय ४५
अमलाकमलाजेहिचेलीसी रेलीरहतकोशगृहमाहिं।
क्षारसकेलीतिनबसुधाकी मानौंसाथनाथकोउनाहिं ४६
लाखनभूपति जेहिसेवामा मेवादेत आनिकैभेंट।
हायअकारनबलबारनके तनकहंआजुदीनरनमेटि ४७
रतनसिंहासनकेआसनपर बैठनहारहायपतिम्वार।
क्षारसमान्योइकक्षणमासो कादुखदईदीनबिकरार ४८
कनककिरीटनशिरबांधतजे जगमगजटितमुकुटनगलाल।
सोशिरकिरवनको मंदिरभो किमिथिरलहैदेखितिनबाल
तेलफुलेलनके उबटनकरि जिहितनसजत रेशमीपाट।
फाटतछातीअवलोकतनहिं सोतनपरोआजबिनखाट५०

स० हाबलबाहु उछाहु कहौंकहु कोटिनयुद्धजुरे नहिंहारत।
कंपतदेश बलेशजिते शिरभापत जाहिनरेश निहारत॥
बन्दिकलोलत कंधरमा मुखबोलत बीरअनेक जोहारत।
हायअकारथ सोसरदार भयोरणभारत मोलरिगारत ५१

इमिदुखबानी कुरुरानीकी सुनिमनशोक कीनगंधारि।
भारतबोली यदुनंदनते सुनियेमोर बचनबनवारि ५२
यहगतिकीन्हींतुमभारतमहंछलकरिहन्योमोरशतलाल।
दशानिहारौमम बहुवनकी बिधवाभईं एकशतबाल ५३
बहु समुझायो दुर्योधनका मानीनहीं एकममबात।
तुमछलिमार्योशतभैयनकातुम्हरोदोषसर्बयदुनाथ ५४
काहहमारी गतिह्वैहै अब कागतिलहै अंधभूपाल।
कागतिह्वैहैमहरानिनकीनाकोउकरनहारप्रतिपाल५५

सुनिअसबानी गंधारीकी दीन्होंज्वाब कृष्णभगवान ।
दोषहमारो कछुनाहींहै रानीबचनकरो परमान ५६
द्रोणपितामह समुझायोबहु हमहूंबहुत बुझायोताहि ।
पैदुर्योधनइकमान्योना दीन्ह्योंपांच गावंतकनाहिं ५७
धर्मक्षत्रियनका कीन्ह्योंउन भारतसमर शोंपिभेनास ।
लरितनत्याग्यो उनसंगरमा कीन्होंजायस्वर्गमेंबास५८
तेहीसमैयाके अवसरमहं कृपकृतबर्म द्रोणकोलाल ।
आयपहूंचे गंधारीढिग औसमुझायकह्यो सबहाल ५६
शोकछांड़िये महरानीअब हमलैलीन भूपकोदावं ।
छलकरिमार्योसबपांडवदलद्रुपदीबंधुशिखंडीनावं ६०
पांचौबालक द्रुपदी वाले मैंसब कीनमारि बिनप्रान ।
अज्ञादोजे अबहमहूंका निज२धामआजु चलिजान ६१
बिदामांगिकै तबतीनिउंजन गमनेजहांजहां जेहिठाम ।
गयेद्वारका कृपकृतबर्मा द्रोणीगयोब्यास थलनाम ६२
पुनिचलिआयेधृतराष्ट्रकढिग पांचौभायसहितयदुनाथ ।
चरणपखार्यो कुरुभूपतिके ठाढ़ेभये जोरिसबहाथ ६३
तबैयुधिष्ठिर यहबोलतभे राजनशोकदेहु बिसराय ।
राजपाटयहसबतुम्हरोइहै सेवकअहनपांचहूभाय ६४
तबयह भाष्यो अंधभूपकहि सुनियेधर्मराज ममबात ।
भीमसंहार्योममलरिकासब करिकैकपटयुद्धकीघात६५
आशहमारीहै मिलिबेकी लाइयभीम बोलिममपास ।
तबयहजान्योयदुनंदनने नृपमनभयो कपटपरकास६६
भाषिसुनायो तबराजाको यहिक्षनभीमसेन हियंनाहिं ।
कालिहभेटिहैंतुवअंतिकचलि असकहिआय धामकेमाहिं

युक्तिबनायो यदुनंदनअस लोहेभीमकीन निर्मान।
सोलैपहुंचेतब अंधाढिग पांचौभाय कृष्णभगवान ६८
कहिसमुझायो तबमाधवने आयोभीम भूप तुवपास।
भीमलोहकोकरि आगेदयो भूपतिगह्योभुजनसहुलास
अयुतनागबलजेहिबाहुनमा धरतैमींजिदीनकरिछार।
हाहाभाष्योतबसंजयने कीन्ह्योंभूपभीमसंहार ७०
रोवनलागेपुनिमायाकरि हासुतभीमसेन बलधाम।
अपयशखातिरमैंमार्योंतोहिंअबसबभांतिबिगार्योंकाम
तबसमुझायो यदुनंदनने धरियेधीर बीर भूपाल।
बचिगोभिम्मातुवदायाते नृपतबजानिकपटकोहाल ७२
क्रोधितबोल्योनंदनंदनते यहसबक्रियाकृष्णतुवआय।
सबउरप्रेरकइकतुमहींहौ ज्ञानाज्ञानदेतबतलाय ७३
यहमतिदीन्ह्योतुमपुत्रनमम जातेसबोभयेजरिछार।
कियोउबारनकुलपांडवको कौरववंशकीनसंहार ७४
दिनअट्ठारहमहभारतरचि इकशतभायदीनजुझवाय।
नातेगोतेकोउबाच्योना सबतुवक्रियाआययदुराय ७५
वंशसंहार्यो तुममोरासब तातेमहंदेहुं अबशाप
संबतत्रिंशतिषटअन्तरमहं यदुकुलनशैआपहोआप ७६
छपनकोटिजेयदुवंशीहैं भ्रातापुत्र प्रपौत्रतुम्हार।
कोउनबचिहैंवहिअवसरमा एकैदिनाहोयसंहार ७७
तबमुसकानेनंदनंदनमन औकुरुपतिसोंकह्योबुझाय।
कोअसदुनियांमापैदाभो यदुकुलकरैपराजयआय ७८
लरिमरिबिनशैंसबहोअपनेते मिथ्याहोयनशापतुम्हार।
मैंअकलंकितसबभांतिनते राजनबचनकरौंप्रतिपार ७९

मैंसमुझायोंदुर्योधनको दीन्हयोंपांचगावंतकनाहिं ।
बरबसठान्योरणभारतको तौकेहिहेतदोषम्वहिंमाहिं ८०
जसकुलकीन्हयोंतसपायोफलमिथ्यामोहिंदीननृपशाप ।
पैशिरमाथेधरिलीन्हयोंमैंजेहिहितलहौधीरतुमआप ८१
हियेलजान्योमनअंधकतब आगेऔरबखानतहाल ।
गईद्रौपदीतबबिलखततहं जहंपरपर्योसुभद्राबाल ८२
अतिशैबिलपतहरिभगिनीतहंनगिनीयथामणीकोत्यागि
बधूउत्तराभटपारथकी रोवतअधिकस्वामिअनुरागि ८३
पारथभिमभ्मा सहदेवाले रोवतनकुल युधिष्ठिरराय ।
आरतह्वायोचौगिर्दाते इकइकरहेकृष्णसमुझाय ८४
कथामनोहररणसोहरबर तीसरअंतभयो अध्याय ।
रामरत्नकीअनुमतिलैकै बंदीदीनकह्योयहगाय ८५

इतिअोउनामप्रदेशान्तर्गतबन्थरग्रामनिवासिबाजपेयिवंशावतंस
श्रीपं०रामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासोग्रामनि
वासिपं०वंदीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषास्त्रीपर्वकुरु
पांडवबिलापवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

होहुसहायकगणनायकतुम देशुभज्ञानशारदामाय ।
तुवबलभारतबिस्तारतहौं दाशपर्बचौथअध्याय १
हरिउपदेश्योनरनारिनकहंजबसबधर्योधीरलखिकाल ।
तबकुरुनायककछुभाषतभो सुनियेधर्मराजभूपाल २
शोचबिसारौअबाजयरते समयोशोचकरनकोनाहिं ।
अतिबलबायाहरिमायायह गायाजाततासुगुणनाहिं ३
तेहिभ्रमफंदनफंसिपूरुषयहसुधिबुधिभूलिजाततत्काल ।
अमरनकोऊयहिदुनियांमहँप्रगटतमरतचरतसबकाल ४

तातेतुमकासमुझाइतहै परिहरिशोचपोचमतित्यागि ।
मरेजेयोधामहभारतमहं तिनकीक्रियाकरहुअनुरागि ५
दलअठारह अक्षोहिणियह भारतभूमि भयेसंहार ।
कृत्यकराइयतिनसबहीको जसकछुलोकरीतिव्यवहार६
अंधभूपकी असबानीसुनि लागेकरनधर्मअनुमान ।
दाहकर्महितशुभवस्तुनकहं लावनलगेबीरबलवान ७
पांचौबंधव तबतत्परह्वै लागेकरन दाहसामान ।
मृगमदचंदनअगरादिकलै रोप्योअमितचिताकोठान ८
औरौवस्तुजे वाजिबतहं आन्योभारकहारनलाय ।
लोकबेदविधिकरितेहिक्षननृप दीन्ह्योचितारोपिकुरुराय
फिरिसौभैयनकोदाहतभे लक्षणकुवंरआदिजेबाल ।
फिरिआचारजकोआरजक्रिय कीन्ह्योयथातथ्यभूपाल
पुनिकर्णादिककेकर्मनकरि कीन्ह्योक्रियाउचितजसआय
तियअंगारमतिरबिनंदनको सतीभईकंतसंगजाय ११
पुनिभगदंता अरुभूरिश्रव औजयदर्थ कलिंगाराव ।
चिताअरोपणकैसबहिनको कीन्ह्योक्रियासहितचितचाव
अभिमनुदाहनकोचाहयोजब उत्रासतीहोनकोआय
चितासमीपहिसोठाढ़ीभैतबसमुझायकह्योयदुराय १३
गर्भतुम्हारे सुतह्वैहैइक रानी धीरबीर भूपाल ।
कुरुपांडवकुलअवलंबनसो करिहैप्रजाकेरप्रतिपाल १४
कीरतिगैहै सबदुनियांमहं वहितेचली बंशकोनाम ।
दुईमहीना अबबाकीहैं धीरजधरहु पुत्रकोनाम १५
पुनिनृपद्रोपद धृष्टद्युम्नलौ राजा अंशुमानबैराट ।
औरशिखंडीअरुकाशीनृप सबकोक्रियाकीनितेहिघाट१६

भूपहल्लंबुप औद्रुपदीसुत केकय अरुत्रिगर्तभूपाल ।
चेकितानअरुघटउत्कचलैसबकोक्रियाकीनितेहिकाल१७
पायकनायकजे औरौकोउ सबकोदाहकीननरनाह ।
फिरिचलिआयेतटगंगाके तर्प्पणकियोसहितउत्साह १८
शुद्धचितह्वैसबभैयातब दीन्ह्योंनृपनपिंडकोदान ।
फिरिधृतराष्ट्रकसहगोविंदके पहुंचेधर्मभूपअस्थान १९
कर्योस्वस्त्ययनतबबिप्रनने रानिनकीनशकुनव्यवहार।
धेनुपुजायोबहुबिप्रनको मोतिनभरेस्वर्णकेथार २०
औरौकर्तबजोवाजिबरहै सोसबकीनिधर्मनरनाह ।
सभाबिराजेपुनिभाइनसह तबहियभयोशोचबेथाह २१
बंधु कुटुंबी अरुनेहीसब मारेगये राजके काज ।
पातकभारीमैंकीन्ह्योंयह करिहौंनहींराजकोसाज २२
चिन्तितदेख्योइमिराजाको तबबहुज्ञानदीनभगवान।
तेहीसमइयाकेअवसरमा आयेबिदुरज्ञानकेथान २३
मुनिपाराशर औनारदलैं आयेव्यासदेव भगवान।
सनकसनंदनकपिलाचारज औ जमदग्निआदिमतिमान
सभाबिराजेसबपाण्डवकी परस्योचरणयुधिष्ठिरराय।
चिंतितदीख्योधर्मराजकोतबमुनिकहनलागसमुझाय २५
सुनौयुधिष्ठिरनृपबानीयह हैजोबिदितसकलसंसार ।
देवअदेवाजेजगमाझे बहुतकदनुजमनुजबरियार २६
बंधुबंधुके सबबैरीभे केवल राजकाज हितलागि ।
तातेतुमकासमुझाइतहै दीजैभूपशोचकोत्यागि २७
गरुड़भुजंगमदोउबंधवहैं रिपुतासदाबिदिततिनकेरि
सहहरिमायाकोउजानैना कबधौंकरतकाहमतिफेरि २८

अमरनकोऊयहिदुनियांमा मरिहैअवशिकालको पाय ।
देवदेवपतिदशदिग्गजलैं मरिहैंसबैसमयमहँआय २९
सूर्य चंद्रमायेऊमरिहैं मुनिऋषिआदिहोयं सबनाश ।
जेतेभूपतिजगजन्मेहैं तेसबकहांगये बलराशि ३०
बन्धव माता पितुदारा सुत जीवत लगेदेहके साथ ।
अन्तनकोऊकोहुसाथीहै जानियसत्यबातनरनाथ ३१
सबउर व्यापक नारायणहैं वोईप्रेरि करावत काम ।
पारन पावैंकोउमायाते मोहेब्रह्मआदिबुधिधाम ३२
यहसबलीला नारायणकी पालतसृजतकरतसंहार ।
शोचछांड़ियेनृपजियरेते करिये राज काजनिर्धार ३३
याबिधिभाष्योव्यासादिकजब धीरजधर्योधर्ममनमानि
मुनिसबगमनेनिजआश्रमका सबविधिधर्मभूपसन्मानि
कथा मनोहरयहभारतकी जोकोउपढ़ै सुनै मनलाय ।
कलिमल भागैं तेहिदेखेते पूरबपापदूरिह्वैजाय ३५
दुर्मतिनाशैपरकाशैबुधि सबबिधिहोयज्ञानआगार ।
सबसुखभोगैसोदुनियांमा दिनदिनबढ़ैतासुपरिवार ३६
सुयश मनोहर रणसोहरबर दारापर्व चौथ अध्याय ।
रामरत्नकीअनुमतिलैकै बंदीदीन कह्योयहगाय ३७
जोपैंचितहितकरिसज्जनजनपढ़िहैंयाहिसहितसुखसाध
भूलसुधरिहैंसोगावतखन करिहैंक्षमामोरअपराध ३८

इतिश्रीबाजपेयिवंशावतंसश्रीपं०रामरत्नस्याज्ञाभिगामीपं०बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषास्त्रीपर्वबर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

इतिश्री स्त्रीपर्व्व समाप्तः ॥

———०———

अथ श्रीमहाभारत भाषा भारतखण्ड

अश्वमेधपर्व्व प्रारम्भः॥

दोहा शंभुसुवनशुभसिधिभुवन करितुवचरणजहाज।
भारतभव चाहततरयो करहुसफलममकाज॥
श्रीशारद पद ध्यानधरि मेटिदुसह दुखसर्व।
महभारत भाषा रचत अश्वमेध शुभपर्व॥

सुमिरण

होहुसहायकगणनाथकतुम देशुभज्ञानशारदामाय।
भारतभाषाअभिलाषासों गावतबन्दितोरबलपाय १
नमस्कारकरिनारायणको धरिउरव्यासदेवपदध्यान।
पायं निहोरे करजोरे इउ मांगत ग्रंथकेर कल्यान २
रमाबिलासीक्षीरधिबासी ध्यावततुमहिंजोरियुगहाथ।
अगणसुगणकेतुममालिकहौ पूरणकरहुग्रंथयहनाथ ३

स० शांत स्वरूप अनूपलसै बिलसैबरवामरमा सुखरासी।
सैनभुजंगम अंगसदा गगनद्युतिहैतनमध्यबिकासी॥
उरनाभिनत्रांबुजतेउपजे बिधिहैंजिनतेसबसृष्टिप्रकासी।
ग्रंथप्रपूरणता हित बंदितध्यावतहै सोइक्षीरधिबासी॥

वैशंपायनफिरिभाषतभे कौतुक सुनौपरीक्षितलाल।
भयोअगारीजसकौतुकफिरि सोसबबरणावतावहुंहाल ४
भूपयुधिष्ठिरतटसुरसरिके जबकरिभयेनृपनजलदान।
पुनिचलिआयेनिजमंदिरका सहकुरुनाथभूपभगवान ५
सभाबिराजेसबभाइनसह तबनृपकियोशोचअधिकार।
मैंबड़पापीभोपांडवकुल कीन्ह्योंनाशसकलपरिवार ६
कागतिह्वैहैइनपापनते आपनहन्योसमरमहंभाय।
शचिवकुटुंबीआचारजसुत भेसबनाशमोरहितपाय ७
यातेममजियअसआवतहै करिहौंनहींऔरकछुकाज।
ध्यानलगइहौंहरिचरणनमा जइहौंबनैछोड़िकैराज ८
किमिबरिअइहौंइनपापनते पइहौंअन्तअधोगतिबास।
जन्मबनइहौंतपसाधनकरि बाधनहेतपापकीफांस ९
भूपयुधिष्ठिरकीबानीसुनि बोल्योशोचिअंधभूपाल।
ऐसीबातैंमनलाइयना मानिय वचनछांड़िहठबाल १०
क्रियाकीजियेलखिअवसरयह जोकर्तव्यचाहियेकीन।
धीरजधारियचित्तविचारिय डारियकुमतिहियेतेहीन ११
क्षत्रिधर्मतेरणकीन्ह्योंतुम लीन्ह्योंभूमिराजजयपाय।
शोचनलायकतुमनाहींहो करियेभोगशोगबरिआय १२
शोचनलायक हमदम्पतिहन जूझेजासुपुत्रसौभाय।
बिदुरपितामहशिषमानीना कसनामिलैअंतफलआय १३
शोचनकरियेसुतजियमाकछु पालौप्रजाभूमिअवदात।
इमिदैशिक्षानृपधर्मजको रहिगेअंधमौनधरिगात १४
पुनिसुनिबानीअसताक्षिनकोमनगुनिकह्योरुक्मिणीरौन।
सुनौयुधिष्ठिरनृपबाचाभम भाषतलोकवेदमतजौन १५

शोच अकारणके कीन्हेते तापित होतपितृसस्थान।
तातेतुमतजिअबशोचनयह करहुजोकहतभूपमतिमान१६
मखआरंभोमलनाशनहित थितचितदेहुद्विजनकोदान।
सुरनसमर्चाकीचर्चाकरि सबबिधिलेहुमोदकल्यान१७
ज्ञानबतायोबहुभीषमने औमुनिव्यासबिदुरमतिधाम।
सोसुनिमनगुनिअबठानतका आनतहृदयशोचबेकाम१८
राजधर्मकोमगत्यागनकरि चालतमूढ़जननकीचाल।
मरेनबहुरैंअबरोयेते सोयेस्वप्नसांचनहिंहाल १९
सोगुनिभूपतिमतिसुन्दरगहि लहियेउचितजौनकर्तव्य।
जोकोउक्षत्रीरणमाजूझैं तिनके धर्महोतहैशव्य २०
शारंगपानीकीबानीइमि सुनिफिरिकह्योयुधिष्ठिरराय।
नीतिअनूपमतुमसिखवतप्रभु जसकछुलोकवेदमतआय॥
गुरूपितामहऔबंधुनहति रहोनजातधीरहियधारि।
दैदेवअज्ञामनहर्षितह्वै मैंअबबसौंबिपिनतनजारि २२
नाहिंतभाषियबहकर्तबअब जेहिबिधिकरौंपापकोनास।
सुनिअसबानीनृपधर्मजकीभाषनलगेसमयसमव्यास२३
हेनृपशोचतकाबालकसम फिरि२कहतकहतजिमिबार।
लखितुवआरतबिस्तारततमैं जसभूपतिनकेरव्यवहार २४
वृद्धजीविकाज्यहिशुद्धीहै ताकोमरबकौनविरुधाय।
कर्मसतासतजोमानुषके करतसोदैवआसरोपाय २५
कहाशोचिबोअबयामहं है निजपरकरतपापकोथाप।
यज्ञतपस्यादानादिकते बिनशतअवशिपापकोदाप २६
शास्त्रौवाजिबसोभाषतहैं हैयहस्वर्गमिलनकोराह।
अश्वमेधमखअतिउत्तमनृपकरियेसबबिधिमानिउत्साह२७

अवधिधर्मयहअहिपालनको घालनकरौपापमखठानि ।
सुनिनंदनंदनकीबाचाअस बोलेधर्मभूपअनुमानि २८
दीनदयाकरबुधिविद्याधर हेमुनिव्यासप्रकाशनज्ञान ।
तुमसनपूंछतअससेवकमैंकिमिबिनद्रव्यहोयमखदान२९
बिनादानकेमखमिथ्यामुनि हमधनहीनदीनयहिकाल ।
केहिबिधिकरियेआरंभनमख विप्रनदेहुंदानकहहाल३०
पतिसुतजिनकेरणमारेगे सबबिधिभरेदुःखकेघाय ।
तिनपहंधनतौहमलेहनना सुनियेमहाराजमुनिराय ३१
तातेतुमपहंयहभाषतहैं कहियेउचितकालअनुमानि ।
होयसाधनामखजाविधितेकहियेमंत्रसिद्धिसोइठानि३२
धर्मभूपकीयहबानीसुनि बोलेतबहिंमुनीश्वरव्यास ।
हालबताबहु मखसाधनकहं सुनियेधर्मभूपमतिरास ३३
कथापुरातनयकभाषतहैंाजसमखकियोमरुतमहिपाल ।
कियोअयाचकद्विजवृंदनकहंदीन्ह्योंअमितदानप्रतिपाल
भूपयुधिष्ठिरपुनिपूंछ्योअसकबमखकियोमरुतनरनाह ।
सबबिधिबताइयसोमुनिवरकहि जाविधिभयोयज्ञउत्साह
सुनिमच्छोदरिसुतभाष्योपुनि सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ।
सतयुगत्राताभोपुहुमीको मनुमहिपालतेजबलशाय ३६
सबबिधिपाल्योतिनपरजनको तिनसुतभेप्रसंधिनरनाह ।
तिनकोलरिकाबलशालकशुभ कहतनामक्षुपदीरघबाह
तिनबरबालककुलपालकजग भूपनभूपमौलिइक्ष्वाकु ।
विदितशूरिमनमाकीरतिजेहि चहुंदिशिघूमिगयोरथचाकु
इकशतलरिकातिनजायेशुभतिनमहंबंशनृपतिगुरुम्यात ।
विश्वासीसुतभेतिनहुंनके अस्मृतिकहतजाहिमहित्रात

प्रबलपन्दरहसुततिनकेभे जेठखनीनेत्रतिनमाहिं
भूपसुबर्चसतिहिबालकभोतिनसुतभूपकरिन्धमआहिं ४०
त्रेतायुगमाये राजाभे कीन्ह्यों चतुरदिशुकीराजि
सुखसहपाल्योजिनपरजाको गेदुखदण्डराजितेभाजि ४१
यशकीबेलीजगबेलीभल छलबलसकलकोनजेहिंनास
तिनसुतसुंदरमरुतभूपभे मानतजासुधनुषधरत्रास ४२
भूतलचारीनारायणसम अतिभुजदण्डचण्डबिकरार।
धनुषधरैयाअसदूसरना रघुकुलकोनतेजउजियार ४३
तिनहिमपर्वतकेउत्तरदिशि कीन्ह्योंयज्ञ अनूपमठान।
धर्मबिलास्योमखपूरणकरि कीन्ह्योंबिप्रऋषिनकोमान॥
व्यासदेवकीअसबाणीसुनि भाष्योफेरियुधिष्ठिरराय।
कथाअनूपममुनिपुंगवयह कहियेकछुकऔरसमुझाय ४५
यज्ञपूर्णताकिमिकीन्ह्योंनृप सोसबकहहुसहितबिस्तार।
सुनिअसबानीउनधर्मजकी बोलेब्यासज्ञानआगार ४६
सुनुपाण्डवबरनृपधर्मजतैं भाषतमरुतभूपमखहाल।
जिमिमखकरिकैनृपपायोयशसुनुसोपरमकौतुकीख्याल॥
ऋषिनशिरोमणिअंगिरोशनृपजाहिरजासुप्रबलपरताप।
अतितपकीन्हेंजिबनमा बसिकसितनघामशीतऋतुआप
दुइसुतातिनकेअबतंसितभे मुनिसंवर्तबृहस्पतिनाम।
कलहअरंभीदोउभाइनसों जाकोभयोदुखदपरिणाम४६
गृहतजिबनकासंबर्तकगे जोबसोरहेइन्द्रढिगजाय।
तेहीसमइयासाअसुरनहतिबासवलह्योइन्द्रपदधाय५०
इन्द्रबृहस्पतिसोंभाष्यो यह करियेगुरूबचनपरमान।
ममसमदूसरअरुनाहींकोउ जोअबलहैइंद्रपदआन ५१

मरुतमहीपतिममसदृशका प्रपिताजासुकरन्धमराज।
जाहिअंगिरसकरवायोमखइकशतभयोप्रपूरणकाज ५२
तेहिअभिलाषामखकरिबेको तेहितुमयज्ञकरायोनाहिं।
यहप्रणकरियेमसन्मुखगुरुतौतुवरहबहोयममपाहिं५३
यज्ञकरावनचहौमरुतेंजो तौपुनिरहहुजायवहिधाम।
सुनिअसबानीगुरुसुरपतिको बोलेबिहंसिबचनअभिराम
तुमतजि कतहूं हमजैबेना नाकेहु नृपैकरैबेयाग।
शोचबिहायोतबसुरपतिनेगुरुतेकियोअधिकअनुराग५५
मरुतधरापतितेहिअवसरमहंकीन्हयोंयज्ञकरनकीआश।
सबश्रुतिबक्तासुनिसुरगुरुको पहुंच्योजायभूपतिनपास॥
बिनयवृहस्पतितेकीन्हयोंअति हेप्रभुचहतकरनहमयाग।
आशप्रपूरणकरिसेवककोचलियेधामसहितअनुराग५७
दियोवृहस्पतिप्रत्युत्तरतब हेनृपबचनकरौपरमान।
नरपुरबासीमहिपालनको हमनकराउबयज्ञबिधान ५८
सुरपुरसुरगणसहसुरपतिके अनुपमपायऐसयजमान।
नरनपुरोहितहमबनिबेना जिनकेमरेबचनअभिमान५९
मरुतवृहस्पतिसोंभाष्योतब हेगुरुयहनबीननहिंहाल।
पितातुम्हारेऋषिअंगीरस जानतचारिबेदत्रयकाल ६०
मोरपितामहमंखकीन्हयोंजब तबवेभयेपुरोहितजाय।
मखपरिपूरणकरवायोउन अतिपरसन्नभयेधनपाय ६१
तेहिबिधितुमहूंचलिमंदिरमम मखकरवायदेहुमुनिराज।
सदासर्बदाहमसेवकहन तुमतेहोतहमारोकाज ६२
याबिधिभाष्योजबअवनीपतिसुरगुरुशोचिदीनफिरिजवाब।
हमप्रणकीन्हयोंयहसुरपतिते सुरपुरछोड़िअन्तनाजाब॥

लज्जितह्वैकैन्नृपलौट्योतब आवतरह्योआपनेधाम ।
मगमांमिलिगेतबनारदमुनि हरिकेगुणनमुख्यजिनकाम
लख्योदुखारी मरुताधिपको पूंछनलगे भेदमुनिराज ।
भूपदुखारीकेहिकारनते आननमलिनदेखियतआज ६५
हालबतायोन्नृप मुनिवरते जोकछु भयोदैवपुरमाहिं ।
यज्ञकरावनकोऋत्विजकोउहेमुनिराजमिलतम्वहिंनाहिं
तबसमुझायो मुनिभूपतिको मुनिसंबर्त तेजतपधाम ।
पुत्रअंगिरसकेछोटेसो तिनकहंलायकरौनिजकाम ६७
करतपर्य्यटन तीर्थाटन सो काशी पुरीगये यहिकाल ।
बोलिलयायोतिनमुनिबरकाकरिहैंबचनतोरप्रतिपाल६८

सo भूपतिमोदलह्योसुनिकैयहधायगह्योमुनिनारदपायंनि ।
मांगिनिदेशबिशेषबिनैकरिसोउपदेशलह्योजोबतायनि ॥
खोजतपंथचलेपुरकाशिकपूंछतपूंछतलोगलोगायनि ।
देखिअनंदभयोमुनिकोपरिपूरभईमनआशसोह्वायनि ६९

कियोदंडवतमुनिचरणनमहं भूपतिहाथजोरिशिरनाय ।
भयोअगारीमुनिनायकके लाग्योकहनकथासबगाय ७०
नृपसनभाष्योसंबर्तकमुनि तुमसनभेदकह्योकेंम्वार ।
सांचुबतावोसोहमसनकहिनातरुअबहिंहोहुजरिछार७१
मरुतमहीपतितबभाष्योकहि नारदकह्योआपगुणगाय ।
तबचलिआयोमैंचरणनढिगकरियेदयादीनदुखहाय७२
यज्ञअरंभनमैंकीन्ह्योहै चलिममकरहु प्रपूरणकाज ।
तुम्हैंबुलावनमैंआयोहै हर्षितचलहुसाथममआज ७३
मुनिसम्बर्तकतबभाष्योयह नृपहमकीनिगृहस्थीत्याग
जायबृहस्पतिसोंभाषोतुम वैकरवायदेहिंतुवयाग ७४

तबनृपभाष्योवहकौतुकसब जोसुरलोककह्योगुरुराय।
सोसुनिमुनिवरमरुताधिपसों बोलतभयेबचनहर्षाय७५
भूपतिशंकाकछुकरियेना चलिमखकरहुवेदअनुसार।
यज्ञकराउबचलिपूरयाहम जातेहोहुशक्रअनुहार ७६
युक्तिबतावतहौं तोकोयक सुनियेराजधारिइतकान।
श्रेष्ठबखानोसबमेरुनमहं अतिउत्तंगसुंगहिमवान ७७
निकटैताकेमुंजवानगिरि तामधि गुहा एकअभिराम।
करैंतपस्यालवलायेतहं निशिदिनमहादेवसहबाम ७८
देव गंधरबऋषि किन्नरगण अरुयक्षादिक करैंबिहार।
खानिसोहावनिइकताकेढिगजामहंद्रव्यकेरअधिकार७९
तहांधनदकेगनरक्षकहैं निशिदिन ताहिरखावनहार।
करिशिवपूजनतुम तहंवांते लावहु द्रव्यधराभर्तार ८०
सोधनलैकैमखपूरणाकरु ह्वैहै इंद्रसरिस यशवान।
लैसंबर्तककोआयसुअसनृपसोइकरतभयोअनुमान ८१
मखआरंभनपुनिकीन्ह्योंतब सोसुधिपायजीवअनखान।
जायइन्द्रढिगअतिकोपिततब भाष्योभूपयज्ञकोठान८२
हेसुरराजन तुवशासनते हमनागयेमरुतमखमाहिं।
लैसोआयो संबर्तकको सोतेहियज्ञ करावतआहिं ८३
निजबरबरिहाकोप्रभुताको कोऊदेखिनहोतनिहाल।
वृद्धिदेखिकैसंवर्तककी ममहियहोतव्यथाबिकराल ८४
शोकसमानी दुखसानीसुनि बानीजीवकेरिसुरराय।
बहुसमुझायोकहिसुरगुरुकाहेप्रभुशान्तहोहुथितिलाय॥
शोचबिसारौपरिहारौदुख भेजतअग्निमरुतकेपास।
अपनसंदशाकहिपठवतहौं सुनियेसत्यबचनमतिरास॥

तजिसंवर्तहिअवनीपतिसो ऋत्विजकरिहैंतुम्हैंबुलाय ।
बोलिहुताशनतबताहीक्षन भेजोमरुतपाससमुझाय ॥
अग्निपहूंचेमखशालामहँ जहँनृपमरुतकरतरहेयज्ञ ।
ताहिदेखिकैसंवर्तकमुनि बोलेकोपसहितसुनुअज्ञ ८८
काकेपठयेइतआवोचलि कहुसोसकलकथासमुझाय ।
नातरुअबहींभस्मितकरिहौं जानतनाहिंतेजव्यवसाय ।
अग्न्यालापनतब कीन्ह्योंसो हेमुनिमोहिंपठावोइंद्र ।
कह्योसंदेशायकराजाकोभाषतसोसुनिलेहुमुनीन्द्र ६०
मारुतराजाते कहियोयह ऋत्विजसंवर्तकहिविहाय ।
बोलिपठावो सुरपुरतेगुरु सोतुवयज्ञकरैहैंआय ६१
उत्तरदीन्ह्योंतबमारुतनृप हेवरबीर अग्निमहराज ।
वेसुरनायकके ऋत्विजहैं नाकछुहमैंजीवसोंकाज ६२
ममसखऋत्विजसंवर्तकमुनि सोसबिधानकरावतयाग ।
सुनिअसबानीनृपमारुतकी सुरपुरचलनअग्नितबलाग
जायपहूंचेसुरनायकढिग पूरबहालकह्योसबगाय ।
रिसबशनैनारतनारेकरिसुरपतिफेरिकह्योसमुझाय६४
आतुरगमनौतुममारुतपहं फिरियहकहौ संदेशाजाय।
कहोहमारोजोमनिहैंना करिहौं नाशवज्रसोंआय ६५
बिनयहुताशनतब कीन्हीबहु हेसुरनाथमानिये बात ।
जो हमजैबेसंवर्तकढिग करिहैं अवशिहमारीघात ६६
परम तपस्वी क्रोधातुरवै छांड्योशापदेत यहिबार ।
तबसुरनायकमनचिंतनकरि लीन्ह्योंबोलिगंधरबचार
ताहिबुझायो सब बातैंकहि आतुरचल्योमरुतकेपास ।
नामगंधरबधृतराष्ट्रकसो आयोभूपपाससहुलास ६८

कह्योसंदेशा सुरनायकको राजनसुनौ धारिइतकान ।
यहकहिपठयोहैबासवने ऋत्विजकरौजीवकोत्रान ६६
मरुतमहीपतितबभाषतभो ऋत्विजगुरुहिकरैंसुरराय ।
कामहमारोकछुउनतेना यहगंधर्वकहहुतुमजाय १००
इतनासुनिकैसुरनायकतब गर्जतभयेआयआकाश ।
रेशठआपसुमममानतनहिं यहिदृढ़बज्रकरहुंतुवनाश १
प्रबलघर्षणायहसुरपतिकी सुनिकैश्रवणमरुतनरनाह ।
हेतबताथोसंवर्तकते जसकछुकहे बचनघनबाह २
सोसुनिबोल्योसंवर्तकमुनि मतिभयगहो भूमि भर्तार ।
तपबलमेरोहरिजानतना तातेभयोगर्वअधिकार ३
काहकठिनता सुरनायक महं औकाबज्रमाहिंहैताव ।
जैसिदुर्दशातुमदेखनचहौ इंद्रहितैसदेहुं दुखदाव ४
रिसपरिपूरितमुनिबानीसुनि मारुतकह्योसुनौमुनिराज ।
यहिक्षनआवैंचलितुम्हरेढिग नभतेसहसमाजसुरराज ५
मुनिवरबानीसुनिराजाको दीन्ह्योंतपप्रभावदरशाय ।
जहंमखशालारहैराजाको आयेसहसमाजसुरराय ६
मिलेअनंदितनृपसुरपतिदोउ बैरबिहायकीनअंनुराग ।
पुनिअनुशासनलहिसुरपतिको किन्नरयक्षगंधरबनाग ७
नृपमखशालामहंनिवसितभे सादरतहांरहेचिरकाल ।
मुनिसंवर्तककीदायाते पूरणयज्ञकीनमहिपाल ८
सुनिअसबानी द्वैपायनकी आनंदभयेयुधिष्ठिरराय ।
राजनीतिकोमतऐसोसुनि बूझ्योमन्त्रकृष्णमुखपाय ९
हेयदुनंदनमुनिबानीसुनि मोसनकहतबनतनहिंबात ।
क्रियावाजिबीजोकरिबेकहं सोसमुझायकहौम्बहिंतात

तबयदुनंदन यह भाषतभे सुनिये भूप युधिष्ठिरराय।
यावतजगमाकोउउपजाहै इकदिनमृत्युअवशितेहिखाय
सावधानह्वैसोसुनियेअब तुमसनकहतएकइतिहास।
बिदितबिक्रमीबड़वृत्रासुर जाकीकथासकलपरकास १२
एकसमैयाके अवसर सो हरयोभूमिको गन्ध महान।
खबरिपाययहहियकोपितह्वैतापरबज्रतज्योमघवान१३
बज्रावतलखिसोवृत्रासुर धँस्योबारिमधिबीरअमान।
तहाँसुपर्वततेहिआयुधहनि चाह्योलेनतासुकेप्रान १४
हरयोहुताशनमहँआसुरसो पुनितहँहन्योबज्रसुरराज।
बायुमध्यसोझटप्रविशतभो हरयोबायुकोबिषयसमाज
पुनिमनचिंतनकरिकोपितमन तहँऊबज्रहन्योसुरराय।
आयुधआवतलखिधावतसो प्रविशोगगनमध्यतबजाय।
हरयोशब्दगुणनभमण्डलकोतबअतिकोपकीनमघवान।
बज्रउदण्डो पुनि बेधतभे सुनियेधर्म भूपमतिमान १७
तनमधिप्रविश्योसुरनायककेमोहितभयेसुमनशिरताज।
चिंतितकीन्ह्योतबबशिष्ठमुनि निजतनमध्यदेखितेहिराज
बध्योवृत्रकहँसुरनायकतब दूनौएकपिताकेबाल।
क्षात्रधर्मनृपयहऐसोहै करियेनहींशोचको ख्याल १६
सुखकेअवसरदुखसुमिरतजो सोनरमहाबुद्धिआगार।
परेव्यवस्थासुखसुमिरतजो सोनाबँधतजक्तकेजार २०
सभामध्यजोगतितियकोभै औ दुर्बचनकहेरविलाल।
सवैरनकरियेयहिअवसरसोकारिप्रमबचनसत्यप्रतिपाल
लाषभवनतेबचिआयेजब सोदुखकसनकहहुयहिकाल।
बिपिनव्यवस्थातेभारीयह नाहिंनदुःखधर्ममहिपाल २२

भावीपरबलगुनिईश्वरकी मनकृतशोचदेहुबिसराय ।
निर्मलबुधिकरिउरअंतरते अश्वमेधहितकरहुउपाय २३
यहिबिधिबातैंसुनिगोविंदकी कीन्हेधर्मशोचपरिहार ।
विप्रनपज्येअतिआनंदते दीन्ह्योदानमानअधिकार २४
पुनिपरितोष्योबहुपरजनकहँसबविधिसबहिधीरधरवाय
क्रियाकर्मकरिभटभीषमकोसुंदरसुदिनसुअवसरपाय २५
सुनेस्वस्त्ययनद्विजराजनमुख मंगलशकुनसिद्धिसबपाय
पांचौबंधुनसहकुरुपतिके प्रविशतभयेपुरीमहँआय २६
शुभदयथोचितलहिआश्रमथलनिबसतभयेतहांमतिमान
पूजिभूसुरनकेपायंनकहँ कीन्ह्योहेमधेनुमहिदान २७
भयेअनंदितपुरबासीसब घरघरभयोमंगलाचार ।
मातुकुन्तिकाअतिउत्सवसों साजतभईराजआगार २८
सचिवसुबंधुनसहधर्मजनृप पालनलगेप्रजापरिवार ।
नीतिनिपुणतासहबर्ततभेजसककुलोकवेदव्यवहार २९

इतिश्रीउन्नामप्रदेशांतर्गतबंथरग्रामनिवासिवाजपेयिपं०रामरत्नस्या
त्माभिगामीस्वप्रदेशांतर्गतमसवासीग्रामनिवासिपं०बंदीदीनदी-
क्षितनिर्मितमहाभारतभाषाअश्वमेधपर्व्वयुधिष्ठिरराज्य
प्राप्तवर्णनोनामप्रथमोध्यायः १

श्रीरघुनंदनपदबंदनकरि धरिउरमदनकदनकोध्यान ।
बुद्धिविशारदभजिशारदको ठानतफेरिगानकोठान १
रामकृष्णकोलहिदायाशुभ लागेकरनधर्मनृपराज ।
चारिउबंधवतिनसेवारत शासनपायकरतसबकाज २
तहँनंदनंदनपुनिकछुदिनरहि पारथलीनएकदिनसाथ ।
इंद्रप्रस्थकहंचलिआवतभे राजतजहांधर्मकेनाथ ३

समैगुजारोतहंनिवसितहवैकहिश्रबिबिधभांतिइतिहास ।
फिरिइमिभाषतभेअर्जुनते सुनियेबीरएकममआस ४
अतिबलबैरीसोंसंगररचि तुवबलजीतियुधिष्ठिरराय ।
भोगनलागेसुखबसुधाकोजगमहंरह्योविमलयशछाय ५
पांडवप्यारेम्वहिंप्राणहुंते इमिप्रियऔरमोहिंनहिंआन ।
भूपयुधिष्ठिरकोत्यागनकरि चितनहिंचहतजानअस्थान
बहुदिनबीतेम्वहिंआवतइत हालनमिल्योद्वारकाक्यार ।
तुमसहचलिबोतहंचाहतहौं जोजियचहैभूमिभर्तार ७
औतुवइच्छा बनिआवैजो तौयह कहहु धर्मतेबात ।
अप्रियचाहवहमउनकोना निश्चयमानुबचनममतात ८
हर्षितदेहैंजो आयसुनृप सोहमकरबशीशपरधारि ।
पैइतरहिबोममबंधवअब हैनाकछुकप्रयोजनकारि ९
डरनहिंकौनौअबधर्मजको यावतशत्रुभये सबनास ।
करैंअनंदितभुविभोगनमन शोगनत्यागिपागिसहुलास॥
सुनिस्तकुभाषणनंदनंदनको सबविधिशोचिधनंजयजीय ।
विहंसतबोलेलखिअवसरबरसुनियेवचनजगतकेपीय११
तत्त्ववार्त्ता कछुभाषौप्रभु हैमोहिंसुननकेरिउत्साह ।
लखिअभिलाषाअसपारथकी बोलेमोदसहितयदुनाह॥
कथापुरातनियकभाषतहौं बंधवसुनौधारिइतकान ।
पूरबब्राह्मणसुरपुरतेइक आयोजहां मोरअस्थान १३
नीकेआसनमैंदीन्हातेहि कीन्हेबहुबिधिबाक्यबिलास॥
परमतत्त्वकोद्विजज्ञातासो जेहिगतिदशौदिशापरकास॥
तासुसमीपैरहिभूसुरकोउ सेवनकियो सहितअनुराग ।
भईसिद्धतासबप्रापतत्तेहि निर्मलभईबुद्धिअरुभाग १५

जीवबश्यहवैनिजकर्मनकेभर्मतकुगतिसुगतिअधिकार ।
सुखदुखपावतनरकर्मनकरिहैफलमुख्यकर्मदातार १६
सुतपितुमाताअरुभ्राताहितफंसिफंसिमोहकोहसमुदाय।
आखिरकर्मनकोसाथीहवैअगणितयोनिपरतसोआय १७
प्रगटतबिघटतचहुंदिनिपततफिरिआवतजायसहस्रनबार।
यहबिधिदेखतसुखलेखतदुख परिमितिकर्मगतिनकेप्यार
जराव्यवस्थाव्यसनामयअरु प्रापतखेदभेदबहुभांति ।
दुसहयातनायमनगरीकी सगरीकर्मकेरिउत्पाति १९
अकरमकर्मनकरद्विजवरइमिभोग्यप्राप्यफलनकोभोग
पायसोसद्गुरुबुधिनिर्मलकरिकीन्होअमलबिचारप्रयोग
दुहीसिद्धतातवऐसीहम दिनप्रतिअधिक २ अधिकाय।
यातेउत्तमपदपावबपुनि गुनिउरब्रह्मचिंतवनचाय २१
आगमनरपुरफिरिहवैहैना है अव्यक्त ब्रह्म पदपास।
तामधिप्रापतहवैपाउबपुनि अव्ययशुभनिवाससुखरास
सुनियहबानीद्विजकाश्यपसो भाषतभयोहियेअनुमानि।
किमिनरदेहीयहप्रगटतपुनि औकेहिभांतिहोततोहहानि
दुखतेनरपुरकिमिछूटतयह केहिबिधिजीवदेतबपुत्यागि।
परपदगमनतरतक्रामहंहवै सोसबकहहुमोरहितलागि
प्रश्नमनोहरसुनिसिद्धद्विज तासनकहतभयोसमुझाय।
आयुप्रपूरणपरनिपततनपुनितहंकछुकउपद्रवपाय२५
सोऊभाषतकाहंसुनियेद्विज जेहिबिधिहोतदेहनिर्मान।
जीवजाततजियहदेहीउत सबबिधिभोगिकर्मपरमान२६
पुनिरजवीरजसंयोगैलहि तामधिपराबिराजतआय।
निज२कर्मनअनुरूपकते प्रविशतरूपक्षेत्रसोपाय २७

दीपप्रकाशतजिमिपूरयागृह ताबिधिकरतजीवपरकास ।
पुनिपरमाणिकदिनसहशसो प्रापतरहतदेहमोबास २८
पायसुअलसर सोबायबश बाहरकहतयोंनिसगश्राय ।
जीवविजन्मैजगयाहींबिधिसुनियेबिप्रबचनलवलाय २९
स्वतकृत पूर्बके कर्मनको लेखनकीन भालकरतार ।
सकलशुभाशुभजगभोगतसो करिप्रारब्धकर्म्मउच्चार॥
पुनिअबभाषतसोद्विजवरकहि जेहिविधितजतजीवसंसार
बिप्रबिचारहु सोमनभागुनि ह्वैहौशोकश्रोकतेपार ३१
सदासर्बदाजगनाहींयह जिनअसमनैगुन्योमतिमान ।
जीत्योइन्द्रीतिनबिषयनते ह्वैशुभदक्षस्वच्छकरिज्ञान ॥
लख्योबराबरिदुःखानंदअरु लाभालाभमाहिंसमभाव ।
त्यागिफलाशाचितचिंतनकरि राख्योसुष्टुकर्मसोंचाव ३३
भयेअरागीसर्बबिषयनमहं सह्यनकियेपांचकोआंच ।
धर्मधारयाधुरिधारीमन नाचनलगे सांचकोनाच ३४
इमिशुभसाधनआराधनते बाधनकियो जक्तको राह ।
सिद्धिबिराजीकरकमलनसाप्रापतभयोसिद्धउत्साह ३५
अबसोसुनियेमनगुनियेद्विज जिमियहजीवपरमपदजात।
उरअभिलाषततुवभाषतमैं करिकैएकब्रह्मसोंनात ३६
जगहइकल्लोलखिपावनकरि जहंपरअन्यपुरुषकोनाहिं ।
यातोमंदरकोकन्दरशुभ अन्दरबसैजायतेहि माहिं ३७
ध्यानाचलधरिथिरबैठतहं जैसे बिनाचालकोछांह ।
करैधारणापरिपूरयातन मनतजिबिषयविघ्नकोराह ३८
जेहिप्रकारते शिलासैंधव बारिदमध्य लिप्तहोइजाय ।
तिमिमनस्थमतेशोधनकरि राखैब्रह्ममध्यलपटाय ३९

योगटिकासनयाबिधितेकरि फिरियहजीवदेहकोत्यागि ।
परपदपावतमनभावतसो आवतजहांब्रह्मअनुरागि ४०
इमिनंदनंदनकहिपारथते फिरयहकह्योसुनोमतिमान ।
सिद्धसोभाषणकरिहमतेइमि पुनिअसकहनलागसविधा
यहप्रश्नोत्तरसुनिकाश्यपद्विज पूंछतभयोफेरियहबात ।
सोमैंतुमसनकहिभाखतहैं राखततनकगोयनहिंतात ४२
भोजनकोजैअन्नादिकजो सोरसरक्तहोत किमिगात ।
हाड़मांसकिमिबनिआवततन कारणकौननित्तअधिकात
किमिबलबाढ़तहैदेहीमहं केहिअस्थानजीवको बास ।
सोसमुझाइयसतिगाइयकहि जातेसुमतिहोतपरकास॥
हेयदुनंदनद्विजबानीइमि सुनिहमकह्योताहिसमुझाय।
आतमदर्शनतेनोकीबिधि यहप्रत्यक्षभेददरशाय ४५
देखिन पावैदृग दृष्टीसों दीपितभये दीपबिन ज्ञान ।
दृष्टिप्रकाशैजबअंतरकी तबलखिपरतब्रह्मनिर्बान ४६
इहिबिधिउत्तरदैद्विजवरको तबहमबिदाकीनसमुझाय ।
सिद्धसोभाषणकरिपारथइमिआतुरगुप्तभयोवहिठायं४७
इमिआलापनकरिराधापति पुनिपारथतेकह्योबुझाय ।
औरौगाथाइकगावतहौं सुनियेसावधान मनलाय ४८
पूरबदम्पतिइकअवनीसुर सबबिधिरहेतत्त्वआगार ।
ज्ञानगुणाकरबहुविद्यागर सागरसिद्धिसिद्धआकार ४९
इकदिनअवसरलहिनारीसो भाषतभईविप्रसोंबात ।
संशयभारीभोमोकहंयह सोसमुझायकहौस्वामिनाथ ५०
न्यस्तकर्म नरजेदुनियामहं पावत कौनलोकमहंबास ।
कौनलोकमहंतियस्वामीसंग निवसतअंतहोतजननास

यहसुनिद्विजसोहंसिभाषतभो प्यारीकरहुबचनपरमान
पुरषाकीन्हेबिनकर्मनके नाकोहुरहनकेरिपरमान ५२
श्रुतिअनुसारितशुचिकर्मनकोमानुषकरतमोहवशत्याग।
जेहिबिनकीन्हेबनिआवतनहिं तामेंरहतअवशिसोलाग
शब्दअरुपरश रसरूपहिलै औगंधादि विषयजेसर्व।
इनकेस्वादनमनलावैजो तेहिसंन्यासकहतश्रुतिपर्व ५४

सवैया॥

पांचकिआंचलगैतनमेंनाहिं नाचजगैजगकोउरजाके॥
प्रानअपानसमानरुव्यान उदानहिंमीतकरैमनसाके॥
जोतिदशौसहस्राहसरोरथ बंदि तजैसबपंथब्यथाके॥
होयनिराशबिलाशबिनाशकसंयुतन्यासहैलच्छणताके ५५

ब्रह्मचिंतवनइकजाकेदृढ़ सबपरिहर्योजक्त जंजाल।
योगसाधनाशुचिसाधनकरि सच्चितरूपरहैहेबाल ५६
घ्राता श्रोताभक्षविताअरु द्रष्टाप्रभुहि बिचारतचारु।
लगीलगनियांहै पावनपद पहिरैहिये सत्यकोहारु ५७
ध्येयआदिको जेवस्तूहैं सबबिधितिन्हैं बिचारत जौन।
हविषअग्निअरुहोतादिककहं गुणगतिसदासवांचततौन
त्वचाचक्षुश्रुतिरसनादिकलै नाशासहितचरणअरुपानि।
अरुउपस्थसहदशभाषतये होताइन्हैंलीजियेजानि ५८
क्रिया वाक्यरस गंधस्पर्शहि औलै शब्दरूप मलरेत।
मत्र त्यागसहदशअनुपमये करियेहविषचित्तमेंचेत ६०
दिशिमहिरविशशिइन्द्रादिकलै औरौमित्रप्रजापतिवाय।
विष्णुअग्नियेदशचिंतनकरि जानैइन्हैंहुताशनआय ६१
ध्रुवाचित्तकरिविषयसमिंधन करैजोयेमखअगबिभाग।

परपदपावतसोनिश्चयकरि बिलसततहांसहितअनुराग
यहिबिधि बातैंकरिपारथते जेयोगांग तत्त्व इतिहास ।
चलेहस्तिनापुरमाधवपुनि सहदलभूपमिलनकरिआस
अगमहंपारथअनुमान्योअस ओमाधवते कह्योबुझाय ।
प्रभु तुवदायातेपांडवनृपबिलसतराजबिजयकोपाय ६४
कुरुदलदारुणबडअबुंधिप्रभु सोतुव कृपासहजहवैपार ।
राज्यअकंटकलहिधर्मजसह हमसबभयेभूमिभर्तार ६५
होजगपालकदुखघालकजग पालकसृजकनाशकर्तार ।
सुजनसहायकदुष्टनघायक दायकभक्तपदारथचार ६६
मच्छकच्छओनरहरिशूकर बामनपरशुराम तुमराम ।
निजजनपालनहितआवतजगनिर्गुणसगुणरूपनिष्काम
सबउरबासीअबिनासीप्रभु तुमहींबिष्णुशंभुमुखचारि ।
भवभयतारनभक्तउधारन धारन धराकेरधुरभार ६८
सबिधिप्रशंसतइमिपारथहरि गेधृतराष्ट्रभवनमनलाय ।
जायबिलोक्योधृतराष्ट्रकसह बैठेबहुरयुधिष्ठिरराय६९
भीमनकुलअरुसहदेवासह निरख्योपांडवादिकोमात ।
पंक्तिकुशलतातबसबहिनकी शोभितभयेतहांहर्षात ७०
करतयथोचितआलापनतहंमुदसहदिवसगुजार्योश्याम।
जानिनिशागमधृतराष्ट्रकसह आज्ञापायकोनबिश्राम ७१
लइप्रभातैउठिपारथयुत आह्निक कर्मकीन भगवान ।
सभापहूंचेपुनिधर्मजकी उठकैलीनधर्ममतिमान ७२
लायशुभासनबैठार्योनृप करिबहुप्रेम नेम सत्कार ।
हाथजोरिकैपुनिबोलेनृप जोकछुहुकमदेहु कर्तार ७३
भूपयुधिष्ठिरकीबानीसुनि पारथकहे बचन अभिराम ।

हेनृपआयेयहिकारणहम चाहतजानद्वारकाश्याम ७४
तबनृपधर्मजपुनिभाषतभे जोकछुउचितकरहुसोनाथ ।
हमतुवआयसुप्रतिपालकहैं सम्मतमोरआपकेहाथ ७५
जानद्वारका मैं बर्जोंना पैयहदास भूलि ना जाय ।
मोरसहायकप्रभुआपैहैं तुवबललह्योराजसुखपाय ७६
बिनयहमारीइक औरौप्रभु जोअबचहत द्वारकाजान ।
तौउतथोरेहिदिननिवसितह्वै सबकोदेखिकुशलकल्यान
घरपुरबासीसबबंधुनमिलि फिरिम्खहिंकियोकृतारथआय
तबहींह्वैहैअश्वमेधमख सुनियेसत्यबचनयदुराय ७८
मणिधनप्रापतजोहमकाभो इच्छिततौन जाहुलैभ्रात ।
सुनियहबाणीनृपधर्मजकी बोलेकृष्णचन्द्रमुसकात ७६
तुवधनभूपति सबमेरोहै यामहंकछु न शोच की बात ।
हर्षितआयसुअबदीजैम्खहिंदिनप्रतिअवधिजातअधिकात
उठेयुधिष्ठिर तबआतुरह्वै पूजनकियोकृष्णकोआनि ।
बिदाकरायोपुनिहर्षितनृप गमनतभयेसुशारंगपानि ८१
सहितसुभद्रा रथशोभितह्वै आतुरचले द्वारकाकोद ।
संगसारथीशुभसात्यकिनृप पठवनचलेधर्मसहमोद ८२
पारथपवनजनकुलादिकसब सहदेवबिदुरज्ञानआगार ।
पठवनआयेकछु दूरीलग लौटेभेंटिकृष्णकर्तार ८३
सगुनअनेकनमगनिरखतशुभ आतुरचलेद्वारकानाथ ।
चंचलबाजीगतिताजीसों सरपटचलेभलेहिहिनात ८४
मिलेरास्तामहंमाधवते तेहिक्षणतहंउतंकमुनिआय ।
तिन्हैंसहादरलैगोविंदपुनि बोलतभयेमोदसरसाय ८५
भयोआगमनकेहिकारणइत मुनिवरकहियमोहिंसमुझाय

हर्षितबोलेमुनिगुनिकैतब सुनियेसत्यबचनयदुराय ८६
कुशलअण्णसों कुरूपांडवसब हँसहँसैनदेहुबतलाय ।
कहीव्यवस्थातबमाधवसबभारतचरित्तयथोचितगाय८७
सुनिमुनिनाशनकुरुबंशिनको बोलतभयेहृदयअनखाय ।
बिनुतुवचाहेयदुनंदनयह भयोनऐसोअनरअचाय ८८
तेरोकुलबलसबमाधवयहगुनिहियहोतअधिकपरिताप ।
बनतनिवारतरिसनाहींअब चाहवतोहिंदेनमैंशाप ८६
सुनियहबोलेयदुनंदनतब गहियेहियेक्षमामुनिराज ।
तत्त्वाध्यातमसुनिमनमागुनि पुनिम्वहिंशापदेहुनिजराज
मधुरालापनसुनिमाधवको बोलेमुनिवरक्रोधबिहाय ।
तत्त्वाध्यातमगुणिकेशवशुभ यहिक्षणकहौमोहिंसमुझाय
भाषनलागे यदुनंदन तब त्रयगुणकेर भाव ममतात ।
रुद्रविधातालैयावतसुर तिनकोमहींप्रभवअवदात ६२
म्वहिंमधिजगसबसम्बन्धितहै जगकेमध्यमोरहैबास ।
क्षरअरुअक्षरहमसत्यासत हमहींकरतप्रपूरणआस ६३
धर्मश्रुतिस्मृति चतुराश्रमये मुनिवरमोरआत्मासर्व ।
यूपयज्ञहबिचरुआदिकहम हमहींमंत्रसोमआखर्ब ६४
सर्वसृष्टिकोउत्पत्तिकमैं अस्तुतिकरत मोहिं सबनौमि ।
धर्मकेरक्षकअरु धर्महुंहम कर्त्ताधर्म जानिये सौमि ६५
ब्रह्म विष्णुशिव इन्द्रादिकहम हमहीं सर्बभूतअरुग्राम ।
धर्मकि रक्षाहितजगतीमहँ मैंअवतारलेतअभिराम ६६
देव गंधरब यक्षासुर बसु किन्नर आदिगनाये जौन ।
जेहि२ योनिनमैंप्रविशतहौंतेहिबिधिरचतरचतमतिभौन
धर्मत्यागिकैअनरीतिहि करि कौरवमरे लरेकरियुद्ध ।

युद्ध मरेते सुरपुरपायो हे मुनिराज होतकतक्रुद्ध ६८
तखमनोहर सुनिमुनिवरयह बोले सुनो जगतभर्तार।
आजुतुम्हारीअनुकंपाते हियभ्रमभयोमोरसबछार६९
रूप बिराटामलआपनप्रभु समदृग दृष्टिदेहु दरशाय।
सुनिअसबानीमुनिनायककी दीन्ह्योचारुरूपदिखराय॥
कुरुक्षेत्रमहं जोअनुपमबपु दीख्योरहैजिष्णुमतिमान।
देखिमनोहरसोमुनिवरतहंअस्तुतिकरनलागधरिध्यान१
तबयदुनंदनपुनिभाषतभे सुनुमुनिनायक बचनहमार।
जोबरमांगहुमनइच्छिततुम हर्षित करहुंतासुनिर्धार २
सुनि यदुनंदनकीबाचा यह मुनि उत्तंक कह्योहर्षाय।
जहं अनुरूपनमनठानौंमैं दर्शनदिह्यो तहां प्रभुआय ३
कहितथास्तुहरिमुनिनायकते गेचलिबेगिद्वारकाधाम।
कछुकदिनौनासहंमुनिवरतबपहुंचेमरुतदेशअभिराम ४
तहां तृषातुरभे भमतपथ कीन्ह्यो हियेकृष्णकोध्यान।
आयप्राप्तभोयकपुरुषतहं तनचण्डालकालअनुमान ५
सशरशरासनकरराजतजेहि नंगधड़ंग संगलियेश्वान।
श्रोतप्रभासातापगत्तरलखि मुनिनायककेहोशभुलान ६
पुनिवहभाषतभोमुनितेइमि हेमुनिपियहुशंकतजिपानि।
भयेअचंभितमुनिनायकतब ठगिसेरहेकहतनहिंबानि ७
बचनकृष्णकेगुनिताहीक्षण बहुदुर्बचनकह्योरिसठानि।
पुनिवहपुरुषसमझावतभोपिउजलछांड़िशोचकीकानि ८
यहश्वानकीन्ह्योजलतबहूंमुनि अन्तर्द्धानभयोचण्डाल।
विष्णुप्रगटभेतबताहीथर गहिकरशंखचक्रक्षितिपाल ९
बिष्णुबिलोकतमुनिबोलेतबहेप्रभुउचितनाहिंइमितोहिं।

कुत्सितनरकेपगनीचेकरि लाग्योदेनबारिबरमाहिं १०
सुनिआलापनयहमुनिवरकोभाष्योविष्णुताहिसमुझाय ।
आयसुदीन्ह्योपुनिसुरपतिकहंअमृतदेहुउत्तंकहिजाय ११
उत्तरदीन्ह्यो सुरनायक तब नाहिंन सुधा पुरुषके योग ।
पैअनुशासन तुवपालनकरिऔकछुठानिठ्याजपरयोग ॥
अमृत देबे हममुनिवरकहं पैजो लेहिं नाहिं मुनिराज ।
प्रगटनदेबेहमइनकापुनिआउबलौटिआपुढिगआज १३
यहकहिसुरपतिलैमुनिकासंग पहुंचेत्वरित देवपुरजाय ।
रूपबनायोनिजकुत्सितकादीन्ह्योबारिअमीमिसआय १४
ग्रहणनकीन्ह्यो मुनिताहूका आयेलौटि विष्णुके पास ।
हालबतायोकहिसुरपतिकृततबहरिकह्योसुनौमतिरास ॥
इच्छाहोइहैतुवहिरदयजब चहिहौबारिवृष्टि यहिदेश ।
बारिवृष्टितब अंबुदकरिहैं यहबर देततोहिं शुभवेश १६
जलद बरसिहैं इत अबते जो सोउत्तंक कहैहैं नाम ।
पायसुआशयतुवमुनिवरवे करिहैंसुष्टुवृष्टिसुखधाम १७
सत्य विभाषण जन्मेजय यह अजहूंमरूदेश के माहिं ।
वइउत्तंकाघनबरषतहैं आशिषविष्णुकह्योमुनिपाहिं १८
वैशंपायनकी बाणीयह सुनिगुनिहिये परीक्षितलाल ।
पुनियहपूंछतभेमुनिवरते सुनियेनाथदीनप्रतिपाल १९
किमि तेजस्वी अतिदारुणभे मुनिउत्तंककौन तपकौन ।
शापदेवैयाभेकृष्णाहिंजे सोसमुझायकहहुबुधिभौन २०
वैशंपायन तब बोलतभे सुनिये बचन परीक्षितलाल ।
अतितपशालीऋषिगौतमइक जिनकीविदितअहल्याबाल
बहुदकआश्रममहंआश्रितजे मुनिउत्तंकशिष्यतिनकेर ।

परमप्रवीणे गुरुसेवारत प्रगटतभक्तिनित्यगुरुचेर २२
करतेकरते गुरुसेवा को सिगरे श्वेत ह्वैगये बाल ।
मुनिगृहकारजअनुसारतसब आयसुसर्वकरतप्रतिपाल
इकदिनगुरुगृहहितचिंतनकरि लकरीलेनगयेबनमाहिं ।
गरुओबोझाधरिमूड़ेपर लैकरिचलेशक्तितननाहिं २४
भारीबोझासोंदुःखितह्वै द्विजतबगिरयोगुरूघरआय।
रोवनलाग्योअतिकारनकरि पीड़ाअधिकदेहमेंपाय २५
पाय आज्ञा गुरुकन्यातब आई मुनि उतंक के पास ।
बहुसमुझायोतिनरोवतते पूंछ्योअनायासदुखफांस २६
पैद्विजरोदनकोछांड्योना तबमुनितीरआयनगिचान ।
कह्योकिरोवतद्विजकाहेको का दुखआजतोहिं अधिकान
सुनिअसबाणीमुनिगौतमकी मुनिउत्तंककह्योशिरनाय ।
गतशतवरषैतुवसेवामहं कीन्ह्योजराग्रस्तम्वहिंआय२८
विप्रअनेकनममआगेइत पढ़िपढ़िशिष्यभयेतुवआय ।
तेसबपढ़िपढ़िनिजधामनके पंडितभयेज्ञानकोपाय २९
म्वहिंघरजैबेहितआयसुतुममुनिबरदियोआजुलगनाहिं ।
स्वादनपायोकछुजगकोहम शक्तिनरहीदेहकेमाहिं ३०
यहगुनिमनमा मुनिरोवतहम काअबकरैं वृद्धपनपाय ।
शिथिलइंद्रियांसबतनकीभइंचंचलचित्तलह्योथिरताय ३१
यहसुनिगौतममुनिहर्षिततबदीन्ह्योयुवापुरुषकरिताहि ।
लैश्रुतिसम्मतजगरीतैसों पुनिनिजसुतादीनत्यहिब्याहि
तबउतंकद्विजमनहर्षितह्वै भाष्योगुरूत्रियासोंबानि ।
जोगुरुदक्षिणाकहुमातातें सोहमलायदेहिंमनमानि ३३
तबगुरुपत्नी यहभाषतभइं जिनकाकहीअहल्यानाम ।

सुतसंतोषिततुवसेवासों आयसुपालिकीनबहुकाम ३४
देनजोचाहो गुरुदक्षिणतुम तौमैंकहहुं एकमनआस ।
परममनोहरश्रुतिकुंडलहैं नृपसोदासत्रियाकेपास ३५
ममनभायेसबभांतिनवै सोसुतमोहिंदेहु तुमआनि ।
ध्यायगणेशहिद्विजगमनेतहं पहुंचेतासुभूपकीथानि ३६
द्विजअवलोक्योनृपराक्षससमअतिबिकरालरूपदरशान
देखिउतंकहिनृपबोल्योसो हमपरखुशीआजभगवान ३७
छःदिनबीते कछुपायोना भोजनमिले आजुअनयास ।
यहसुनिद्विजवरतबबोलतभे सुनियेभूपमौलिसौदास ३८
गुरूदक्षिणा के देवेहित आयोंतोहिं यांचिबे काज ।
मशापूरणकरुभूपतिमम मांगतदौनदेहुम्वहिंआज ३९
दैगुरुपहिनहिंफिरिअइहौंमैं तबकरिलियोअशननरराज।
जोश्रुतिकुंडलयुवतरुणीपहंसोकरिकृपादेहुम्वहिंआज४०
यहसुनिभूपतिमनचिंतनकरिक्षणइकमौनधारिमनमाहिं।
हर्षितबोल्योद्विजवरतेपुनि हमतेकाजहोयतुवनाहिं ४१
तुमचलिजावोमहराणीढिग कहुनिजअर्थजायसमुझाय ।
ममआयसुकहिमहराणीते कुंडललेहुजायसुखपाय ४२
परमानंदित ह्वै उतंक तब पहुंचे आय भूपतिय पास ।
बिनयसुनायोअतिनम्रितह्वैभाष्योउक्तआपनीआस ४३
सुनिमदयन्ती समुझावतभै हेद्विजकरौबचन परमान ।
बसुसुरआसुरसबचाहतमकुण्डललेनहेतसबिधान४४
जाय सुनावो तुम राजै यह जोवै देहिं हुक्म फरमाय ।
तौचलिआवोफिरिमोरेढिग कुण्डललेहु आयहर्षाय ४५
विप्र पहूंचे तब राजाढिग कारण कह्योजायसमझाय ।

पुनिनृपआयसुलै रानीपहँकुण्डललियोआय हर्षाय ४६
बिहंसत चलिभे तब तहंवां ते पहुंचे आय भूपकेपास।
करिआलापनबहुराजातेगुरुढिगचलेपुरिकरिआस ४७
भये क्षुधातुर कछु दूरीचलि तबद्विजवृक्ष बेलको देखि।
हर्षितचढ़िकैतेहितरुवरपरतोरनलगेसुफलअवरेखि ४८
कुण्डलछुटिगो करकमलनते औगिरिपरे भूमितलआय।
सोऐरावतलै ताहीक्षण वसुधातलमहं गयोसमाय ४६
क्रोधितउतरे द्विजतरुवरते महिपरआय दण्डगहिपानि।
जौनबिवरसोऐरावतिगो खोदनलागतौनअनुमानि ५०
अतिक्रोधातुरदिनपैंतिसलग द्विजवरखंधोभूमिलवलाय।
देखिव्यवस्थातबबसुधाको आयेबिप्रपास सुरराय ५१
सुनिगुनिकारणसबभूसुरकोसुरपतिकह्योताहिसमुझाय।
सहसकयोजनहैनिश्चयकरिहियंतेनागलोकद्विजराय५२
कबलग खंदिहौतुम बसुधाको पैहौ एकजन्म नहिंपार।
तबद्विजरिसवशअसभाषतभो सुनियेदेवनाथकर्तार ५३
कुण्डल पाये बिन जैहौं ना इतते कहूं और अस्थान।
महिबिनशावब कुंडललावब नातरुत्यागिदेबनिजप्रान
सुनत दुखारत द्विजबानीअस आनीदयाहृदय सुरराय।
योजितकीन्ह्योनिजदंडहितब पढ़िअहिअस्त्रमंत्रमनलाय
नागलोककी तब रस्ता भइ क्षणमहं बज्रअस्त्र परभाव।
आतुर गमने द्विज ताहीमग पहुंचे नागलोकके ठांव ५६
जायबिलोक्योअहिलोकै द्विजठांगिसे रहेदेखि तेहिद्वार।
पांचकयोजनकोऊंचोअरुइकशतलख्योतासुविस्तार ५७
भयोनिराशाद्विजदेखततेहितबमिलिगयातुरंगअतिकाय।

शिष्यजानिकैनिजगुरुकोतब बिप्रहिकहतभयोसमुझाय
ममगुदर्फूंकौ तब द्विजवर तुम पैहौ नागलोक की राह ।
सोसुनिमनगुनिद्विजकीन्ह्योसोदीन्हीफूंकिसहितउत्साह
कढ़ीप्रचंडित तेहिरोमनते अतिशय प्रबल धूमकोधार ।
तासोंपूरितनागलोगभो भेअतिदुखितनागबरियार ६०
आयपहूंचे सबद्विजवरढिग पूजनकियो सहित सत्कार ।
कुंडलदीन्ह्योदोउआगेधरि अस्तुतिकियोबिबिधपरकार
लीन्ह्योहर्षिततबकुंडलद्विज त्याग्योनागलोकसुखपाय।
कछुकसमइयाकेअवसरमहं गौतमभवनपहूंचेजाय ६२
कुंडलदीन्ह्यो गुरुपत्नीकहं सिगरी कथासुनायो भाषि ।
तबगुरुपत्नीआनंदितह्वै आशिषदियोद्विजेअभिलाषि ६३
तपपाराक्रमइमिद्विजवरमहं सुनियेभूप परीक्षितलाल ।
जससुनिपायोहममुनियनतेताबिधितुम्हैंसुनायोहाल ६४

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिपं०रामरत्नस्याज्ञाभिगामी
स्वप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासिपं०बंदीदीनदीक्षित
निर्मितमहाभारतभाषाअश्वमेधपर्वान्तर्गतउत्तंको
पाख्यानोनामद्वितीयोध्यायः २ ॥

भजिसुखसाधासहराधापति बाधाहरनचरनदोउध्याय ।
बुद्धिबिशारदश्रीशारदभजि हयमखमेधकहौंफिरिगाय १
कथामनोहरजनमेजयसुनि हर्षितभयेसुनिहिशिरनाय ।
प्रश्नअपूरबफिरिकीन्ह्योइकमतिअनुसारकहतसोगाय २
अमृतबाणीसुनिमुनिवर तुवभ्रमतमभयोमोरसबनाश ।
फिरिकछुसुनिबेकोचाहत चितसोऊकरततोहिपरकाश ३
दैउत्तंकै बरबंशीधर पुनिनिजधाम द्वारका जाय ।

काबिधिकीन्होतहंनिवासितह्वैमुनिबरकहौमोहिं समुझाय
बैशंपायन तब भाषतभे सुनुमृदुकथा परीक्षितलाल।
दैउत्तकैबरगिरिवरधर द्वारावती पहूंचे हाल ५
छबिसोंअगरीबरनगरीकी सगरीछटालख्यो तबजाय।
जाकीशोभालखिसुरपुरमन लोभामिलनहेतललचायह६
मिलतमिलावतपुरवासिनसों आनंददेतलेतकुशलात।
पुनिनिजमंदिरमहंप्रबिशतभेनिरखोकुशलसहितपितुमात
भरिभुजभेंटयोदुखमेटयोसब गुरुपितुमातुपदैपरणाम।
करिहरिबैठे सुखआसनतब सोभद्रिकौ बिराजीधाम ८
बसुदेवादिक यदुबंशीसब पूंछतभये कृष्णढिग आय।
काविधिरणभोकुरुपांडवसों रणपतिसकलकहौसमुझाय
लखिअभिलाषाप्रभुसबहिनकी भाषायुद्धचरितबिस्तारि।
गोयनराखाकछुराधापति योग्यायोग्य कह्योनिर्धारि१०
सुन्यो सुभद्रासुत जूझबजब तबपरिगयो रामतेकाम।
बिलखनलागेयदुबंशीसब लैअभिमन्युबीरकोनाम ११
मानहुंसुरपतिकरआयुधछुटि द्वारावतीगिरयोसोआय।
मातुदेवकीगहिदुहिताको लागीहहरिउचारनहाय १२
भईउदासी पुरवासिन हिय सांसीदुःखदशा सबकाहु।
गुणि२रोवतगुणअभिमनुके भूलोसबहिंचित्तउत्साहु१३
धर्मबुझायो तबकेशवकहि धीरजधरयोसमयसबपाय।
बधूउत्तराउरगर्भहिकहि दीन्ह्योसबप्रकारसमझाय१४
आनकदुंदुभि दुखत्यागयोतब हर्षितभई देवकी माय।
मनहुंमल्लिकालहिआतपतपपावसपायउठीहरिआय१५
पुनिशुभसम्मतकरिगोविंदपितुकोन्ह्योंपिंडदानअनुमान

अगणितविप्रनकहंभोजनदै दीन्ह्योदानमानसन्मान १६
इनकीगाथाअसबरणीशुभ अबपुनिइन्द्रप्रस्थकोहाल ।
तुवमनभावतमैंगावतहौं सुनियेवीरपरीक्षितलाल १७
कछुकदिनौनाकेबीतेफिरि कुन्तीनिकटआयमुनिब्यास ।
मिलेसहादरनृपधर्मजकहं कीन्ह्योबचनकछुकपरकास
पारथसुतकी गृहदाराजो उत्तरानृप विराटजाजौनि ।
गर्भमताकेजोबालकहै होइहैचक्रवर्ति इकआौनि १६
बंशप्रशंसक अरिध्वंसकसो सुंदरभूपरूप सरदार ।
निजजनपालकदुष्टनघालक करिहैदूरिधराकोभार २०
कृष्णायसु ते चक्र सुदर्शन रक्षाकरी गर्भके माहिं ।
नामपरीक्षित तातेहोइहै यामहंतनिकअंदेशानाहिं २१
सारसुधावच द्वैपायनके सुनिमुदलह्यो युधिष्ठिरराय ।
पूजनकीन्ह्योंपुनिमुनिवरको भोजनपानदीनकरवाय २२
यज्ञकरनको धनलावनहित करिबेहेततासु उपचार ।
युक्तिउक्तिसोंउपदेशौंदै पुनिमुनिगमनकीनमुदधारि २३
तबजन्मेजयफिरिपूछतभे हेमुनिकहौमोहिं समुझाय ।
शिषद्वैपायनदैगमनेजब तबकाकियो युधिष्ठिरराय २४
बैशंपायन आलापतभे सुनियेकथा परीक्षितलाल ।
जोकछुभाष्योद्वैपायनने गुणासोधर्मकीनप्रतिपाल २५
सम्मतकरिकैसबबन्धुनसों मखहितद्रव्यलाइबेकाज ।
सबदलबादलसजवावतभे अगणितशूरअश्वगजराज २६
ऊंटसांड़ियाअरुखच्चरबर स्यंदनसजे सारथिनलाय ।
भारबाहकौपूरुष सजिगे पांडवसजे पांचहूभाय २७
नमस्कारकरिनारायणको सुरपतिशेशमहेशहिध्याय ।

मूषकवाहनको अर्चाकरि परिधृतराष्ट्रभूपके पाय २८
धेनुसवत्सा अभिवादनकरि बिप्रनपादकीन परणाम।
दानमानसोंसंतोषितकै वहुबिधिदेययाचकनदाम २६
सर्बिधिस्वस्त्ययनसुनिविप्रनमुखसबसुखशकुनपायतेंहिकाल
निज२स्यंदनआनंदनसों भाइनसहितबैठमहिपाल ३०
राखियुयुत्सहिद्वाधिपढिग चलिभेकरतमंगलाचार।
शकुनमनावैं सहगामिनितिय धरिदधिदूबरुखरांकोथार
अस्तुतिगावतमगलन्दीजन मागधकरतवंशबिस्तार।
जयजयभाषतबहुमहिसुरवर जसकछुनृपनकेरब्यवहार
क्रमसोंनांघतगिरिसरिताबन गतेहिमेरुनिकटनियराय।
जेहिंगिरिढिगतेंद्वैपायनमुनि धनलावनहितआयेबताय
जायपहूंचेजब गिरिवरतट कीन्ह्योधर्मभूप तहंबास।
अग्रकरायेसबब्राह्मणगणपढ़ि२करतविघनजेनास ३४
रक्षक राख्यो चौतर्फाते दशहूदिशासुभट ठढ़िआय।
बांधेकत्ता बलवत्ताजे सन्मुख होतकालभगिजाय ३५
तिनकेआगे धनुधारीवर अतिबलखरेधरे धनुबान।
साहनबाहनचौगिर्दाते कीन्ह्योकिला केरनिर्मान ३६
मध्यबिराजेधर्माधिपतहं सम्मतद्विजनकेर मनमानि।
क्रियोधारणाशिवशंकरकैनिरशनध्यानहियेशुभआनि३७
शय्याकीन्ह्योतहंवसुधाधिप आसनकुशा कांसकेडारि।
लगेरमावनउरगिरिजावरगतनिशिभईदिवाकरपारि३८
नमस्कारकरिवरदिनकरको विप्रनहवन अरंभनकीन।
मोदकपायसचरुआमिषशुभ आहुतियथायोग्यसबदीन
पूर्छिद्विजातिनतेसम्मतफिरि दीन्ह्योधनाधिपहिबलिदान

षटदशविधितेसिधिअर्चाकरि पूज्योव्यासआदिमतिमान
आगेकीन्ह्यो नृपब्राह्मणगण बांचतवेदकारिकाजौन ।
साथैशोभितद्वैपायनमुनि पहुंचेभूप जहांधनभौन ४१
खानिखोदायोतहंरतननकोअगणितपात्रमणिनकेपाय ।
हर्षितह्वैकैधर्माधिपसब भारनमध्यलीनलदवाय ४२
तिनकीसंख्याकेकहिबेकहं कीन्ह्यो अग्रपदै विस्तार ।
साठिसहस्त्रकलदिसांड़ीगेतिनकेद्वुगुनअश्वसमचार ४३
हाथीलदिगेतबग्यारहशत उतनेइंसकटलीनभरवाय ।
खरअरुखच्चरनरलादेजो तिनपरिमाणकहैकोगाय ४४
यहिविधिधनलै पुनिधर्मजनृप पूज्योशंभुनाथकेपाय ।
सहदलबादलगृहगमनतभे ऋषिमुनिविप्रपदनकोध्याय
समयव्यतीतोकछुमारगमहं हस्तिननगरगयेनियराय ।
खबरिपहूंचीरनिवासनमहं आवतभूपयुधिष्ठिरराय ४६
उठीकुन्तिकातबहर्षितह्वै साज्योसुभगस्वर्णकोथार ।
दहीदूबीहरिप्यारीलै चौमुखदियाकीन उजियार ४७
नवलनवोढ़ासहगामिनितिय संगह्वैचलींभवनकेद्वार ।
लगींअलापनतैमंगलपद जिनतनअतनतियाधिरकार ४८
पांचौभैयनसहधर्म्मजनृप आयेपहुंचि भवनकेद्वार ॥
चरणपखारयोमहतारीकेकीन्ह्योमातुचूमिमुखप्यार ४९
कंचनथारीदोउहाथनलै नृपशिरआरतिलियोउतारि ।
देयनिछावरिसबपरजनकहं दीन्हयोद्विजनदानसत्कारि
मनमुदभरि२सहगामिनितिय वर्षतलाजलाजपरिहारि ।
रह्योनबाकीकोउयाचकगण कीह्योसबहिअयाचकझारि
तबलैआयसु पुनिमाताको भूपतिगये राजदर्बार ।

चारिउभैयन सहशोभितभे जेकोउअन्यशूरसर्दार ५२
सचिवसलाहोहितकारीलै शोभितभयेसभामहंआनि ।
सैनाटिकिगइंसबशिविरनमहंबाहनबंधेयथाअस्थान ५३
यहौहकीकति असबीतिभै अबलै सिया रामकोनाम ।
कथामनोहरकिरिभाषतहैं सुनुसुररातसूनुमतिधाम ५४
इतैयुधिष्ठिरधनप्रापतकरि आयेहर्षसहित निजधाम ।
उतमखसमयोलखिराधापतिगदप्रद्युम्नसांबबलराम ५५
निशठसात्विकीकृतबर्मासह औप्रियभगिनिसुभद्रासाथ ।
इन्द्रप्रस्थकहंचलिआवतभे तजिद्वारकाद्वारकानाथ ५६
सुन्योआगमनतबवृद्धाधिप बिदुरयुयुत्सआदिपठवाय ।
करिसम्मानितयदुनंदनकहं दीन्ह्योउचितबासगृहलाय
बसनअसनसोंपरितोषितकरि कीन्ह्योसबप्रकारसत्कार ।
तेहिसमइयाकेअवसरमहं सुनियेभूपपरीक्षितबार ५८

स० द्रोणतनयवरप्रेरितमंत्रइकंतलख्योअभिमन्युकिरानी ।
आयसमायगयोउरमेंदुखदासोभयोअतिमृत्युनिशानी ।
घोरकुलाहलभूपअगार व्यथाबिकरारहिये हहलानी ।
सोसुनिकैगुनिकैमनमारनिवासगयेचलिशारंगपानी ५९

जायव्यवस्थातहंदेख्योहरि रोवतकुन्तिआदिसबबाल ।
आरतपर्योनृपमंदिरमहं हवैरहिहायहायबिकराल ६०
कुन्तीनिरख्यो हरिआयेगृह धाई कृष्ण कृष्णलैनाम ।
चरणनलागीदुखपागीअति आगीजगीदुःखकीधाम ६१
आंशूबरसत अति नैननमहं आरतबैनकीन परलाप ।
हेदुखभक्षकदुखियनरक्षक काहेनकरतदूरिजनताप ६२
कियेप्रतिज्ञाप्रभुपूरुबयह रखिहैंगर्भ उत्तरा क्यार ।

सोबिसरायोकतराधापति काहेनकरतदूरिदुखभार ६३
अतिशयबैरीभोद्रोणीमम कीन्ह्यो बधू गर्भको घात।
अणबिसरायोकिमिआपनप्रभु काहेनकरतदूरिदुखतात
सबबिधिरक्षक तुमपांडवके जैसेपलक रखावत नैन।
मोरअनाथिनिकेपालकतुम काहेनहरतदुःखसुखसैन ६५

स० लक्षअगारभयेरखवारतुम्हींबिषते भयेभीमरखैया।
पांडुबधूपतिराखनकाज भयेतुमहींप्रभुवस्त्रबढ़ैया।
बंदिसहायक वादिनहूंतुमधर्मगये बनपांचहुभैया।
अबतदेखतनैननसोंअबयाचनरक्षतक्योंनकन्हैया६६

तुव भगिनी सुतबधू उत्तरा ताको गर्भहोय इमिनाश।
हायव्यवरुथाअसिपावैसो तुमलगपांडुबंशकीआश ६७
धर्मपवनसुतअरुपारथभट अनरथ देखिजियैंकिमिनाथ।
कुरुपांडवकुलप्रतिपालकसोउबालकआजुहोतबेहाथ ६८
बंशकिआशायहिबालकलग सोऊनाश भयोअबहाय।
कुलअवलंबनअबनाहींकोउ केहिबिधिसहोदुःखयहजाय
बिनयहमारोसुनिसंकठहर उतचलिबेगिजिआओवाहि।
पूरणकरियेप्रणआपनप्रभु तुमलगसकलमोरिउत्साहि
यहिबिधिकुंतीकहिमाधवसों मोहितगिरीधरणितलधाय
दीनदयालीबनमालीतब गहिकरआतुरलियोउठाय ७१
बहुसमुझायोतेहि धीरजदै पुनितहांबिकलसुभद्राआय।
भरि२ आंशूदोउनैननमहं बोलतभईबचनदुखदाय ७२
अनरथकीन्होअतिद्रोणीद्विजप्रकटितभयोमृतकसुततात।
बंशबिलान्योकुलपांडवको यहदारुणदुखसहोनजात७३
तुवअनुकंपातेपांडवनृप भारतजीति लह्योनिजराज।

द्रोणीआयुधतेपवनजको राखतभयेतुम्हीं ब्रजराज ७४
करतपराजयसोआयुधअब तुमपउत्रको जीवनदाहि ।
याबिधिहारेअबपांडवसबद्विजपरिहर्योमूलअवगाहि७५
यहदुखदेखौअबराधापति यांचततात तोहिं परिपाय ।
मानिनिहोराममबैननको भागिनेयसुतदेहुजियाय ७६
जोप्रणकीन्ह्योतुमद्रोणीसों पालनकरौ तौन अबभाय ।
तेज तुम्हारोमैंजानतिहौं तातेबिनयसुनावत गाय ७७
सुनिअसबानीनिजभगिनीकै धीरजदियोताहियदुराय ।
कछुकचिंतवनउरपुरमाकरि गेपरसूतिगेहहर्षाय ७८
तहांबिराजे बहुगुनिग्रांजन जे बहु यंत्र मंत्र बेतार ।
बैठे बैद्यकके ज्ञाताबहु रक्षन हेतगर्भ सुकुमार ७९
घृततिलचाउरअरुसरसोंकर लीन्हे करत मंत्रउच्चार ।
तेहीसमइयाकेअवसरमा कृष्णहिं देखि उत्तरानारि ८०
अतिदुखपागी रोवनलागी कहि २ कृष्णचंद्रको नाम ।
दीनसहायकजनसुखदायकघायकबिपतिबरूथनदाम८१
हे शारंगधर हेकरुणाकर दुखहर वेदरहे गुणगाय ।
हेकमलापतिसंतनशुभगति काहेनहरतबिपतिममहाय
असुरनिकन्दन सुरवरबन्दन हेनंदनंदन दीन दयाल ।
गोपगोकुलागोगोपीपति हे यशुदाकेलाड़िलेलाल ८३
मोरअनाथिनिकोबालकयह सोऊनाशभयोयहिकाल ।
कासुखदेखबहमआगेअब उरअवलम्बजातसोबाल ८४
अभिमनुरानीकी बानीअस सुनि द्रौपदीदीनसमुझाय ।
यहिक्षनबहुअरिउरधीरजधरु मातुलश्वशुरतोरयदुराय॥
सोतुवअन्तिक चलिआये अब ह्वैहैशोकओकसबनाश।

तेहीसमइयामाराधापति कीन्ह्यो दयादृष्टिपरकाश ८६
मंत्राकर्षणकरिलीन्ह्योझट तबसचेतभे पिता तुम्हार।
हर्षितह्वैगैं महरानी सब लागेहोन मंगलाचार ८७
वृष्णिबंशकेवृद्धाधिपजे कीन्ह्योनामकरण अभिराम।
बंशक्षीणपहंछबिआगरभो तातेभये परीक्षितनाम ८८
सुखसोंनारी नरआनंदह्वै लागेदेन द्विजातिनदान।
भयेअयाचकसबयाचकगण ऋषिमुनिलह्योसबसन्मान॥
बजैंबधइया नृपमंदिरमहं मणिधनदेत कुन्तिकामाय।
हर्षितगावैं महरानी सब नाचैंबारमुखी बहुआय ९०
यहौंहकीकतिअसबीततिभै अबसुनुओरपरीक्षितलाल।
तुवपितुभेजबइकसहिनाके तबधनलायेधर्मभूपाल ९१
भयेहस्तिनापुर राजितनृप सेवैंचारि भाय सुखदाय।
तेहीसमइयाकेअवसरमा आयेतहां ब्यासमुनिराय ९२
तिन्हैंयथोचितलैआदरसों स्वागतकीन्हयुधिष्ठिरराय।
सभाशुभासनबैठाय्योलै बोलेहाथजोरिशिरनाय ९३
मखहितप्रथमैउपदेश्योम्वहिं सोअबसमयगयोनगिचाय
उचितबताइयसमुझाइयसो जातेअश्वमेधबनिजाय ९४
पुनिअसभाष्योनृपमाधवते दीक्षितहोहुयज्ञप्रभु आप।
मोहिंसिद्धिप्रदतुवदायाहैतुवमुखलखतनशतत्रयताप ९५
मधुरीबाणीसुनिधर्मजकी शारंगपाणि कह्योहर्षाय।
तुवममकुलपतिभुविभर्ताहौआगरनीतिरीतिसमुदाय ९६
नृपतुव कर्तबसब मेरोहै ममसर्बस्व तोर भूपाल।
हर्षितकरियेमखकारजशुभ हमहूंकरब हुक्मप्रतिपाल
धर्मअलाप्योतबमुनिबरसों हेप्रभुदयादृष्टि अबलाय।

मखआरंभनदिनसुन्दरगुनिओमुखदेहुमोहिंफुरमाय ९८
तबद्वैपायन दिनशोधनकरि बोधनकीन धर्म्ममहिपाल।
चैत्रपूर्णिमासबशुभदान्नृप यज्ञारंभ होयततकाल ९९
योजितकरियेसामग्रीसब विप्रनमुनिनऋषिनसमुदाय।
देहुनिमंत्रणपरचारककरशुभदिनशोधिरहैंसबआय १००
दशदिशिवसुधाकेजीतनकहंछोंड़हुश्यामकरणहयलाय।
रक्षक पठवो भटपारथकहं दैसंग शूरसैन अधिकाय १
भीमभयंकर सहदेवालै नकुलौ आदिवीरबल धाम।
येमखरक्षणहितघरमारहैं तौसबहोहिं भूपतुवकाम २
सुनिअसआज्ञाद्वैपायनकी नृपअर्जुनसोंकह्योबुझाय।
बंधुपधारौहयरक्षणहित बसुधाबिजयकरहुतुमजाय ३
जोकोउयोधागहिबांधैहय ताकोप्रथमदियोसमुझाय।
जो समुझायेते मानैना जीतेहुताहि युद्धकरिभाय ४
यहिबिधिशिषदैनृपपारथकहंहर्षितधर्योपीठपरहाथ।
पुनिमुनिआयसुलैसुंदरदिन दीक्षितयज्ञभयोनरनाथ ५
वृद्धमहीपतिकीआज्ञालै विधिवततज्योअश्वक्षितिपाल।
कोकवि बरणैछवि बाजीकी लाजीदेखिहंसकीचाल ६

स० अश्वतर्य्यौजबधर्म्ममहीपद्विजातिनमंगलबैनउचार्यो।
दानविधानकियोअतिशैशुभगानसोहागिननेअनुसार्यो॥
सैनचचैनर्नियोजितकै द्विजवंदिगोविंदपदैह्रियधार्यो।
पुरुषारथसोंजगजीतनकोमखस्वारथपारथवीरपधार्यो ७

चल्योरुबइचिक्कतह्वैआगेहयअतिछबिमधुरहंसकीचाल।
जेहिदिशिताकैमनचलिबेकहंपाछेचलतजिष्णुबलशाल८
संग सहायक भटबांकेअति धारेअस्त्रशस्त्रकर माहिं।

बिचरतजावैंतेउपारथसह शंकाजिन्हैं कालकोनाहिं ६
उत्तरदिशिह्वैसोबाजीबर पूरबचल्योपरीक्षितलाल ।
सोअबसुनियेजेहिदेशनमहं अतिशयभयोयुद्धबिकराल
सुन्योआगमन वरबाजीको राजीभोत्रिगर्त भूपाल ।
सोउठिदौरतभोसेनासह लाग्योगहनअश्वशुभचाल ११
समुझिशत्रुतामहभारतकी बाजीगहतजिष्णु अवलोकि ।
मृदुवाणीसोंसमुझावतभे बाजीगहनहेतल्यहिरोकि १२
गुणिसुतबन्धवबधभूपतिसो अर्जुनबचनकीन नाकान ।
अतिरिसरातामदमाताह्वै कीन्होधनुषबाणसंधान १३
सिगरी सैनाको आयसुदै शूरनदीनि गहूलेलकार ।
अपनाअर्जुनकेसन्मुखह्वै कीन्ह्योबाणवृष्टिअधिकार १४
पैदल पैदलसों भिरतभे औअसवारनसोंअसवार ।
रथीरथीसोंसारथिसारथि औगजदंतमहौतनमार १५
सुमिरिभवानीजगरानीको क्षत्रिन अस्त्रसुधारेपानि ।
युद्धअरंभ्योदोउओरनसों छोड़नलागबानधनुतानि १६
सूरज बर्माको भाई इक केतुसुबर्म बखानत नाम ।
तेहिधनुधारणकरिक्रुद्धितह्वै पारथसंगलीनसंग्राम १७
अगणितशायकहनिपारथउर कीन्ह्योमहाघोरघमसान ।
नभतललोप्योशरजालनसों तोप्योअंधकारसोंभान १८
तबपुरुषारथकरिपारथभट लीन्ह्योसशरशरासनहाथ ।
विघ्ननिकंदनपदबंदनकरि धरिउरध्यानद्वारकानाथ १९
नमस्कारकरिनारायणकोभुजबलशक्तिहलकिउत्साह ।
छोड़योशायकरिपुघायकसोनायकप्रबलपांडुकुलमाह २०
दशदिशिबेध्योशरजालनसोंघालनकीनअगनबलवान ।

भयबश्यबसुधाहालनलागी भारतफेरिअरंभ्योआन २१
भागनलागेतबकायरजन घायरकरनलाग बढ़िवार ।
मत्तगयंदाचिघरनलागे हिकरनलागेनवलबछ्यार २२
खगमृगइतउतधावनलागे करषाभाटसुनावनलाग ।
मुनि२हरषारनशूरनमन लागेविघनबतावनकाग २३
तेहीसमइयाकेअवसरमा पारथजग्यो कोपकोसान ।
खैंचिचढ़ायो धनु बाहुनसों रोदा ठन्न ठन्नठन्नान २४
गांडिवधन्वाजगजानतजेहि आनतबड़े २ भटत्रास ।
अग्निदेवतातेहिदीन्हयोरहैसोशरयुक्तकीनसहुलास२५
अतिलाघवतासों करषनकरि मार्यो केतुबर्मउरतानि ।
गिर्योधड़ाकासोधरतीपर देखतनैनसैनबिकलानि २६
दूसरभैया धृतबर्मा तेहि जूझतदीख आपनो भाय ।
कोपिसारथीकालेलकार्योपारथनिकटराखुरथलाय २७
रथैबढ़ायो तब सारथिने पारथनिकट आय नियरान ।
तबललकार्योधनुधारीका रेभटसाधुहाथधनुबान २८
कायथपाये बधिबालकको घालकतोर पहूंच्योआय ।
भागिनजायेरनक्ष्यातनते देखिहौंतोरियुद्धमनसाय २९
अबलगठाने रणाकरन संग नाकहुपरा शूरतेकाम ।
चूरनकरिहौंत्वहिंएकैशर देहौंबास आजु यमधाम ३०
यहकहिधन्वाटंकारतभो धारत भयो बान बिकराल ।
ताकिबक्षस्थलभटपारथको मार्योकोपिओपिशरजाल
गगन तमासा सुरदेखतशुभ खांसा शूरबीरसंग्राम ।
चोटसोलागीहनिपारथकर भविगिरिगयोधनुषअभिराम
दशाकोबरणौंबहिसमयाकी सुनियेबीर परीक्षित लाल ।

पारथकरतेधनुगिरिगाजब देखतगई सुरन उरशाल ३३
अतिबलकर्माधृतबर्माहै जेहिंधनुहत्योजिष्णुकरक्यार।
अबधौंकर्त्तबहारकरिहैंका यहसबशोचिरहेसरदार ३४
अरिदलदलकयोमुदझलकयोउरपारथजीतिलीनममस्वामि
रिसबशनैनाअरुणारेकरि पुनिधनुधरयोकृष्णअनुगामि
मनैमनायोगोबद्ध नधर धनुगुनतानिअगिनियांबान।
सोधरिधमकयोधृतबर्मापर पुनिशरअन्यकीनसंधान ३६
इक २ मारेसब शूरनउर उठिगो महाघोर घमसान।
भागीसैना रबिबर्माकी रह्योनखेत चेतकोउज्वान ३७
सहसनक्षत्री भुविमापटिगे छुटिगे हाथकेर हथियार।
सूरज बर्मा तब देखतभो पारथरूड चंड बिकरार ३८
तज्यो शरासन शरहाथसे दौर्योसमर पियादेपाय।
बिनयसुनायोतबपारथको द्वैहाथ जोरिशिरनाय ३९
हेधनुधारी रिसत्यागहुअब मांगतचरणशरणतुवज्वान।
देहुजोआयसुशिरधारैंसो तुमसनसमरनहींकल्यान ४०
सुनित्रिगर्तपतिकोबाणीबर पारथकह्योताहिसमुझाय।
हेनृपबंधुनसहआयोचलि जेहिपुरबसैंयुधिष्ठिरराय ४१
अश्वमेधमखहैधर्मजको दीख्योआय तासु उत्साह।
सुनिसंभाषणइमिपारथको निजघरगोत्रिगर्तपुरनाह ४२
यहौहकीकति असबीततिभै अब आगेकासुनो हवाल।
चल्योस्वइच्छितफिरिबाजीबर पीछेचलेतासुप्रतिपाल
गयोतुरंगमचलिज्योतिषपुर जहंभगदत्त भूपबरियार।
ताकोलरिकाबजदन्तनृपआगमसुन्योबाजिबरक्यार४४
आयसुदीन्ह्योकहिमन्त्रिनते सिगरी सैन्यहोयतय्यार।

साहनबाहनसजिआवैंसब आतुरसजैं शूरसरदार ४५
हुक्मपाइकैतेहिभूपतिको मन्त्रिनसबहिदीन समुझाय।
क्षणेमुहूरतकेबीततमा क्षत्री सजेसाज सबलाय ४६
पहिलनगारामा जिनबंदी दुसरेम बांधिलीनहथियार।
तिसरेनगारेकेबाजतखन चढ़ि २ बाहनभयेतयार ४७
सज्योमहावत मयमंताकहं तेहिभोवज्रदंत असवार।
डगरीफौजैपुरबाहरका बिप्रन कीन मंगलाचार ४८
आयपहूंच्यो पुरडांड़ेपर हयगहिबे हितकियो उपाय।
तबसमुझायोभटपारथने नृपममबचनमानुमनलाय ४६
भूपयुधिष्ठिरकोबाजीयहु तुम्हरे गहनयोगनहिंराज।
युद्धनीकोबुधिवंतनको इतनाकहा मानिल्योआज ५०
कह्योयथारथइमिपारथने पैतेहिंकछुक कीननाकान।
अश्वबांधिबोतजिताहीक्षणपारथनिकटआयनियरान५१
हांकसुनावतभो सन्मुखह्वै रेभटसाधु हाथधनुबान।
यहकहिशारंगगुनजोर्योशर बर्षनलागबानकेघान ५२
इतउतसैना दोउ तत्परह्वै लागेकरन युद्धकोकार।
पैदलपैदलकेसन्मुखभे औअसवारनसों असवार ५३
द्विपदचलायोतबआगेकहं अतिबलवज्रदन्तनरनाह।
खेलनलाग्यो रणपारथते एकते एकशूररणशाह ५४
पुनि संधान्यो करधन्वाका लैकै नाम दूर्गा क्यार।
झरिअसिशायकवर्षनलागो भूपतिवज्रदंतबरियार ५५
अगणितशायकहनिपारथउरनभतलछ्वायकियोअंधियार
दशदशशायकबाजिनमारे सारथिहियेकीनपरिहार ५६
तेसबकाटेभटपारथने जिमिरबिउदयकुहिरनशिजाय।

ध्यानधारिकैनटनागरका सारथिरथैबढ़ायोधाय ५७
गांडिवधन्वाकर धारणकै अर्जुनसखा सांवरेक्यार ।
दशदिशिशरसोंपरिपूरितकरि कीन्होसमरभूमिहहकार
पुनिउरडार्योबज्रदन्तका धारणकोनअगिनियांबान ।
हांकसुनायोभटपारथने अबहुशियारहोसिबलवान ५६
खैंचिबिनोदासहरोदा को पारथहन्यो तीब्र नाराच ।
सोहनिलाग्योबज्रदंतउरनासहिसक्योबानकीआंच ६०
मुच्छिंतहवैगोतबहाथीपर करतेगिर्योधनुषओबान ।
खलभलपरिगातबसैनामा जूझ्योबज्रदंतबलवान ६१
क्षणइकबीतेफिरिचेतनभो तबरिसकीनमहाबिकरार ।
करीबढ़ायोतबआगेका सांकरिदीन शुंडमहंधार ६२
भयोगयन्दामदअन्धाअति सांकरिशुंडघुमावनलाग ।
निकटपहुंच्योभटपारथके दूसरमनोइन्द्रकोनाग ६३
दलमधिसांकरिफेरनलाग्यो कीन्ह्योखेतचेतबिनज्वान ।
कितनेउँक्षत्रीमर्दनकीन्हेकितनेउबाजिकोनबिनप्रान ६४
हनिश्मारत संहारतभट पारथ निकटजायनियरान ।
वारचलायोरथऊपरपुनि पारथगह्योशरासनबान ६५
अतिशयकोपितशरधारणकरि मारेकरीअंगबहुबाण ।
गिर्योघड़ाकासोधरतीपरक्षणमाभयोगातबिनप्राण ६६
द्विरदकेसाथै बज्रदन्तगिरि खायोबहुतअंगमा घाय ।
तवधनुधारीइमिबोलतभो सुनुनृपवज्रदंतबलराय ६७
दियोयुधिष्ठिरम्बहिंआयसुयह करुसबदेशपर्यटनजाय ।
बधनाकीन्ह्योकोहुराजाका दीन्ह्योबहुप्रकारसमुझाय
ताहितत्यागहुरिस हियरेते हमरेबचनकरो परमान ।

देतनिमन्त्रयात्वहिंधर्मजकाकीन्ह्योअश्वमेधमखठान ६९
जाहुहस्तिनापुरभूपतिचलि देखहु अश्वमेधसुखजाय।
सुनिअसबानीधनुपानीकी गोगृहवजदन्तसुखपाय ७०
चल्योतुरंगमतबआगेफिरि सुनियेवीरपरीक्षितलाल।
संगैसेना महराजाकी पारथधीरबाजि प्रतिपाल ७१
सिंधुदेशचलिहयपहुंचतभो ताकहंसुनौ यथारथहाल।
उतकोराजाहयआगमसुनि निकस्योसाजिसैनबिकराल
युद्धअरंभ्यो सोपारथते दोउदिशिचलनलागहथियार।
तेग तमंचाबाजन लागे गाजन लगे शूरसरदार ७३
छुरीकटारी बरसनलागीं इतउतचलनलागितरवारि।
बहुसंगीनैंचमकनलागीं क्षत्रिनगहीयुद्धकी पारि ७४
वैरजयद्रथको सबंरनकरि भूपतिलीन जिष्णुतेरारि।
अगणितशायकवरषावतभो दशदिशितोपिदीनशरझारि
घेरि पारथहि चौगिर्दाते लागे करन शस्त्र की वार।
तबधनुधारीउरकोपितभो चोपितभयोरिपुनबधकार ७६
गांडिवधन्वा संधानतभो तानतभयो अगिनियां बान।
हनि२मारतभोक्षत्रिनकाबसुधागिरतकरतबिनप्रान ७७
कोउबिबरगोवहिसमयाकै जसहाथिनमहं सिंहसमाय।
बाघबिडारैजसगौवनका हरिणनश्वानलेयतरिआय ७८
लवाखरेदैजसपक्षिनका पारथ तथा कीन घमसान।
कठिनीचोटैंलखिपारथकी भागेखेत छांड़ि बलवान ७९
तबसंतोषितमनअर्जुनभो नृपसोंकहत भयो समुझाय।
मोहिंयुधिष्ठिरकीअज्ञाहै काहुनबध्योपाणिनिजलाय ८०
तातेतुमका शिषदेइतहै भूपतिकरौ बचन पर मान।

तुम्हैं निमन्त्रणहै धर्मजको कीन्हो अश्वमेधकोठान ८१
रिपुतातजिकै चलिजाओतहं सुखसहयज्ञविलोकहुजाय ।
सुनिबचनामृतइमिपारथके भूपति दीनज्वाबमनलाय ८२
जीवनआशाजोपारथतुव तौतजि युद्ध जाहु भगिधाम ।
नातरुधन्वाकरधारणकरु हमसनखेत खेलुसंग्राम ८३
इतनाकहतै परलय ह्वैगे गरलयथा पिआयेनाग ।
करलयधन्वाटंकारतभो पारथभयेकोपि अतिआग ८४
तरलैशरलै गुन जोरतभो सारथि गही चपल हयबाग ।
बाणअसंख्यनबरसावतभो पावसयथामेघझरिलाग ८५
जितने योधा नृपसैंधवके सबके हने घने शर जाल ।
कितनेउक्षत्रीधरतीगिरिगे आयेजानि समरमाकाल ८६
कितनेउक्षत्रीघरभागतभे सहिनासके जिष्णुशरआंच ।
रह्योनक्षत्रीकोउवाकोरन जोहितनलगोनाहिनाराच ८७
तेहिक्षणदुहिताधृतराष्ट्रककी पहुंचीशिशुपउत्रलैआय ।
पारंथसन्मुखसोरोवतभे अतिशयआरतबचनसुनाय ८८
तेहिलखिपारथउरकरुणाभरिधनुधरिकोनलरबपरित्याग
सादरअमृतबचभाषतभे भगिनीतजौ मोहकीलाग ८९
कहुअभिलाखागुनिराखाजो माखाचित्तकौन हितवार ।
कह्योदुस्सलातबपारथते सुनियेबन्धवबचनहमार ९०
करुहितकारजयहिबालककोममसुतपुत्रजानिजियभाय।
रक्षकनाहींकोउयाकेअब सौंप्योतुमहिंतासुहितलाय ९१
भगिनीबानीदुखसानीइमि सुनिफिरिपारथकह्योबुझाय।
केहिबिधिनाश्योयहिसुतकोपितु कारणतौनकहौसमुझाय
दुहिताबोलीतबकौरवकै पितुबधसुने मर्योयहिबाप ।

आशतिहारीसबभांतिनअब रक्षकहोहुचापधरआप ९३
श्वासितकीन्होइमिपारथसुनिकह्योकिजाहुमोदसहधाम
सोसंतोषितह्वैमंदिरगै पुनिभजिसियारामकोनाम ९४
कथायथारथकहिगावतहौं भावततोहिं जौनिसुकुमार।
चल्योतुरंगमफिरितहवांते संगमजिष्णुसेनसरदार ९५
देशअनेकनअवलोकततब गोमणि पूरदेश बरबाजि।
सैनपहूंचीतहंपारथसहनिरखतसुभटजातजियलाजि ९६
वभ्रुबाहना नृपतहवांको आगमसुन्यो धर्महयक्यार।
औसुनिआगमपितुपारथका सानंदचल्योमिलनकेकार
संगब्राह्मण श्रुति बक्तालै पुरतेकढ्यो निरायुध ज्वान।
निकटपहूंच्योचलिपारथके पारथदीखतासुसामान ९८
निन्दितकीन्होबहुबातैंकहि हेनृपबचनकरहुपरमान।
हिज्जाकिसद्दशतजिक्षत्रीगुण तजिकरअस्त्रशस्त्रबलवान
ममतटआउबत्वहिंवाजिबना याविधिक्षुद्रसरिसमतिमान
धनुटंकारतहमआवतहैंनिरख्योसोनसुभटकोठान २००
हमहुंनिरायुधजो आइतइत तौत्वहिंउचितरहैयहसाज।
अवयहिसमयायहिबानाते चाहियकरनभूपत्वहिंलाज १
सुनियहबानीभटपारथकी अवनिपुरह्योअवनिशिरनाय
तेहीसमइयाकोगाथापुनि भूपतिकहौंओरकछुगाय २
वभ्रुबाहना सरमान्यो जब जान्यो तासुमातुयहहाल।
वेधिमहीतलसोनिकसतभै वहिथलप्रकटभईततकाल३
नागतनूजाजेहि भाषतकहि पहुंची वभ्रुबाहनापास।
करिसम्भाषणसमुझावतभै हेसुततजहुलाजकीआस ४
नागकन्यका मैंमातातुव पारथपिता तोरप्रख्यात।

सदलपधारे इतसंगरहित तुम्हैंनउचितनेहकोनात ५
चितउत्साहितकरियाक्षत्रसुततिनसनकरोअचलसंग्राम।
यहैबड़ाई जगक्षत्रीकी मिथ्याकाह धरावतनाम ६
मातुउलूपीकीबानीसुनि कीन्ह्योबभ्रुबाहअभिमान ।
तनमहंकंचनकोबख्तरसजि झटपटधरोशीशपरत्रान ७
कस्योजांघियाकरिहार्थमा बायेंहाथलीन धनुबान ।
औरौ आयुधबर धारनके धारन कीनबीरबलवान ८
कटिमातरकसशरसरकसकसि फंसिपटजिरहजंजीरनलाय।
चंचलघोड़ारथजोड़ागहि कोड़ालीनहाथमहंधाय ६
जलरुहपांखीसीआंखीकरि राखीरोष लालरौछाय ।
बढ़िचढ़िरथपरशुभशोभितभोमानहुंइन्द्रअखाड़ेजाय १०
हयगहिअतिशयमदमाताह्वै कीन्होधनुषधारिटंकार।
खैंचिबिनोदासहरोदाको बर्षनलागबानजलधार ११
कोकबिगावैक्छबिवादिनकी क्षिनमहंपूरिदीनअंधियार ।
रबिअस्ताचलजनुगमनतभे रस्तानभमकीनिशरपारि १२
दशदिशिशायकपरिपूरितमे अर्जुनसैनउठीबिललाय ।
निश्चयमनमाअनुमान्योयह सबकहचहतकालअबखा य
लोपितह्वैगातबपारथरथ सारथिअंकबंकह्वैजाय ।
तेहिसमइयाकेअबसरमा सजग्योबीरधनंजयराय १४
बाधानाशनकोसुमिरतभो राधारमनकेरधरिध्यान ।
बम्भोलाके पदपावनमें नावनकीनमाथबलवान १५
कर शरधन्वासंधारतभो औसारथिहिदीनसजगाय ।
बागबढ़ेइनकैसाधतभो नाधतभयोशरनगुनलाय १६
बरसनलाग्योघनसावनसम सुतकहंकीनडाटिहुशियार ।

समरपररूपरसंशोभितभो इतउतपितापुत्रकोमार १७
दोउधनुधारी घनबाहनसम एकतेएक दईकेलाल ।
अतिबलगरजैंनिजपारिनपरत्यागैंअस्त्रशस्त्रबिकराल१८
परेअखण्डनशरखण्डनकरि इककाटैंइकरहोचलाय ।
शरपरिपूरितभैपृथ्वीतहं सुरगणदेखिरहेहर्षाय १९
तेहीसमइयाकेअवसरमहं सुनियेकथापरीक्षितलाल ।
बभ्रुबाहनैअतिविक्रमकरिधनुगुणधर्योबानबिकराल२०
भूमधिमार्योहनिपारथके अतिशयतरलगरलनाराच ।
घाउआइगाप्रपितामहके नासहिसकेअसहियतआंच२१
मुर्च्छितगिरिगेतबस्यंदनपरक्षणमहंसजगफेरिभोज्वान ।
भयोहुताशनसमक्रोधितपुनिगांडिवधनुषकीनसंधान२२
औनिजपुत्रहिललकारतभो धनितुवबीरबाहुउत्साहु ।
अबझरिरोंकेममबाननकोदेखिहौंतोरबिजयकोलाहु२३
यहकहिअगणितशरबरषतभोदीन्ह्योपाटिधराआकाश ।
दशदिशिरूंधेअतिगूंधेशर भागेशूरत्यागिजियआश२४
बभ्रुबाहना धनुठाटनकरि काटतभयो अनेकनबान ।
तबभट पारथफिरिपाटतभो एकतेएक धनुषधरज्वान२५
अर्द्धचन्द्रशरपुनिपारथधरि करिउरकोपिदीनपरिहारि ।
बभ्रुबाहनाकेस्यन्दनकी ध्वजकोकाटिदीनमहिडारि २६
बहुशरमार्योतनबाजिनके रथचकचूरकीनहनिबान ।
बभ्रुबाहनाभुविकूदोतबकरिअभिमानलीनधनुतानि२७
खबरदारहोखबरदारहो यहकहितजेअमितनाराच ।
रणमहिदीन्ह्योशरजालासम चहुंदिशिरह्योअंधेरारांचि
कितनेउंप्रविशेउरपारथकेस्वारथविजयसमरनिजजानि।

काटेछांटेसोपारथ सब अपनौहनेघनेशरतानि २६
बभ्रुबाहनाशरआयुधसम बेधतभयोजिष्णुउरमाह।
हतिमर्मस्थलसोपारथको अघतलगयोधराकरिराह ३०
गिरयोमूर्च्छितरथपारथतब मचिगोसमरमध्यहहकार।
भईअचैनासबसैनातब पारथजियनजानिबेकार ३१
पारथबाणनते बेधिततब घायल बभ्रुबाहना ज्वान।
सोऊगिरिगार्महिमुच्छितह्वै अबधौंकाहकरैभगवान ३२
तेहीसमइयाकेअवसरमा सुनियेकथापरीक्षितलाल।
प्रियपतिसुतकोसुनिमरिबोउत आईचित्रअंगदाबाल ३३
देखिदुर्दशासुतस्वामीकी रोवनलागिछांड़ि डिडकार।
छौकरछातीकूटनलागी बसुधागिरीबिकलबिकरार ३४
मोहबश्यह्वैकछुदेरीलग बसुधापरीरही मुरझानि।
पुनिचितचेतनकरिउठिकैतहंभाषणलगीशोककोबानि३५
पतिसुतगुणगनमनसुमिरनकरि रोवतहायहायउच्चारि।
सोदुखसानीसुनिबानीतहं आईतुरतउरगसुकुमारि ३६
नामउलूपीजेहिभाषतकहि पारथवीरकेरि बरबाम।
चित्रअंगदातेहिदेखतखन रोदनत्यागिचित्तलहिसाम३७
वचनउलूपीतेभाषतिभै बिधिबिधिकीनिभगिनियहकाह।
ममसुतबाणनसोंपातितयह कागतिलह्योसमरमहंनाह
लहितुवसम्मतसुतकीन्ह्योरणसोयहअनरथपरोदिखाय।
तातेतुमकासमुझावतिहौंपतिसुतबेगिजियावहुजाय ३६
भाषिसपत्नीसोंबातैंइमि गहिपतिचरणफेरिबिकलानि।
बभ्रुबाहनातबचेततभो बिधिगतिअकहजातनहिंजानि ४०
पितामरणसोअवलोकतखन रोदनकरनलागदुखपागि।

नागकन्यकासोंभाष्योइमिमातासुनौमोरहितलागि ४१
तुवआयसुलैरणठान्योंमैं कीन्ह्योंपिताअपनबिनप्रान।
यातेअधिकोअघकरिहौंका पैहौंजगतमध्यअपमान ४२
निश्चयभाषतअबमाताहम राखबनहींआपनो प्रान।
हौहितकर्त्ता जो मेरीतौ यहिक्षणदेहुपिताकोदान ४३
यहकहिमरिबेकोसामाकरि बैठतभयोभूप बलधाम।
तेहीसमइयाकेअवसरमा भाषतजासुउलूपीनाम ४४
दुखपरिपूरितह्वैताहीक्षण कीन्ह्योमूरिसजीवनिध्यान।
तुर्ततहां सोचलिआवतभै सोहीनागसुताकेपानि ४५
बभ्रुबाहनासों बोलीतब हेसुत बचनकरौ परमान।
पितुउरऊपरमणिधारहुयह देखौकाहकरतभगवान ४६
मणिलैभूपतिआतुरतासों पितुपरधर्योसहितअनुराग।
तेहिक्षणपारथउठिठाढेभे मानहुंपरेशयनतेजागि ४७
हर्षितभूपतिपितुपांयनगिरि कीन्ह्योहियेमोदिपरणाम।
कंठलगायोतबपारथने सबहिनभयोहर्षअभिराम ४८
दोउतियपारथतहंदीख्योजब पूंछ्योहेतुआगमनकयार।
नागकन्यकातबभाषतिभै सुनियेसत्यवचनभर्त्तार ४९
तुवबधसुनिकैहमआईं इत अनरथलख्योयुद्धमहंआय।
बरुण कुबेरहिलैसुरपतिलग तुमसनसकैबिजयनहिंपाय
सोतुमहारेसुतसन्मुखमा कारणसुनौतासुकोस्वामि।
जादिनकीन्ह्योतुमभीषमबध भारतरणाधर्मकोथामि५१
तेहीसमइयाकेअवसरमा सबसुरगये सुरसरीपास।
मंत्रविचार्योसबआपसमातुमकहंशापदीनसहुलास५२
यहिरणअधरमकोवाजिबफलपैहैजिष्णुअबशिरणमाहिं।

बधोजाइगोनिजसुतकेकर यामहंतनिकअंदेशानाहिं ५३
सोईशाप यह सुरनन्दनको रणमहंआजउदयभोआय ।
करोनशंकाकछुजियरेमा स्वामीसत्यबचनमनलाय ५४
अबबहिअघतेतुममोचितभयो सुनियहजिष्णुहियेहर्षान।
बभ्रुबाहनासोंभाषतभो करुसुतमोरबचनपरमान ५५
हमअब जैहैं चलिबाजीसंग लैकैसाथसैन्य सरदार ।
तुम्हैंबुझायेयहजाइतहै कीन्ह्योअवशिकह्योसोम्वार ५६
चैतपूर्णिमा महंधर्मजनृप करिहैं यज्ञकेर उत्साह ।
तहं तुमजायोचलिमातनसह जातेखुशीहोयंनरनाह ५७
शिषदैसुतकहंतबपारथभट कीन्ह्योबिदातासुहर्षाय ।
चल्योतुरंगमलखिसैनासह अपनौचलेगणेशमनाय ५८
बजैनगाराहहकाराकरि घहरतसुरव शंखघरियार ।
वेदकारिकाद्विजउच्चारत ढाढ़ीकरषाकथतअगार ५९
आगेबाजीगतिताजीसों राजीचलत हंसकी चाल ।
तेहिकेपाछेरथपारथको घहरतचक्रशब्दरिपुशाल ६०
दलकाहलकातेहिपाछेशुभ काछे शूर समरकोसाम ।
देखतछांड़तपुरमाड़तमग पहुंचेराजमहलशुभग्राम ६१
तहंवसुधाधिपबलशालीअति सहदेवपुत्रसंधिघननाम ।
सुनिअश्वागमसोबाहरकढ़िलीन्ह्योजिष्णुसंगसंग्राम६२
बहुबिधिबाणनकीबर्षाभै छांड़तदुओ दुओ परवार ।
तबरिसरातोहवैपारथभट अगणितअस्त्रकीनपरिहार६३
मेघसंधिकेरथसारथिको बाजिनसहितकीन संहार ।
धनुशरकाट्योघनसंधीको तबभटकोपकीनबिकरार ६४
कूदि झड़ाकारथऊपरते लीन्हयो बज्रगदा गहिहाथ ।

आतुरधायोभटपारथपर काट्योगदावानहनिपाथ ६५
विरथविशस्त्रीभाबालकजब तबधरिदीनजिष्णुधनुबान।
करिसंतोषितसमुझायोतेहिधनिधनिपुत्रधीरबलवान६६
क्षत्रिधर्मकोप्रतिपाल्योतुम अबमैं कहौं करहुसोकान।
यज्ञबिलोकननृपधर्मजकोआयोसुदिनशोधिबलवान ६७
सबसुखपइहौमखपूरणलखि आयोफेरिलौटिनिजग्राम।
यहसुनिपारथतेआशिषलै गोघनसंधिआपनेधाम ६८
चल्योतुरंगम फिरितहवांते साथैचले सैनसह पाथ।
चेदिनगरमहंचलिआवतभे जहंशिशुपालसूनुनरनाथ६६
जगतप्रतिष्ठितधर्मविनिष्ठित सुन्दरशरभबखानतनाम।
सुनतआगमनहयपारथको अंतिकआयकीनपरनाम७०
पूजनकीन्ह्योबरबाजीको मुदसहमिल्यो धनंजयराय।
यज्ञनिमंत्रणदैभूपतिको तहंतेबिदा भये हर्षाय ७१
दक्षिणदिशिकोपुनिगमनतभे जहंपरकोशलअंककिरात।
सबरेराजनसोंपूजालै पुनिदशअर्ण गयेहरषात ७२
तहंचित्रांगद महराजासो पारथसंग लीनरणआय।
ताहिपराजयकरिसैनासह लीन्ह्योविजयपत्रलिखवाय
बढ्योअगारीफिरिपारथभट पहुंच्योपुरनिषादकेजाय।
एकलव्यकोसुतअवनिपतहं सोऊयुद्धकरतभोआय ७४
कियोपराजयपुनिताहूकहं दक्षिणगयेबारिनिधिपास।
द्रविड़कोलपतिमाहिषादिनृपकीन्होजीतिगर्वकोनास७५
गयेगोकरणगिरिपारथफिरिजील्योतहांअमितमहिपाल
पुनि प्रभासथलगयेद्वारका जहवांबसैनंदकोलाल७६
अश्वआगमन सुनियादवगण पुरतेकढ़े अस्त्रलेपानि।

उग्रसेननृपयहचर्चासुनि लायेनगरजिष्णुसन्माानि२७७
आदरकीन्ह्यो बहुभांतिनते जसकछुनृपन केरव्यवहार ।
बिदाकरायेपुनिपारथका चलिभोअश्वसंगसरदार२७८
पश्चिमदिशिकोपुनिगमनतभे धरिकैकृष्णचंद्रकोध्यान ।
गयेपंचनदचलिबाजीबर पुनिगंधारदेशनगिचान ७६
गह्योअश्वकहंतहंशकुनीसुत पारथबहुतरहेसमुझाय ।
पैशिप वानीवैमानीना सैनासाजि कीनरण आय ८०
लखिरणउद्यतशकुनीसुतका पारथधर्योहाथधनुबान ।
सुभटअनेकनकेहनिहनिशर कीन्हेरुंडमुंडखरिहान८१
योधाजूझतलखिशकुनीसुत रिसकरिधर्योहाथहथियार
मुर्चालीन्ह्योभटपारथते बर्षनलागबाणअरङ्वार ८२
तबहुंकिरीटीतेहिवर्जतभा रिसवशकछूकीननाकान ।
अश्वसहायकहनिशायकतब दीन्ह्योकाटितासुशिरत्रान
तबअभिमानीमनआनीयह पारथबधौंआजरणमाहिं ।
सिगरेयोधनललकारतभो लरियेवीरशोचकछुनाहिं८४
सुनिअसआयसुनिजस्वामीको योधाबढ़ेमारिकिलकार ।
चहु दिशिघेर्योभटपारथकाखटखटचलनलागहथियार
तोमरपट्टिशधमकनलागे चमकनलगीतीक्ष्णतरवारि ।
कहु कहु तेगागमकनलागे कहु कहु गदादीनफटकारि
कहू कटारीकी चोटैभइं भाला भटन कीनपरिहार ।
कहु संगीननकीवारैभइं केतनेउजूझिगिरेसरदार ८७
कोपिधनंजयधनुधार्योतब लैकैमदनमनोहरनाम ।
बिनुशिरकीन्हेहनिअगणितधड़ करपगबेधिकीनबेकाम ।
बहुतकमारेउरभेदनकरि कितनेउंकाटिदीनधनुबान ।

सरथसारथीचकचूरणकरि अगणितबाजिकीनबिनप्राण
खलभलिपरिगैरणवसुधामा पारथरूपधरेजनुकाल ।
कौनौक्षत्रीअसबाच्योना जातनहन्योनाहिंघरकाल ९०
महाप्रलयलखितबमन्त्रीगण आतुरगयेशकुनितियपास।
कह्योहकीकतिजसबीततिभैभाष्योसकलसैनकोनास ९१
चलीशकुनितियतबतहंवाते आईपुत्रनिकटअतुराय ।
बर्जनकीन्ह्योरणकरिबेकहं पारथनिकटगईपुनिधाय ९२
तेहिलखिपारथकरधन्वातजि कीन्ह्योहाथजोरिपरणाम।
हेतुआगमनकोताकोसुनि पुनिसमुझायकीनतेहिशाम ९३
शकुनी सुतकोसमुझायोपुनि बन्धवलरतकाहबेकाम ।
बैरत्यागिकैमखदेखनको आयोधर्मभूपकेधाम ९४
यह सुनिशकुनी सुतमातासह लैकेसंगसैन सरदार ।
तेहिक्षणचलिगोनिजमंदिरकोपारथलह्योबिजयअधिकार
चल्यो अगारीफिरिबाजीवर बाजे पटहशंख घरियार।
बिजयनगारावहुबाजतभे गाजतचलोजिष्णुसरदार ९६
दशदिशिजीत्योपुरुषारथसों स्वारथधर्मभूपकोसाजि ।
पलटिहस्तिनापुरमारगकोतुरगतिचल्योयज्ञकोबाजि ९७
पारथआयसुलै चारनतब आये त्वरितधर्म नृपपास ।
माथनायकैसोभाषतभे सुनिये महाराजसहुलास ९८
भूमि पर्य्यटनकरिआनंदसों भुजबलजीतिभूमिभर्तार।
हयसहपारथतुवस्वारथकरि आवतलहेबिजयअधिकार
यहसम्भाषण सुनिचारनको हर्षितभयेयुधिष्ठिरराय ।
बोलिपठायोनिजबन्धुनको आयेतुरतहर्षिसबभाय १००
हाथजोरिकैसो बोलतभे राजन हुक्मदेहु फुरमाय ।

निजमतिसदृशसोकरिबेकहं उद्यतहवनतीनिहुंभाय १
बिहँसिमहीपतितबभाषतभे बन्धववचनसुनौमनलाय ।
आजमाघकी शुचिपूनोमन दूनो हर्षरहोदरशाय २
परणकीन्हेमखस्वारथको पारथदशौंदिशाजयपाय ।
सबसुखछावतसोआवतहै तुमहूंउचितकरहुअबजाय ३
शुभदमखालयकीरचनाबर हाल्यसाजदेहुसजवाय ।
तोरनलागैंचहुंओरनते कोरनकलप्रवालजड़वाय ४
आब गुलाबनसौंसींचौमग कोचौकांददेहुनिकसाय ।
परैंपांबड़ेपट अंबरबर घरघरकदलिदेहुगड़वाय ५
दूतभेजिकै नर राजनको सादरनगर लेहु बुलवाय ।
पुनिबुलवावहुमुनिऋषियनकोतेमखक्रियासँवारैंआय ६
धर्मराजकोअसआयसुसुनि गुनिमनभीमसेनअनुमानि ।
कियोयथोचितसोकर्तबसब क्रमसोंबिधिविधानतेजानि
पार्थनिमंत्रणाअतिआनंदसों आयेसदलसकलभूपाल ।
तिन्हैंसहादरलैवायुसुत दीन्ह्योसबहिनिवासबिशाल ८
ऋषिमुनिआदिकअरुभूसुरवर आयेवेदशास्त्र बक्तार ।
तिन्हैंबसायोलखिसुंदरथल कीन्ह्योसबप्रकारसत्कार ९
फिरिसामग्रीसबजोरतभे अतिबलभीमआदिसबभाय ।
घटपटथाराअरुथाराबर अगणितपात्रसौजसमुदाय १०
दहीदूध अरु रसगोरसलै घृतके ताल दीनभरवाय ।
कृत्तिसब्यंजनसहभोजनगन चहुंदिशिदीनढेरलगवाय ११
इककेसन्मुख इकठाढ़ोहै कहै सोखाहुखाहु मनमानि ।
दधिपयआदिकरुचिआवैजोपियौसोत्यागिलाजकीकानि
जोजहंचाहैजेहिबस्तूकहं सोतहंलहैं त्वरित हरषाय

भयोकोलाहलअतिनगरीमहं सगरीकथाकहैकोगाय १३
तेहीसमइयाके अवसरमा आये तहां कृष्ण भगवान ।
पुत्रपउत्रनकोलीन्हेसंगसात्यिकिसाम्बआदिबलवान१४
गदकृतबर्माअरुप्रद्युमनयुत आगमसुनतभीममुदछाय ।
सर्बबिधिअर्चनकरि पायंनपरि लायोजहांयुधिष्ठिरराय
कृष्णहिंदेखतखनधर्मजनृप स्वागतकीनदीन सुस्थान ।
कुशलकुटुंबिनकीपूंछ्योसब पुनिजसउचितकीनसन्मान
पुनियह पूंछ्यो नंद नंदनते हेप्रभुहमैं देहु बतलाय ।
गयोद्वारकाहयपारथसह सोसबकथासुनावहुगाय १७
विजयपराजयकहितादीहरि करियेमोरचित्तबिश्राम ।
कह्योयथोचिततबधर्मजते पारथकथासमरबरश्याम १८
तेहीसमइयाके अवसरमा प्रेरे जिष्णुकेर युगचार ।
भूपयुधिष्ठिरढिगआवतभे तिनसबकीनवृत्तउच्चार १९
चैनसैन सह हयलीन्हेजय कीन्हे धीरबीरको ठान ।
दीन्हेडंकाअहतंकाको पारथनिकट आयनिधरान २०
सुनतसुहावनमनभावनबच अतिशय धर्मभूपहरषान ।
दियोबसनधनबहुदूतनको नूतनबंधुखबरिसुनिकान २१
दुइदिनबीततमनचीततब पुरतटजिष्णुपहूंच्योआय ।
कोकबिगावैछबिवाक्षनकी सुरपतिसमरहेतजनुजाय २२
धूरिधुंधिसों छिशितोपे तब लोपेनिशाकाल समभान ।
घनगनगरजनिसमछाईधुनि सुनिजननगरसगरहर्षान
बजतनगाराहहकाराकरि अतिशयशंखघंट घरियार ।
धुधकततुरहीगदनादनसों बरनरसिंह केरिहहकार २४
हिकरत घोड़ेरथ जोड़े जे कोतल गहेरहे हेहनाय ।

छिघरतबारनछिग्घारनसों रथके चक्ररहे घहराय २५
आगेद्विजगनमनपूरितसुख मुखसोंकहतस्वस्त्ययनगाय ।
तिनके पाछे रथ पारथको पहुंचेधर्मभूप ढिगजाय २६
मिलेपरस्परसबबंधवतहं अतिशयहियहुलासहुलसाय ।
कंठलगायोहरिपारथको सारथिसखानाथयदुराय २७
पुनिसबभाइनसह कृष्णहिंलै भूपतिद्वार पहूंचे आय ।
सैनादिकिगइसबशिबिरनमहं बाहनसकलदोनबंधवाय
कुन्तीमाता मनराता करि कंचनथार आरती साजि ।
लियेअंगनागनगावतशुभ आईकरननिछावरिराजि२८
भुजबलपूज्योसुतपारथके दीन्ह्योद्विजनबोलिबहुदान ।
चरणरूपर्श्योतबपारथने आशिषदीनहोयकल्यान ३०
सभाबिराजेपुनिधर्मजनृप भायनसहितकेशवहिलाय ।
कियोअनंदितहूवैबातैंकछु इतउतहालचालशुभपाय३१
तेहीसमइयाके अवसरमा बाहनबभ्रु सैनसह आय ।
नगरहस्तिनापरप्रापतभो चलिनृपलीनताहिहर्षाय ३२
आगतस्वागतकरिबिधिवतपुनिदीन्होताहिअनूपमबास ।
यज्ञमुहूरतपुनिअन्तिकगुनि लागेसजनसाजसुखरास ३३
कथापरीक्षितसुतसुन्दरयह मतिसमतुम्हें सुनाईगाय ।
मातु शारदा की दायाते तीसरअंत भयोअध्याय ३४

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिबाजपेयिपं०रामरत्नस्या
त्मजश्रीगामोस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासोग्रामनिवासिपण्डित बंदोदीन
दीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषाभारतखंडअश्वमेधपर्वान्तर्गत
अर्जुनदिग्विजयबर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

विघनबिदारणपदधारणकरि त्रिपुरमदनकदनकोध्याय।

बुद्धिबिशारदभजिशारदको भाषतकथामनोहरगाय १
बैशंपायन पुनिबोलतभे सुनियेकथा परीक्षितलाल ।
भयोअगारीजसकौतुकपुनि सोसबबरणिबतावहुंहाल २
जादिनआये पुरपारथभट अरुमणिपूरकेरमहिपाल ।
ताके तिसरेदिन आवतभे श्रीद्वैपायन बुद्धिबिशाल ३
भूपयुधिष्ठिरसों भाष्योसो हेनृपशुभद मुहूरतआज ।
हवनकराइयहियहर्षितह्वै हयबिधिकरहुसाजिसबसाज
त्रिगुणदक्षिणादैबिधिवतनृपमखफललेहुबिबिधपरकार।
व्यासमुनीश्वरकोआयसुबर सुनिकैधर्मबुद्धिआगार ५
यज्ञ अरंभनको ठानतभे लैकै सिया रामको नाम ।
पुनिनंदनंदन पदबंदनकरि लागेरचन यज्ञ इतमाम ६
कर्मयथोचित आरम्भतभे शुचिपलाशकोयूप गड़ाय ।
इकइकखंभाखदिरादिकके औत्रयबिल्वदीनलगवाय ७
देवदारु के दुइगाड़तभे आगम नेतआदि बिरचाय ।
रत्नहेममयकरियोजितबहु दीन्ह्योरुक्मपुंखसजवाय ८
मानिशास्त्रमतमुनिआयसुते कीन्ह्योपशुनकेरव्यापार ।
सबश्रुतिवक्ताहरिभक्ताद्विज होताकीनसबिधिज्ञातार ९
जेहिश्देवनजोलेखितपशु पक्षीजलचरादि मंगवाय ।
सहितबिधाननसोदीन्हेसबकरिकैअग्निकर्मकृतचाय १०
त्रयशतयूपनमहंइक२पशु नियमितकियोधर्मपतिलाय ।
नाचतगावतरम्भादिकबर किन्नररहेसुकौतुकछाय ११
सिद्धगंधरबशुभशोभिततहंऋषिमुनिबिप्रआदिसमुदाय।
शिष्य अनेकनद्वैपायनके जपतप तेजरहेदरशाय १२
तेहीसमइयाकेअवसरमहंतपनिधिसबिधिअश्वपुजवाय।

यज्ञ अरंभनमहं वाजिवगुनि हिंसनकियोवेदमतपाय १३
द्रुपददुलारीसह धर्मपतब होमे अश्वअंगशुभठानि।
षोड़शऋत्विजपुनियोजितकरि लागेहोमकरनमनमानि
श्रीद्वैपायनमुनिशिष्यनसह परणयज्ञदीनकरवाय।
मखपरिपूरणकरिधर्मजतबकीन्ह्योभूमिदानसहचाय १५
भूमिदानलैद्वैपायनमुनि भाष्योसुनौ भूपमतिमान।
भूमिदानजोतुमदीन्ह्योंम्वहितेहिलैदेहुमूल्यधनआन १६
उतनीविप्रहिमहिनाहींप्रिय जितनीद्रव्यमोददातार।
भुविनाहमरेकछुकारजकीक्षत्रिहिउचितभूमिअधिकार १७
सुनिमुनिबानीअतिमनमागुनि पुनियहकह्योधर्मक्षितिपाल।
विनयहमारीसुनिलीजैयहपुनिवाजिवशिषदेहुकृपाल १८
जाहिसंकलपकरिहाथेनिज दीन्ह्योंभूमिविप्रकोदान।
उचितनलीबोफिरिताकोप्रभु मानियसत्यबचनपरमान
चारिभागकरिभुविसिगरीके हठतजिवांटिलेहुद्विजराज।
उचितनराजैयहकरिबोक्रियनातहकहोकरितवकाज २०
भाष्योधर्मजइमिभाइनसह तबफिरिव्यासकह्योसमुझाय
जोतुमबसुधाहमकादीन्ह्योसो अवतुम्हैंदेतसहचाय २१
भूरिदक्षिणातेहि निष्क्रयको दीजै हमैंद्रव्य मंगवाय।
सुनिअसभाषनद्वैपायनकोनृपतेकह्योकृष्णसमुझाय २२
संशययामहंकछुनाहींनृप करियेव्यासबचनप्रतिपाल।
तबसबसम्मतकरिभाइनसोंकीन्ह्योंसोईक्रियाक्षितिपाल
आयसुदीन्ह्योंकोशाधिपको धनकेदीनढेरलगवाय।
इक२ऋत्विजकहंभूपतितबदीन्ह्योंकोटि२ धनलाय २४
यज्ञकराईतिनविप्रन कहं द्वै द्वै कोटिदीनधन आनि।

औरौद्विजवरजेकोऊतहं तिनहुंकदीनद्रव्यसन्मानि २५
करिपरितोषितसबपुरुषनकहं सबकहंयथायोगदैदान।
लहिव्यासायसुपुनिधर्मजनृप अवभृथकीनयज्ञअस्नान
राजसाजसजिपुनिआनंदसों पहुंचेसभानृपनसहजाय।
सुरपतिसदृशतहंराजितभोसाजितराजसाजसमुदाय२७
बसनआभरणमणिवारनहय दै दै नृपनसहितसन्मान।
बिदाकरायोपुनिआनंदसों गेसबयथाथानहर्षान २८
बिदाकरायोपुनिबन्धवगण जेकोउरहेनातहितकार।
पुनिदाऊसहनंदनंदनकोकीन्ह्योबिदासहितसत्कार २६
बभ्रुबाहना पुनिगमनतभो आयसुधर्मराजको पाय।
द्विजमुनिमखमाजेआयेचलितेसबगयेभवनमनलाय ३०
तदनुमहीपतिसहभाइनके बरसतद्रव्यगयोचलिधाम।
मंगलगायोमहरानिनतबअतिशयभयोमोदइतमाम ३१
कथामनोहरजन्मेजयसुनिमुनितेकह्योबचन यहभाखि।
हेप्रभुकौतुकइकपूंछतमैं सोसतिकहियगोयनाराखि ३२
भयोयज्ञमहंकछु अचरज तहं सोऊनाथदेहु समुझाय।
वैशंपायनतबबोलतभे सुनियेधीरबीरक्षितिराय ३३
मखपरिपूरणभोतेहिथलजबपलमहंनकुलएकतहंआय।
घोरशब्दकरिइमिभाषतभोसुन्दरनरसमानबचलाय ३४
यज्ञबिलोकीहमपूरुबजस तसनहिंकीनि युधिष्ठिरराय।
सिधिबिधिदेखीजसपूरुबमख सोउनयहांपरयोदरशाय
यहसुनिद्विजबरतहंभाषतभे पूरुबयज्ञकृत्यकहुगाय।
नकुलयथारथतबभाषतभोसुनियेबिप्रबचनमनलाय३६
कुरुक्षेत्रमहंद्विजबासीइक अतितपतपतजपतहरिनाम।

हैसपत्निक अरुपुत्रौइक चौथीपुत्रकेरि बरबाम ३७
कियोतपस्याबहुदिवसनलग अतिशयधर्मकर्मआगार।
अन्नछयावैबिनिखेतनसों तासोंकरतसबनआहार ३८
प्रापत होवैअनायासजो ह्वैसंतोषरहत तेहिमाहिं।
कालबितावतहरिगुणगावत बहुदिनगयेशंककछुनाहिं
हरिइच्छासों तिनदेशनमहं भोदुर्भिक्षकालअतिआय।
महाप्रपीड़ितभेमानुषतहं भोजनअन्नआदिनहिंपाय ४०
दुखितविप्रसोतेहिअवसरघर तजिकहुंगयोअन्नकेहेत।
षटबतकरिकैलैआयोकछुतियहिसोबननहेतमोदेत ४१
भोजनबिरच्योद्विजनारीतब कीन्ह्योंभागतासुकेचारि।
बलिबैश्वादिकक्रियबिधिवतकरिदीन्ह्योसबहिभागनिर्द्धारि
तेहीसमइयाकेअवसरमहं पहुंच्योएकविप्रतहंआय।
द्विजैपुकारयोदरवाजेते राख्योताहिभवनमहंलाय ४३
अर्घपाद्य दैतेहि पूजनकरि कीन्ह्यों हाथजोरिपरणाम।
जन्मकृतारथनिजमानतभो धनिजोविप्रआयोममधाम
पुनिआनंदितह्वैआदरकरिभोजनदियोताहिनिजभाग।
क्षुधानतृप्तीभइब्राह्मणकी औरोचह्योअशनअनुराग ४५
द्वद्ब्राह्मणी तेहि भूखोलखि आपन भाग दीन हर्षाय।
भोजनकीहोसोउद्विजबरनेतृप्तनभयोभागयुगखाय४६
पुत्रविप्रकोलखिकौतुकयह दीन्ह्योंअपनभागहर्षाय।
भखन भागो इतनेहूंपर खायोतीनिभाग मनलाय ४७
द्विजसुतबहुअरितबहर्षितह्वै अपनौभागदीनद्विजहेत।
भोजनकीन्ह्योतबद्विजबरनेह्वैगोक्षुधातृप्तचितचेत ४८
भयेदेवता अतिहर्षित तब कीन्ह्योपुष्पवृष्टिमनलाय।

धनि २ भाष्योकहिब्राह्मणकोसहकुलतासुरहेगुणगाय ४९
द्विजवरघरपुनिचलिआवतभे औयहकह्योताहिसमुझाय।
झटपटवैठहुसुरवाहनपर सुरपुरचलौसकुलहर्षाय ५०
क्षुधितब्राह्मणहिंदैभोजनतुम कीन्ह्योतृप्तधर्मगतिमानि।
तुमसमधर्मीजगनाहींकोउ हैतुवधन्यकायमनबानि ५१
तुमसबभूखेछः बासरके सोदुखसह्योधर्म मतमानि ।
सुगतिपालनायहिअवसरकरि लीन्ह्योकोटिपुण्यगहिपानि
सबपुण्यनतेशुभदायकयह सुनुद्विजसमयरकोदान ।
कीन्हेदीन्हेअरुलीन्हेते रंचकहोतकोटि परमान ५३

स० भोजनदेहिक्षुधारतविप्रहिमारतदेहिअभयद्विजगाई ।
आरतधर्मसहायकरै धनदैकरिदेहिसुताकिसगाई ॥
वंदिकहैगहिबाहँगहै तेहिहोयचहैकिनकोटिबुराई ।
साखिसुभाखिपुरानकहैंयहिपुण्यसमाननदूसरिभाई ५४

शतसहस्रफलभलअवसरपर दीन्हेयथाशक्तिकोदान ।
पुण्यधर्मकीगतिसूक्षमहै रंचकहोतराशिपरमान ५५
केवलदीन्हे जल अवसरपर भूपतिदेवबसे सुरधाम ।
नृगनृपलाखनगौवैंदीन्ह्यो जिनकोविदितजक्तमहँनाम
तनिक विपर्ययके कीन्हेते तुरतैपरे नरकमें जाय ।
फलप्रत्यक्षैयहजाहिरहै सुखदुखदेतन्याय अन्याय ५७
शिविनृपपरिवाकेबदलेपर निजतनमांसदीनहर्षाय ।
आजहुदुनियांयशगावतिहै अन्तसबसेअमरपुरजाय ५८
तिमितुमद्विजवरकरिअनुपमक्रियलीन्ह्योअमितधर्मअधिकार ।
चढ़ौविमाननपरहर्षितमनसुरपुरचलौसहितपरिवार ५९
सुनियहबानीवरदेवनकी हर्षितविप्रसकुलचढ़ियान।

सुरपुरपहुंचोलक्षणअंतरमहंअतिशयकरतदेवयशगान ६०
यहिबिधिद्विजकोमखउत्तमवहसुनियेविप्रवृन्दमनलाय।
जेहिथललोटेतेपायोहम सुवरणसरिसअर्द्धशुभकाय ६१
बहुबिधिलोटेयहिमखथलमा बदलोपैनरंगअंगकयार।
तातेतुमसोंकहिभाषतयह भईनविप्रयज्ञसमयार ६२
यहकहिनकुलाबिलअंदरगो अचरजभयोधर्मउरमाह।
तबजन्मेजयपुनिपूंछतभे सुनियेबचनमुनिनकेनाह ६३
नृपतियुधिष्ठिरमखपूरणकरि बहुबिधिदीनधराधनदान।
शिक्षकजाकेद्वैपायनमुनि सबबिधिदक्षस्वक्ष मतिमान
धर्ममहीपतिअसकर्ताजेहि निन्द्योनकुलताहिकेहिकाज।
सत्यसोभाषियकहिकारणयहजेहिसुनिहोयशोककोत्याज
वैशंपायन मुनि बोलेतब सुनिये भूप परीक्षितलाल।
कथा पुरातनिइकगावतहैं। पूरबकीनि यज्ञसुरपाल ६६
पशुबधसमयोजबआवतभो तबबिप्रनहियदयासमानि।
मन्त्रविचारयोसबआपुसमा पुनियहकह्योइन्द्रतेबानि ६७
पशुबधकरिबोकछुउत्तमना हिंसासरिसनअधरमऔर।
बिनहिंसाकीमखकरियेशुभसुनियेसर्बसुमनशिरमौर ६८
शास्त्ररीतिकोअनुमानितकरि होमौबीजधर्मबिधिजानि।
यहबिधिइन्द्रहिकछुभाईना कीन्ह्योअतिबिबादमनमानि
बादठानिकैसुरनायकफिरि पूंछ्यो बसुमहीप सोंतौन।
मनगुनिउत्तरबसुदीन्ह्योपुनि होमौद्रव्यप्राप्तमतिभौन ७०
वसुकीबानीसुनिताक्षिनपुनि उत्तरदीनद्विजनमनलाय।
अशुचिवार्त्तावसुभाषीयह हिंसकमखनहोतसुखदाय ७१
अरुकछुउत्तमपदमिलिहैना हिंसाकरतपापअधिकार।

जाविधिकरियेधनउपराजितमखफलतथाहोतनिर्धार ७२
अप्रबीनकोइकसम्मतलै उचितनकरबकर्ममनमानि ।
जनकआदिलैबहुधर्म्मिननेकीन्ह्योधर्मसहितमखठानि ७३
गाधिसुवनऔघटसंभवमुनि कीन्ह्योंअब्दवार्षिकयज्ञ ।
रहेउपस्थितबहुब्राह्मणतहंअतिशयबिधिविधानगणितज्ञ
तहंनबवरषैजलबरस्योना तबसबविप्रनकह्योबिचारि ।
अन्नदेतहैंनितकुंभजमुनि बरसतनाहिंमेघइतबारि ७५
अन्नकिउतपतिजोहोइहैना तौकेहिभांतिदेहिं मुनिदान ।
यातेसम्मतअबनीकोयह मुनितजिदेहिंयज्ञकोठान ७६
यहसुनिकुंभजमुनिमनमागुनि सबबिप्रनतेकह्योबुझाय ।
सुनिसंभाषणममनिश्चयकरि बिप्रहुतजौशोचहर्षाय ७७
अन्नदान इतजोसधिहैना तौहमकरब मानसिकयज्ञ ।
यज्ञमानसिकबनिऐहैना तौमखयात्राकरब कृतज्ञ ७८
पैइकऔरौसमुझाइतहै मानहुसत्यबचन बिश्वास ।
जबहमचाहैं जोकरिबेका तुरतै करैंपूरिनिज आस ७९
दृष्टिकि इच्छा जोचाहैंहम तुरतैकरैं दृष्टिबहुबारि ।
सृष्टिचारिविधिहमरचिबेकहं समरथअहनकहनप्रणपारि
अनधनजगमेंजेहिठावंनमहं जबचाहैंतब लेयंमंगाय ।
याकोसंशयकछुरंचकना सुनियेबिप्रबचनमनलाय ८१
सुनिअसबानी घटसंभवकी विप्रन कियोप्रशंसाभूरि ।
मुनिप्रभावलहिमेघावरषे ह्वैगेत्वरितबिघ्नसबदूरि ८२
सहगुरुसुरपति चलिआयेतहं लैकैसर्वसुपर्वन साथ ।
मखपरिपूरणकरिबिप्रनकहं कीन्ह्योबिदाहर्षिमुनिनाथ
सुनिजनमेजयअसगाथापुनि मुनिसनप्रश्नकोनसुखदाय।

नकुलाकृतिवहकोआयोतहंकहियेसत्यनाथसमुझाय ८४
वैशंपायनतब बोलतभे सुनुशुभकथापरीक्षित लाल ।
एकसमैयाकेअवसरपर मुनिजमदग्निकीनअसहाल ८५
श्राद्धअरंभ्योनिजपितृनकै राख्योदूधपात्रमहंलाय ।
क्रोधरूपधरितहंआयोचलिदीन्ह्योक्षीरपात्रढरकाय८६
क्रोधनकीन्ह्योमुनिदेखतयह बोल्योक्रोधजोरितबहाथ।
आजुपराजयतुमकीन्ह्योम्वहिं जोरुचिहोयमांगियेनाथ
क्रोधकिबातैंसुनिमुनिवरइमि क्रोधहिकह्योबचनसमुझाय
हमतेतुमतेडरअंतर कछु नाहिंनबैर मित्रताभाय ८८
श्राद्धअरंभ्योहमपितृनको नाहकबिघ्नकीनतुमतासु ।
अबचलिजावोममपितृनपहं जोवैकहैंकरौसोआसु ८९
सुनियहबानीमुनिनायककी चलिगोक्रोधपितृनकेपास ।
तेहिलखिपितरनकहिभाष्योयहतैंकतकियेश्राद्धक्रियनास
पयढरकायेतैंअनरथ करि कीन्हेनकुल केरयहकाज ।
ताहितनकुलहितनपैहैतैं यामेंकछुनअसतकोसाज ९१
शाप पायकैयहपितरनते अतिशयक्रोधभयोभयमान ।
बिनतीकीन्ह्योअतिनम्रितह्वै करियेक्षमादासनिजजान
शापउधारयातबभाष्योतिन जैहोजबैधर्ममखमाहिं ।
मोचितह्वैहौनकुलाकृतितेयामहंतनिकसंदेशानाहिं ९३
सोवहनकुलाकृतिधर्मजमख आयोक्रोधमिटावनशाप ।
भयोबिमोचितसोआवततहंमिटिगोपूर्वजन्मकृतपाप९४
भूपमुकुटमणिभूपतिधर्मज यहिविधिकियोयज्ञसुखदाय।
मतिगतिकीरतिजोहिसुंदरशुभ भाषोसकलपुराणनगाय
कथामनोहर सुखसोहरबर भाष्योअश्वमेधमखगाय ।

बिघ्नविदारनकी दायाते चौथोअंतभयो अध्याय ९६
बाणवेदनवशशिसंबतशुभ उज्ज्वलपक्षमाघशुचिमास।
गुरुदिनचौदशितिथिसुंदरमहं पूरणभईपर्वसुखरास९७
श्रीगंगातट दिशिउत्तरबर बंथरग्राम एकअभिराम।
तहांनिवासीबाजपेयिकुल बारिजनेकरामसतिधाम ९८
तिनसुतसबगुणयुतभाषतकहिश्रीशिवचरणलालअभिराम
तिनबरबालककुलपालकशुभसुंदररामरत्नअसनाम ९९
शीलडीलशुचिसुखदद्दयाकर दायकबिप्रजनहिसन्मान।
गुणगणमण्डितसुमतिउमण्डितचंडितचंडप्रबलद्युतिमान
पायसुआयसुतिनआरयको सबविधिसुखदशीशपरधारि।
भारतभाषाअभिलाषासों हयमखमेधकह्योबिस्तारि १
देवआपगातटशोभाघट राजतसकलसाजसहग्राम।
द्विजकुलवासीमसवासीशुभ हैजेहिज़िलाखिलाउन्नाम २
द्विजदीक्षितकुलअवतंसितमैं बंदीदीनबिप्र यहनाम।
प्रपिताश्रीद्विजरामदीनबर भागूलालपितामतिधाम ३
बंशत्रिपाठीअवतंसितशुभशिवनारायणाख्यसिधिदाय।
शुभमतिदाताश्रुतिपथज्ञाता हैंसुप्रसिद्धमोरगुरुराय ४
सहभारतअस्मृतिअष्टादश सबमहंदक्षस्वक्षमतिमान।
न्यायब्याकरणकाब्यकोषअरु वैद्यकज्योतिषकेरनिधान
सांगीतगति परमप्रबीने बीनेकृष्ण चरित महंचारु।
तिनपदकंजनमनरंजनकरि भारतगानकीनबिस्तारु ६
इकतो यामहं हरि चर्चाअरु दूजे शूरबीर संग्राम।
लोकसुधरिहैंदोउनीकीविधि होइहैंएकपंथदुइकाम ७
धर्मजकृतहयमखउतमयह पढ़िहैंकथासुजनसहसाध।

मूलसुधरिहैं सोगावतखन करिहैं क्षमामोरअपराध ८

इतिश्रीउन्नामप्रदेशांतर्गतबंथरग्रामनिवासिश्रीबाजपेयि वंशावतंस श्रीपंडितरामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशांतर्गतससवासीग्राम निवासिपं०बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषा अश्वमेधपर्वसमाप्तिर्नामचतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

इतिअश्वमेधपर्व्वसमाप्तः ॥

अथ महाभारत भारतखण्ड भाषा आश्रमवास पर्व्व ॥

—※—

दोहा

बिघनबिनाशनशरणलहि ध्यायहियेसुरसर्व ।
महभारत भाषारचत आश्रमबासिकपर्व १

सुमिरण

श्रीरघुनंदनपदबंदनकरि भारतस्वस्थध्वजस्थहिध्याय ।
शर्वसुपर्वपअभिबादनकरि आश्रमबास बखानतगाय २
बुद्धिबिशारदभजिशारदको आननवारिधारि उरमाहिं ।
भारतभाषाअभिलाषासों भाषतसकलबिघ्नबिनशाहिं ३
नरनारायनके पायनपरि द्वैपायनकोमाथ नवाय ।
भारतकर्त्ताभटघटमाधरि प्रकटतछंद मनोहरगाय ४
गोपगोकुलागोगोपीपति धेनुसुखेनु बेनुधरध्याय ।
व्याधिबाधिकाबंदिराधिका भारतगान करतलवलाय ५

स० ध्यायसखासहसारथि पारथधीरध्वजस्थकेपायँमनावत ।
धर्ममहीपकेगायगुनैपुनिमीनसुतासुतकोशिरनावत ॥

रामप्रतापको जापाहियेकरि बन्दियथामतिकीगतिपावत ।
आश्रमबासकथासुखरास सुबीरबिलासमनोरमगावत ६

कथामनोहरजन्मेजय सुनि मुनिते प्रश्नकीनसुखदाय ।
हेमुनिनायकसिधिदायकबच कहियेकछुकऔरसमुझाय
हौंअभिलाषियकहिभाषियसोपूंछतकछुकऔरकुलहाल।
दुखलखपरिहरिमखपरणकरि भेजबधर्मसूनुमहिपाल ८
सबविधिजयलहिनृपवैभवगहि भोगनलगेमोदसहराज ।
किमिपरितोष्योधृतराष्ट्र तब तिनरुखसरिसकीनकिमिकाज
जराअवस्थामहंप्रापतजे दम्पतिकरतभयेकहकाम ।
ताथलनिवसितभेकबलगसो कहियेसकलबरणिमतिधाम
प्रश्न अनूपम सुनिभूपतिको बैशंपायन लागबताय ।
तुवअभिलाषतनृपभाषतहौं सुनियेसावधानमनलाय ११
ह्वैभुविभर्त्ता शुभकर्त्तानृप धर्त्ताभयो राजधुरिक्यार ।
सुखसहपालनकरिपरजनको भोगनलग्योविभवअधिकार
लैशुभसम्मतसबबंधुनको वृद्धनरेशबेश सिखधारि ।
नीतिरीतिमहंपरतीतिलह्वै नितप्रतिकरतकाजमुदपारि
वृद्धदम्पतिनकीसेवाअति रुचिसहकरत पांचहूभाय ।
नितउठिबन्दततिनपांवनकोजामहंपुत्रशोकछुटिजाय १४
धर्मनृपतिकेअनुशासनते संजयविदुरआदिमतिमान ।
महिपसमीपैरहिसेवतयेसबविधिकहतरहतशुभज्ञान १५
तहंबासकरिद्वैपायनमुनि नितप्रतिकथासुनावतभाखि ।
तथाद्रौपदीकुन्त्यादिकतिय गंधारजैरहींरुखराखि १६
सबविधि सेवैंमहरानीसब देवैंअसन बसन सुखदाय ।
दम्पतिकरिजोअभिलाषैंजो सोसबकरैंपांचहूभाय १७

भूमिरत्नधनअन्नादिकको चाह्योकरनवृद्धनृपदान ।
सविधिकरायोसोधर्मजनृप औरसपुत्रसरिससनमान१८
ग्यारहबर्षै इमिहर्षसह गतदम्पतिहिभई तेहिठाम।
शोचभूलिगोसबपुत्रनको सुनियेमहाराजमतिधाम १९
सबदिनपाण्डवकुलदेवतसम सेवतभूपहिदोषभुलाय ।
अधिकआदरतरहैभिम्माभटआयसुधर्मनृपतिकोपाय२०
तऊकुटिलतानृपअंधऊकै गयोनदुष्टमन्त्रपरभाव ।
हियअनखावततेहिकारणतेआदरकरतहोतपछिताव २१
इकदिनपूरुबरणसुमिरणकरि ठोंक्योभीमसेनभुजताल।
गर्बबार्तापुनिभाष्योयहपरिघोपममभुजाबिशाल २२
पूजाकरिबेके लायकये दायकमौत अंधलरिकान ।
चंदनअंकितअरिशंकितकरहैंबरबिदितजक्कबलमान २३
याबिधिभाष्योशुचिसचिवनसों करिकैशब्दमहाबिकराल।
सोसुनिगुनिमनघनशोकितभे दम्पतिअंधवृद्धमहिपाल ।
हालनजान्योकछुधर्मजअरु अर्जुननकुलबीरसहदेव।
मर्मनपायोकछुकुंतिउने कोबिधिभयोकौनयहभेव २५
तबशोकाकुलधृतराष्ट्रकनृप भाष्योसकलधर्मसोंहाल।
जड़सबअनरथकीहमहींहैं मोरैकुपथमोरभोकाल २६
शठदुर्योधनकोअबनिपकरि दीन्ह्योंराजकाजहमजौन ।
बिनाकारणैतिननाशनको कारणमुख्ययहैभोतौन २७
बचननमान्योनंदनंदनके बहुबिधिरहेबिदुरसमुझाय।
गंगसुवनअरुव्यासादिकको धारयोनहींमन्त्रमननाय२८
तातेबिपदायह भोगतअब दैवोमहाकठिन सबकाल।
सबगुणआगरशीलउजागर सागरनीतिकमलकुलताल

अरिउरशालक दुष्टनघालक पालक प्रजाधर्मआगार ।
राजिनदीन्ह्योंतेहिधर्मजको मोपररुठैक्योंनकर्तार ३०
जगतसराहतजेहिसुन्दरयशभोगनयोगराजअधिकार ।
सहीमहीपतितेहिकीन्ह्योंना विरुधैक्योंनजक्ककर्तार ३१
तेहिकुमंत्रको फलपायोंयह लायोतनघन दुसहदराज ।
पुनिअपनेहीबलबाहुनते लीन्ह्योभूपयुधिष्ठिरराज ३२
अबरुखलैकै वहिभूपतिकी सुखसहकरत मोरिसबसेव ।
कुमतिहमारीकोअतिशयधिकबिगरीअथप्रजासुसोनेव ३३
इमिअनुमान्यो मनठान्योपुनि पहुँच्यो धर्म्मनृपकेपास ।
उरदुखखोलतबोलतभेसुनुसुतधर्म्मशीलमतिरास ३४
कुरुकुलनायकसबलायकतुम दायकप्रजाजनैसुखभूरि ।
तनमनदीपनकोगोपनकरिकीन्हयोंदुःखमोरसबदूरि ३५
तुवआयसुतेसबसेवतम्वहिंहरुचिसहसकलयामनलाय।
तुवप्रसादतेहमकीन्ह्योसबबिधिसहश्राद्धदानहर्षाय३६
औरोभावत जोमनमारहै सोसबकीनि प्रपरयाआश ।
तुवसुखशासनशुभवासनसों ह्वैगोहृदयजनितदुखनाश
उरअभिलाषितअबकहिबोकछुचाहतसुनौपुत्रललचाय ।
करि गंधारीको सम्मतयह आयेतुवसमीप हर्षाय ३८
देहुजोआयसुहियहर्षिततुम तौहमकरनजायंबनवास ।
भइअभिलाषायहहिरदयमामनगुनिकहौतौनमतिरास॥
धरितनबल्कलबसनादिकशुभ जैबेबिपिनमुनिनव्रतधारि
आयुगवैबेतहंबाकीअब हैयह उचितकरनचितपारि ४०
देअनुशासनलयोआशिषयह म्वहिंबनबिदादेहुकरवाय ।
रीतिसदाकोकुलहमरेकोसुतको राजसौंपिबनजाय ४१

स० रीतिश्रुतिस्मृतिहूकीयहो बृद्धायुचहौबिनहोमें बितावन।
मतऔब्रतलैसतयोगिनको तपआतपसोंचहियेतनतावन॥
आवन फेरिचहौनगृहै अतिप्रीतिगहै हरिके पदपावन।
बंदितजे तनदेवनभौन रहैनलहैइतकोफिरिआवन ४२

बृद्धाधिपकीयहबानीसुनि पुनिगुनिहिये युधिष्ठिरराय।
दुखरुखराखतयहभाखतभे सुनुममबचनतातमनलाय
तुमबननिबसौतनआरतसहि तौम्बहिराजिकरबधिकार।
बिभवयज्ञधनदानादिकसब तुमबिनसकलमोरबेकार ४४
मातपितातुममनगुरुजनसम मैंहौंसुवनआपमहित्रात।
तेबनजैबोअभिलाषतहैं तजिकै मोरप्रीतिको नात ४५
इकतौबन्धबबधभारतकरि आरतपापलह्योंसबभांति।
तापरअपयशधरिअबममशिर यहिपनबिपिनजाततुमतात
जोबनगमनबमनठान्योतुम तौयहदेहु युयुत्सहिराज।
चलैतुम्हारेसंगहमहूंबन लैबंधुनसहसकलसमाज ४७
सुनिअसिबानीनृपधर्मजकी भाषयोकियोअंधक्षितिपाल।
हेसुतबसिबोबनवाजिबअबहैम्बहिंदेखिबयक्रमकाल ४८
बहुदिनकीन्ह्योतुमसेबामम पालनकियोबेश उपदेश।
अबयहिअवसरबनजैबेको हर्षित आयसुदेहुनरेश ४९
उचित जठरवयबनबसिबोयह हैप्राचीन बंशमर्याद।
ताहितसुवतोहिंसमुझावतहौं आयसुदेहुमानिअह्लाद
यहकहिमनलहिपुनिकरुणागतिमोहितभयेअंधनरनाह।
नैननआंशूबरसनलागे अतिशयहृदयभयोदुखदाह ५१
देखिव्यवस्था यहअंधककी धर्मजबंधे शोककोफांस।
सुमुखमयंककहिघोवनलागे बहिबहिसुष्टुनैनसोंआंस ५२

धर्महिंमोहितलखिअवसरतेहि रोवनलगेचारिहूभाय ।
संजयविदुरादिकरोयेसब व्यापीव्यथाकथातहंआय ५३
द्रुपददुलारी अरुकुन्तीसह नारीगईंदुःखसोंपागि ।
गहिगंधारीकेपायंनका रोवनलगींहिये अनुरागि ५४
क्षणमहंचेत्योफिरि वृद्धाधिप उठिकैधर्महिंअंक लगाय ।
गदगदबाचासोंभाषतभे अतिशयहृदयप्रेमबढ़ाय ५५
हियोहमारोसुतक्षोभितह्वै लोभितभयोपूरिअतिमोह ।
तदपिकामनातपकरिबेकी तजतनरंचमात्रममगोह ५६
तातेतुमकासमुझाइतहैं दृढ़करिहुवमदेहु फुर्माय ।
हमबनजैबेमनलैबेतप करिबेयोग भोगबिसराय ५७

स० शोभजुटीलखिबन्यधरातहँ पत्रकुटीकरिह्वौबनिवासी ।
विघ्न छुटीदुखदोषलुटी असयोगगुटीमहँह्वौबउपासी ॥
मोहघुटीछलछिद्रछुटी भवफंदफुटीतेहिमायहिनासी ।
बन्दिकिहैभगवानकोध्यानअनन्दितह्वैबसुरालयवासी ५८

यहिविधिभाष्योजबअंधाधिपधर्मजमहिपलागपछिताय।
रोदनरवअतिपरिपूरितभोसोकबिसकैकौनविधिगाय५६
व्यासदेवयहदुख देखततहं नृपसोंकह्योअनूपमबानि ।
शोचनकरियेनृपधर्मजकछु करियेअंधवृद्धहितमानि ६०
कुरुकुलभूपतिजोभाषतबचनिश्छलकरहुतासुप्रतिपाल ।
उचिततपस्यायहिआयुषमहं गमनबविपिनसत्ययहिकाल
शास्त्रपुरानौमतराखतयह तिसरे पनैकरै बनबास ।
यहिविधिभाषनकरिधर्मजतेआश्रमगयेआपनेव्यास ६२
इकक्षनमनगुनिधरिमौनव्रतफिरियहकह्योधर्मप्रतिभौन।
अवशिसोकर्तबमोहिंकरिबोशुभ गुरुजनवेशनिदेशतजौन

भोजनकरिये अब आनंदसों इतममबात मानिकैतात।
आश्रमबासहिपुनिगहियेजो मनप्रनकिह्योसत्यअवदात
सुनिअसबानी नृपधर्मजको कीन्ह्यों अंधभूपस्वीकार।
दम्पतिगमनेनिजमंदिरको लैबिदुरादि संगपरिवार ६५
तहंसबकर्तब करिआनंदसों पूजनकियो बिप्रसमुदाय।
भोजनकीन्ह्योपुनिदम्पतिने आयसुधर्मभूपकोपाय ६६
भोजनकरिकैपुनिबैठतभे निश्चितबिमलासनपरजाय।
फिरियहभाष्योनृपधर्मजतेसुतममबचनसुनौमनलाय६७
नीतिरीतिकोमनचिंतनकरि कीन्ह्योसदाराजको काज।
धर्मकर्मजोभीषमभाष्यो तेहिबिधिकिह्योसकलनृपसाज
अजानपावै दुख काहूबिधि कबहूं क्षीण होयना सैन।
छिद्रनढूंढे रिपुपावैजहि सबसनकह्योमाधुरेबैन ६९
राज्यअंगकेरक्षकहोयो सबबिधिबल बिधानकोआनि।
सचिवसलाहीशुचिसुंदरजे मान्योतिनहिंबानिकीकानि
मंत्रसुशोधनबिनकारजनहिं कीन्ह्योंकबहुंठानिअनुमान।
सचिवसुबंधवहितकारीतजि पावैंजानि मंत्रनाआन ७१
सुभटनतोष्योसबभांतिनते कीन्ह्योबिधिबिधानसोंदान।
जैतेयूथपअरुसैनापति तिनको कियो मित्रसममान ७२
चतुरचलांके अरु बांकेवर राखेहु दूत सूत समुदाय।
हालसुदेशनकोनितप्रति जानतरह्योहियमहंलाय ७३
सुहृदसुकृती मति दावाशुभ राखेरहेहु चौकसीकार।
सूपपाणिअरुपानदेवैयेसबदिनकरतरह्योअतिप्यार७४
जानतरहियोव्ययआमदको देखतरह्योकोशनिजदृष्टि।
रह्योनिहारतगजअश्वनकहं राख्योकरतदयाकीवृष्टि

रक्षाकीन्ह्योसबयतननते निजकुल और जातिकोधर्म ।
मखहवनादिककोकर्तबअरुकीन्ह्योदेवपितरकोकर्म७६
कविकोविदअरुबुधिमाननकोकरिसत्संगबिचारयोज्ञान।
शास्त्रपुराणनकीगाथासुनि राख्योसदातासुपरध्यान७७
मित्रशत्रुकेलखिलक्षनमन राखतरह्यो सदाअनुमान।
युक्तिउक्तिकोबिसरायोना जासोंसदाहोय कल्यान७८
युवायुवतिअरुमृगयादिककेबिषयनमध्यरह्योअलगान।
जाकेकोन्हैंपरलोकहुभयताहिगाकबहुंचह्योनाजान ७६
नीतिबिभाषणाकरिआबिधिपुनिनृपधृतराष्ट्रसुबाहुरआय।
दानअनेकनबिधिकीन्ह्योअरुदीन्ह्योबिप्रगणनबोलवाय
सुनतखबरियाबनजैबेकी पुरजनदुखिततहां सबआय।
दोउकरजोरे यह बोलतभे तिनसोंअंधभूप दुखपाय ८१
ममपुत्रनके दुर्मन्त्रनसों ब्याप्यो अति अनर्थयहिदेश।
बनतनभाषतसोकाहूबिधि जामहंशकुनिकेरउपदेश ८२
धन्ययुधिष्ठिरकाबरणतहौंजिनममकोनसबिधिप्रतिपाल
पांचौबंधवसहसेयोस्वाहिं बिसरतसोनकौन्यहूकाल ८३
तातेतुमकासमुझाइतहौ पुरजन सकलसुनौ ममबानि।
वृद्धअवस्थामहंप्रापतमैंसबबिधिआयुआयनगिचानि८४
ताते चाहत अब जैबो बन सह गंधार सुता हर्षाय।
देहुसुआयसुसबहर्षितह्वै जामेंमोरि मुक्ति बनिजाय८५
धर्ममहीपति सहबंधुनके करिहैं राजकाज मनलाय।
पालनकरिहैंपुरबासिनकोहरिहैंबिपतिबरूथनघाय ८६
तातेतुमसब मनमोदितह्वै बनकोबिदा कराओमोहिं।
सुनिअसबानीवृद्धाधिपकीरोदनकरनलागसबसोहिं८७

वृद्धनदानेअरुज्वानेसब रोवनलगेछांड़िडिड़कार ।
ताक्षणब्राह्मणइकबोलतभो सुनियेवृद्धभूमिभर्तार ८८
कुमतिनकाहूकोकीन्ह्योरण जामहंभयोअगनजननाश ।
जोकछुइच्छानारायणको सोईकरतप्रेरिपरकाश ८६
प्रजनपालिहैनृपधर्मजअति करिहियदयाधर्मकीराहु ।
तुमबनगमनहुनिश्शोकितह्वैपैयहकहैकौनकोआहु ६०
इतनेइंअवसरमेंदिनकरको ह्वतद्युतिमईआयगैसांझ ।
तबवृद्धाधिपचलिहुअनाते पहुंचेगांधारिगृहमांझ ६१
रजनिबितायोतहंसैनितह्वै होतैप्रातबिदुरबुलवाय ।
कहिसमुझायोहियआशासब भाषहुधर्मभूपतेजाय ६२
कातिककेरीशुचिपूनोकहं हमबनजावहियेहर्षाय ।
इतनेसमयाकेअन्तरमहं करिबेसुतनश्राद्धमनलाय ६३
द्रोणपितामहबाह्लीकनृप औदुर्योधनादिसोभाय ।
श्राद्धसुपावनकरिइनकोहम देवेपिण्डदानहर्षाय ६४
धनपठवावोतेहिकरिबेकहं यहसुनिबिदुरज्ञानआगार ।
सादरआयेचलितह्वांको हैजहंधर्मभूमिभर्तार ६५
समाचारसबवृद्धाधिपके भाष्योधर्मनृपतिसोंगाय ।
सोसुनिमाङ्क्योमनभिक्माअति बिनयोजेठभायसमुझाय
उन्हैंनदीजैधनयाकेहित हमसबकरबपिंडकोदान ।
दुर्योधनसहसुवउनकेसब हैंनाहिंपिंडयोगमतिमान ६७
अर्जुनतापागेअबबोलतइमि पहिलेकहांगयोयहज्ञान ।
अकिलेवृद्धाकीश्रद्धासों भारतनशेअशेषनज्वान ६८
भीमसेनकीयहबानीसुनि बोलतभयोजिष्णुसमुझाय ।
अनुचितबानीकछुकहियेना सहियेवृद्धबातसबभाय ६६

जेठबन्धव पितुहमरे के हत सुत दुखीऔरजठराय ।
रहेतुम्हारेअबआश्रयह्वैरह हुनतिन्हैंबातदुखदाय१००
दीक्षितदम्पतिबनजैबेकहं ईक्षितकरहुतासुसबमानि ।
धनबनदेवोतुवबशपानहिं करिहैं उचितधर्ममनठानि१
अर्जुनबानीनयसानीइमि सुनिकैभूपयुधिष्ठिरराय ।
धीरजदैकै समुझायोबहु रहुगहिमौन याहिक्षनभाय २
बिदुरहिंदीन्ह्योयहउत्तरपुनि सुनियेशुद्धिबुद्धिआगार ।
हयगयधनगनबसनादिकसब जहंलगमोरभवनभंडार३
सोसबवैभवकुरुभूपतिको मांगैंतितोदेहिंपठवाय ।
हमआनंदितह्वै पालबतिन आयसुसर्बभायमनलाय ४
दुखबनजैबेकोमनमागुनि मारुयोकछुकभीममनमाहिं ।
ताहितभाष्योकटुबानीइमि सोतुमकह्योभूपसननाहिं ५
बिस्मयलावैंकछुहियमेंनहिं उनहितदेहुआपनोप्रान ।
सुनिअसबानी नृपधर्मजकी तहंतेचले बिदुरमतिमान ६
आयपहूंचेढिगकुरुपतिके सिगरोहालकह्योसमुझाय ।
सोसुनिकुरुपतिअतिहर्षितभे कीन्ह्योक्रियारंभमनलाय७
तहांयुधिष्ठिरकेसेवकसब हाजिररहेकरनकोकाज ।
जोकछुभाषैंकुरुनायकसोइ झटपटकरैंभृत्यगणसाज ८
दशहजारअरुसौहजारलग जेहिधनभूपदिवायोदान ।
वेगिसोदीन्ह्योतिनभृत्यननेसबबिधिमानितासुकल्यान६
भिन्नभिन्नकरिभटश्राद्धसब दीन्ह्यो उचितपिंडकोदान ।
भूरिदक्षिणादैबिप्रनका सबकादियोखानऔपान १०
यहिप्रकारतेदशबासरलग कीन्ह्योश्राद्धकर्मकुरुराय ।
निशाव्यतीततप्रातावतखनकातिकसुखदपूर्णिमापाय११

प्रातकृत्यकरि गन्धारीसह पुनिपांडवन लीनबुलवाय ।
आयसुलैकैनृपधर्मजते कीन्ह्योबिपिनगमनमनलाय १२
पट्टीबांधे दोउनैननमहं पतिव्रतयुक्त नारिगन्धारि ।
ताकेकंधेपरधरिकैकर कुरुपतिचलेतपोप्रणपारि १३
पाणिसवांरेअग्निहोत्रशुभ आगेचलो भलोद्विजराज ।
द्विजकेपीछेदोउदम्पतिह्वै गमनेबनेसाजितपसाज १४
कुरुकुलनारीदुखभारीलखि लागींरुदनकरनडिड़कारि ।
संगैंगमनीसुतरमनीते अतिशयव्यथाकथाबिस्तारि १५
रोवत धोवत चषआंशुनसों साथैचले पांचहूभाय ।
दुखकीफांसीपुरबासीपरि रोवतचलेचलतकुरुराय १६
दशासोबरणातबनिआवैना सुनियेबीरपरीक्षितलाल ।
कछुकदूरिलगचलिभूपतितब पठयोघरैसुतनकीबाल १७
फिरिपलटायोपुरबासिनकहं सबबिधिनीतिरीतिसमुझाय
पांचौभैयनसहदम्पतितब आगेचलेमोहबशआय १८
बिदुरयुयुत्सवअरुसंजयमुनि द्विजगणसहित धौम्यऋषिराय।
तेऊसाथै नरनाथै के पाथैचले बिपति अतिपाय १९
ठईबिकलतासबउरपुरमा बिह्वलधर्मसहितसबभाय ।
पुनिपलटायोनृपआशिषदैइकइकभायअंकमहंलाय २०
भूपयुधिष्ठिरअरुपवनजतब मोहितमोहमयेबहुबैन ।
कुंतीजननीसोंभाषतभेअतिशयबिकलत्यागिहियचैन २१
सोसुनिकुन्तीअतिरोदनकरि पुत्रनबहुतभांतिसमुझाय ।
संगैंचलिभैकुरुनायकके सबबिधिनेहजालनिछुटाय २२
तबवृद्धाधिपसमुझायोबहु पलटनहेततासुकोधाम ।
तबहूंकुंतीमनआन्योना ठान्योबनैजाबइतमाम २३

पांचौभैया तबदुखियाह्वै आयेलौटि मातु बिनधाम ।
बिदुरउजागरनयसंजयये गेनृपसंगबिपिनकेठाम २४
रामकृष्ण के पदपंकज बर धरिउर वृद्ध भूप हर्षाय ।
उत्तरदिशिचलिकछुदिनमाबसिसुरसरिनिकटपहूंचेजाय २५
कथामनोहरसुखसोहरबर आश्रमबासप्रथमअध्याय ।
रामरत्नकी अनुमति लैकै बंदीदीनबखान्योगाय २६

इतिश्रीउन्नामप्रदेशांतर्गतबंथरग्रामनिवासि बाजपेयि बंशावतंस
श्रीपण्डितरामरत्नस्याज्ञाभिगासीस्वप्रदेशांतर्गतमसवासीग्राम
निवासिपं०बन्दीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषा
आश्रमबासिकपर्वणिधृतराष्ट्रस्याश्रमबास
गमनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

बिघ्ननिकंदनपदबन्दनकरि धरिउरध्यानबरदअसवार ।
कथामनोहरसुखसोहरबर गावतफेरिस्वमतिअनुसार १
जायपहूंचे कुरुभूपति जब पावन परम सुरसरीतीर ।
देखतशोभामनलोभाअति कोभाषैकहिसुकबिगंभीर २
लहरीछहरीजलगहरीशुभ हहरतमनौस्वर्गध्वजआय ।
मुक्तिनिसेनीसुखदेनीसी रहिकल्लोललोलफहराय ३
हंसकिलोलैं थितधारामहं बोलैंमनोहारिणीबानि ।
रजतकिणूकासमराजततट सुंदरपुलिनरेणुअधिकानि ४
बिछे कुशासन तहंयोगिनके बैठे तपीलगाये ध्यान ।
ऋषिमुनिसोहतद्विजबृन्दनसह बांचतसुंदरबेदपुरान ५
याबिधिशोभालखिकौरवनृप अतिशयजानिऋषिनकीभीर ।
अग्निहोत्रबिधिकरिताहीथल तहंरहिहैंनिबिताईधीर ६
भोरदिवाकरपरकाशतखन सम्मतबिदुरआदिकोपाय ।

निवस्योवांहूंदिनताहीथल श्रीभगवान ध्यानलवलाय ७
दम्पति कुन्तीसह हर्षितह्वै कीन्ह्यो गंगतरंग नहान ।
क्रियायथोचितकरिआश्रमतेहि कीन्ह्योद्विजनअमितधनदान
पुनिचलिआयेनिजआश्रममहंमुनिगणहर्षसहिततहंआय।
श्रवणकरावतभेगाथाकहि हर्षितसुन्योअन्धकुलराय ६
बासरबीतोचितचीतो फिरि संध्याकृत्य कीनिमहिपाल ।
करिउपवासनकुशआसनपर सोयेसकलत्यागिजंजाल
प्रातकाल लखिरबि आभा शुभ जागे वृद्ध भूपहर्षाय ।
प्रातकृत्यकरिमुनिवृन्दनसह दम्पतिकुरुक्षेत्रगेधाय ११
तहांराजऋषिवर केकयनृप श्रीशतयूपमिल्योमनलाय ।
राजिदेयकैसोपुत्रहिका तपहितरह्योबिपिनमहंआय १२
तासु संगह्वै वृद्धमहीपति व्यासाश्रमहिं गयेमुदधारि ।
बन्दिमुनीश्वरकेपावनपददोउकरजोरिबिनयनिर्धारि १३
वाहीआश्रममहंनिवसतभे पुनिमुनिबेशनिदेशहिपाय ।
बानप्रस्थकीबिधिसिद्धिनसह केकयनृपतिकह्योसबगाय
धारणकीन्ह्योसोइ कुरुपतिने लैकै सियारामको नाम ।
बिदुरसुसंजयसहइनहुनके औगंधारिकुन्तिकाबाम १५
बलकलअजिनहिंतनशोभितकैकन्दमूलकोखानबिचारि ।
नितप्रतिनिर्मलमनइन्द्रिनगहि करिबेलगेव्रतनमुदधारि
मनबच क्रमते जगजालै तजि भजिबे लगे रामकोनाम ।
दुस्तरतपकोतापनलागे रहिगोदेह अस्थिअरुचाम १७
जटा लटायें शिर बाढ़ीं अति ह्वैगे परम तपस्वी बेश ।
व्रतीनेमगहिदोउकायाशुचि सबबिधिसेवनलगेनरेश१८
भूप आचरत जहं दुस्तरव्रत पहुंचेतहां देवमुनि आय ।

देवलपर्बतऋषिसाथैदोउ सोहेभूपनिकटसबजाय १९
अतिहिआदरयोकुंत्यादिकने आसनस्वच्छदयोबैठाय ।
तेहिक्षणआयेद्वैपायनमुनिशिष्यनसहितमोदउपजाय २०
सुन्दरआसनबउबैठत भे तबनारदमुनि समयनिहारि ।
पूरबगाथाकछुभाषतभे लागेसुननध्यानसबधारि २१
भूपसहस्रचित्य पूरब अरु केकयराज बिदित तपसाय ।
इतहेंभूपतिशतयूपतिजे प्रपिता तासुकेर सो आय २२
सोनिजपुत्रहिकरिबसुधाधिप अपनागयेबनहितपकाज ।
करिपरिपूरणतपनिवसेतहं भोगतजहांभोगसुरराज २३
सुरपतिसदृशद्युतिदीपतिभे बिलसतअबहुंअमरपुरराज ।
नृपभगदत्ताकोप्रपितामह नृपशैलालकीनरुवइकाज २४
भूपवृषध्रौ जगजाहिर है तप बलरह्यो इन्द्रपुर जाय ।
तनयतपस्वीमांधाताको जेहिपुरुकुत्सबखानतगाय २५
यहिबिधिसोउतपश्चातपतपिबिलस्योइंद्रलोकजहिधाम।
बिदितमहीपतिक्षशलोमाहैसोउइतसाधियोगअभिराम।
बिलसनलाग्योसुरनगरीमा सुनियेमहाज्ञानआगार ।
श्रीद्वैपायनकीआशिषते जोइततपततसअधिकार २७
निश्चयपावत सो देवनपुर यामहंतनिक अंदेशानाहिं ।
जोकोउराजा बैकुंठगो तपकरियहो आश्रममाहिं २८
तुमहूंदम्पतितपश्चातपतपि इत श्रीब्यास कृपासोंराज ।
सबसुखपैहौ स्वर्ग सिधैहौ लैहौसुरनकेर मुदसाज २९
भूपयुधिष्ठिरकोजननीयह सुमिरतपतिहिपतिहिहितमानि
पासपहुंचिहैसोनिजपतिके सतगतिलहीसहजमोआनि
जयनयआकृतियेसंजयमुनि निश्चयजाहिंबिष्णुकेधाम ।

धर्महिं मिलिहै बिदुराज्ञानी जेहिसबभांतिधर्मकोकाम ३१
बुद्धिबिशारद श्रीनारदके अमृतबचन सुनतक्षितिपाल।
मुदसहपूज्योदोउपांयनकहं आशिषपायकीनहियमाल
बहुबिधिअर्च्योशतयूपान्नृप अस्तुतिकियेजोरियुगहाथ।
पुनियहपूंछ्योश्रीनारदसों सुनियेबिनय दीनकेनाथ ३३
यहिथलजेते तप कर्त्ताहैं सबको कह्योलोकको बास।
पैइनदम्पतिहितभाष्योना सोउकहिकछुकरौपरकास
भाषणकीन्ह्यो तबनारदमुनि सुनियेबचन भूमिभर्त्तार।
तीनिबर्षतपकरिदम्पतिये पैहैंधनदधाम अधिकार ३५
यहकहिपर्बत अरु देवलसह नारदगये बिष्णुकेधाम।
अतिआनंदितह्वैअवनीपतिलागोतपनतपस्याधाम ३६
कथामनोहरयहश्रवणनसुनिधनिश्कह्योपरीक्षितलाल।
बैशंपायनसों पूंछतभे फिरिकाभयो अगारीहाल ३७
मनगुनिमुनिबर पुनिभाषतभे सुनिये देवरातसुकुमार।
दैउपदेशै मुनिनारद जब उतते गये देव आगार ३८
ताहीक्षणते तपकर्त्ता सब भर्ताभये योग गतिकेर।
भयेआचरतअतिदुस्तरतप ह्वैगेदूरि बिषयकेफेर ३९

स० तावनमेंतपभावनह्वै तपआतपसोंतननतावनलागे।
पावनह्वैहरिकेपदपावननिश्चलध्यानलगावनलागे॥
नियमासनऔयमध्यानहिंकैपुनियोगसमाधिजगावनलागे।
लोकअपावनपावनकोहियपूतिबिभूतिरमावनलागे ४०

इतकोकरणिइमिबरणिकहि अबउतइन्द्रप्रस्थकोहाल।
तुवअभिलाषतकहिभाषतसोसुनियेभूपपरीक्षितलाल ४१
जबतेबनगेकुरु वृद्धाधिप तबतेसहित बान्धवनधर्म।

तनमनशोचनकरिकछुदिनलग कीन्हयोंभूमिपालनाकर्म
निशिदिनशोचतजलमोचतचषरोचतराजकाजनहिंहीय ।
मलिनकलासीभईचंदाकी भासीअधिकउदासीजीय ४३
अधिकलालसान्पदेखनकी शशिबालसाभयोमुखमैल ।
चितबिहालसाकछुभावैना तनसुखहंसनअसनअरुचैल
मतठहरायो कहिसचिवनते शुचिबंधुनते पूंछिपुंछाय ।
यावतनारीनरपुरजनसह देखनचले बनहिंकुरुराय ४५
राखियुयुत्सहि पुररक्षनहित लक्षनसैन सुभटठहराय ।
विघ्नबिदारणपदधारणकरि चलिभेबनैमनैमुदछाय ४६
शनैशनैचलिकछुदिवसनमहं यमुनाउतरि आश्रमतीर ।
पहुंचेराजतकुरुनायकजहं लीन्हेसंगजननकीभीर ४७
कछुकदूरिलखिथलकुरुपतिको बाहनत्यागिरसबभाय
चलेपियादेमगसादेपग पूंछतबनबासिनमनलाय ४८
नृपढिगपहुंचेनृपधर्मजतब देख्योदशाकृशाअतिगात ।
भरो बारिसोंघटलीन्हेकर आवतउतैचलेसकुचात ४९
परेपांडव गिरिचरणनमहं दवसोबसी बिरहकीजासु ।
बेगिउठायोकंठलगायो भेंट्योसकलबांधवनआसु ५०
क्षोहमोहवश रोवनलागे धोवनलगे बारि सों नैन ।
कंठघुचघुचापूरणहोइगो कहतनबनैशोकबश बैन ५१
मिलीकुन्तिको सबपुत्रनकहं गाई यथालवाई पाय ।
पतिव्रतपारीगंधारीसब भायनमिलीअंकमहंलाय ५२
दर्शनआसी पुरबासी जे औरो भूप सुतन कीबाल ।
मिलीमिलाईसबसर्बनकहं सासुनपगनपखारतहाल ५३
जलकलशालैतिनहाथनसों पांडवलियोकरननिजलाय ।

बधुनपुरजननसहतहंतेचलि नृपथलमध्यपहूंचेजाय ५४
राजतभ्राजतभे बिरहीदुख पूंछतकुशल प्रश्नहर्षाय।
तेहिक्षनबनकोनृपआगमसुनि आयेमुनिनकेरसमुदाय
धर्मपखारयेोतिनपावनपद आदरसहित लियेबैठाय।
गुनिमुनिमनमातबसंजयते बोलेआसहुलासहिगाय ५६
जेकोउआये बनअवसरयहि सबकेनाम देहुबतलाय।
सुनिमुनिबानीमधुसानीइमि संजयकह्योसकलसमुझाय
बरदिनकरसम शुचिआभाधर येहैंभूप युधिष्ठिरराय।
जिनमनभावतयशगावतसब आगरनीतिरीतिअधिकाय
प्रबलप्रचण्डै भुजदण्डैजेहि अतिशय बीरधीरधरकाय।
सोद्युतिसोमाहैभोमायह जोमाकालहु नहीं डराय ५८
येधनुधारी दिबिचारीसम बनवारीके सखापियार।
पारथभारथपतिभाखतयहि राखतअधिकभूपहियप्यार
जलरुहपांखीसोआंखीजेहि राखीसुछबि मारअनुसार।
नकुलबखानततेहिजानतजग ठानतअधिकयुद्धकोकार
दिपतहुतासनसमआसनपर बासनश्रुतिपुराणसमजानि।
हरियशनेवासहदेवायहगुणागरज्ञानमानकोखानि ६२
पंचभतारी नृपप्यारीयह भाषत द्रुपददुलारीनाम।
गह्योदुशासनशठजादिनपट राखीलाजजातयहिश्याम
शोभाभद्रा शील समुद्रा भाषत याहि सुभद्रानाम।
अतिप्रियभगिनीनंदनंदनकी पारथधीरबीर को बाम ६४
यहबिराटजा पारथसुतकी सुभगा याहि उत्तरानाम।
सुमतिपरीक्षितकीमातायह शीलमतिसुभगपतिब्रत बाम
यहिबिधिबरण्योकहिसंजयमुनिभेपरसन्नमुनिनकेवृन्द।

आशिषदैकैनृपधर्मजका निज २ थलचलिगयेअनंद ६६
धर्मजपूंछ्यो तबकुरुपतिते कहियेतात बातसमुझाय ।
बिदुरबिलोकतनहिंदीखतकहुंकितचलिगयेमोरसुखदाय
तबनृपभाष्योकहिबिदुरागति तपआचरतबिपिनमहंघोर
गहेमौनतामननिर्मलतन भक्षतबायुमनो तपचोर ६८
कबहूंमुनियनलखिआवतहै इतउतभ्रमतरहतदिगबास ।
स्वर्हिबिसरायोहियअंतरतेआवतकबहुंनहींममपास ६६
इतनेइअवसरमहं धर्मजको दर्शतभयो बिदुर बिज्ञान ।
चलोजातसोबनधूलिनअति कीन्हेमत्तद्विरदसामान ७०
तेहिअवलोकत झटधर्मजभट टेरतचले तासुलैनाम ।
मैंहौंधर्मजतुवदर्शनहित आयोंदेहु दरशतपधाम ७१
सुनिनृपबानी सो ज्ञानीतब राजतभयोगहन बनजाय ।
ठाढ़ोह्वैगोलगितरुवरसों यकटकलख्योनृपहिमनलाय
निकटजायकैतबधर्मजनृप ठाढ़भये जोरि दोउपानि ।
सोचपखोल्योकछुबोल्योना चपसोंदियोचपनरुखतानि
योगकिशक्तीसोंमिलवतभो धर्मजप्राणमध्य निजप्रान ।
मेल्योइन्द्रीसबइन्द्रिनमहं बुधिमनबायुमिलायसुजान

स० तनकोतनमेंमनकोमनमेंअरुप्राणमेंप्राणनियोजितकीन्ह्यों ।
बुद्धिमेंबुद्धिबिशुद्धिमेंशुद्धि सुकर्मनकर्मनकोलयलीन्ह्यों ॥
बंदिसुधर्ममेंधर्ममिलै अनिलै अनिलै महंकैहियचीन्ह्यों ।
बिदुराधिपधर्मकेदेखतहीभगवन्तपुरैसोतुरैचलिदीन्ह्यों७५

बिदुर बिज्ञानी यहि भांतिनसों ह्वैकैधर्मभूपमहंलीन ।
यानारूढ़ितह्वैगूढ़ितगति पहुंच्योबिष्णुपुरीपरबीन ७६
बिदुरहिदीख्योतब धर्मजनृप ह्वैगो महाअचेतनगात ।

गुणबलदोपतिनिजदेहीमहं बर्द्धितलख्योभूपअवदात७७
तबयहनिश्चयमनआनतभेसबबिधिजानिलीनअनुमानि।
योगबिधानोकरिज्ञानीसोतनलयभयोपरतअसजानि७८
भूपयुधिष्ठिर तबचाह्योमन करिबो दग्ध तासुकोगात।
भइनभबानीतेहिअवसरमा मतियहकरौभूपमतिख्यात
पावनपरमायहयोगीभो कीन्ह्योज्ञानअगिनतननाश।
झटपटपलटयोन्‍पताथलते मुनिबचभयोहियेपरकाश
आयसुनायोकहिकुरुपतिको सबरीबिदुरदशाशुभगाय।
ठग्रिसेरहिगेसबमनमांगुनि अतिदुखगयेभूपहियछाय
आगतस्वागतपुनिधर्मजको कीन्ह्योवृद्धअंध कुरुराय।
बनफलभोजनदैसबहिनको भुविआसनमहंदियेरुवाय
धर्मांथितभेभुविशय्या करि कहिकहिकथाबार्तालाप।
रैनिबितायोप्रातहिपायो कीन्ह्योनित्यकर्मअरुजाप ८३
करियथोचितअशनादिककरि आयसुवृद्धमहिपकोपाय।
मुनिनसुआश्रमदेखनलागे अतिअनुरागसहिततहंजाय
हिलिमिलिसबरेमुनिगुनियनसोंफिरिकुरुवृद्धभूपढिगआय।
बिधिवतबंदनपदकंजनकरि बैठेवेशनिदेशहिपाय ८५
जससुरवृन्दनसहसुरपति के शोभत देवगुरूगुणदक्ष।
तथायुधिष्ठिरसबभाइनसह सोहतवृद्धअधिपमतिरुवक्ष
तौन्यहिंअवसरमहंशिष्यनसह आयेतासुआश्रमव्यास।
आसनदीन्ह्योउठिअवनीपति पूज्योचरणकमलसहुलास
आसनस्थह्वैद्वैपायनतब हर्षसहित मुनिनसमुदाय।
नमितनिहारेकरजोरेतब पूछतभये युधिष्ठिरराय ८८
दशाबिदुरकी कहिबरणियप्रभु पूरबजन्मकेरयेकौन।

कौनेकारणगतिपायोयह सोसबबरणिकहौमतिभौन ८६
सुनिसुखदायनिमनभायनियह भूपतिधर्मकेरिबरबानि ।
भेदबतायनिद्वैपायनितब सुनियेकथान्रपतिमतिखानि ॥
बुद्धिबिपर्य्ययतेअवसरक्यहु बिधिभावनाभईअसआय ।
श्रीयमराजहिमांडव्यऋषिरिसबशशापदीनअनखाय ६१
दासीसुतह्वैतुमजन्मौजग तेहिहितबिदुरजन्मयमराज ।
पायोआयोमहिजन्महिलहिसुनियेभूपयुधिष्ठिरराज ६२
योगअग्निसोंतनदाहनकरि आखिरभयोधर्ममहंलीन ।
धर्मबिदुरअरुबिदुरधर्मयह जानहुएकरूपपरबीन ६३
बायुबारिक्षितिगगनानलयेसबदिनयथासमहिद्दरशायं ।
धर्मबिदुरकोतिमिजानहुंन्रप दोऊएकरूपयेआयं ६४
धर्म्मजन्रप अरुद्वैपायनसों यहिबिधिहोतबार्तालाप ।
तेहीसमइयाकेअवसरमहं नारदकरतबिष्णुयशजाप ६५
पर्वतदेवल अरुबिश्वाबसु इनसहगये तासुथलआय ।
वृद्धाधिपकोलहिअज्ञातब पूज्योधर्मपर्मऋषिपाय ६६
भयेअनंदितमुनिबंदिततब भाष्योतपबिधानबहुभांति ।
कथाकीर्तननारायनको गायनकीनयथाश्रुतिख्याति ६७
सोसुनिबोलेद्वैपायनमुनि अतिशयदया दृष्टिहियलाय ।
हेकुरुनायकलखिदीक्षितत्वहिं मैंसबभांतिरह्योंहर्षाय ६८
अबजोइच्छितु तुमचाहौमन पाउबसुनबदेखिबोआदि ।
मांगौयहिक्षनमैंदेहौंत्वहिंयामहंतनिकजानुनहिंबादि ६९
सुनिअवनीपतिअतिहर्षितभो श्रीबरव्यासदेवकीबानि ।
परमनिहोरेसोंबिनवतभो जोरेदुऔसरोरुहपानि १००
कपटधारिकै मनबालकमम जूझे कुरुक्षेत्ररनमाहिं ।

उनकेपापनतेपरलयभै सोकछुकहतबनतअबनाहिं १
बंधुपितामह अनुबंधीअरु सेवकसखासगे परिवार।
तेसबगारतभेभारतमहं समुझिसोव्यथाहोतबिकरार २
अग्निसदृशसोदुखजारतहै यहकहिमौनरहोनृपधारि।
तबकछुचिंतनकरिपरिहरिदुखबोलीमधुरबचनगंधारि ३
हेमुनिनायकदुखघायकतुम दायकचारिपदारथनाथ।
परमदुखारी हमनारीसब बिनपुत्रनके भईंअनाथ ४
औरौपुरघरके बासीसब फांसीपरे व्यथाकीस्वामि।
तिन्हैंउबारौआरतटारौ सबबिधिजानिअपनअनुगामि ५
हियेकराहैंदुखसाहैंअति तिनकेबिरहबियोगहिपाय।
देखनचाहैंहतयोधनका करिकैकृपादेहु दिखराय ६
इमिगंधारीकी बातैंसुनि पुनिमुनि धर्ममातुकोदेखि।
मधुरबोलमुदखोलेतब जोताहिंरुचैसो मांगुबिशेखि ७
सुनिउपदेशन द्वैपायनको हर्षितकह्योकुंतिकामाय।
बिधिवतउतपतिरबिनंदनकी जिनकोकरणबखान्योगाय
पुनियहशोचतिअतिरोचतिमन द्वैपायनते कह्योबुझाय।
मैंनहिंपायोंसुखतातेकछु हमतेसोन लह्योसुखमाय ८
यहदुखसहियेहियकवलौंप्रभु जातनव्यथाकथाकछुगाय
तातेबिनवतुवचरणनकहं अबसोकरणदेहुदिखराय १०
सुनिमुनिबाणीइमिकुन्तीकी शोचनलगेहृदयधरिध्यान।
पुनियहदम्पतितेभाषतभे सुनियेबचनभूपमतिमान ११
संगआपनेसुतवधुअनलै दम्पति जाहुसरितके पास।
देखनपैहौतहंपुत्रनकहं ह्वैहैसहजप्रपूरण आस १२
सोसुनिकुरुपतिकुलबालनसह लीन्ह्योसंगधर्मसबमाय।

जायपहूंचेतटसुरसरिके कीन्ह्योंतहंनिवासमनलाय १३
बर्षबराबरिदिनबितयोसो करिसन्ध्यादिकर्मकुरुभूप ।
व्यासदेवकेढिगबैठतभे कीन्हेहियलालसाअनूप १४
व्यासबारिमधिधंसिताहीक्षणरबिसमकियोमंत्रकोजाप ।
कीन्ह्योंसबकोआवाहनतब अतिघनशब्दभयोतेहिआप
पुनिसबनिकरेन्नृपसुरसरिते बाहनसैनसहितसमुदाय ।
रूपअनूपमजसप्रथमैरहैं तैसेसकलपरे दरशाय १६
सखासुहृदसुतअरुसैनासह इक २ अलगपरेदिखराय ।
करणसुयोधनसहयोधनके तहंलखिपर्योसाथसौभाय
शकुनिजयद्रथअरुद्रुपदाधिप अरुलखिपरोभूपबैराट ।
शल्यशिखंडीदुर्दढोशल यउलखिपरेकरेबरठाट १८
सोमदत्त अरुबाहलीकन्नृप भूरिश्रवा बीरवृषसैन ।
धृष्टद्युम्नअरुकेकयाधिपति बांकेखरेपरेलखिनैन १६
द्रौपदेय अरु भटपारथसुत लक्ष्मण इरावाणरणधीर ।
चेकितानभगदत्तअलम्बुष काशीराजघटोत्कचबीर २०
इन्हेंआदिलै अरुभूपतिबहु सुरसरिमध्ये परेदरशाय ।
व्यासाशिषतेकुरुनायकसब सुभटनलख्योदिव्यचक्षपाय
सुतपउत्रअरु हित बन्धवगण देखतभूपयुधिष्ठिरराय ।
उठिभेंट्योदुखमेट्योसबसुहृदनमिल्योहृदयलपटाय २२
पितुपतिपुत्रनअवलोकनकरि हर्षितमिलींपरस्परतीय ।
सोदिनमुनिबरकीदायातेअतिशयमुदितकरनभोहीय २३
यहिप्रकारमिलितहंसबसोंसबसोंनिशिवासरतहांबिताय
बिदामांगिकैसबसबहिनसोंनिज २ लोकगयेहर्षाय २४
तबसबतरुनिनसोंभाष्योमुनि ठाढ़ेसरितमध्यतपओक ।

जौतियचाहै जियमिलिबोपिय सोजलमध्य आयनिश्शोक २५
मनअनुरागै तनत्यागै त्वर जावै स्वामिलोक हर्षाय।
यहसुनिकुरुकुलबरनारीसबभारीमोदहृदयउपजाय २६
निजरस्वामिनकोसुमिरणकरिऔपातिव्रतधर्मबिचारि।
गंगतरंगनतनभंगनकरि गइंपतिलोकशोकपरिहारि २७
कथामनोहरसुनिपावनमति बोलेफेरिपरीक्षितलाल।
मुनिममबिस्मयमनआईइकसोकहिबेगिबतावहुहाल २८
जादिनमानुषतन त्यागैइव तादिनहोत देहकोनाश।
देवपुधारी रणचारीसब किमिसहदेह भयेपरकाश २९
शंकाबंका जन्मेजयकी सुनिकै व्यासशिष्य मतिधाम।
श्रुतिगतसम्मतभाषनलागेसुनियेमहाराजगुणग्राम ३०
कर्मबिनाशतनहिंजबलगनृपतबलगहोतदेहनहिंनाश।
जन्मदूसरोनहिंजबलगयहतबलगप्रथमदेहकोभाश ३१
पुनिजन्मेजय यहभाषतभे जोयहरीतिअहै मतिधाम।
तौपितुदर्शनअभिलाषीहमसोयहकरैंव्यासममकाम ३२
निश्चयआवैतबजियरेमा अरुसंदेहसकलमिटिजाय।
सुनियहबानी जन्मेजयकी मुनिद्वैपायन कौनउपाय ३३
देवरातको आवाहनकरि लीन्ह्योत्वरित तहांबुलवाय।
सोईरंगढंगहै अंगनका सोइबयरूप परोदिखराय ३४
भये अनंदित जन्मेजय तब दर्शन परमपिता के पाय।
कियेबंदनादोउचरणनकीअवभृथन्हानदीनकरवाय ३५
गयेपरीक्षितसुरपुरकातब करिकैपरमअवभृथस्नान।
अतिमनमोद्योजन्मेजयनृपमुनिकोअतिहिकीनसन्मान ३६
रुचिसहचितधरिजोसज्जनजनयहइतिहाससुनैमनलाय।

अवशिसोपावैमनइच्छितसबअंतिमअमरनगरकोजाय ३७
बैशंपायनकी बाणीयह सुनिकैफेरि परीक्षितलाल ।
रुचिसहपूंछ्योमुनिनायकतेसुनियेसत्यधर्मप्रतिपाल ३८
पुत्रपउत्रनअरुसुभटनसह सेवकसखनदेखित्यहिकाल।
कर्तबकीन्ह्योकाआगेफिरिकागतिलह्योअंधक्षितिपाल ३९
बैशंपायन तबगायन करि जन्मेजयते लाग बताय ।
पुत्रपउत्रनलखिकुरुपतिपुनिनिजआसरमपहूंचेआय ४०
परजनसैनहिंसिखदैकैतब पुरहितबिदादीनकरवाय ।
निजरइस्त्रिनसहपांडवसब भूपतिनिकटबिराजेजाय ४१
त्यही समइयाके अवसर तहं आये ब्यासदेव हर्षाय ।
आसनरुथइवैमतिदायकपुनिकुरुनायकतेलागबताय ४२
सुनुनृपज्ञानीममबानीको होतुमसबविधिसरससुजान।
रुवक्षदक्षहौगतिमतिहूमा पायोनारदादिसोंज्ञान ४३
ताहितचितमहंशुभचिंतनकरिपरिहरिशोचदेहुउरक्षार।
तपब्रतधारणकरिदृढ़ताधरि करिये शेषआयुनिर्धार ४४
प्रीतिकेपागेयेपाण्डवसब आयेधाम त्यागितुवपास।
देहनेहकोफिरिबर्द्धनभो यहिथलबीतिगयोइकमास ४५
बिदाकराओतिनसबहिनको तजितुवनेहनगरकोजायं।
तुमलवलावोनारायणसोंजामहंदुओजन्मबनिजायं ४६
बचसुखदायनद्वैपायनके सुनिईमिहृदय हर्षिकुरुराय।
शिषदैबोलेनृपधर्मजसों सुनियेपुत्रबचन मनलाय ४७
तुवआगमसोंयहिआश्रमहम पायेसबप्रकारअहलाद।
अवधिब्यतीतइकमहिनाकी तुमबिनराजकाजसबबादि
प्रीतिसहितधरिममआयसुशिरअबतुमइंद्रप्रस्थचलिजाहु।

नीतिसहितकरिपुरपालनजन रक्षेहुसदासहितउत्साहु॥
सुनियहभाषणकुरुनायकको मोहितभयेयुधिष्ठिरराय।
नम्रितबानीसोंबोलतभे सुनुममबिनयतातमनलाय ५०

स० राखहुमोंहियहांअपनेढिग हौंकरिहौंतुम्हरोसेवकाई।
देहौंसबैबिधिमोदतुम्हैं द्विजबंदिहैजामहंमोरिभलाई॥
भेजतहौंपुरपारथभीम यथारथराज करैंसबजाई।
जाततजेजलजातपदौनहिं एकघरीनगरीमसुहाई ५१

भूपयुधिष्ठिरकी बानीसुनि लागी कहन फेरि गंधारि।
हेसुतऐसोमनलावोना जावोनगरमोरि सिखधारि ५२
कुरुकुलनायकसबलायकतुम बिलसहुजायचैनसोंराज।
आयसुमानहुकुरुराजाको हौतुमसदाधर्मशिरताज ५३
सुखसहगमनोगृहबंधुनलै पालहुप्रजानीतिसोंजाय।
सुनियहबानीगंधारीको शोचनलगेयुधिष्ठिरराय ५४
पुनिनिजजननीसोंभाषतभे मातामोहिंतजतकुरुराज।
सैंतजिइनकेपदपंकजअब जाननचहतकरनकोराज ५५
सखासुबंधवसम्बन्धिनबिन मोकहंलगतराजपदसून।
इततौसुखसोंदिनबीततउत जगिहैहृदयमध्यदुखदून ५६
यहसुनिबोल्योसहदेवापुनि हेनृपधर्मजाहु तुमधाम।
हमइतरहिबेनिजमातासंग लहिबेभूपसेवइतमाम ५७
सुनतबालकनकीबाणीइमि कुन्तीरही महादुखपाय।
पुनिसमुझावतभेइकरसुत करि२ प्रीतिअंकमहंलाय ५८
हेसुतजावोगृहआनंदसों भोगोराज बिभवकोजाय।
रहेतुम्हारेतपबिनशतइत जीयनचहतनेहनिकुटाय ५९
यहीअवस्थामहंबाजिबसब तुमकहंकरबराजकोकाज।

धरिसिखसबकोउरअंतरअब गमनहुंघरै सुमतिशिरताज
यहिविधिसिखदेकुन्त्यादिकने कीन्ह्योबिदापांचहूभाय ।
रोवतधोवतचषआंशुनसों घरचलिभयेयुधिष्ठिरराय ६१
बहुविधिबिलख्योकुरुनायकतबसहिनहिंसकतसुतनकोत्याग।
करिपरिदक्षिणसबबन्धवतब बन्धोचरणसहितअनुराग
द्रुपदसुतादिकगहिसासुनपग रोदनकरतमहाबिकरार ।
धर्मप्रपूरितअतिआरतसों गमनेमहामोहहियधार ६३
चलिकछुमगमहंपुनिपलटतउतदेखतसबहिदृष्टिफैलाय ।
यहिविधिदुखसोंसबआवतभे हयगयरथनचढ़ेसबभाय॥
इन्द्रप्रस्थकहंचलिआवतभे निज२ धामगयेनरनारि ।
लागेबिलसन नृपधर्मजतब सबविधिराजकाजनिर्धारि
यहिविधिबरषैदुइबीततपुनि आयेतहांदेवऋषिराज ।
लियोसहादरउठिधर्मजनृप इस्थितकियोसुथलनरराज
आगतस्वागतकरिधर्मजपुनि बोलेनमितजोरिदोउहाथ ।
हालबताइयकहिस्वामीइतकारणकौनआगमननाथ ६७
भयेदेवऋषि तबभाषत यह सुनियेभूप युधिष्ठिरराय ।
इकदिनगमनेहमउत्तरदिशितहंवृत्तान्तदीखयहजाय ६८
जबकुरुनायकके आश्रमते तुमचलिरह्योनगरमहंआय ।
कुरुक्षेत्रतजि कुरुनायक तब गंगाद्वार गयेहर्षाय ६९
धारणकीन्ह्योतहंअनशनव्रत करिबेलगेबायुआहार ।
अरुगंधारीजलभक्षतिभै करिकैबिबिधभांतिआचार ७०
पुनितुवमाताजलभक्षणकरिपुनिव्रतरहीबिपिनफलखाय।
सोउत्याग्योअनुराग्योयह भोजनकरैछठेंदिनपाय ७१
इकदिनअवसरअसआवतभो सबजपकरैंधरेप्रभुध्यान ।

ताक्षणतौनैबनअंतरमहंअतिशयआगिलागिभयमान ७२
भयेबिकलताबशबनचरसब इतउतगयेजीवलैभागि ।
कितनेउंजरिबरिगेआगीमासुनुनृपसत्यबचनअनुरागि ७३
मातुतुम्हारीअरुदम्पतिनृप ब्रतकरिभयेबिनाबलगात ।
चलनन पायेसोकौनिउंदिशिसंजयबूझिकह्योयहबात ७४
नेहछोंड़िकैतुमहमरोअब यहथलत्यागिजाहुलैप्रान ।
योगधारणाकरितीनिउंतब धाह्योनैनमूंदिप्रभुध्यान ७५
यहसुनिसंजयमेधावीगुणि भावीजानिलीनमनमांझ ।
करिपरिदक्षिणतबतिनहुंनको अंधितकियोनेहकोसांझ ७६
त्यागनकरिकैतेहिआश्रमको गंगातीरगयेमतिमान ।
योगधारणातिनधारीसबलीन्ह्योसबिधिमौनमनआन ७७
जरेकाठसमह्वैनिश्चलत्रय भयेननेकुबिकलदुखपाय ।
कौतुकभाषणकरिमुनियनते हिमगिरिगयोसुसंजयधाय
तिनमुनियनसोंसुनिगाथाहम आयेभूपतुम्हारेपास ।
कर्त्तबवाजिबअबकरिबोजे। सोअबकरहुधर्ममतिरास ७८
भूपयुधिष्ठिरयहअनरथसुनिअतिहियगहयोदुसहकीताप।
कुंतीमाताअरुदम्पतिकी गुनिदुखदशाकीनपरलाप ८०
जिनकेबालकभिम्मार्जुनअस जेकालहुकोनाहिंडरायं ।
हायगोसइयांकै मर्जीयह तेजरिमरेवृथादवदायं ८१
कहिश्याबिधितबधर्मजनृप अरुहियशोकओकसोंपूरि ।
पांचौभैयनसहआरतह्वै रोदनकरतभयेसबभूरि ८२
कुरुकुलनारीसुनिआरतयहअतिशयकरतभईबिललाप ।
तापसमानीहियसबहिनके गुणि२अंधमपदुखदाप ८३
तबसमुझायोमुनिनारदपुनि सिखदैनृपतियुधिष्ठिरराय।

हेनृपमिथ्यादुखत्यागनकरि मानहुबचनमोरमनलाय ८४
नशिततअनाशितबिधिशोचौंहिय तेयहियोगरहैंकोनाहिं।
कुंतीभूपतिगंधारीसह कीन्ह्योउग्रतपहिबनमाहिं ८५
त्यागनचाहततनगाहिकैव्रत शोचतरहेयहीदिनराति।
जरेनप्रकृतानलपरिकैसो कीन्ह्योयोगअग्निउतपाति ८६
तामहंत्यागयोतनतिनहुंनने यह हमसुनीमुनिन्नसोंबात।
शोचनकीजैअबउनकोकछु गेसबस्वर्गलोकहर्षात ८७
पाण्डुसमीपैगइमातातुव जेहिहितकीन महातपधारि।
शोकत्यागिकैतिन्नबिधिवतशुभ करियेउदकक्रियानिर्धारि ८८
यहसुनिभूपतिगुनिबाजिबमन बंधुनसहितसंगकुलनारि।
इकइपटगहिपुरबासिनसहसुरसरितीरगयेदुखपारि ८९
क्षणकबैठितहंलैसम्मतसब कीन्ह्यो गंगमध्यअस्नान।
भूपयुयुत्सहिकरिआगेनृप लागेकरन उदककोदान ९०
कुरुपतिदम्पतिअरुमातहिनृपबिधिवतउदकदानकोदेय।
जातिविधिज्ञनबुलवायोपुनि अरुतिनकोशुभसम्मतलेय ९१
भाषिसुनायो यह सबहिनते गंगाद्वारजाहु तुमभाय।
जरेअनलमहंजहंतीनिउंजनतिनजलअस्थिप्रवाहहुजाय ९२
सुनिअसआयसु नृपधर्मजको गेसब गंगद्वारहर्षाय।
बादिबारहेंदिनकुलजनसह भेतनशुद्ध युधिष्ठिरराय ९३
कियेश्राद्धक्रियतबबाजिबजो दीन्ह्यो द्विजन असंख्यनदान।
तिनतिनहुंनकोतबअलगालग कीन्ह्योंपिंडदानमतिमान ९४
नगरप्रवेशितभे भूपतितब लैसंगबंधु कुटुंबपरिवार।
जेजनगेहते बनइततेचलि तेसबपहुंचिगंगकेद्वार ९५
हाड़ तीनिकै तबतिनहुंनके करिएकत्र सुगन्धनसानि।

सुरसरिधारामहंप्रबहतभेपुनिचलिआयेभूपकीयानि ९६
जोकछुकीन्ह्योउतकर्तबसब　धर्मजभूपहिंदियोसुनाय।
करिआश्वासितनृपधर्मजको नारदगमनकीनहर्षाय ९७
दुर्योधनके बधकीन्हे के　पन्द्रह बर्ष बादि कुरुराज।
रहिहस्तिनपुरअरुबर्षत्रय कीन्ह्योबिपिनयोगकोसाज ९८
बर्षअठारहगत नाश्येतन　ताकेबादि युधिष्ठिरराय।
अधिकउदासेमनबासेदुख भोगतराजभोगसकुचाय ९९
नयसहपालतपुरबासिनको　कीन्हेरामकृष्णकोध्यान।
सोगतिधारतमतिपारतसो जामहंसदाहोयकल्यान२००
कृष्णचन्द्रके पदपंकज महं　धारेरहत सुदृढ़ बिश्वास।
कृष्णचंद्रकीशुभदायाते　कोनहिंकरतपूरिनिजआस १
कृष्णचन्द्रके पदपंकजधरि　पापीलहत सुरनकोधाम।
कृष्णचन्द्रकेपदपंकजधरि　पावतव्यथासकलआराम २
कृष्णचन्द्रके पदपंकजधरि　आश्रमबासपर्ब सुखदाय।
रामरत्नकी अनुमतिलैकै　बंदीदीन बखान्योगाय ३

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिबाजपेयिबंशावतंस
पण्डितरामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासी
ग्रामनिवासिपं०बंदीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारत
भारतखण्डभाषाआश्रमबासिकपर्वसमाप्ति
र्नामद्वितीयोऽध्यायः २॥

हरिगीतिका॥

सुमनबाहिनिनिकट शुभघट लसतबंथरग्रामहै। करतजहंद्विजचत्रिवणि
क्ऽरुशूद्रवर्ण बिरामहै॥ नेकराम सुनामतहं द्विज बाजपेय निवासिहैं।

तासुसुतसतमत प्रशंसक शिवचरण सुखरासिहैं ॥ तिनतनय शुभशीलमय नयरीति प्रीति उजागरे । गुणनागरे सुखसागरे अति सुमति संगतिआग रे ॥ छबिधाम रूपललाम श्रीयुत रामरत्न सुनाम हैं । जनपीर नाशक सुखप्रकाशक परम दायाधामहैं ॥ विनिदेश वेश सुपाय तिनको धारि मुद सहशीशपै । शुभछंदबन्ध पुराण भारत कहेहु बललहि ईशपै ॥

स० गंगतरंग समीप महाछबि दीपसि दीपतिहै जनुकासी ।
रम्यपुरी शुभकर्मकुरी धन धर्मधुरी गुणज्ञान अकासी ॥
शुभ्रशशीसीलसीहुलसीबिलसीविकसीअतिउज्ज्वलतासी ।
बंदिनिवासी तहांसबजानत नामबखानतहैंमसवासी ॥

क० दीक्षितसुकुलद्विजरामदीनवीनमतिप्रपिताहमारेअतिप्यारेहरिनामके।
भागूलाल जनक बनक वर शील डील गुणअनुरक्त प्रियभक्तसियरामके ॥
बंदीदीन नाम ममभेव द्विजपदसेव देवयशगान यहीकाम सब यामके ।
आरतनशन भवभार विनशनहित भारतकह्योंहै बल कृष्णबलरामके ॥
स्वक्षमतिदक्षअतिश्रुतिऔपुराणनमेंतत्त्वज्ञानरतिसुतिगतिहरिध्यानमें ।
कबिताकलामेंनीतिरीतिमामिलामेंवाद्यगानके बिधानमेंअनन्यहैंजहानमें॥
नामरघुनरायन सोशिक्षक प्रतिक्षमोर कृष्णरसरसिक प्रवीने दान मानमें ।
बंशतिरपाठी अवतंशजीव अंशसमप्रभुताप्रकासोशशिभासीपण्डितानमें ॥

दो० चरण कमल तिनके विमल धारि हृदयसुखरास ।
कहेहु विमल भारत परब भाषा आश्रम बास ॥
पढ़हिंसुनहिं गावहिंसुजन पूरणकरि सुखसाध ।
कहुंअशुद्ध लखिशुद्धकरि क्षमहिं मोरअपराध ॥

इतिश्रीआश्रमबासपर्व्वसमाप्तः ॥

—※—

अथ श्रीमहाभारत भारतखण्ड भाषा मूसलपर्व्व प्रारम्भः ॥

—※—

दोहा ॥

माता शारद शरणलहि दाता कूशल सर्व ॥
तेहिभजि भारत रचत शुभ भाषा मूसलपर्व १

सुमिरण ॥

नमस्कारकरिनारायणको नरउत्तमहिंहृदयमधिध्याय ।
श्रीद्वैपायनकेपायनभजि शारदचरणरहतलवलाय २
भूकृत भूभृत भूभर्ता भू कर्ता भग धर्ता भगवान ।
तेहिभजिभारतबिस्तारतशुभआरतहरनकरनकल्यान ३
भारथपारथके स्वारथहित सारथिरथै भये जे श्याम ।
तेरचिदेहैंयहिभारतको भाषाछन्दबन्धअभिराम ४
रघुबरपायककपिनायकबर बन्दहुंचारिपदारथदानि ।
भारतभाषाअभिलाषासों तुवबलकहतमनोरथठानि ५
कुशलकुशलताजनपावतजोलावतचरणकमलतुवध्यान।

दासआसके परकासकतुम तुम्हरेहाथ ग्रन्थकल्यान ६

स० एककलंक में लंक गयो बललंकपतीको रतीव न राखा ।
सीय सशोक अशोककियो तुमबैठि अशोक अशोकिक शाखा ॥
दैअवधेशहि फेरिसंदेश कलेशको लेश सबैबिधि चाखा ।
राखा चहौ प्रण सेवकको तौ करौ परिपूरण भारत भाखा ७

बैशंपायन फिरिभाषतभे सुनियेकथा परीक्षितलाल ।
भयोअगारीजसकौतुकपुनिसोसबबरणिबवाबहुहाल ८
छत्तिसबर्षनलगधर्मजनृप कीन्ह्योंकुशलअकंटकराज ।
रय्यतपाल्योअतिआनंदसों करिशुभधर्मकर्मकेकाज ६
पुनिकछुअशकुनअवलोकतभे जेसबभांतिअनर्थहिकार ।
तबतौंअतिशयमनचिंतितभे अबधौंकरहिंकाहकरतार १०
तेहिदिवसनमहंकछुअवसरगत अनरथसुन्योमहाबिकराल।
रबिइवअंशीयदुबंशीसब कीन्हेनाशबलीबलकाल ११
शोकसमान्योतबऔरौडर कुसमयपरीबिपतिकीगाज ।
मनकृतहर्षनकोधर्षनकरि भेबिनचेतधर्मनरराज १२

स० राजतज्यो गृहकाजतज्यो नृपसाजतज्यो सुसमाजहि त्याग्यो ।
दु:ख दराजगई उरमें सुखताज मनो शिरते उड़िभाग्यो ॥
नेहहटै न हिये यदुबंशको संशघटै न अटै भ्रमलाग्यो ।
राग्यो महा बिरहाबिधिमें निधिखोयदरिद्रयथा दुखपाग्यो १३

बैशंपायनकीबानीसुनि पुनियहकह्योपरीक्षितलाल ।
हेमुनिअचरजम्बहिंभारीभोसोसमुझायकहौयहिकाल १४
सबनृपमंडलअवतंसितयह यदुकुलकेहिप्रकारभोनाश ।
सोसमुझाइयसतिगाइयकहिशुभगुणव्यासशिष्यमतिराश १५।
बैशंपायनमुनि भाष्यो पुनि सुनि सुररातसूनुकी बानि ।

हेनृपश्रवणनधरिअनरथसोकरियेश्रवणसत्यजियजानि १६
इच्छा मेटै को कर्त्ता की भावी होत महा बलवान ।
इकदिनअवसरअसआवतभोसुनुकुरुभूपरूपपरधान १७
कणवगाधिसुतअरुनारदमुनि पहुंचे पुरीद्वारकाजाय ।
प्रीतिसहिततहंभयेबिराजतराजततपप्रभावमनकाय १८
सारणआदिकयदुबंशीतहं तिनसोंकरतभयेपरिहास ।
गर्भिनितिरियाकहिसांबहिरचि लावतभयेमुनिनकेपास
तपबलतिनकोकछुजान्योना सन्मुखकह्योमोहबशजाय।
प्रश्नअपूरबइकपूछतहम हेमुनिराजनदेहुबताय २०
गर्भिनितिरियायहसन्मुखतुव ताकोकेहिप्रकारकोबाल।
होइहैदायाकरिभाषहुसो तुम्हरोबिदिततपस्याहाल२१
मनअनुमान्योतबमुनियनने जान्योकपटकृत्यसामान ।
रिसबशबोलेतबतिनसोंयह हमरोसुनौतपनकोठान २२
कृष्णचन्द्रकोयहबालकवर जोतियवेषगहेछबिसान ।
गर्भमयाकेपैदाहोइहै मूसलइककिरतान्तसमान २३
यामहंमिथ्याकछुहोइहैना होइहैबीचलहे कछु बार ।
तासोंसवरेयदुबंशिनको होइहैसमरमध्यसंहार २४
करुणाकरिकैतबहलधरप्रभु जैहैंसमुदमध्यतनत्यागि।
महिपरसोवतयदुनायकको धीवरजराबधिहियहिलागि
करिअरुणारेचषमुनिवरइमिकहिसबहिनकोदियोसुनाय
पुनिचलिआयेयदुनंदनढिगतिनसोंवृत्तकह्योयहआय२६
सुनिमुनिबानीप्रभुआनीमन जानीयहभविष्यअनुसार ।
सोसबभाष्योयदुबंशिनते जोकछुमुनिनकीननिर्द्धार २७
ताकेदूजेदिनआयेपर कीन्ह्योसांबमुसल उतपत्ति ।

सोसुनियदुकुलनृपताहीक्षणमूसलचुरणकरायोअत्ति२८
सबकेसम्मतसोंवाकोफिरि दीन्ह्योंसागरमध्यडराय ।
वृत्तकहायोयहआहुकते डौंड़ीनगरमध्यबजवाय २९
आजुतेपोवहिनहिंमदिराकोउ आयसुदियोयदूकुलराज।
हठकरिपीहैजोपूरुषकोउ होइहैतासुबधनकोकाज ३०
सुनियहशंकितभेपुरजनसबदिन प्रतिअशकुनलागदेखान
सुनहुपरीक्षितसुतभाषतसो जसकछुहोतभयेफिरिठान
दन्तनिकारेतियधावतइक तमसमकियेभयंकरगात ।
बिहंगघनेरेबनखोहनके तिनघररहनकीनबिख्यात ३२
फेकरैंस्यारीपुरअन्तरमहं निवसे पांडु कबूतरधाम ।
अभिरैंमूषकलरिनकुलनसों आकुलकालकीनबहुसाम३३
फिरैंकबन्धा ढिगशूरनके करि २ प्रलयकार हुंकार ।
कृष्णपक्षभोदिनतेरहको औचौदहककेर उजियार ३४
छत्रअभूषणध्वजचामरये निशिमहंहरैंअसुरतहंआय ।
यहिबिधिअशकुन लखिबिस्मयहिय यदुबंशिनकेगईसमाय
कृष्णभविष्यतबिधिचीन्ह्योयह तबसबकह्योतीर्थनजाव।
सोसुनियादवलैयुवतिनसंग डगरेजानिअशुभपरभाव
बासवसनकेरचिसिगरेनर बसेप्रभासक्षेत्र मेंजाय ।
कछुदिनबीतेपरताहीथल ऊधवमिलेसबनसोंआय ३७
करिउपदेशितपुनिसबहिनकोह्वै कैबिदाजलधिमहंजाय।
भेपरवेशित वरयोगीसम सुंदरतपप्रभावदरशाय ३८
अन्नबनायोजोभोजनहित सोबंदरनको दियोखवाय ।
भयेप्रमादिकमदधारणकरि सात्यकिआदिबीरसमुदाय
ममतारंगनमन बोरेतब बैठेरामकृष्ण ढिगआय ।

त्यहीसमइयाके अवसरमा　सुनुसुररातसूनुमनलाय ४०
भटकृतबर्मासोंभाष्योइमि　सात्यकिबीरअनादरबानि ।
कुत्सितकर्माभटवृन्दनमा नहिंकृतबर्मसरिसअरुआन४१
आखिरभारतमहं सोवतजेहिं　माऱ्यो पुत्रपांडवनकेर ।
औरौयोधाबहुभारतभो　चहुंदिशिबारि आगिकोढेर ४२
मन्त्रमानिकै द्विजद्रोणीका　कीन्ह्योबुरेकर्म जेहिंजाय ।
धिकहैताकेबलपौरुषकहं　मिथ्यातासुआयमन्भाय ४३
सुनिकृतबर्माइमिसात्यकिबच　रिसबशभयोप्रज्वलितआगि।
चढ़ोलालरोदोउनैननमा　बोल्योमहाक्रोधसोंपागि ४४
हुतोनिरायुध बिनआयुधको　भूरिश्रवासमरकेमाहिं ।
रणमहंमाऱ्योतुमकाहेतेहि अपनोकर्मकहतक्योंनाहिं ४५
यहसुनिकेशवरिसरातेभे　तीक्ष्णनैन लीनदोउतानि ।
सोलखिसात्यकि कोपानलह्वै लीन्ह्यो हाथकाढ़िकिरपानि
मारनधायो कृतबर्माको　कुत्सित घोरशोर कहिबानि ।
मारिगंवारेतोहिंभेजिहौंअब　यहिक्षनद्रुपदसुतासुतथानि
यहिबिधिभाषणकरिकेहरिसमडाट्योपरमक्रोधहियपाटि।
तेगबेगसोंतजिकरतलते　लीन्ह्योंझट्टपट्टशिरकाटि ४८
बधिकृतबर्महिंपुनिगर्व्वितह्वैमारनचल्योसहायकतासु ।
सानधराईकरलीन्हेअसि चमचमहोतजासुपरकासु ४६
अनरथबाढ़ोअवलोकनकरि बर्जनहेतसात्यकिहिश्याम ।
पाछेधायेमोहरायेतेहि सुनुसुररातसूनु मतिधाम ५०
बिधिअनहोनीको टारै को होनी होनहारके हाथ ।
त्यहतेअनरथबढ़िगो नागयो यदुकुलक्रियामृत्युतेसाथ५१
धावतआवतलखिसात्यकिको अंधकभोजकुलाधिपधाय।

घेरिसात्यकिहि चौगिर्दाते लागेकरन शस्त्रकेदाय ५२
दशानिरीक्षणकरिगोबिंदयह चुपह्वैखरेरहेतेहिठाम ।
कालप्रबलगतिअतिजानीमन यदुकुलनशनसमयकोसाम
भोजअंधकीते रोषितह्वै कहि२सबहि अनादरबात ।
जंठेबर्तनलैकरतलसब मारनलगे सात्यकीगात ५४
मचिगोहल्ला खलभल्ला अति कल्लाकटनभटनके लाग ।
असितव्यवस्थामहंसात्यकिलखि प्रद्युमनहियेभयोअनुराग
बर्जनलागे तबसबहिनको तेसबमद्यपिये मतवार ।
मारनलागेप्रद्युम्नौका लख्योसोदशा कृष्णकर्तार ५६
जमोरहोशरसोलीन्होंकर आतुरचखनपखनकोतानि ।
सोशरआवतकरमूसलभोजेहितनलगेहोयहढिहानि ५७
सोगहिकेशवकरिपाराक्रम लागेकरननरनको नाश ।
हनि२अगणितभटपाटेभुवि काटेरुंडमुंड अनयाश ५८
तबशरकरलैबलवन्तासब कीन्ह्यो लरनमरनको ठान ।
शापप्रभावहिलहिमुनिवरके सोशरभयेमुशलअनुमान
तिन्हैंपरस्परसबहनि २ तन लरि२भये आपसों नाश ।
कोउनदेखै पितुभ्रातासुत सबहियमारु २ कीआश ६०
जरैं पतंगैं जसदीपकपर इकलखिफेरिअसंख्यनआय ।
तिमियदुबंशीमतिध्वंशीसब लरिमरिआपहि गयेबुताय
ठाढ़ेरहिगेतबकेशवपुनि तेहिअनकुशलमुशलसोंलागि ।
मारुपरस्परकरिलरिलरिबहु जरिबरिगयेशापकीआगि
सांबप्रद्युमनगद आदिकलै औअनिरुद्धकेरबध देखि ।
अतिरिसकेशवकरमूसललै मारतभयेबचेजेशेखि ६३
बचेबभ्रु अरु हांरिदारुकदोउ यावतभये औरसबनाश ।

तिनसहकेशवचलिआयेपुनि जहंपरहतेरामबलराश ६४
ध्यानावस्थितबलभद्रहिलखि हरिदारुकतेकह्योबुझाय ।
अर्जुनदेखनकीआशाम्वहिं रथलैबेगिनागपुरजाय ६५
बोलिलयावोतुमपारथको इतनो स्वारथकरौहमार ।
सुनिअसआयसुजगतारणको दारुकभयोबेगितय्यार६६
चंचलबाजिनजुतिस्यंदनचढ़ि हस्तिननगरचल्योहर्षाय ।
तबहरिबोले संकर्षणते बंधवबचन सुनौ मनलाय ६७
जायद्वारकामहं आतुरतुम रक्षहुजाय तियनसमुदाय ।
नातरुसंपतिकेलाभैधँसि हरिहैंतिन्हैं चोरगण आय ६८
सगरीनगरीयहिअवसरपर सूनीबिना बीरकी भाय ।
जातैबनिहैअबताते तहं मानहुतात बात मनलाय ६९
शारंगपानीको बानी इमि सुनिकै चलतभयेबलराम ।
तेहिक्षणमूसलसोंघाततितहंमरिगोबभ्रुबीरबलधाम ७०
तबयहकौतुकलखिगोबिंदपुनि संकर्षणतेकह्योबुझाय ।
अबतुमजैयोना नगरीको याहो ठौररहौ मनलाय ७१
हमफिरिआवतअवलोकेपुर इमिकहिगये द्वारकाश्याम ।
पहुंचतप्रथमैंपितुअपनेसों भाष्यो बंशनाशइतमाम ७२
फिरिइमिभाष्योकहितिनहिनसोंअबहमजातविपिनकोतात ।
रुचतननगरीकोबसिबोअब सूनीबिनाबीरदिखरात ७३
पारथआवै ना जौलौंइत तौलौं सकल सुरक्षहुनारि ।
सुनिअसबानीधनुपानीकी सबहिनभईव्यथा अधिकारि
शोवनलागींपुरनारीसब भारी करत भरत बिललाप ।
भईदुखारीहरिप्यारीबहु चढ़िबढ़िगई हृदयत्रयताप ७५
दशानिरीक्षणकरिमाधवयह अतिकठिनताहृदयमहंधारि।

पुनिसंकर्षणढिगगमनतभे पुरकोसकलण्यारपरिहारि ७६
आयबिलोक्योतहंरामहिंप्रभु शीर्षसहस्त्रशेषआकार ।
तक्षकबासुकिअरुकद्रूअहि आयेतहांमोदहियधार ७७
आयेसरितनपतिसरितनसह सोसबसादरगयेलवाय ।
गमनतरामहिंलखिजगतीपति यदुकुलक्षयगति जानिबनाय
शाप शोचिकै गंधारी को औदुर्वासा बचन प्रलाप ।
मनअनुमान्योमतठान्योयहव्यापनचहतकालकीताप ७९
तबबनअंतरकोगमनतभे धाय्यो तहांयोगबिधिजाय ।
शयनसवांर्योतबबसुधापर सुनुसुररातसूनुमनलाय ८०
जरानामकोतहंव्याधागत मृगगुणितज्योबाणधनुधारि ।
पगतललाग्योसोमाधवकेतबगोनिकटजरादुखदारि ८१
प्रभुहिंबिलोकतभोआरतअतिमांग्योक्षमाजानिअपराध।
अस्तुतिकीन्ह्योबहुभांतिनपुनिपगगहिकरतभयोअवराध
आगतस्वागतकरिताकोहरि करिकैबिदाताहितहंबैठि ।
ध्यानधारणाकोधारणकरि बिलसेयोगयुक्तिमधिपैठि ८३
कौतुकनिरखतसुरसुरपतियहऋषियनसहिततहांपरजाय
नभटिकिअस्तुतिअतिगावतभेसुनुसुररातसूनुमनलाय ८४
उतैसारथीचलिहस्तिनपुर पहुंच्योजहां पांचहूभाय ।
माथनायकैतिनपायंनमहंसबरीकथाकह्योसमुझाय ८५
सोसुनिमनगुनिधर्माधिपसह व्याकुलभयेपांचहूभाय ।
रोवतधोवतचषआंशुनसोंसांसितभयेव्ययाअतिपाय ८६
पुनिलहिआयसुभटपारथतब तहंतेबिदाभयोअतुराय ।
चल्योद्वारकाकोदारुकसहआतुरचालबाजिबहंकाय ८७
जायद्वारकाअवलोकतभो हतश्रीसूनिन्यूनिद्युतिदाव ।

देखिअर्जुनहिंमहराणीसबलागींदेनरुदनमिसज्वाब८८

स० हायगये यदुराय कहां बड़भायकहां बलरायपधारे।
ठनियुद्धकहां अनिरुद्धगये गदसांबप्रद्युम्न न एकनिहारे॥
बोरवतावहुलावहुखोजि सोपारथस्वारथ सारथि प्यारे।
धीरधरैनहियोबिनचैन सो नैनभयेबहिकै जलनारे ८९

देखिठ्यवस्थाअसिरानिनकैपारथतिन्हेंसबिधिसमुझाय।
कृष्णजनकढिगचलिआवतभे आरतचरणपखारयेधाय
आनकदुंदुभिअतिठ्याकुलमति बोलेबीरजिष्णुसोंबात।
शापजोदीन्हयेंगंधारीने यहसुततासुभाव दिखरात९१
शापितकीन्हयेंपुनिमुनियनने सोऊअनरथभयेबनाय।
नाशितह्वैगेयदुबंशी सब फंशीपरीकालको आय ९२
भारीअनरथअवलोकतयह ममढिगआयतोरसुखदाय।
कलाकालकोसमुझायेोम्वहिं अरुयहकहयेबचनसमुझाय
पारथलावनकोदारुकगो आवत वेगि द्वारका सोय।
जोहमअर्जुनसोअर्जुनहम यामहंतनिकनजानहुगोय९४
सहसुतयुवतिनकोरक्षणसो करिहै सबप्रकार निर्द्धार।
ऊरधदेहिकतुवकर्तबसबपारथकरिहिसाधिअधिकार९५
जादिनआइहिपुरपारथचलि ताकेगयेबादिदिनसात।
बहिकैअंबुधिपुरबोरिहियह जेहैंधामचिहनमिटितात९६
यहकहिहमतेगेअपनाचलि जहंयदुबंशभयोसबनाथ।
तातेपारथजगफीकोम्वहिं लागतमानुसव्यबिश्वाश ९७
देहत्यागिबोअबनीकोम्वहिं आवतजियेशोचियहबात।
यहसुनिपारथअतिआरतह्वै बोलेसुनौबचनममतात९८
द्रुपदसुतासहहमभाईसब यहिजगबिनासहायकश्याम।

रहिनहिंसकिबेकयहुभांतिनअब आयोअवशिकालपरिणाम
बालवृद्धअरुतियजेतीइत सो सब इन्द्रप्रस्थलैजाब ।
रक्षणहवैहैतहंनीकोबिधि दूजोनहींऔर कछु ज्वाब१००
यहकहिदारुकसहअर्जुनपुनि आतुर सभासदनमेंजाय ।
राजकाजकेअधिकारिनसों भाषनलगेवृत्तसमुझाय १
सातदिनौनाकेबीतेपर बोरिहिनगरजलधिमधिबारि ।
तातेसामाकरिसबजनमन सादरकढ़ौबिचारिबिचारि २
सुनिसबबाणीभटपारथकी लागेकरनकढ़नव्यापार ।
तेहिनिशिअर्जुनतहंनिवसतभोकीन्हेहियेदुःखअधिकार३
प्रातदिवाकरकेउदयतमहं कौतुकसुनोपरीक्षितलाल ।
रामकृष्णकोकरिसुमिरणउर परिहरिजक्तकेरजंजाल ४
देहत्यागिकै बसुदेवहुतब हर्षित गये विष्णुके धाम ।
सगरीनगरीमहंअवसरतेहि परिगोमहाविपतिकेकाम ५
सुयशपुकारतअतिआरततिय रोवनलगींछांड़िडिंड़कार ।
मनहुंद्वारकामहंवादिनतेलीन्हयोंसाधिठयाधिअधिकार६
मच्योकुलाहल चौगिर्दाते हाहाकार कहा ना जाय ।
क्रियायथोचितसबकर्तबसह पारथकियोमुदितमनलाय७
कृष्णपिताकेसंगजरिबरिगइँ सुन्दरसुबुधिसुपत्नीचारि ।
मदिराभद्राअरुदेवकितिय अरुहियप्रियारोहिणीनारि ८
बंशबालकनतबवाजिबलहिकीन्हयोंपानिपिण्डकोदान ।
क्रियाप्रपूरणकरिपारथपुनिकीन्ह्योंदानमानसबिधान ९
आतुर आयेचलिवाथलपुनि जहं यदुबंशभयोसंहार ।
निपतितदेहीनिजनेहिनकी अरुलखिपरकृष्णसुकुमार१०
भयेबिसूरितदुखपूरितअति क्षणइकशोचहियेबलवान ।

पुनिमनमागुनितिनसबहिनको कीन्ह्योप्रेतकर्मसबिधान
दिवससातयेंपुरआयेफिरि दुखरुखमोचिशोचिसमुझाय।
वृद्धबालकनअरुबालनको बाहरकियोपुरीतेलाय १२
गजरथबाहनबसनादिकसब मणिधनदासिदाससमुदाय।
पुरजनगनलैपुरबाहरकढ़ि कीन्ह्योचलनसाममनलाय
हरिसुतबालकबज्रनामसो लैसब संग बार सुकुमार ।
परिदुखफंदनतियवृन्दनसह चलिभेकरतशोकबिकरार
बज्रकिसदृशकरिकठिनोहिय पारथचल्योसबहिलैसाथ ।
तेहिदिनअंबुधिजलबर्द्धितकरि दीन्ह्योंनगरबोरिनरनाथ
सुनहुंयथारथनृपपारथकी औरौकहतकछुकदुखगाथ।
नांघतपर्वतबनतादिनपुनि निवसतभयेपंचनदपाथ १६
तिन्हैंबिलोकनकरिभिल्लनगनसबहिनमतोकीनजुरिआय
पारथधनुधरइकतिरियनसंग हमसबमिलिकैलेबछंड़ाय
मंत्रपरस्परकरियाविधिसब गहि२ परिघआदिहथियार।
सन्मुखआये भटपारथके करिकैलरनकेरव्यापार १८
तिन्हैंबिलोकनकरि धन्वाधर हँसिकैकह्योसुनौरेमूढ़।
जीवनचाहौ जगअपनोजो तौहियतजौ मुग्धतागूढ़ १६
पारथबानीतिनमानीना बलसोंबलकिबलकिसबज्वान ।
अतिमद बाढ़े उठिठाढ़ेभे गाढ़े गहेहाथ धनुबान २०
सुमिरिराधिकापतिपारथतबधनुगुणयुक्तकोनरिसिआय।
कियोअस्मरणबरबाणनको एकहुभयोनप्रापतआय २१
अतिबलबिधिगतितबजानीमनलज्जिततज्योहठीह्वै बान।
सोशरजाकेतन लागतभे सूक्षमघावभयोअनुमान २२
थक्योपराक्रमभुजदण्डनको पारथलीनिऊंबिडरसांस ।

हायगोसइयांयहमर्जीमें बिनुहरिभयो सबैबलनास २३
चल्योनबशकछुउनम्लेच्छनते करतेडारिदीनधनुबान ।
जेतीयुवतीयदुबंशिनकी हरिलैगयेमारि मनमान २४
अस्त्रशस्त्रलखिबिनदीपतिके पारथकालआगमनजानि ।
बूझिविधाताकी भावीको धरिइकरहे मौनमनठानि २५
पुनिधरिधीरजहियकृष्णहिंभजि बाचीरही संगलैनारि ।
कुरुक्षेत्रमहंचलिनिवसतभे सुनुनृपअग्रहालश्रुतिधारि
हार्दिकयकोसुत बासी तहं देख्यो भोजबंशकी नारि ।
घरमहंराख्योलैमातासम लैतियशेषचलेधनुधारि २७
इन्द्रप्रस्थमहंचलिआयेपुनि तहंसात्यकीसूनुकोराखि ।
देशसरस्वतितटदीन्ह्योतेहिविधिवतराजकाजअभिलाखि
कृष्णपुत्रको सुतसंगमाइक जाको वज्रनामसन्मानि ।
तेहिनिवसायोइन्द्रप्रस्थमहंराजाकियोताहिमनठानि २९
राजनीतिपुनिसमुझायोतेहियहिविधिकरच्योराजकोकाज
परजारक्ष्यो सबभांतिनते राखेरह्योदयाको साज ३०
यहिविधिवज्रहिमहराजाकरियदुकुलतियनदीनतहंबास ।
कछुदिनबीतेलैलीन्ह्योंतहं सबअक्रूरतियनसंन्यास ३१
कहोनमान्योवज्राधिपको दासीदास गयेतिनसाथ ।
सबहिनधारीवनयोगिनगति लागेभजनद्वारकानाथ ३२
जेतीरानीनंदनंदनकी रुक्मिणि गांधारजा आदि ।
अग्निज्वालमहंतननाश्योतिन जीवनजानिश्यामबिनबादि
औरौरानीसतिभामादिक तिनसबलीनधारिसंन्यास ।
काननगमनीहरिरमनीतब लीन्ह्योयोगत्यागिसबआस
जितेद्वारकाके पुरजनअरु ते सब सौंपिवज्रके पास ।

चलेहस्तिनापुरपारथतब अतितनमनउदासद्युतिनास।
कछुकदूरिचालिपुनिकाननमाधि बैठेलख्योतहांमुनि व्यास
उतरिकैस्यंदनते आतुरतब पारथगयेपास हतभास
प्रेमनेमसोंपदबंदनकरि बैठेनिकट सुआदरपाय।
लखिशोकाकुलभटपारथकहँ बिस्मितबचनकह्यो मुनिराय
खिन्नदेखियतत्वाहिंपारथ अति हतश्रीसुखगातदरशात
रणमाधिहारेतौनाहींकहुंमोसनकहसिराखिछलबात ३७
रजयुतनारीतौभोगेनाहिं कीन्हें जल उछिष्टअसनान।
द्विजश्रुतिबक्तातौमारेनहिं कीगुरुजनहिंकिये अपमान
सत्यब्रतावहुसोंहमतेकहि आपनिव्यथाकथाबलवान।
सुनिअसबानीद्वैपायनकी आरतपारथलागबतान ३८
काकहिभाषौंकछुतुमतेप्रभु कहीनजातशोचबशबात।
भयोद्वारकामहँअनरथअति सोसुनिलेहुहालसबतात
पंकजलोचनदुखमोचनप्रभु द्वारावतीगयेतजिश्याम।
ऊरधलोकहिंगेपरिहरितन आपुनसहितधामबलराम
शापदापभैगंधारी कै अरु ऋषिवाक्य केर परभाव।
मुसलघातसोंयदुवंशीसब नाशितभयेत्यागिचितचाव
अतिबलचारीधनुधारीजे गतिमतिबिदितजासुसंसार।
शक्तिगदादिककीघातनसों गातनभयोघावउपचार॥
तेभटशरकाके पातनसों मरिगे काल हाथइकसाथ।
सात्यकिआदिकपांचलाखभट लरिलरिमरेपरस्परनाथ
यहितेभारीदुखलागतप्रभु श्रीघनश्यामरामतनत्याग।
धीरनधारिरहौजियरेमा सहिनहिंजातमहानअभाग॥
बज्रपातसममममहियरो प्रभु तबते होतबिदीरणजात।
सुधिबुधिबिसरीताअवसरते कढतनशुद्धकण्ठसोंबात

वृष्णिबंशकीसबनारीप्रभु हरिलैगयेभिल्लमगआय।
चल्योनपाराक्रमतिनतेकछु तिनतनशरनकीनकछुघाय
अस्त्र शस्त्रजे अस्पष्टौ रहें तेसबगये तहां ह्वै नष्ट।
बुद्धिहेरानीताअवसरते तनकीदिपतिभईसबभ्रष्ट ४८
परमआत्मा श्रीकेशवप्रभु हमरेसबबिधिरहें सहाय।
जिनरथसारथिकेकीन्हेहम भारतजित्योरिपुन समुदाय
दशाहमारीभै तिन बिन यह बाढ़त हियेदुःखकीदाह।
तनमनचिंताअतिब्यापतअब चाहतकछुनराज्यकी चाह
अबजो वाजिबस्वाहिंकरिबेका सोउपदेशदेहुमुनिराय।
सुनिरहबानीमुनिबोलेतब सुनुभटत्यागिशोकमनलाय
भावीषिवार्ताबतलावतत्वाहिं जा हितरहेकृष्णजगआय
प्रभुताविभुताकेस्वामीसो सिरजतभरतहरतदुनिआय
दापप्रबलपौद्विजशापनकी टारिकोसकैविष्णुपरताप।
यहतौकरणीसबउनहिनकी आपैकरतहरतपुनिआप
भूमिभारकेपरिहारनहित इतअवतारलीनप्रभुआय।
प्रीतिपसारीतिनतुमसोंअति याकोअरथसुनौमनलाय
करिमहभारतयदुबंशिननाशि अवनीभारनाशियाहिदायँ
निजअस्थानाहिंगेजगपतिसो अबतुमतजौ शोकम तसायँ
तिनसँगबन्धुनसहपारथतुम कीन्ह्योंविविधसुरनकेकाज
पांचौबंधवसहतुम्हरौअब आयोगमनसमयनरराज
जक्तबीजअरु पंचतत्त्वको कारणमूल काल हैं सोय।
कालहिनाशतपरकाशतजग सांसतअन्तसमय सोइहोय
आपनिकर्तबकरिआयुधतुव उतचलिगयेसुनौमतिमान
तुमहुँअघानेरणकरिकैबहु जीत्योबड़े २ बलवान ५७
अबसबबन्धुनसहपारथतुम धारणकरहुमहाप्रस्थान।

यहमतजोमैंकहिभाषतहौं तुम्हरोकरनहारकल्यान ५८
यहिविधिबातैंद्वैपायनकी सुनिमुदसहितपगनपरणाम।
करिकैपारथपुनिगमनतभे लैकेंरामकृष्णकोनाम ५९
कछुकअबेरामगमालाग्यो हस्तिननगरपहूंचेजाय।
भूपयुधिष्ठिरकेपायँनपरि सिगरोहालकह्योसमुझाय ६०
भूपयुधिष्ठिरसुनिकौतुकसबदीन्ह्यों अतिवअर्जुनहिंमान
श्रीनटनागरकोसुमिरणकरि रहिगेचरणधारिकैध्यान॥
कथामनोहरसुखसोहरबर अन्तिमभयोप्रथमअध्याय।
रामरत्नकीलहिअनुमतिद्विजबंदीदीनबखान्योगाय ६२

इतिश्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिबाजपेयिवंशावतंसश्री
पं०रामरत्नस्याज्ञाभिगामी स्वप्रदेशान्तर्गतमसवासीग्रामनिवासि
पं०बन्दीदीनदीक्षित निर्मितमहाभारतभाषाभारतखण्डान्तर्ग
तमूसलपर्वसमाप्तनामप्रथमोध्यायः १॥

इतिमूसलपर्व सम्पूर्णम्॥

—०—

अथ श्रीमहाभारतभाषा भारतखण्ड महाप्रस्थानपर्व प्रारम्भः ॥
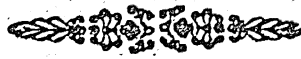
दो० विघनहननचरणनसुभग करिउरपुरवरध्यान ।
महभारतभाषारचत परबमहाप्रस्थान ॥ १ ॥

सुमिरण

होहुसहायकगणनायकतुम देशुभज्ञान शारदामाय ।
भारतभाषाअभिलाषासों गावतबंदि तोरवलपाय २
चरणशरणलहिनटनागरकीधरिउरमदनकदनकोध्यान
श्रीद्वैपायनके पायनभजि भाषतमहापर्व प्रस्थान ३

कुं० राधा राधारमनके चरणकमल उरधारि ।
विनयकरौंमनकामना पन्थपंथनिद्धारि ॥
पन्थपंथनिद्धारि धीरवीरन गुणगावौं ।
कहिविलास रणरास यथामन आनंदपावौं ॥
छूटिजात जगजाल बंदितनको सबबाधा ।
छंद फंद मनत्यागि भजे नंदनंदन राधा ४

वैशंपायनते पूंछ्योपुनि श्रीवरवीर परीक्षितलाल ।
भयोअगारीअरुकौतुकजस सोसबवरणिबताइयहाल
मूसलचर्चासुनिपारथमुख अरुयदुवंशकेरसबनाश ।

भूपयुधिष्ठिरसहबंधुनके फिरिकाकियोकरौपरकाश ६

वचनमनोहरजन्मेजयके सुनिकैव्यासशिष्यमतिमान ।

हालअगारीकोबरणतभे सुनियेधारिराजइतकान ७

यदुकुलमूसलकीउतपतिसुनि महाकठोरकुलिशकोपात

सहितसुबंधुनकेधर्मजनृप दुखबशभयेसूखिकृशगात ८

दैवीकर्ताकीपरबलगुनि सबविधिअमिटजानिगतिकाल

समुझिकुकरणयिहपरवश पुनिकीन्ह्योंहृदय शोचबिकराल ९

ठानिचिंतवन मतसबकोलै करिबेहेत महाप्रस्थान ।

सिद्धिसाधनाकोसाधनपुनि लागेकरनधर्ममतिमान १०

स० दैअधिकारकोभारयुयुत्सहि बंदिपरी छतकोनृपकीन्हों ।

राजसमाजकोकाजसिखैसबनीतिकिरीतिपढ़ैतिहिदीन्हों ॥

रहबतायदयोनिजधर्मकि जोविधिआपकियोअरचीन्हों ।

मंत्रसुबंधुनकोगहिकै पुनिआपुपय नकरै मनलीन्हें ११

जेतीतिरियाकुलकौरवकी सबकोयथायोग्यसमुझाय ।

फेरिसुभद्रातेभाष्योयह पौत्रहिपाल्योनीतिबढ़ाय १२

श्रीयदुनंदनकेसुतकोसुत भाषतजासुवज्रकहिनाम ।

इन्द्रप्रस्थकोत्यहिराजाकरिसौंप्योधामकामइतमाम १३

कहिसमुझायोग्रहरमानिनयह जातेबज्रपरीक्षितमाहिं ।

प्रेमविवर्द्धैअतिनित्तप्रातिरिपुताहोयकबहुंज्यहि नाहिं १४

सोबतलायोइनदोउनकहँ यहकहिफेरिधर्ममहिपाल ।

विधिविधानसोंसिधिसाधनकरि गुणिमनउचितकर्मक्रियकाल ॥

श्रीसंकर्षणकृष्णादिककहँ कीन्ह्योंहर्षसहितजलदान ।

औरौयावतयदुबंशीसब तिनकीकियोकृत्यमतिमान १६

पिण्डदानकरिपुनिसबहिनको मणिमाहि दियोद्विजनसन्मानि।

भूषणभोजनअरुबाहनवर धनगनदीनपरमफल जानि१७

कुलगुरुलहिकैकृपाचार्यको सौंप्योजानिपरीक्षितबाल ।

बिनतीकीन्ह्योंबहुभांतिनते यहिनिजशिष्य जानुतपशाल १८
दासजानिकैप्रतिपाल्योयहि सिखवतरह्योराजकेकाज।
प्रजानपावैंदुखकौनिउंविधिसो सिखदियो सुतहिद्विजराज १९
पुरजनसोंप्योसुररातहिपुनि औयहसबतेकह्योबुझाय।
मैंप्रस्थानतहांसुरपुरअबकीन्ह्योंउचितकर्ममनलाय २०
धर्ममहीपातिकीबाणीइमि सुनिअतिदुखितभयेनरनारि।
अपतिजानिकैपरिविपदावश रोयेघोरशोरडिंड़कारि॥
मोहदामममहंतेफंदितसब धर्महिलगे सिखापनदेन।
तुम्हैंचाहियेनाहिंभूपातियहहमकहँत्यागियोग तिन २२
पुत्रपरीक्षितयहिअवसरमहँ हैलघुवयसबालनादान।
केहिविधिकरिहैप्रतिपालनसो जोतुमकरनचह्योप्रस्थान
याहिविधिभाष्योपुरबासिनबहु पैकछुधर्म्मकीननाकान।
मनबचकायातेज्ञातासो चाहतभयोकरनप्रस्थान २४
ठाटराजसीउद्घाटनकरि कीन्ह्योंतनाभरणपटत्याग।
मुकुटउतार्‍योशिरऊपरते छोड़्योगेहदेहकोराग २५
पांचौभैयाअतिहर्षितमन निज२वस्त्रशस्त्रकरित्यक्त।
सहितद्रौपदीगहिवल्कलतन भेप्रस्थानहेतअनुरक्त २६
अग्निउतारनकरिनिज२तनजलमधिडारिसविधिविस्तारि
औरौश्रुतिपथजोवाजिबविधि कीन्ह्योंधर्म्मबंधुसहनारि२७
विघ्नबिदारणकोसुमिरणकरि रक्षकमदनमनोहरध्याय।
सहितद्रौपदीअरुबंधुनके नृपप्रस्थानकीनहरषाय २८
त्यहीसमैयाकेअवसरमा पुरजनदेखिधर्म्मप्रस्थान।
रोवनलागेदुखपागेअति जागेक्षोहमोहजियआन २९
बिकलपुकारैंडिंड़कारैंअति गिरि२भूमिपछारैंखायँ।
सहैंनबिछुरननृपधर्मजका अतिशयरोय२बिललायँ ३०

पुनिधरिधीरजनृपधर्मजते आरतबचनकहनसबलाग ।
हेनृपदायातजिअवसरयहि गमनतकहांत्यागिअनुराग
सबसुखदीन्ह्योंप्रतिपालनकरिकीन्ह्योंदयामयाबहुभांति
यहिक्षणत्यागबअबवाजिबनहिं सुनियेधर्म्मभूपर्मातिख्याति
यहिबिधिभाषतपुरबासीसब गेचलिबहुतदूरिनृपसाथ।
सबहियआशायहवर्ततकीपुरकहँलौटिचलैंनरनाथ ३३
भूपयुधिष्ठिरतबभाइनसह थितह्वैसबहिकह्योसमुझाय ।
धरिउरधीरजअबपुरजनसब लौटहुभवनहृदयहर्षाय
कौनिउँबिधितेहमफिरिबेना करिबेअवशिमहाप्रस्थान ।
उचितनरोकबहैकाहूकहँ करियेसत्यबचनममकान ३५
यहिबिधिबातें सुनिधर्मजकी भे पुरबासीसबनिरास ।
बिलखतलौटेतकिहस्तिनपुर भारी भइहृदयदुखफांस
पाण्डवकुलकीजेनारीबर बालकयुवावृद्ध समुदाय ।
अतिशयबिलपतभेअवसरत्यहिजायनकथातथा सोगाय
कृपाचार्यऔसुररातहिलै बीरयुयुत्सआदिबलधाम ।
इनहुनफेरयोबहुआशिषदै काहिंसमुझायनीतिकेकाम
तेहिक्षणबिपदाअतिब्यापीनृपसहिनहिंसकेधर्मकोत्याग
निर्बलह्वैह्वैसबलौटतभे घटैननेकभूपअनुराग ३६
घरजनपुरजनपुरलौटेजब तबनृपहृदयधारिघनश्याम ।
सहितद्रौपदीअरुबंधवलैसतवोंश्वानसंगअभिराम ४०
पूरबदिशिकीमगगमनतभे बिचरतबहुप्रकारदुखपारि।
पुनिजोआगेअरुकौतुकभो सोऊकहतभूपबिस्तारि ४१
दुखपरिपूरितजबधर्मजनृप इतउतफिरतभये बनमाहिं
भोबिषादजोतेहिअवसरमहँ भूपतिकहतबनतसोनाहिं
तदनुसुरसरीमहंप्रबिशतभै पारथतिया उलूपीधाय ।

नागकन्यकाजेहिगावतसब भूपतिइराबानकीमाय ४३
बभ्रुबाहनाकीमाताजो चित्रांगदा बखानतजासु ।
मणिपुरगमनीसोस्वामीबिन बालकअधिपतहांकोतासु
औरौनारीजेपाण्डवकी सोअभिमन्यु पुत्रके साथ ।
निजपुरआईदुखपूरितअति बिलपतरुदतसर्बबिननाथ
भूपयुधिष्ठिरइत बंधुनसह प्रापतभये समुदतटजाय ।
तहांकिगाथासुनुभूपतिअब मतिअनुसारबखानतगाय
उदयाचलकेतटपहुंचेजब पांचौभाय युधिष्ठिरराय ।
गांडिवधनुलखिपारथ करमा तहंपरअग्निपहूंचेआय
देखिहुताशनकहंपर्बतसम पारथकनिधनुष संधान ।
चित्तबीरवतकरिअवसरतेहियोजितकियेधनुषमहंबान
ध्यानधारिकै नटनागरको दीन्ह्यों त्यागिबीरसोबान ।
अग्निदेवतातबभाषतभे पारथसुनौबचनदैकान ४९
हमैंनजान्योयहिअवसरतुम हमहैंअग्निसत्यजियजान
कृष्णफाल्गुणपरभावनते हमखांडवबन कीन निदान
धन्वालीन्है जोकरमातुम सोहैमोर दीनबलधाम ।
त्यहिअबधारेते स्वारथनहिं ताजियेताहि जानि बेकाम
यहितजिचाहौतहँजावोपुनि महिदिशिसरितशैलबनमाहिं
यामहँसंशयकछुमानौना भाषतसत्यसत्यतुमपाहिं ५२
जलाधीशसोंलैपूरुबहम तुमकहँदीनशरासनआनि ।
सोधनुबरुणाहिंअबदीजोतुम इतनोकहोमोरमनमानि
गह्योजोमारगयहिसमयामहँ ताकरउचितलेहुब्रतधारि
सुनतहुताशनकीबाणीयहमनमहँपाण्डवरहेबिचारि ५४
पुनिअनुमान्योमनठान्योयह भाषतसत्यहुताशनबानि।
यहिक्षणवाजिबहैयाछीक्रियकरिबोउचितकालगतिजानि५५

समुझिशोचिकैइमिपारथसन दीन्ह्योंधनुषबारिसाधिडारि
अह्मयाग्निभेतबताहीथर मुनियेनृपतिसुमतिअधिकारि
सहितलुगैयापुनिभैयासब गहिनैऋत्यकोणकीथानि ।
सबगुणअगरेमगडगरेतब सागरानिकट२अनुमानि५७
करतप्रदक्षिणदिशिपूरुबफिरि प्रापतभयेहर्षसहजाय ।
चलिक्रमक्रमसोंकछुदिवसनमहँदेखतभयोद्वारिकाधाय ५८

स० धर्मधुरी शुभशील कुरी यदुनाथ पुरी अवलोकि सभागे ।
अंकित धाम ललामनिरेखि विशेखि सनेहदशामहँपागे ॥
श्रीहरिप्रीतकिप्रीतसराहि कराहि सुगाहिकै दुःखअभागे ।
हायउचारिकैपांचहुभाय हियेबिलखायकै रोवनलागे ५९

धरिउरधीरजपुनिआगेचलिसागरमध्यगोपिकनदेखि ।
माथनायकैसबभैयननेकीन्ह्योंदुखितप्रणामबिशेखि ६०
भरि२आँशूतबनैनन महँ बैनन गहेमोहताचारु ।
चलेउदीचीदिशिदेखतपुनि लेखतश्यामरामव्यवहारु
गहेकिनारावहिअंबुधिको औजियगहेप्रदक्षिणभाव ।
चलिकैप्रापतभेहिमगिरितट राखेकृष्णचरणमहंचाव६२
दर्शनकीन्ह्योंहिमपर्वतके पहुँचतजहांपापभगिजात ।
पुनिअवलोक्योहिममाहिमाअति देख्योमहीबालुकाख्यात
ताहिनांघिबेकीइच्छाकरि चलिभेधर्म्मसूनुहर्षाय ।
धर्म्मकेपाछेपवनजसोहै अनुगतचलोजिष्णुतहँजाय
जिष्णुकेपीछे नकुलगिमने तत्पश्चात्शुद्धसहदेव ।
द्रुपदकुमारीतिनपीछेपुनिगमनतचलीयोगिकृतभेव६५
पांचौधवअरुद्रुपदीसह यहिबिधिचलेधर्म्मसतिमान
छहौकेपीछेतबअवनीपतिसंगैचलोलागिसोइश्वान६६
कछुकदूरिलगचलिक्रमसोंयहि पुनिभइपतितद्रौपदीनारि ।
पतिताबिलोकततेहिभिम्मासट जीमारह्योशोचअतिधारि॥

भाषणकीन्ह्योंपुनिधर्मजसों सुनियेबचनधर्मअवतार ।
गिरीद्रौपदीइतकारणकेहि कहिये सत्यसत्यनिर्धार ६८
अधरमकीन्ह्योंनहिंयानेकछु साहसत्यागिगिरीक्यहिकाज ।
करहुनिवारणसोशंकाकहि अतिमतिमानधर्मशिरताज
कह्यो युधिष्ठिर तबबाणीइमि सुनिये धीरबीर बलबाहु ।
रहीद्रौपदीयहपारथते राखतअधिक प्रीतिउत्साहु ७०
तौनेकारणसोंअवसरयहि मलबशागिरीभूमितलमाहिं ।
यहफलनिश्चयत्यहिपातककोयामहँतनिकअँदेशानाहिं ७१
याहिविधिभाषणकरिभिम्मासों भूपतिचलेयोगजियधारि ।
पुनिकछुअंतरमहँनिपतितभो बुधसहदेवसाहसहिहारि
तबयहभाष्योकहिपवनजाफिरि भूपतिबंधुप्रीयसहदेव ।
सोऊनिपतितभो अवसरयहि कहिये इनहुँकेरमलभेव
धर्मअलाप्योतबभिम्मासों बन्धववचनकरोपरमान ।
निजसमदूसरयहिंमान्योंना तीनौंलोकमध्य मतिमान
तौनेपातकसोंनिपतितभोयहकहिनृपतिचल्योतजिनेहु ।
कछुकदूरिचलिनकुलौगिरिगे भूपतितासुबत्तसुनिलेहु
नकुलैनिपतितलखिभिम्मातबभाषतभयोसुनौनृपधर्म ।
देखहुअधइतगिरिनकुलौगेइनकहकीनअकारितकर्म ॥
धर्मोकिमूरतितबबोलतभे सूरति केररह्यो यहिगर्व ।
पायसोपातकइतनिपतितभो कारणसत्य जानुयहसर्व
तदनुकिरीटीचलिनिपतितभो तबयहकह्योभीमबिलखाय
हेनृपअतिबलधनुधारीयह निपत्योकौनकारणहिं पाय

स० भाषतभे तब भूपयुधिष्ठिर सत्यसुनौवच बन्धवभीमा ।
जादिनतेधनुवानअमान धर्‌यो यहिपाणिमहाबलसीमा ॥
बंदिमहोसुरताहगाते गुरुगर्वको अंकुर जाम्यहु जीमा ।
मोक्ररचापकि दापसहेहित हेनद्वितीयबली जगतीमा ७२

जबतब भाष्यो यह अर्जुनने सबके अग्रबहूतकबार ।
एक दिनौनाकेअंतरमा मैं सबकरौं शत्रु संहार ८०
करिनसक्योसोप्रणपूरणनिजबन्धवतासुपातकहिपाय ।
गियोभूमितलतेहिकारणइतयहकहिचले युधिष्ठिरराय
तदनुधीरधरिभिम्मौचलिभेभूपतिकछुकअंतरहिपाय ।
भिम्मौनिपतितभोबसुधातल बिधिगतिअकह कहीनाजाय
टेरिसुनायोतबधर्मजको बन्धवगिरेहमहुंइतआय ।
हेरिहमारीदिशियाकोअबकारणसकलदेहुबतलाय ८३
भाष्योभूपतितबभिम्मासों बलकोरह्योतोहिंअभिमान ।
तौनेपातकसोंनिपतेइतलहिगतिकालकर्मबलवान ८४
यहिबिधिभाषणकरिभूपतिफिरि आगेचलोत्यागितेहिचाह ।
श्वानसोसंगैभोधर्मजके सुनिये अग्रवृत्तनरनाह ८५
तेहिक्षनस्यंदनचढ़िआवतभे सुरपतिधराधीशकेपास ।
कह्योकिरथचढ़िचलुअवसरयहि ममपुरधर्मभूपसहुलास ८६
धर्मजउत्तरतबदीन्ह्यो यह सुनियेदेवनाथममबानि ।
पांचौबंधवअरुरानीमम निपतितभयेआययहिथानि
तिनाबिनदेवनपुरजैबेको हमनहिंकरतनेकचितचाह ।
उचितनबंधुनबिनजैबोदिबि सुनियेसत्यवचनसुरनाह
तेहिक्षणसुरपतिपुनिभाष्योअससुनियेभूपयुधिष्ठिरराय
मानुषतनतजितुवबन्धवसब सुरपुरपहुंचिगये हर्षाय
यहबपुधारेतुमगमनौउत सुखसहलखौसुनैननभाय ।
मिथ्याभर्मतनृपमायावश मानहुसत्यवचनमनकाय
तदनुयुधिष्ठिरयहभाष्योपुनि आयोसङ्गलागिममश्वान
त्यहितजि देवनपुर गमने म्वहिं लघुता लगत होतअघठान
सुनिमृदुबाणी यहधर्मजकी भाषतभये फेरि सुरराय ।

शास्त्रअसम्मतकावर्ततगति हैमतिमानयुधिष्ठिरराय ॥
श्रीयुतदिवकोसुखअगणितयहप्रापतहोतलहैअमरत्व।
श्वानहिंत्यागेनाहिंलघुतातुव हैयहमुख्यन्यायमततत्व॥
उत्तरदीन्ह्यों तब धर्मजपुनि हैयह निन्द्यकर्मसुरराज ।
उत्तमपुरुषनके करिबेको है नहिंकरन योग यहकाज ॥
श्रीसुखसुन्दरतनभोगाहिलाहि करिउरउच्चपदैअनुराग।
क्रियासोनिंदितत्रयकालनमहँ करैजोभक्तजननकोत्याग
पुनिसुरनायकआलाप्योतबहैयहअशुचिश्वानसबकाल
नहिंसोलायकसंसर्गहुके याकोतजनचहीमहिपाल ८६
अशुचिहित्यागे नाहिंलघुताकछुलागतश्रेष्ठनरनकोभाय
तातेश्वानहिंतजिस्यंदनचढ़िममसँगचलहुस्वर्ग हर्षाय
दियोयुधिष्ठिरतबउत्तरपुनिसिखवतकाह मोहिंसुरस्वामि
शास्त्रबतावतअसगावतमत भक्तहितजेहोत अघगामि
विप्रहिमारेसमपातकत्याहिलागतअवशिअवाशिसुर राय
श्वानहिंपरिहरियहिअवसरहमचहतनस्वर्गगमनमनलाय
दुखीहितैषीशरणागतअरु निजआश्रयीहोय जोताहि
प्राणपयानहुंलगत्यागबनाहिंपालबअवशिनित्यव्रत चाहि
सुनिसुरनायकइमिधर्मजबचभाष्योफेरिसुनौ क्षितिराय
तुमहिंसुनावतश्रुतिसम्मतकछु रहेजो शास्त्रपुराणोगाय
श्वानजातिजो यहनिन्दित है तेहिसंसर्गकरतजो तासु
दानव्रतादिकफलयावतअरु बिनशतपुण्यआदि सबआसु
हेनृप तातेतजिश्वानहिंअब चलिये बेगि देवतनथानि
सुतियसुबंधुनकोत्यागनकरिकैतहठरह्योश्वानहितठानि
दियोमहीपतिप्रत्युत्तरपुनि हैयहसत्यनाथतुवबानि ।
महूंबतावतहौंशास्त्रमतसोसुनिलेहुचित्तअनुमानि ४

संग्रहत्यागनश्ररुरिपुताहित करिबोदेहकर्मयेजौन ।
उचितश्रनुचितयेजीवतलग कहियेमरेदोषगुणकौन ॥
मरेतेत्याग्योहमबंधवातिय जीयतनहींत्यागिबेश्वान ।
मित्रद्रोहद्विजधनहरिबेसम भक्तहितजेहातश्रघमान ॥
यहिविधिभाष्योजबधर्मजबचसुनियेभूपपरीक्षितलाल।
श्वानदेहकोतजिशोभायुत धरिनिजरूपधर्मततकाल॥
परमानन्दितइमि भाषतभे धनि २भूपयुधिष्ठिरराय ।
धन्यतुम्हारेबलसाहसको धनितुवधर्मधरेमनकाय ॥
तुमनयपालकजगएकैभये कीन्ह्योंपितासरिसप्रणपाल ।
धन्यतुम्हारीबरबुद्धीको हैधनिधन्य तोहिंत्रयकाल ॥
पर्वपरीक्षातुवकीन्हीं मैं द्वैतारण्यमध्य महंजाय ।
बिनप्रश्नोत्तरकेदीन्हेजहँ नाशितभयेतोरसबभाय ॥
ममप्रश्नोत्तरतुमदीन्ह्योंजब भूपतित्यहीठौरमहँश्राय ।
यक्षरूपह्वै हम भाष्योतब सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ॥
चारिबन्धवातुवनाशेइत तिनमहँएकजाहिकहुभूप ।
देरनलागिहियहिश्रवसरत्वर देहुंजिश्रायपूर्बश्रनुरूप॥
यहसुनितत्क्षणवाहिश्रवसरतुमउत्तरदियोजोनक्षितिराय
सोतुवभाषेवचश्रवसरयहि पुनिमैंतोहिंसुनावतगाय ॥
हमनिजमाताकेबालकत्रय तिनमहँजियतज्येठहमभाय
द्वैसुतमाद्रीकेतिनमहँतुम ज्येठेनकुलहिदेहुजिश्राय ॥
धर्मनत्याग्योवहुश्रवसरतुम मैंलखिहंदीनबहुतधनिबाद
धर्मबिलोकयोंपुनिश्रवसरयहि ममहियभयोश्रतिवश्रहलाद
बीसहुबिस्वापरिपूरणहै धर्मजधर्मतोर हियमाहिं
कोउराजऋषितुवसमताकहँ श्रमरौलोकमध्यहनाहिं ॥
धर्मधर्मजाहियहिभांतिनबहु दैशिषसबप्रकारसम्मानि ।

लायचढ़ायोनिजस्यंदनपर हर्षितआपुशक्रगहिपानि ॥
मरुतमहीपतिअरुदेवनपति औब्रह्मर्षिधर्मभगवान ।
चढ़िरथगमनेनिजलोकहितबहर्षितकरतभूपगुणगान॥
तहँपरआगेते मिलिबेहित आयेसुरराजर्षिसमस्त ।
तबनृपधर्मजसोंबोलतभे श्रीमुनिनारदबचनप्रशस्त ॥
यहिविधिमानवकोउकबहूंइत आसोनहींदेहसःहभूप ।
धर्मधराधिपजिमिआयेतुम भोगहुस्वर्गभोगसुअनूप ॥
सुनिअसनारदकीबाणीबर उत्तरदियोयुधिष्ठिरराय ।
सुरपुरबसिबोहमचाहतनाहिंजेबेजहाँगयेतियभाय २१
नृपहिसुनायोसुनिसुरपतियहदुर्लभअमरलोकपदपाय
बुद्धिमानुषी तुवछूटीना जैबोकहतजहांगे भाय २२
कौनकौनकोहैबंधवअरु काकीनारि पुरुषहैकौन ।
कर्मसनेहीये देहीके त्यागहुमहामोह मतिभौन २३
धर्मजभाष्योतबसुनिकैयह हमनाहिंचहतस्वर्ग्ग अधिकार॥
जोहिथलमिलिहैंममबन्धवतियसोइथलमोहिंमुक्ति दातार
यहिविधिभाषणकरिभूपतितब धरिउरमदनमनोहरध्यान ।
हृदयआनिकैजगमंगलप्रभु भैवहिरूपमग्नलहिज्ञान॥
रामकृष्णकोशुभसुमिरणकरिकोनाहिंलहतासिद्धउत्साह।
रामकृष्णसमअरुदूसरप्रभुकोअसभक्तदुःखकृतदाह॥
रामकृष्णकी शुभदायाते भारतपर्व महाप्रस्थान ।
रामरत्नकीअनुमतिलैकै बंदीदीन कीनमृदुगान २७
सुनैसुनावैअरुगावैजो हितचितनित्तनेमलवलाय ।
कलिमलनाशैपरकाशैबुधिजगजंजालदूरिह्वैजाय २८
जपतपसाधे आराधे सुर कीन्हे महामहाधनदान ।
जोफलभाषेसोपावैनर भारतकेयेनेमसहगान १२९

व्यासदेवकृतमहभारतयह पंचमवेदबखानतजाहि ।
गावहुसज्जनजनाचिततेयहि पावहुअवशिमुक्ति अवगाहि॥

इति श्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गत बंथरग्रामनिवासिवाजपेयिबंशावतंसश्री
पंडितरामरत्नस्यात्माभिगामोस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासी ग्राम
निवासि पं०बंदीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषा महा
प्रस्थानपर्व्वसमाप्तिर्नामप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

इति महाप्रस्थानपर्व्व सम्पूर्णम्

अथश्रीमहाभारतभारतखण्डभाषा स्वर्गारोहण पर्व्वप्रारंभः॥
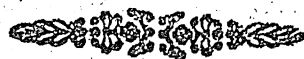
दो० बिघ्न हरणके चरण भजि ध्याय हिये सुर सर्ब ।
महभारत भाषारचत स्वर्गा रोहण पर्ब १ ॥
बिनवत नर नारायणहिं भक्ति मुक्तिके हेतु ।
भारत उतरन हित चहत चरण कमल करिसेतु २ ॥

सुमिरण ॥

बिघ्ननिकंदनकोबंदनकरिधरिउरमदनकदनकोध्यान ।
बुद्धिबिशारदभजिशारदको अन्तिमपर्व करतनिर्मान ३
नमस्कारकरि नारायणको नरउत्तमहिंहृदयमधिध्याय ।
श्रीद्वैपायनके पायनभजि भारतगानकरत लवलाय ४
भरतशत्रुहनअरुलक्ष्मणसह धारतसियारामकोध्यान ।
अनुचरआशा परिपूरणकरि संकटहरहुबीरहनुमान ५
रमनरुक्मिणीहेराधापति ध्यावततुमहिंदासगुणगाय ।
सुमतिप्रकाशहुकुमतिबिनाशहु जासोंग्रंथनाथबनिजाय
हेजगदंबाजनअवलंबा दाहिनिहोहु दास हित पाय ।
अंतिमभारतबिस्तारत अब मूलबर्ण बतावहु आय ७

स० जानत नाहिंगणागणको कछु छंदकिरीतिन दृष्टिमोंआनी ।
भेदलख्यो नहिं माचहुआदिको होत बिवृद्धिकहाँ कहँहानी ॥
पैतुवभूरि भरोस हृदैधरि श्रीमहभारत गाय बखानी ।
शेषरहीसोउदेहुबनाय बनाय बिनयसुमनयबिधिरानी ॥

बैशंपायनते भाष्यो यह श्रीबिरबीर परीक्षित लाल ।
हेमुनिसुन्दरबच्च सुनिकैतुव भोसबनाशमोहकोजाल १
पुनिकछुपूंछतहौंबरणहुँसो शुभमतिव्यासशिष्यतपधाम ।
मोरपितामहसबसुरपुरलहि केहिथललीनकीनबिश्राम
धर्ममहीपतिकिमिदर्शोदिव सोसबबिधिबिधानसोंभाषि ।
मोहिंसुनावहुसुखउपजावहु हौंमैंसुननकेरअभिलाषि ३
सुनिजन्मेजयकी बाणीबर बैशंपायन ध्यानलगाय ।
श्रीद्वैपायन के पायनभजि लागेकहनकथासबगाय ४
भूपयुधिष्ठिर नृपसुरपुरगत कौतुकलख्यो अपूरबजाय ।
स्वर्णसिंहासनपरराजततहँ अतिशुभरूपसुयोधनराय
तेजप्रकाश्यो बरदिनकरसम बैठोइन्द्रसरिससमतिमान ।
ऋद्धीसिद्धी सबसेवततेहि कैअतिरह्योबिभवसन्मान ६
यहिबिधिदेखतदुर्योधनको नासहिसके युधिष्ठिरराय ।
तीक्षणनैनाकरिताहीक्षण मनमहँअधिकउठोरिसिआय
टेरिदेवतनते भाष्योइमि सुनियेवचन सत्यसुरनाथ ।
हमनाहिंनिबसबसुरनगरीमहँ कौरवदुष्टकेरलहिसाथ ८

स० याशठकेकृतदोषनसोंबढ़िगो अति आपसमाहिं बिरोधा ।
भूरिकुटुंबनश्यो यहिके हित युद्ध लरेते मरेबहु योधा ॥
पाय यहीको महादुर्मंत्र भये भट भीषमसे बिनबोधा ।
ताहि बिलोकत यायलमों अतिबढ़त है हमरेहियक्रोधा ९ ॥

यही दुष्टके दुर्मंत्रनसों शकुनी रचे कपट के पांस ।
द्यूतकर्मकरि ममसर्बसहरि द्वादशबर्षदीनबनबास १०
यहीको आयसुदुश्शासनले गहि द्रौपदीबीचदरबार ।

नग्नकरैहितपटआकर्ष्यो रखीलाजकृष्ण कर्तार १६
याकेदोषनसोंअगणितनृप भारतयुद्धमध्यमेनास।
हितसम्बंधीभृत्यादिकअरु कुलपरिवारहत्योअनयास
कियोअनाहकरणयानेहठि बालकयुवावृद्धजुभवाय।
यहिसँगनिबसबनाहिंसुरपुरहम जैवेजहांगये ममभाय
वचनमनोहरसुनिधर्मजके नारदकहतभयेमुसकाय।
यहिविधिबातेंइतभाषबत्वाहिं हैनाउचिंतयुधिष्ठिरराय
जोकोउआवतयाहिसुरपुरचालिरिपुतात्यागिकरतसोबास।
अमरपुरीमानाहिंअमरषकछुकरिबोउचिततोहिंसतिरास
क्षात्रिधर्मकरिदुर्योधननृप सन्मुखशस्त्रखायतनत्यागि।
मुदसोंआवोचलिसुरपुरअब बिलसतदेवभोगसुखपागि
इहांपरस्परकृतमैत्रीसब किंचितनहीं बैरको नाम।
तजहुरोषतासबपूरबकीसुखअनुसरहुकरहुविश्राम १७
प्रीति परस्परकरिकौरवसों मिलिये हियेहर्षवर्द्धाय।
इकथलबिलसहुआनान्दितह्वैराजहेतुकृतदोषदुराय १८
सुनिअसबानीमुनिनारदकी पुनिधर्माधिपलागबताय।
कहबबातयाहिअवसरयह हैनहिंउचिततुमाहिंमुनिराय
कर्मबिनिन्दितजेकीन्हेबहु सोइतलसतअमरपदपाय।
जेशुभकर्मीसबभांतिनते कहुकेहिलोकबसतममभाय
धृष्टद्युम्नसेहितकारीमम निवसेकहांकौनथलपाय।
सोथलदेखनकीइच्छाम्बाहिंकरिकैकृपादेहुदिखराय २१
ममसमाजसबजहँबिलसतहैं पारथसुवनआदिबलवान
द्रौपदेयअरुउतमौजादिकभूपतिइरावानमतिमान २२
औरोयोधाजेजूझे मम ते सब बसतकौनथलपाय।
सोथलदेखनकीइच्छाम्बाहिं करिकैकृपादेहुदिखराय २३

सलिलदानकीलखिसमयाशुभजोममजननिकह्योसमुझाय ।
पुत्रनजान्योतुमअबलगयहहेतुवकरणसहोदरभाय २४
जननीमुखकीसोबाणीसुनिअबलगतपतगातममहाय ।
सोदरशावहुथलमोकहँमुनि जहँपरबसतकरणममभाय
बिनइनलोगनकेदीखेअरु पायेबिनाइनहिंसहबास ।
सगरीनगरीमहँदेवनकीकेहुबिधिनाहिंनमोरसुपास २६
धर्ममहीपतिकीबाणीइमि सुनिमुनिनारदकह्योबुझाय ।
लहिअनुशासनहमसुरपतिकाइतत्वहिंबसनकहतच्चितिराय २७
सव्यासव्यजोनृपभावैत्वाहिं करिबोहमैंउचितसोआय ।
चारदेवतनके लैकेसँग त्यहिथलजाहुजहांतुवभाय २८
सुनिअसबाचामुनिनारदकी नूतन देवदूतले साथ ।
अत्यानन्दितह्वैहिरदयमा तहँते चलोबेगिनरनाथ २९
चले दुतौना तब आगेह्वै पीछे चलो धरा भर्तार ।
लैसोपहुँचेतेहिअस्थलमहँ जेहिथलमहाघोरअँधियार
तुच्छअपावनदुखदावनअतिबहुदरशातभूमिअस्वच्छ
शोणितआमिषकोकीचकजहँनखकचदेखिपरतप्रत्यच्छ ३१
उड़ैंअसंख्यनगनमाछीतहँ भयकरकीटरहे बिललाय ।
अग्निकिज्वालाचहुँओरनसों अतिप्रज्वलित रहोंभहराय

स० प्रेतनिकेत क्रिये अतिहेतसों बोलत उच्चअशोभित बानी ।
भूतचुरैलन साथ लिये अवधूत से डोलत आनंद मानी ॥
काकसुनाथत हांकमहा अरु गिद्धन कोनि तहांरजधानी ।
आमिषखातउड़ातलिहेनर गात कहूं पगओकहुं पानी ३३

रुधिरमेदसों परिपूरिततन पीवतखातगात हर्षात ।
रपटतझपटतचौगिर्दाते लैशवलुण्डमुण्डउड़िजात ३४
हैपरिपूरितभुविमज्जाअति शोणितनदीरहीउतराय ।
भरयोमचहलाबहुआमिषकोशवगणव्यथितरहेलुलआय ३५

बायुझकोरैदुर्गन्धिनसों जेहितनलगेहोय दुखभूरि ।
तपितबालुकाकणआगीसम मारगमध्यरहेपरिपूरि ३६
नदीभयानक अवलोक्योतहँ बहुबेथाहभरीउमड़ाय ।
अतिहहकारासोंधाराबहे अगणित कच्छमच्छउतराय
पुनिचलिआगेनृपधर्मजतहँ दीख्योअसीवृक्षबनजाय ।
पत्रजासुहैंअसिधारासम लागत अंगअंगक्कैजाय ३८
लोहकेकुण्डनमहँतापितअतिजलसमरह्योतेल तहँ खोलि ।
यहबिधिदेखतत्यहिअस्थलकी शंकितभयेधर्मनृप मोलि
तहँ दुर्गंधनसोंपीड़ितक्कै बोले चारुचारनहिंबुझाय ।
चहुंदिशिपंथायहदुर्घटअतिनाहिंममगमनयोगहैभाय ॥
इमिपथपूरितयहदुखसोंअब केतिकदूरिचलनकोऔर ।
कौनदेशयहिकहिभाषतहैं औइतकौनअधिपशिरमौर
केहिथलबिलसतममबंधवसबकहियेदूतनूतमतिमान ।
सुनिइमिबातैंधर्माधिपकी भाषणलगेदूतसबिधान ४२
हेनृपपलटतहमपलटहुअबतुमहूंभयेअमितअतिगात ।
तुमतनपावनइतचलिबेमहँ बढ़तदुःखसुःखबिनशात
यहिबिधिदूतनसुखबाणीसुनि पलट्योधर्मभूपदुखपाय ।
तेहिक्षणतहँइकनवकौतुकभो सुनुसुररातसूनुमनलाय
धर्ममहीपतिकेपलटतखन तहँअसभईघोरआवाज ।
हेसुखदाताहमदुखियनके थिरहोक्षणकधर्मशिरताज ॥
तुवतनगंधीको पायेहम अतिआनंद होतसबकोउ ।
क्षणइकथिरक्कैनृपधर्मजइत हमकहँचैनदैनतुमहोउ ४६
तुम्हैंदेखिकैबहुदिवसनपर हमसबलह्योमोदअधिकार ।
जबसेआयेइतबन्धवतुम तबतेभयोदुःखसबक्षार ४७
ताहितकछुक्षणइतभूपतिरहिहमसबदुखिनदेहुआनंद ।

आरतबाचासुनियाबिधितहँ इस्थितभयोपांडुकुलचंद

स० आरत बैन उचारतते सुनि धर्मधराधिप पूरिसकोचन।
शोकके सागरमध्य परे जलसों परिपूरण भेयुग लोचन ॥
लैथिरता तेहिठौर छनैकरि गौर मनैमतिमोह ते मोचन।
भेकरिके बिस्मय भरिकैधरिकै तनुशोच लग्यो अनुशोचन ४६

क्षणकमौनराहिपुनिधर्मजनृप आन्योकछुकज्ञानमनमाहिं ।
महाकष्टसोंतहँबोलतभे कोतुमकह्योबचनममपाहिं ५०
सोसुनिमुदसहतेभाषेसब निजनिजयथातथ्यकहिनाम।
हमहैंपारथसहदेवाहम हमहैंद्रुपदसुता नृपबाम ५१
हमहैंभिम्माहमनकुली हैं हम हैं करणसहोदरभाय ।
धृष्टद्युम्नहमहमअभिमनुहैंअर्जुनसुवनकहतजेहिगाय
इनलैऔरोजेनिवसिततहँ तेसबकहतभयेबिललाय ।
यमपुरबिपदाहँभोगतसब सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ५३
यहिबिधिबातैंसुनियोधनकी धर्मजगयेशोकसोंपूरि ।
येसबबासीभेयमपुरके कीन्हेहायकौनअघभूरि ५४
सबबिधिपापीदुर्योधननृप सोसुखकरतदेवपदपाय ।
धर्मशीलयुतयेबन्धवमम केहिअघपरेनरकमहँआय॥
निद्राबशह्वैभोस्वप्नायह कीम्वाहिं भईऔरकछुभ्रांति ।
लखियहनैननसोंउलटीगति किंचित्मतिनगहतअबशान्ति
यहिबिधिचिंतनकरिहिरदयमा देवननिंदियुधिष्ठिरराय।
पुनिसुरदूतनसोंभाषतभेरिसबशचषनअरुणताछाय॥
अमरराजढिगतुमजावोचालि हमइतकरतबासमनलाय
कह्यहुकियहिथरम्वहिंनिवसेते पावतहर्षमोरसबभाय
सुनियेअमरपबचधर्मजके नूतनदूतबेगिहीजाय ।
शक्रसमीपैकहिभाषतभे जोकछुकह्योयुधिष्ठिरराय ५६
सोसुनिसुरपतिलैसुरगणसँग आयेधर्म्मपासअतुराय।

पहुँचिसहोदरमिलिधर्मजकहँ अतिआनन्दभयेसुरराय

स० जातहि वायल श्रीसुरनाथके लोपिगई सब वस्तु अपावन।
शोणित आमिष आदि भरी बहु सोनपरोकहुं नेक लखावन॥
नाश भई दुर्गन्धमहा शुभगंधसों पूरिगई सबठावन।
धीर नशावन शीतल मंद सुगंध समीर बही मन भावन ६१॥

स्वस्थचित्तकैतबदेवनपति नृपधर्मजसोंलागबताय।
हेनृपमहिमाकीदातासों प्रापतभईसिद्धित्वहिंआय ६२
क्रोधपरिहरियअबहिरदयतेसबबिधिसत्यमानिममबानि
अक्षयलोकनकोबसिबोशुभ प्रापतभयोभूपत्वहिंआनि
अवाशिदिखैबोहैभूपनको दुःसह महा नरककीआंच।
ताहितकिंचितदुखपायोतुम मानहुबचनमोरकरिसांच
सुरपुरभोगतजेप्रथमैंनृप तेपश्चात नरकमहँजात।
प्रथमैंभोगतनरकारतजे पावतस्वर्गलोकपश्चात ६५
मतअधिक्यताहैजाकीबहु सूक्ष्महोतपुण्यकोकाम।
सुरपुरभोगनकरिकछुदिनसों भोगतनरकपायपरिणाम
जाकेपातकहैंसक्षमअरु सबबिधिपुण्यकेरअधिकार।
सोनरनरकहिकछुभोगनकरि फिरचलिलहतदेवआगार
आचारजकीबधसमयापर भूपतिकह्योहुकछुकछलबैन।
ताहितप्रापतकैयमपुरमहँ क्षणइकदुखीभयोतजिचैन
नकुलद्रौपदीसहदेवाअरु अर्जुनभीमआदितुवभाय।
नरकस्पर्शयोंसबव्याजाहिते अबसबभयेमुक्तसुखपाय
तेसबबिलसतअबसुरपुरमहँ चलिउतलखौतौननरराज।
अक्षयरूपसोंसबराजततहँ भोगतसुरनकेरसुखसाज
जाकेकारणअतितापिततुम महिमाभौनतौनरबिलाल।
पायसोपूरणनवसिद्धीकहँ बिलसतस्वर्गकरणप्रणपाल
भूपभगीरथमान्धाताअरु जेहिथलबसतभूपहरिचन्द।

भरतद्रुपदसुतजेहिबिलसतथल लहिसबकालमध्यञ्चमन्द
स० अपरहे तिनके सबके तुव लोक महीपति आनंद दायक ।
हर्षि कबूल करौ तिहिको सुखमूलसोहै तुवबासहि लायक ॥
गौरसोंठौर चलौ निरखौ नहिं वासम और कहूं नृप नायक ।
बन्दि बसेतहहीं तुम्हरे सब भारत युद्ध बिशुद्ध सहायक ७३ ॥
पुनिअवलोकहुनभगंगा चलिजोशुचिकरतलोकचयराज ।
तासुतरंगमकरिसंगमशुभ चलिनिजलोककरहुसुखसाज
यहि बरधारामहँ न्हायेते छूटिहि तोर भूप नरभाव ।
बैर ईर्षा दुखनाशित कै ह्वैहै हृदय हर्षकोचाव ७५
यहिबिधिभाषतसुरनायकके पुनितेहिठौरपरीक्षितलाल
निजतनधारणकरिधर्महुँतब ह्वैगेप्रगटआयतत्काल७६
बचन मनोहरकहिभाषतभे सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ।
शमदमदायालखिपूरणतुवहम अतिमुदितभयेमनकाय
धर्मबढावनसबभांतिनतुम परिचयलीनदेखित्रयबार ।
धर्मबिहायोतुमकतहूँना राख्योसबभांतिअधिकार ७८
अतिशुचिबंधवतुवअवनीपति नाहिंननरकयोगक्यहुकाल
तुमहिंदिखायोसुरनायकयह निजकृतपरमअबिद्याजाल
त्रयपुरपावननभगंगामहँ अबचलिकरहुबेगिअसनान
भावमानुषीतजिजातेनृप पावहुरूपदेवअनुमान ८०
धर्माननकीइमिबातैंशुभ सुनिसहसुमनधर्मसुरराय ।
अतिआनन्दितह्वैहिदयमहँ गमनलभयेयुधिष्ठिरराय
पुनिनभगंगातटपहुँचतभे हर्षिततहांकीनअसनान ।
त्यागिमानुषीतनत्वरितैंनृप ह्वैगेदेवरूपअनुमान ८२
माथनायकै श्रीगंगाको तहँते चलेफेरिक्षितिराय ।
वहिथलउत्तमहँप्रापतभे जहँपरभीमआदिसबभाय
तहँआतमजसबअधकके नृपदुर्योधनादिशतभाय ।

तहँआत्मजसबअंधकके नृप दुर्योधनादिशतभाय।
पुनितहँनिरख्योनँदनंदनको शेषाकाररहीछबिछाय ८४
आयुधदरशैंबरबाहुनमहँ अंबुजगदाशंखचक्रादि।
अंगनउत्तहीसुंदरताशुभ ज्यहिलखिलगैमारछबिबादि
पारथसेवतहैंतनमनसों जिमिइतरहे करतशुभसेव।
असगतिनिरखतदोउनैननसों हर्षितभयेधर्मनृपदेव
पुनिआगेचलिअन्यस्थलमहँ निरख्योकरणसहोदरभाय।
सूर्यबारहौतेहिसेवतहैं देवनसरिसरहीछबिछाय ८७
फेरिमरुद्गणयुतशोभितशुभ भीमहिंलख्योहियेहर्षाय।
पुनिआगेचलिसहआश्विनके निरख्यो नकुलसहितदोउभाय
द्रुपदकुमारिहिपुनिदेखतभे लेखतरमासरिसज्यहिगात।
हृदयचिंतवनकरिताथलपुनि बूझनचह्योधर्मकछुबात
सोअभ्यंतरगुनिसुरपतिपुनि भाष्योधर्मनृपहिसमुझाय
यहमनभावनि श्रीसुरपुरकी तुवहितगईभूमिक्षितिराय
पांचगंधरबअतिपावनये तुम्हरेपुत्रभयेतहँजाय।
याकोबिस्मयकछुकरियेना सुनियेभूपयुधिष्ठिरराय ९१
कछुकदूरिपरपुनिआगेचलि धर्महिंशक्रदेखायहुठाम।
जहँपरसोहतश्रीकुरुपतिनृप जोहिधृतराष्ट्रबखानतनाम
तहँसुरनायकअसभाष्योकहिसुनियेधर्मभूपममबानि
यहथलपावनजोदेखततुम सोगन्धर्वगणनकीथानि ९३
सबगंधर्बन के स्वामी ये तुम्हरे पिताकेरगुरुभाय।
अंधमहीपतिद्युतिदीपतिये माहितलजिन्हैंकहतकुरुराय
साध्यमरुतवसुगणनभ्यनये राजतजौनजौनबलवान।
वृष्णिभोजकुलअरुअंधकतें सात्यकिप्रभृति लखोमतिमान
जितेमहारथिरणनायकतुव राजतसकलतौनयहिठाम।

युद्धसहायकअरुनायकभट पायकआदिकरतविश्राम
शशिसहशशिसमद्युतिदीपतअति अभिमनुबीरधनजयतात
सोअवलोकहुइतराजतयह शोभाजासुबरणिनाजात
कुन्तीमाद्रीसहशोभितये देखहुपाण्डु भूप तुवबाप ।
पुनिअवलोकहुमरुतसमये राजतबसुनसंग निष्पाप
संगरुद्रपति के सोहतये मोहतचित्तभटन के जौन ।
सोअवलोकहु आचारजये जिनकोकहतरहेउतद्रोन
औरहुपक्षी दोउदिशिकेजे सुभटमहीप राजसुतआदि
गुह्यकयक्षनसंगराजतले जिनलखि होतकामछबिबादि
यहिबिधिसुरपतिदिखरायोसबफिरिफिरिनृपहिबासुखरास
अतिआनन्दितभेधर्मजतब सुनुसुररातसूनुमतिरास ॥
बैशंपायन की बाणी इमि सुनि जन्मेजय भूपउदार
प्रश्नमनोहरपुनिपूंछतभेसुनुमुनिमहाज्ञानआगार १०२
भीष्मपितामहअरुभूरिश्रवद्रोणाचार्यशकुनिबलवान ।
भूपजयद्रथजयत्सेन अरु नृपधृतराष्ट्रकर्णमतिमान ३
नृपदुर्योधनसहपुत्रनके ताकेसुभट और सबभाय ।
सत्यसेनअरु भटकर्णजले अरुनृपधृष्टकेतुबलराय ४
पुत्रघटोत्कच भटभिरमाको इनलेअप्रमाणबलवान ।
कुरुक्षेत्रमहँलरिबिनशेजे सुरपुरबसेकितकपरमान ५
स्वर्गबासकरिपुनिकर्मनके अन्तिमलहोकौनगतिनाथ ।
बैशंपायनसोभाषहु सब पायन परतजोरियुग हाथ ६
सूतशौनकनतेभाष्योपुनि सुनिइमिपरीक्षितात्मजबात ।
बैशंपायन द्वैपायनभजि बोले महाहृदय हर्षात ७

स० भूप परीक्षितके सुतश्रीजन्मेजय रूप अनूप महामति ।
प्रश्नमनोहर तासुनिकै गुनिकै हियपूरि अनंदरह्यअति ।

बंदिनया इतिहास समानहै आनकछु सुखदा अवनीपति।
गोयनराखत भाखतहौं सब उज्ज्वलतौपुरिखानकिकीरति ८

देवगुह्ययहसुखदायकअतिलायकसुननपरमइतिहास।
तोहिसुनावतमनभावतसो ज्यहि बिधिकह्योमहामतिव्यास
पापकर्मकोकरिअन्तिमसब निज२ प्रकृतिमध्यमेलीन।
मिलेबसुनमहँभटभीषमअरु गुरुमहँमिलेद्रोणपरबीन
मिल्योमरुतमहँकृतबर्मानृपराबिमहँमिलेजायरबिलाल
धनपतिदम्पतिमहँसम्प्रतिचालि लियसहामिलेअंधछितिपाल
पाण्डुमहीपतिसहपालिनके चलिगे अमरराजकेधाम।
सनत्कुमारादिकमुनियनमहँ हरिसुतमिलेप्रद्युमननाम
शशिमहँलासिगोसुतपारथको भारथकियोयथारथजौन
शखद्रुपदअरुशलबिराटनृप आदिकअवनिरौनमतिभौन
उग्रसेनअरुबसुदेवादिक यदुबंशिनसहसकलसमाज।
धृष्टकेतुअरुनृपभूरिश्रव उत्तरकुवँर आदिनरराज १४
कंकबिदूरथसबबंशीजे सुफलकतनयसांबमतिमान।
निशठकंसलै ये राजासब बिश्वेदेवामध्य समान १५
शकुनीमामा दुर्योधनका औनृपधृष्टद्युम्नबलधाम।
येदोउप्रबिशे माधिपावकके लैकैसियारामको नाम १६
नृपदुर्योधनशतबन्धवजे पूरुब जन्मकेर निशिचारि।
रणमहँताजिकैतनपावनकैमेसबस्वर्गकेरअधिकारि १७
बिदुरयुधिष्ठिरगहिमनमामुद प्रबिशेधर्ममध्यहर्षाय।
शेषरूपगहिश्रीहलधरतब गेपातालदीनदुखहाय १८
जनमनचंदननंदनंदनतहँ राजतभये प्रथमकीनायँ।
अरुमहरानीसबगोबिंदकीसोरहसहसलिखितजेआयँ॥
सनसाबाचाअरुकर्मनते श्रीघनश्यामलामकोध्यायँ।

गंगधारधासिलासिसुरत्रियसम तनतजि मिलोमाधवहिआय
जितेनिशाचरघटउत्कचसम दुहुँदिशिरहेबिजययशकाज
यक्षगंधरबकैकिन्नरते निज२लोकलह्योसुखसाज २१
केकयमद्रादिक जेतेनृप भारत युद्धमध्यभे नाश ।
तेसबसुन्दरतनधारनकरिनिज२लोकपायकियबास २२
दर्शनकीन्ह्योजिनमाधवको तिनसबलह्योअनूपमथान।
सबसुखपावतसोइतउतमहँ जोजनकरतकृष्णकोध्यान
सूतशौनकनतेभाष्योपुनि इमि कहिव्यासाशिष्यमतिरास।
कियोअनंदितजन्मेजयकहँ श्रवणकरायसुष्टुइतिहास
तदनुयज्ञक्रियसंपूरणकरि दीन्ह्योअमितयाचकनदान ।
दियोयाजकनपूर्णाहुतितबकरि२बिमलमंत्रकोगान २५
पुनिकरिमोचितसबउरगनकहँ मुनिआस्तीकभयेआनन्द
चिरंजीविहोजन्मेजयनृप पांडवबंशअंशशुभचन्द२६
आशिषलैकैजन्मेजयनृप पुनिसबविप्रगणनबोलवाय।
पूजनकीन्ह्योअतिहर्षितमन दीन्ह्योदानअगनधनलाय
बिदामाँगिकैजन्मेजयसों द्विजसबगयेभवनसुखपाय ।
रामकृष्णकीलहिदायाशुभ अंतिमपर्व्वबखानीगाय२८
श्रीद्वैपायनमुखभाषितयह पावन परम पुण्यइतिहास ।
श्रवणकरायोजन्मेजयकहँ श्रीमुनिब्यासशिष्यमतिरास
श्रीमहभारत संपूरणस्वइ जसमतिदई शारदा माय ।
रामरत्नकीलहि अनुमतिशुभ बंदीदीन बखान्योगाय
सुष्ठुपांडवनकीकीरतियह जो कोउपढ़ै सुनै मनलाय ।
कलिमलनाशैपरकाशैबुधिअधिसिधिबसैभवनतेहिआय ३१
पर्वपर्वमहँशुचिमानुषजो करिहैश्रवणयाहिधरिध्यान ।
पापनशइहैसुरपुरपइहै ह्वइहै सदातासुकल्यान ३२

पितृश्राद्धमहँजोसुनिहैयहि करिएकाग्रचित्तमतिमान ।
मुक्तिहोइहैतेहिपितृनकीबासिहैंजायअमरअस्थान ३३
तनमनइन्द्रिनकोपावनकरि दिनमहँकरैजौनयहिगान ।
दिनकृतपातकतेहिमानुषके बिनशैंअवशिसत्यपरमान
करैनिशामहँजोपातकनर औयहिश्रवणकरैमनलाय ।
देरनलागैअघभागैत्यहिप्रापतहोयसिद्धिकरआय ३५
विप्रजो बांचैयहि मन्शाकरि होवै महा ज्ञानआगार ।
सुनैजोभूपतियहिचित्तहितकरि लहैसो विजययुद्धअधिकार
नारिगर्भिणीजोसुनिहैयहि पइहैतनयसुष्ठु मतिमान ।
स्वर्गमँगैया स्वर्गौपइहैं जइहैं हर्षिदेवअस्थान ३७
कन्यासुनिकैपतिपइहैशुभ बँध्याअवशिपाइहैबाल ।
संपतिअर्थीसंपतिपइहैं करैजोयाहिगानसबकाल ३८
बुधपारायणजो बँचिहैंयहि बक्ताहोयँज्ञानकीखानि ।
जोकोउसुनिहैयहिपुस्तककोहोइहैमहाद्रव्यकोदानि ३९
वेदपांचवोंयहिभाषतसब याकेपढ़ेहोयअतिज्ञान ।
कीरतिबाढ़ैतेहिजगतीमा होवैसबप्रकारकल्यान ४०

इति श्रीउन्नामप्रदेशान्तर्गतबंथरग्रामनिवासिबाजपेयिवंशावतंसश्री
पंडितरामरत्नस्याज्ञाभिगामीस्वप्रदेशान्तर्गतमसवासी ग्राम
निवासि पं०बंदीदीनदीक्षितनिर्मितमहाभारतभाषाभारत
खण्डान्तर्गतशतसहस्रसंहितायांवैयासिक्यांस्वर्गा
रोहणंनाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

इति स्वर्गारोहणपर्व्व समाप्तम्

ग्रन्थपूर्णताकासँव्वत् व ग्रन्थकर्त्ताकानामग्राम ॥

श्लो० ॥ रसाब्धिनन्देन्दुमितेचमाधवे सितेक्षपानाथ
तिथौबुधेच॥ समाप्तिमापेदमितस्सुभारतं भवाब्धिपोतं
खलुगायकानाम् १ यत्पूर्व्वम्मुनिनाविचारलिखित मा
म्नायभावस्विना जातानाञ्जगतीतलेचाबिदितो पायोद्वि
तीयोमहान् ॥ सन्तर्त्तुम्भवसिन्धुमत्रमनसा ज्ञात्वाचत
द्भारतम् कुर्वेहंस्वितिहासरूपममृतम्पानायवैज्ञानिना
म् २ तच्चाप्यत्रचसँस्कृतेकृतश्रमाः पातुंक्षमस्स्यात्क
थ मित्युत्पाद्यमया विचार्य्यस्वधियाभासायभाषाकृता॥
सर्व्वेषामितिनिश्छलाश्चसुधियस्संशोधयन्तिस्मतं दो
षन्नैवदुनोतिसाधुहृदयश्चात्लक्ष्यभाषाकृतिम् ३ सुरा
पगायोत्तरयोजनार्द्धोन्नामप्रदेशान्तरगाबिराजते ॥ पुरी
मदीयामसवासिनामा ख्याताजनित्रीकिलसज्जनाना
म् ४ तत्रासीद्रामदीनो निखिलगुणनिधिर्वेदविद्याप्रवी
णः भागूलालोऽस्यजातस्सकलबुधजनैस्सम्मतश्शास्त्र
पाठे ॥ चण्डीदीनोऽस्यभ्रातासदसिसविदुषामग्रणिर्भा
स्करेव मत्पितृव्यस्सचैवाजनिभुविबिमलेदीक्षितेशुद्ध
वंशे ५ योऽधीत्यामलकाव्यकोशकुशलान्न्यायेचमीमां
सके व्याकृत्येच सुज्यौतिषेकृतश्रमाच्छ्रीशुक्लवंशाग्र
णेः ॥ साहित्यञ्चसुज्यौतिषंचसकलम्व्याकृत्यासिद्धांतकं
प्रख्यातोभवतिस्मधीरसदसिरामप्रसादात्कवेः ६ तच्छि
ष्याच्चत्रिपाठिवंशजनिता च्छिवपूर्व्वनारायणा दाधी
त्यामलकाव्यशास्त्रमनिशंसाहित्यरत्नन्तथा ॥ व्याकृत्यं
स्वमनीषयाकृतमिदंभाषाप्रबन्धैर्म्मया बन्दीदीनाद्विजे

नसाधुसुखदंश्रीमन्महाभारतम् ७ गब्यूत्यर्द्धप्रमाणंमम पुरान्निकटाद्धन्थरेतिप्रसिद्धं । यत्रासौवाजपेयिकुलकमल रविर्न्नैकरामेतिनाम ॥ यश्चानेकार्थमब्धिम्बरान्निगमचय मात्मबुद्ध्यावलोक्य । तत्तत्कर्म्मप्रवृत्तोनिवसतिसदय श्शास्त्रमध्येचबेत्ता ८ दायादास्यप्रसिद्धश्शिवचरणरतो नामधेयंचयस्य । यस्यासीद्रामरत्नोऽमरगुरुसदृशस्सा धुसत्कारकारी ॥ तस्याज्ञेयञ्च धृत्वास्वाशिरासिनिखिलं भारतंभाषयाच्च । कृत्वोत्तीर्य्यास्यपारंमुनिबचननिधे स्तत्कृपातोऽधुनेदम् ९ श्रीमद्भार्गव बंशबार्धिजनित श्शितांशुखण्डोज्ज्वलं । मुंशीनौलकिशोरनामनिखिलं सम्भासयेद्धैजगत् ॥ निर्म्मायास्थितिमत्रलक्ष्मणपुरेय न्त्रालयेमुद्रितं । हजरतगंजबरेऽस्यपुस्तकमिदंस्याद्भा षयाभारतम् १० शुद्धःकृष्णःकामदःकैटभारिःकंसद्वेषी माधवोभूपवन्द्यः देवैस्स्तुत्यःसिद्धिदःसिद्धसाध्यस्सत्वा स्पायान्मानसे तस्यबासः ११ ॥

कवित्त ॥

रस श्रुति अंक औ मयंक आदि संबत लै माधव वलक्षपक्षस्वक्षगुनिपायोहै ।
चंद्रपुत्रपूनोतिथि परमपबित्रजानि भारतपुराण अन्तसमय बतायोहै ॥
बाजपेयिबंसहंसकीरति प्रशंस बुधरामरत्नजीवको निदेशवेशपायोहै ।
द्विजबंदीदीन श्रुतिबीननअधीनमहाभारतपुराणकोनबीनकरिगायो है १

दो० ब्रह्म सृष्टिके रत्नतुम रामरत्न महिईश ॥
बंदीदीन अधीनतुव भरिसुखदेतअशीश २

क० रक्षकहमेशतवशीशकमलेश अरु आननप्रकाशताहैशारदादयालकी ।
कंठकंठकालकूटधारीरखवारीकरैं बाहुनबिधाताहियचातादुष्टघालकी ॥
ब्रंदिगणनायकसहायकदिशानसब नाशतबिघनघनबाधादुखजालकी ।

ज्ञानगुणदाताकै शत्रुनकोघातासोई मातागिरिजातातुवचातासबकालको ३
बानोब्रह्मरानीतुवबानोकोप्रकाशकरैं ज्ञानीगणनाथज्ञानमानकोबढ़ावहीं ।
शत्रुवंशध्वंसनकोतिगवेगकालीकरैं व्यालीमुंडमाली रोगशोगकोरढ़ावहीं ॥
अतित्र प्रचंडचंड बंदि मातंगहकरैं स्वर्णपत्र छत्र देश शीशपैचढ़ावहीं ।
धनागारबीचबैठिकमलाबिहारकरैं ऋद्धिसिद्धिसंपतिसोंमन्दिरमढ़ावहीं ४
लज्ञासेलुकाय जैहैं शत्रुतुवतेजदेखि भाजैहैंकरतेकमानडारि हारिहिय ।
हांकराकसुनिमुखरूकहुँहैं द्रोहिनके ध्वस्तपस्तह्वैहैंतुवशकमानिमानि
जिय ॥ तेरोआफताबसोमुखारबिंददेखिबीर ताबाबिनह्वैहैसोईज्वालजाहि
जाहिहिय । बाजपेयिवंशकेकन्हैयारामरत्नबंदि तापैसदारहिहौंनिहाल
श्याम रामासिय ५

(बन्दीदीनशर्म्मा)

इतिश्री भारतखण्ड द्वितीयभाग संपूर्णम् ॥

पहेली, काव्यकी बहुतसीबातें रागोंकेस्वरूप वर्णनाकियेगये हैं यह पुस्तक असंख्यही छपी हैं और पाठशालाओंके प्रचार के योग्य हैं ॥

तुलसीशब्दार्थप्रकाश ॥

गोपालदासजी रचित जिसमें सर्वपुराणों और षट्शास्त्रों के मतसे सर्वप्रकारके गूढाशयों का कथन और जातकताजकसामुद्रिककी मुख्यबातें गणित, योग, शास्त्र और बिवाह और यात्रादिके मुहूर्त्त और इसीप्रकार के असंख्य बिषय हैं जो पुस्तकपढ़ने से जानेजाते हैं ॥

प्रेमरत्न ॥

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द की दादीरत्नकुंवरि रचित केवल श्रीकृष्ण और श्रीरामचन्द्रजीकी भक्तिपक्षका विषय दोहा चौपाई में है ॥

चित्रचन्द्रिका ॥

काशीराजकवि रचित जिसमें पहिले अनेक छन्दोंमेंनाय काभेदबर्णनकरके फिरउनको चित्रबद्ध करके रूपदिखाया है ॥

पीयूषलहरी ॥

पण्डित जगन्नाथजी त्रिशूलीकृत अति मनोहर और पुण्य दायककाव्य में श्रीगंगाजीकी स्तुति है ॥

गंगालहरी ॥

पद्माकर कविकृत जिसमें संस्कृतगंगालहरीसे गंगास्तुतिकेविषय जिनसेमनुष्य भवसागरपार उतरे अपूर्वकविताहै ॥

यमुनालहरी ॥

ग्वालकविरचित जिसमें काव्यालंकारयुक्त यमुनाजीकी स्तुति है ॥

रसचन्द्रोदय, व रसदृष्टि ॥

उदयनाथ जी व शिवनाथ रचित इसमें सबप्रकारकीनायकाओं का भेद और उनके सब प्रकारके अलंकार रचित हैं ॥